

जुलकरनैन से मुताल्लिक हज़रत मौलाना हिफ़्ज़ुर्रहमान स्योहारवी रह० की रिसर्व 129 पृष्ठों पर छाई हुई है जो हज़रत मौलाना की कोशिश और खोज का नतीजा है। कोशिश की गई है कि इस लम्बी बहस को इस तरह छोटा किया जाए कि कोई अहम प्वाइंट रह न जाए, फिर भी 40 पृष्ठों में उसको समेटा गया है। हो सकता है कि कुछ लोग इस तरह खुलासा करने में कुछ कमी महसूस करें, तो उनसे गुज़ारिश है कि वे असल किताब से रुजू फ़रमाएं, क्योंकि तौरात और तारीख़ के लम्बे हिस्से और उनकी रोशनी में अलग-अलग रायों पर बहस का खुलासा करना मुश्किल था, इसलिए सिर्फ़ इन नतीजों को बुनियादी तौर पर पेश किया गया है, जिन पर मौलाना इतनी तहक़ीक़ के बाद पहुंचे।

हज़रत मौलाना ने 'बसाइर' में जो कुछ लिखा है, उसके बड़े हिस्से का ताल्लुक 'जुलकरनैन' के वाक़िए से सीधा नहीं है, लेकिन वह अपनी जगह पर हद दर्जा अहम है, यह हिस्सा असल में सोचने-समझने वालों के लिए ज़्यादा ज़रूरी है, इसलिए उसको अलग पेश किया जाता है। (संग्रहकर्ता)

‘बसाइर’ के हिस्से

1. कुरआन के मतलब की समझ के लिए जिस तरह अरबी भाषा का मतलब, बयान, ग्रामर, आसार हदीस और सहाबा के क़ौलों जैसे इल्मों का जानना ज़रूरी है, उसी तरह तारीख़ के इल्म की मारफ़त भी ज़रूरी है, चुनावे पिछली क़ौमों और उम्मतों के हालात व वाक़ियात का इल्म हासिल करके उनसे सबक़ लेने पर उभारने का काम खुद कुरआन ने जोरदार बयान के साथ किया है। इर्शाद है—

तर्जुमा—‘कह दीजिए, ज़मीन में घूमो-फ़िरो, फिर देखो कि झुठलानेवालों का अंजाम क्या हुआ?’ (6 : 11)

तर्जुमा—‘बेशक़ तुम से पहले खुदा की मुक़रर की हुई राहें गुज़र चुकी हैं, पस ज़मीन की सैर करो, फिर देखो झुठलाने वालों का अंजाम क्या हुआ?’ (3 : 137)

2. जहां तक इस्लाम के बुनियादी मसूअलों का ताल्लुक है, उनमें ‘पुराने

भले लोगों की राय ही, बिना कुछ कहे-सुने राह की रोशनी है और उससे हटना टेढ़ और गुमराही है, लेकिन जहां तक कुरआन के लतीफ़े, नुक्ते, मारफ़त और इल्म, असरार और इल्मी और तारीखी मतलबों का ताल्लुक है, उसके लिए किसी ज़माने में भी तहक़ीक़ का दरवाजा बन्द नहीं है। चुनांचे नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद मुबारक है—

‘कुरआन के लताइफ़ व हक़म (हिक्मत की गूढ़ बातें) कभी ख़त्म होने वाले नहीं हैं।’

खासतौर पर जबकि तारीख़ का मतलब हासिल करने के लिए आज की मालूमात के ज़राए तारीख़ के पुराने उलूम के ज़रिए (साधन) ज़्यादा फैल चुके हैं तो पुराने नेक लोगों के पुराने मस्लक पर क़ायम रहते हुए कुरआनी हक़ीक़तों और उसकी तारीख़ी बहसों की तफ़सील या ग़ैर तफ़सील में पुराने लोगों की पाबन्दी न करते हुए कुरआन की ताईद के लिए तहक़ीक़ का क़दम उठाना, पुराने नेक लोगों की पैरवी है न कि उनके मस्लक से हटना। क्या कोई अहले इल्म (विद्वान) और सूझ-बूझ रखनेवाला इस हक़ीक़त का इंकार कर सकता है कि इन तफ़सीरी मतलबों के अलावा जिनके बारे में दलीलों से यह साबित हो चुका है कि ये नबी सल्ल० के इर्शाद हैं, सहाबा रज़ि० के ज़ाती क़ौलों के ख़िलाफ़ या उनसे अलग ताबिईन और तबअू ताबिईन के क़ौल ज़्यादा से ज़्यादा तफ़सीर की किताबों में दर्ज हैं और बाद के तफ़सीर के उलेमा पहलों के क़ौलों पर जिरह करते और उनकी रायों से इख़िलाफ़ करते नज़र आते हैं। और इनमें से हर आदमी की तहक़ीक़ कुरआन के मतलब की ख़िदमत ही समझी जाती है; अलबत्ता अस्तियत शर्त है और जो आदमी भी इस ख़िदमत के लिए क़दम उठाए, उसका फ़र्ज है कि ‘फ़ीमा बैनी व बैनल्लाह’ पर ग़ौर व फ़िक़्र करे कि वह जिस मसूअले में कोई राय अख़्तियार करता है, हक़ीक़त में वह उसके तमाम आगे-पीछे की बातों को जानता है या नहीं और यह कि उसकी इस तहक़ीक़ से कुरआन की और ज़्यादा ताईद ही होती है और पुराने बुजुर्गों के बुनियादी पुराने मस्लक से क़तई तौर पर आगे बढ़ जाना लाज़िम नहीं आता।

अस्हाबुल कह्फ़ वरक्रीम

(कह्फ़ और रक्रीम वाले)

कह्फ़ और रक्रीम

डिक्शनरी में कह्फ़ पहाड़ के भीतर लम्बे चौड़े ग़ार (खोह) को कहते हैं, मगर रक्रीम के मानी में तफ़्सीर लिखने वाले एक नहीं हैं, अलबत्ता कुबूल यही है कि यह शहर अंबात (बनू नाबित बिन इस्माईल, जिनकी हुकूमत का ज़माना 700 ई०पू० से 106 ई०पू० तक है) की राजधानी था और अक्बा खाड़ी (ऐला) से उत्तर की ओर बढ़ते हुए पहाड़ों के जो दो मुतवाज़ी (समानांतर) सिलासिले मिलते हैं, उन्हीं में से एक पहाड़ की बुलन्दी पर आबाद था। उसका नाम रक्रीम (आज का पटरा या बतरा) था। पुराने खंडहरों की रिसर्च में एक नुमायां खोज इस शहर की है। इसमें नई-नई बातों के साथ-साथ उसके पहाड़ों के अजीब व ग़रीब ग़ार भी ज़िक्र के क़ाबिल हैं, जो बहुत लम्बे-चौड़े और गहरे हैं और इस तरह वाक़े हैं कि दिन की धूप और गर्मी उन तक नहीं पहुंचती। एक ग़ार ऐसा भी खोज लिया गया है जिसके मुहाने पर पुरानी इमारतों के निशान पाए जाते हैं और बहुत से स्तूनों के खंडहर बाक़ी रह गए हैं। ख़्याल किया जाता है कि यह किसी हैकल की इमारत है। मुख़्तसर यह कि इस शहर के बारे में जितनी खोज की जा रही है, उससे क़ुरआन के एक-एक शब्द की तस्दीक़ (पुष्टि) होती है, इसलिए यह कहना आसान हो जाता है कि क़ुरआन ने जिन अस्हाबे कह्फ़ का वाक़िया बयान किया है उनका ताल्लुक़ इसी शहर रक्रीम (पटरा) के किसी ग़ार से है। (हज़रत मौलाना हिफ़ज़ुर्रहमान स्योहारवी रह० ने लम्बी बहस के बाद यह भी साफ़ किया है कि) अस्हाबे कह्फ़ और अस्हाबे रक्रीम दोनों एक ही हैं और बुख़ारी शरीफ़ में अस्हाबे कह्फ़ वाले बाब की ग़ार वाली हदीस में जो वाक़िया बयान हुआ है, वह बनी इसराईल का एक दूसरा वाक़िया है और यह भी कि अस्हाबे कह्फ़ और रक्रीम के वाक़िए का ताल्लुक़ शुरू के ईसाई दौर से है।

कुरआन और अस्हाबे क़हफ़ और अस्हाबे रक़ीम

जैसा कि जुलकरनैन के वाक़िए में ज़िक्र किया जा चुका है, यहूदी उलेमा ने कुरैश के वफ़द के ज़रिए अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से तीन सवालों के जवाब चाहे थे, उनमें से एक यह भी था कि 'अस्हाबे क़हफ़' कौन थे? और उन पर क्या गुज़री? आपने वह्य आने पर उनके सामने सूरः क़हफ़ तिलावत करके वाक़ियों की हक़ीक़त उन पर खोल दी—

तर्जुमा— 'क्या तुमने यह गुमान कर लिया है कि अस्हाबे क़हफ़ व रक़ीम का मामला हमारी निशानियों में से कोई अजीब (मामला) है, जबकि कुछ नवजवानों ने पहाड़ के ग़ार में पनाह ले लिया था और यह दुआ मांग रहे थे, ऐ हमारे परवरदिगार! तू अपने पास से हमको रहमत अता कर और हमारे लिए रुशद व हिदायत मुहैया कर। फिर हमने ग़ार में कुछ साल तक उनको थपक कर सुला दिया, फिर उनको उठाया (बेदार किया), ताकि हम जान लें कि दोनों, बस्ती वालों और ग़ार वालों में से किसने उनकी मुदत का सही अन्दाज़ा लगाया। हम तुझको उनका सच्चा वाक़िया बताए देते हैं। बेशक वे कुछ नवजावान थे जो अपने परवरदिगार पर ईमान ले आए थे और हमने उनको हिदायत की रोशनी और ज़्यादा अता कर दी थी और जब वे (वक़्त के हाकिम के सामने) यह एलान करने पर उतर आए कि हमारा परवरदिगार वही है जो आसमानों और ज़मीन का परवरदिगार है और हम हरगिज उसके अलावा किसी को खुदा नहीं पुकार सकते और अगर ऐसा करें तो खुदा पर बोहतान बांधेंगे, उस वक़्त हमने उनके दिल ख़ूब मज़बूत कर दिए थे। वे कहते थे, यह हमारी क़ौम है जिन्होंने अल्लाह के अलावा बहुत से माबूद बना लिए हैं। ये क्यों खुली दलील अपने बातिल माबूदों (की सदाक़त) के लिए नहीं लाते? पस उस से ज़्यादा ज़ालिम कौन होगा जो अल्लाह पर झूठी तोहमत लगाए और ऐ रफ़ीक़ो! जब तुम उनसे और उनकी इबादत से अल्लाह के सिवा जो वे बातिल माबूदों की करते हैं, अलग हो जाते हो, तो पहाड़ के ग़ार में चले चलो, तुम्हारा परवरदिगार अपनी रहमत निछावर करेगा और तुम्हारे मामले में काम की आसानी पैदा करेगा और ऐ पैग़म्बर! तुम सूरज को देखोगे कि वह निकलते वक़्त उनके ग़ार से दाहिनी जानिब बच कर निकल जाएगा और डूबते वक़्त ग़ार से क़तरा कर बाई ओर को हो जाता है और वे बड़े फैले ग़ार में हैं। यह

अल्लाह की निशानियों में से है, जिसको वह हिदायत दे वही रास्ते पर है और जिस आदमी को उसकी बराबर सरकशी की बुनियाद पर गुमराह करे तो वह किसी राह दिखाने वाले मददगार को न पाएगा और तू उनको बेदार गुमान करेगा, हालांकि वे सो रहे होंगे और हम उनकी करवटें बदलते रहते हैं, दाएं भी और बाएं भी और उनका कुत्ता अपने अगले हाथ फैलाए ग़ार के मुंह पर बैठा हुआ है। अगर तू उनको झांक कर देखे तो उनकी इस शान और हालत को देखकर मर्ज़ब हो जाए और भाग पड़े और इसी तरह हमने उनको उठा दिया, जगा दिया, ताकि आपस में पूछ-गछ करें। एक ने उनमें से कहा, तुम ग़ार में कब से हो? दूसरे ने जवाब दिया, एक दिन या दिन के कुछ हिस्से से फिर उन्होंने कहा, तुम्हारा परवरदिगार ही ख़ूब जानता है कि तुम यहां कितनी मुदत से हो, (तो अब यह करो कि) अपने में से किसी एक को शहर में यह सिक्का दे कर भेजो कि वह तुम्हारे लिए देख-भाल कर उम्दा क्रिस्म का खाना लाए और उसको चाहिए कि बहुत ही राज़दाराना तरीक़े से वह जाए और हरगिज़ किसी को पता न चलने दे कि हम यहां ठहरे हुए हैं, इसलिए कि अगर इन पर तुम्हारा मामला खुल गया, तो वे तुम को पत्थर मार-मार कर हलाक कर देंगे या तुम को ज़बरदस्ती अपने दीन की तरफ़ लौटने पर मजबूर करेंगे और उस वक़्त तुम हरगिज़ कामियाब न रहोगे, (न दुनिया में, न आख़िरत में) और इसी तरह हमने शहर वालों पर उनका मामला ज़ाहिर कर दिया, ताकि वे यक़ीन कर लें कि अल्लाह का वायदा सच्चा है और क़ियमत की घड़ी ज़रूर आनेवाली है, इसमें कोई शक नहीं है। हमने उनको उस वक़्त इस मामले की ख़बर दी जब कि वे क़ियामत के आने और न आने पर आपस में इख़िलाफ़ कर रहे थे, फिर वे कहने लगे कि इन अस्हाबे क़हफ़ पर कुब्बा तामीर कर दो, इनका परवरदिगार इनके हाल को ख़ूब जानता है, यानी इनसे कोई छेड़-छाड़ न करो। उन लोगों ने, जो हुकूमत में थे कहा, हम तो उनके ग़ार पर एक मस्जिद (हैकल) तामीर करेंगे। ऐ पैग़म्बर! कुछ लोग कहेंगे, वे तीन आदमी हैं, चौथा उनका कुत्ता है। कुछ लोग ऐसा भी कहते हैं, नहीं पांच हैं, छठा उनका कुत्ता है। ये सब अंधेरे में तीर चलाते हैं। कुछ कहते हैं, सात हैं, आठवां उनका कुत्ता है। (ऐ पैग़म्बर!) कह दो असल गिनती तो मेरा परवरदिगार ही बेहतर जानता है, क्योंकि उनका हाल बहुत कम लोगों के इल्म में आया है और तुम लोगों से इसमें मत झगड़ो, मगर सिर्फ़ इस हद तक कि

साफ़-साफ़ बात में हो (यानी बारीकियों में नहीं पड़ना चाहिए कितने आदमी थे, कितने दिनों तक रहे थे और न उन लोगों में से किसी से इस बारे में कुछ पूछो और हरगिज़ किसी चीज़ के बारे में यह न कहना कि मैं कल को यह ज़रूर करने वाला हूँ, मगर (यह कहकर) होगा वही जो अल्लाह चाहेगा और जब कभी भूल जाओ तो अपने परवरदिगार की याद ताज़ा कर लो, तुम कह दो, उम्मीद है मेरा परवरदिगार इससे भी ज्यादा कामियाबी का रास्ता मुझ पर खोल देगा और कहते हैं, वे ग़ार में तीन सौ वर्ष तक रहे और लोगों ने नौ वर्ष और बढ़ा दिए हैं। (ऐ पैग़म्बर!) तुम कह दो अल्लाह ही बेहतर जानता है कि वे कितनी मुद्त तक रहे, वह आसमान व ज़मीन की सारी छिपी बातें जाननेवाला है, बड़ा ही देखने वाला, बड़ा सुनने वाला है, उसके सिवा लोगों का कोई करता-धरता नहीं, और न वह अपने हुक्म में किसी को शरीक करता है। (कहफ़ 18 : 8-26)

मौलाना हिफ़ज़ुर्रहमान स्येहारवी रह० ने इस वाक़िए को इस तरह बयान किया है—

वाक़िया

इस्पाईली अरबों के मज़हब से मुताल्लिक़ तारीख़ के पन्ने यह गवाही देते हैं कि इनमें, गो कुछ अर्से बाप-दादा का दीने हक़ 'मिल्लते इब्राहीम' वाक़ी रहा, मगर धीरे-धीरे मिस्र, शाम और इराक़ के मूर्ति पूजकों के ताल्लुकात ने अम्र बिन लहय के ज़रिए उनमें बुतपरस्ती और सितारा परस्ती की बुनियाद डाल दी और कुछ दिनों बाद इन अरबों को शिर्क परस्ती में ऐसा कमाल हासिल हो गया कि वे दूसरों के लिए रहनुमा बन गए, चुनांचे साबित की औलाद भी शिर्क की गुमराही में मुक्तला थी और उनके मशहूर बुत जुशशुरा, लात-मनात, हुवल, कसआ, अमयानस और हरीश थे। सदियों तक नबती बुतपरस्ती की इस गुमराही में मुक्तला रहे कि मसीही दौर के शुरू में राजधानी रक़ीम के अन्दर एक अजीब मामला पेश आया जिस की तफ़सील नीचे दी जाती है।

मसीही मज़हब का शुरू का दौर है। नबती हुक्मत के चारों तरफ़ यानी शाम वग़ैरह में ईसाइयत का जोर है कि रक़ीम की कुछ नवजवान सईद रूहें

हैं, शिर्क से बेज़ार और नफ़रत में पड़कर तौहीद की तरफ़ मायल हो जाती हैं और ईसाई मज़हब को कुबूल कर लेती हैं। धीरे-धीरे यह बात वक़्त के बादशाह तक भी पहुंच जाती है। बादशाह नवजवानों को दरबार में बुलाता है और हालात जानना चाहता है। नवजवान हक़ का कलिमा बुलन्द करने में बेबाक और जरी साबित होते हैं। यह बात बादशाह को नागवार गुज़रती है, मगर वह दोबारा मामले पर गौर करने के लिए उनको कुछ दिनों की मोहलत देता है। ये दरबार से वापस आकर आपस में मशिवरा करते हैं और तै पाता है कि ख़ामोशी के साथ किसी पहाड़ के ग़ार में छिप जाना चाहिए, ताकि मुशिरकों के शर से बचे रह कर अल्लाह की इबादत में मशगूल रह सकें। यह सोच कर वे एक ग़ार में छुप जाते हैं। जब वे ग़ार में दाख़िल होते हैं तो अल्लाह के हुक्म से नींद उन पर छा जाती है और वे ख़्वाब ही की हालत में करवटें बदलते रहते हैं। ग़ार की अजीब कैफ़ियत, अन्दर से बहुत बड़ा है मगर कुदरत ने उसको ऐसा मौक़ा नसीब किया है कि ज़िंदगी बाक़ी रखने के कुदरती सामान वहां सब मौजूद हैं। एक तरफ़ मुहाना है, तो दूसरी तरफ़ हवा गुज़रने की जगहें और सूराख़ हैं, जिनकी वजह से हर वक़्त ताज़ा हवा अन्दर आती रहती है। ग़ार का रुख़ उत्तर-दक्खिन है, इसलिए निकलने-डूबने के वक़्त सूरज की तपन अन्दर नहीं पहुंच पाती, मगर हल्की-हल्की रोशनी बराबर पहुंचती रहती है और ऐसी कैफ़ियत पैदा हो गई है कि न अंधेरा ही है कि कुछ नज़र आए और न इतनी रोशनी है कि खुले मैदान की तरह जगह रोशन हो जाए। इस हालत में कुछ इंसान इस ग़ार में सो रहे हैं और उनका साथी कुत्ता अपने हाथ फैलाए ग़ार के मुहाने पर बाहर की तरफ़ मुंह किए बैठा है।

कुल मिला कर इस सूरत ने ऐसी कैफ़ियत पैदा कर दी है कि पहाड़ों के दर्मियान ग़ार के भीतर झांकने वाले इंसान पर ख़ौफ़ व हरास की हालत छा जाती है और वह भाग खड़े होने पर मजबूर हो जाता है।

वर्षों तक ये नवजवान इसी हालत में आराम के साथ महफूज़ रहते हैं कि शहर में इंक़िलाब आ जाता है। रूमी ईसाई नबती हुकूमत पर हमलावर होते हैं और दुश्मन को हरा कर उस पर क़ब्ज़ा कर लेते हैं और इस तरह रक़ीम (पटरा) ईसाई धर्म की गोद में आ जाता है। अब अल्लाह की मशीयत फ़ैसला

करती है कि ये नवजवान बेदार हों, वे बेदार हो जाते हैं और आपस में सरगोशियां करते हुए एक दूसरे से मालूम करते हैं हम कितनी मुद्दत सोते रहे। एक ने जवाब दिया, एक दिन और दूसरे ने कहा या दिन का कुछ हिस्सा। फिर कहने लगे कि हम में से कोई शहर जा कर खाना ले आए और यह सिक्का ले जाए, मगर जो भी जाए, इस तरह लेन-देन करे कि शहर वालों को पता न लग सके कि हम कौन हैं और कहां हैं? वरना मुसीबत आ जाएगी। बादशाह जालिम भी है और मुशिरक भी। वह या तो शिरक पर तैयार और बेदीनी पर मजबूर करेगा, वरना हम सबको क़त्ल कर डालेगा और ये बातें हमारे दीन व दुनिया को बर्बाद करने देने वाली साबित होंगी।

अब नवजवानों में से एक आदमी सिक्का लेकर शहर गया, वहां देखा तो हालात बिल्कुल बदल चुके हैं और नए आदमी और नया तौर-तरीका नज़र आ रहा है, मगर फिर भी डरते-डरते एक बावरची की दुकान पर पहुंचा और खाने-पीने की चीज़ें ख़रीदीं। जब क़ीमत अदा करने लगा तो बावरची ने देखा कि सिक्का पुराना है। इस तरह आख़िर बात खुल गई। लोगों को जब असल हकीकत मालूम हुई तो उन्होंने उस आदमी का स्वागत किया और इस अजीब व ग़रीब मामले में बहुत ज़्यादा दिलचस्पी ली, क्योंकि अर्सा हुआ कि यहां मुशिरक बादशाहों का दौर ख़त्म हो चुका था और यहां के बाशिंदों ने ईसाई धर्म अपना लिया था।

उस आदमी ने जब यह हाल देखा तो अगरचे ईसाई धर्म फैल जाने से उसको बेहद ख़ुशी हुई, मगर अपने और अपने साथियों के लिए यही पसन्द किया कि दुनिया के हंगामों से अलग रह कर ख़ुदा की याद में गुज़ार दें, इसलिए किसी तरह मज्मे से जान बचाकर पहाड़ की राह ली और अपने साथियों में पहुंच कर सब हाल कह सुनाया। इधर शहरियां में उनकी तलाश का शौक पैदा हुआ और उन्होंने आख़िर उनको एक ग़ार में पा लिया। लोगों ने इसरार किया कि वे शहर चलें और अपनी पाक ज़िंदगी से शहर वालों को फ़ायदा पहुंचाएं, पर वे किसी तरह तैयार न हुए और उन्होंने अपनी उम्र का बाक़ी हिस्सा राहिबों जैसी ज़िंदगी में गुज़ार दिया।

जब इन ख़ुदा के बन्दे राहिबों का इंतिक़ाल हो गया, तो अब लोगों में चर्चा

हुई कि उन की यादगार कायम होनी चाहिए, चुनांचे इनमें जो लोग असरदार और बाइक्तिदार थे, उन्होंने कहा कि हम तो उनके ग़ार पर हैकल (मस्जिद) तामीर करेंगे और ग़ार के मुहाने पर एक शानदार हैकल तामीर करा दिया।

और हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ि० की रिवायत में है कि जब उस जवान के पीछे वक़्त के बादशाह और पब्लिक दोनों आए, तो ग़ार के क़रीब पहुंच कर वे यह न मालूम कर सके कि जवान किस तरफ़ चला गया और जब बहुत तलाश के बाद अस्थाबे कहफ़ का पता न पा सके, तब मजबूर होकर वापस हो गए और उनकी यादगार में पहाड़ पर एक हैकल (मस्जिद) तामीर कराया।

अहम तफ़्सीरी हक़ीक़तें

1. तर्जुमा—‘फिर हमने उनको (ख़्वाब से) उठाया, ताकि मालूम करें कि दो जमाअतों में से किसने इस मुद्दत को महफूज़ रखा, जिसमें वे (ग़ार के अन्दर) रहे।’ (18 : 12)

यहां दो जमाअतों में से एक अस्थाबे कहफ़ की और दूसरी अहले शहर की जमाअत मुराद है। मतलब यह है कि यह इसलिए किया कि मुद्दत ज़ाहिर हो जाए और यह मालूम करने के बाद कि अल्लाह तआला ने उनको वर्षों तक ख़्वाब की हालत में ज़िंदा रखा, जबकि वे ज़िंदगी की बक्रा के साधनों से यकसर महरूम थे, लोगों को यह यक़ीन हो जाए कि बेशक इसी तरह वह मख़्लूक को मरने के बाद भी ज़िंदा करेगा और बेशक मौत के बाद उठाए जाने का मसला हक़ है, चुनांचे अल्लाह तआला ने उनको बेदार किया और उनमें से एक नवजवान शहर में खाना ख़रीद करने गया तो उस ज़माने में बस्ती वालों के दर्मियान ‘मौत के बाद उठाए जाने’ पर झगड़ा और बहस जारी थी, एक जमाअत कहती थी कि फ़क़त रूह का उठाया जाना होगा और दूसरी जमाअत कायल थी कि रूह और जिस्म दोनों को ज़िंदा होना है, यह तो नसारा की जमाअतें थीं और जो नब्ती मुश्कि आबाद थे, वे सिरे से मौत के बाद उठाए जाने ही के इंकारी थे। ऐसे नाज़ुक वक़्त में अल्लाह तआला ने उस आदमी को ग़ार से बेदार करके भेजा और इस तरह जब अस्थाबे कहफ़ का

वाक़िया सब पर ज़ाहिर हो गया तो उसने एलानिया यह नज़ीर कायम कर दी कि जिस तरह वर्षों तक ज़िंदगी के सामानों से महसूस रहने के बावजूद रूह के साथ जिस्म भी सही-सालिम बाक़ी रहा, उसी तरह 'मौत के बाद उठना', रूह और जिस्म दोनों से ताल्लुक रखता है और जिस तरह सोते रहने के बाद अस्थाबे कहफ़ बेदार कर दिए गए, उसी तरह क़ब्र से (बरज़ख की दुनिया में) सैकड़ों और हजारों वर्ष मुर्दा रहने के बाद भी क़ियामत में ज़िंदा कर दिए जाएंगे।

तर्जुमा—‘ऐ पैग़म्बर! कुछ लोग कहेंगे कि वे तीन आदमी हैं, चौथा उनका कुत्ता है, कुछ लोग ऐसा भी कहते हैं, नहीं पांच हैं, छठा उनका कुत्ता है, ये सब अंधेरे में तीर चलाते हैं।’ (18 : 22)

अल्लाह ने इस वाक़िए से मुताल्लिक़ इन हकीक़तों को ज़ाहिर करने के बाद, जो उसके मक्सद ‘तज़कीर’ (याददेहानी) के लिए फ़ायदेमंद थीं, वाक़िए की इन छोटी-छोटी बातों के बारे में जो सिर्फ़ तारीख़ी हैसियत रखती हैं और उनके जान लेने से कोई खास फ़ायदा भी नहीं होता, पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को यह नसीहत फ़रमाई कि वे इन ला-हासिल बहसों से परहेज़ करें और इन पर सरसरी तौर से गुज़र जाएं और बेकार बातों की खोज लगाने की फ़िक्र न करें, जैसे यह कि इन नवजवानों की तायदाद क्या थी? उनकी उम्रों का तनासुब क्या था? वे ग़ार में कितनी मुद्त तक ठहरे रहे? मुद्त की सही मिक्दार क्या है? वगैरह।

तर्जुमा—‘(ऐ पैग़म्बर!) कह दे कि उनकी असल गिनती को मेरा पालनहार ही जानता है, क्योंकि उनका हाल बहुत कम लोगों के इल्म में आया है और जब सूरतेहाल यह है तो लोगों से इस बारे में बहस और झगड़ा न करो, मगर सिर्फ़ इस हद तक कि साफ़-साफ़ बात में हो और न उन लोगों में से किसी से इस बारे में कुछ मालूम करना? इसलिए जो बात भी होगी अटकल होगी।’ (18-22)

3. ‘व लबिसू फ़ी कहफ़िहिम सला-स मि-अति सिनीन वज़दादू तिसआ’ (18-25)

इस आयत का तर्जुमा आमतौर से तफ़्सीर लिखने वालों ने इस तरह

किया है गोया अल्लाह तआला अपनी ओर से यह इतिला दे रहा है कि वे तीन सौ नौ साल ग़ार में रहे, मगर हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ि०) और हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ि० से कुछ रिवायतों में जो मानी ज़िक्र किए गए हैं, उनका मतलब यह है कि यह लोगों का क़ौल है, अल्लाह तआला का अपना क़ौल नहीं है, यानी वे आयत 'व लाबिसू' को इससे पहले के जुम्ले 'यकूलून' के तहत में दाख़िल समझते और यह मानी करते हैं कि जिस तरह लोंग (ईसाई) अस्हाबे क़हफ़ की तायदाद के बारे में अलग-अलग बातें कहते हैं और कहेंगे, इसी तरह वे यह भी कहते पाए जाते हैं कि अस्हाबे क़हफ़ तीन सौ नौ साल तक ग़ार में रहे।

हमारे (मौलाना हिफ़ज़ुर्रहमान स्योहारवी रह० के) नज़दीक यही मानी तर्ज़ीह के लायक़ है, क्योंकि कुरआन मजीद का सबाक़ (प्रसंग) इसी को ज़ाहिर करता है, इसलिए कि इन्हीं आयतों में कुरआन ने नबी अकरम मल्लत्ताहु अलैहि व सल्लम को यह हिदायत की है कि वे इस किस्म की ग़ैर-मुफ़्फ़ीद और अटकल की बातों के पीछे न पड़ें, तो इससे यह बात साफ़ हो गई कि ग़ार में क़ियाम का मसूअला भी अंधेरे का तीर है और इसे अल्लाह के इल्म के सुपुर्द कर दिया जाए, तो बेहतर है।

4. 'जालि-क मिन आयातिल्लाह (18 : 17)' (यह अल्लाह की निशानियों में से है,) यानी पहाड़ के अन्दर ग़ार की यह मज्मूई कैफ़ियत कि ग़ार का मुहाना अगरचें तंग है, मगर उसके अन्दर बहुत काफ़ी फैलाव है, उसका रुख़ उत्तर-दक्खिन है जिसकी वजह से सूरज का निकलना और डूबना दोनों हालतों में सूरज दाहिने और बाएं कतरा कर निकल जाता है और ग़ार उसके तपन में बचा रहता है और दूसरी तरफ़ खुला होने की वजह से हवा और रोशनी ज़रूरत भर पहुंचती रहती है, गोया जिस्मानी बक्रा के लिए जो चीज़ नुक़सानदेह है यानी तपन, उससे हिफ़ाज़त और जो ज़िदंगी वाक़ी रखने के लिए ज़रूरी चीज़ें हैं यानी रोशनी और हवा, उसकी मौजूदगी, ये ऐसी बातें हैं जो अल्लाह तआला की खुली निशानियां कहीं जा सकती हैं कि उनकी बदौलत वर्षा तक अल्लाह के नैक बन्दे दुनिया की ख़राबियों में अलग होकर ग़ार में ख़्वाब की हालत में बसर कर सकें और ऐसी हालत में बसर कर सकें जबकि

खाने-पीने के सामान और ज़िंदगी की बक्रा के दूसरे दुनिया के साधनों से क़तई तौर पर महरूम थे।

5. आमतौर पर मशहूर है कि अस्हाबे कहफ़ अभी तक ग़ार में सो रहे हैं और ज़िंदा हैं, मगर यह सही नहीं है, इसलिए कि हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० ने खोलकर यह फ़ारमाया है कि उनका इंतिक़ाल हो चुका।

6. 'व कल्लुहुम बासितुन ज़िराऐहि बिलवसीद' (18 : 18) कुत्ते ने वफ़ादारी और जानिसारी का सबूत दिया और भले लोगों की सोहबत पाई तो कुरआन ने भी उसका ज़िक़रे ख़ैर करके उसे वह इज़्ज़त बख़्शी कि इसांनों के लिए क़ाबिले रश्क बना दिया। शेख़ सादी रहमतुल्लाहि अलैहि ने क्या ख़ूब कहा है—

सगे अस्हाबे कहफ़. रोज़े चन्द
पए एकां गिरफ़ते मर्दम शुद।
पिसर नूहे ब अब्दां बनशिस्त
ख़ानदाने नबूतश गुमशुद

7. तर्जुमा—'और किसी चीज़ के लिए यह न कहो कि कल मैं इसको ज़रूर करूंगा, (मगर यह कह लिया करो) यह कि अल्लाह चाहे तो' (18 - 23)

इस आयत में अल्लाह तआला ने यह तालीम दी है कि जब मुस्तक़्बल में किसी काम का इरादा हो तो दावे के साथ यह नहीं कहना चाहिए कि मैं इसको ज़रूर करूंगा, इसलिए कि कौन जानता है कि कल क्या होगा और कहने वाला इस कायनात में मौजूद भी होगा या नहीं, इसलिए इस मामले को अल्लाह के सुपुर्द करते हुए 'इन शाअल्लाह' ज़रूर कहना चाहिए।

8. तर्जुमा—'तुम कहो उम्मीद है मेरा परवरदिगार इससे भी ज़्यादा कामियाबी की राह मुझ पर खोल देगा।' (18 : 24)

इस आयत में इस तरफ़ इशारा है कि बहुत जल्द ऐसा ही मामला तुम को भी पेश आने वाला है, बल्कि वह इससे भी अजीब व ग़रीब होगा, यानी अपना आबाई वतन छोड़ना पड़ेगा। राह में ग़ारे सौर के अन्दर कई दिन तक ठिपे रहोगे। दुश्मन गारे सौर के मुंह पर पहुंच जाने के बावजूद तुमको न पा सकेंगे, तुम ख़ैरियत के साथ मदीना पहुंच जाओगे और वहां तुम पर फ़तह व

कामरानी की ऐसी राहें खोल दी जाएंगी जो इस मामले से कहीं ज़्यादा अजीब व जलील होंगी। यह सूरः मक्की दौर की आखिरी सूरतों में से है, इसलिए इसके उतरने के बहुत थोड़े दिनों के बाद हिजरत का वह शानदार वाक़िया पेश आया, जिसने मुसलमानों की ज़िदंगी के दौर में हैरत में डाल देने वाला इंक़िलाब पैदा कर दिया और बातिल ने हक़ के सामने हथियार डाल दिए।

सबक़ और नतीजे

1. अगर हम को कोई बात अपनी अक्ल के मुताबिक़ अजीब व ग़रीब मालूम हो तो यह ज़रूरी नहीं है कि वह अपनी हक़ीकत के लिहाज़ से भी वाक़ई कोई अजीब बात है। अगर वह अजीब है भी तो हमारे लिए है, न कि कायनात के पैदा करने वाले के लिए, जिसने कि कायनात को पैदा किया और फिर ऐसे मज़बूत निज़ाम पर उसको कायम किया कि अक्ल हैरान है मगर आंख रोज़ाना उसे देखती और दिल हर लम्हा इस हक़ीकत का एतराफ़ करता है कि :

तर्जुमा—‘अल्लाह पर यह बात कुछ भारी नहीं है।’

2. जब शर व फ़साद और जुल्म व सरकशी इस दर्जा बढ़ जाए कि अल्लाह के नेक बन्दों के लिए कहीं पनाह न रहे, तो अगरचे अज़ीमत का दर्जा यही है कि कायनात की रुश्द व हिदायत की खातिर हर किस्म की तक्लीफ़ें वरदाश्त करे और हक़ कलिमे पर पहाड़ की तरह जमा रहे, मगर मख़्लूक़े खुदा से कट कर कोना न पकड़ ले, लेकिन अगर हालात इस दर्जा नज़ाकत अख़्तियार कर लें कि मख़्लूक़ के साथ ताल्लुक़ रखने की शक्ल में जान देनी पड़े या दीने बातिल कुबूल करने पर मजबूर होना पड़े और हालत यह हो जाए—

तर्जुमा—‘अगर वे लोग कहीं तुम्हारी ख़बर पर जाएंगे तो तुमको या तो पत्थरों से मार डालेंगे या तुम को (जबरन) अपने तरीक़े में फेर लेंगे और अगर ऐसा हुआ तो तुम को कभी फ़लाह नसीब न होगी।’ (18 : 20)

तो इस वक़्त रुख़्सत है कि जान की हिफ़ाजत और दीन की ख़िदमत के लिए दुनिया और आलाइशों से कट कर किनाराकशी अख़्तियार कर ले।

गोया यह इज़्तिरारी हालत का एक हंगामी और वक़्ती इलाज है जो सिर्फ़ दीन ईमान की हिफ़ाज़त के लिए किया जा सकता है, लेकिन इस्लाम की निगाह में अपने आपमें कोई महबूब अमल नहीं है और अख़्तियारी तौर पर इस योगियाना ज़िदंगी को आख़्तियार करना रहबानियत है। 'वला रहबानियत फ़िल इस्लाम' (इस्लाम में रहबानियत नहीं है।) और इस्लाम रहबानियत को नापसन्द करता है। ईसाइयों की मज़हबी तारीख़ के पढ़ने से यह मालूम होता है कि शुरू के ज़माने में कुछ सच्चे ईसाइयों को अस्थाबे कहफ़ की तरह के कुछ वाक़िए पेश आए, जिनमें से एक रूम में, एक अन्ताकिया में और शहर अफ़स में पेश आना बताया जाता है, चुनांचे उन्होंने हालात से मजबूर होकर इज़्तिरारी तौर पर इस योगियाना ज़िदंगी को अख़्तियार किया था, मगर बाद में दूसरी बिदअतों की तरह यह अमल भी ईसाई धर्म का बहुत अहम हिस्सा और पसंदीदा अमल गिना जाने लगा और जिस तरह भारत के पुराने धर्म के मुताबिक़ दुनिया के झमेलों से कट कर हिन्दू योगी पहाड़ों की खोह और वीरानों में योग करना मुक़द्दस अमल समझते हैं, उसी तरह ईसाइयों ने भी अख़्तियारी सन्यास को मज़हब के मुक़द्दस कामों में शामिल कर लिया।

लेकिन कुरआन हकीम ने उनके इस अमल के मुताल्लिक़ सफ़ाई के साथ ज़ाहिर कर दिया है कि अल्लाह के नज़दीक अपने आपमें यह अमल कोई पसन्दीदा अमल नहीं है, बल्कि अहले किताब की मज़हबी बिदअतों में से एक बिदअत है।

तर्जुमा—'और राहबाना ज़िदंगी को कि जिसको इन (ईसाइयों) ने दीन में ईजाद कर लिया, हमने उन पर फ़र्ज नहीं किया था, मगर उन्होंने अख़्तियार किया था अल्लाह की रज़ा जूई के लिए, पर उसके हक़ की रियायत न रख सके।' (57-27)

मतलब यह है कि अल्लाह तआला ने उनके लिए यह तरीक़ा दीन के तरीक़ों में से नहीं मुक़रर किया था, बल्कि उन्होंने खुद ही अख़्तियार कर लिया था, मगर बाद में उसको निबाह न सके और रहबानियत के परदे में दुनियादारों से ज़्यादा दुनियातलबी और लालच में फंस गए।

हक़ यह है कि साफ़ और सीधा रास्ता एतदाल का रास्ता है, न इसमें

पेच व ख़म है और न नशेब व फ़राज़। यह राह इफ़रात व तफ़रीत दोनों से जुदा करके असल मंज़िल तक पहुंचा देती है और चूँकि इस्लाम फ़ितरत का दीन है, इसलिए उसने हर मामले में एतदाल ही को पसन्दीदा अमल करार दिया है। उसकी नज़र में जितना दुनिया में लगा रहना बुरा है, उतना ही मख़्लूक़े खुदा से कट कर योगियाना रहबानियत भी मज़मूम (निन्दनीय) है। नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया है, इस उम्मत के लिए रहबानियत 'अल्लाह के रास्ते का जिहाद' है, क्योंकि जिहाद के मैदान के लिए इंसान जब ही क़दम उठाता है कि वह अपने नफ़्स, अपने बाल-बच्चों और हर किस्म की दुन्यवी इंज़रों से बेनियाज़ होकर सिर्फ़ अल्लाह तआला की मर्ज़ी को पूरा करना ॐ ना मक्सद और नस्बुलऐन (निगाह के सामने रहने वाली मंज़िल) बना ले।

3. हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ि० से आयत 'वला तकूलन्नलिशैइन इन्नी फ़ाज़िलुन गदा इल्ला अय्यशा अल्लाहु' (18 : 23-24) के नाज़िल होने के बारे में यह रिवायत बयान की जाती है कि जब मक्का के मुशिरकों ने नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से अस्हाबे कहफ़ के बारे में सवाल किया, तो आपने फ़रमाया कि मैं कल वह्य से मालूम करके इसका जवाब दूंगा, मगर आपको 'इनशा अल्लाह' कहना याद न रहा, इस वजह से पन्द्रह दिन तक वह्य नहीं आयी, तब मुशिरकों ने कानाफूसियां शुरू कर दीं और आपका दिल इस वजह से टूटने लगा।

पन्द्रह दिन के बाद वह्य नाज़िल हुई और उसने वाक़िए की ज़रूरी तफ़सीलों के साथ-साथ यह भी बतलाया कि इंसान जबकि 'कल' को नहीं जानता, तो उसके लिए ज़रूरी है कि जब कल के लिए किसी बात का वायदा करे तो अल्लाह की मर्ज़ी का हवाला ज़रूर दे दिया करे, ताकि यह बात कभी भूलने न पाए कि बन्दा नहीं जानता कि कल क्या होगा, मैं ज़िंदा भी रहूंगा या नहीं और अगर ज़िंदा भी रहा तो वायदे के पूरे होने पर मैं कादिर हो सकूंगा या नहीं।

4. दीन और मिल्लत अल्लाह तआला की साफ़ और सीधी राह का नाम है, इसलिए वह ज़बरदस्ती करने से दिल में नहीं उतरती, बल्कि अपनी सच्ची

रोशनी से अंधे दिलों को रोशन और मुनव्वर करती है। 'ला इकरा-ह फ़िदीन' (दीन के बारे में कोई ज़बरदस्ती नहीं है), मगर इसके खिलाफ बातिल की हमेशा यह कोशिश रहती है कि अल्लाह की मख़्लूक पर ज़बरदस्ती जुल्म और ज़ब्र से अपना असर जमाए और दलील की जगह ज़ब्र से काम ले, लेकिन अल्लाह की मशीयत अंजाम की शक़ल में सच्चाई (दीने हक़) ग़ालिब करती और बातिल को मग़्लूब कर देती है और अंजाम व नतीजा हक़ के हाथ रहता है, मगर चूँकि अल्लाह की पकड़ का क़ानून एक तो काफ़ी मोहलत देता है, इसलिए ज़ालिम क्रौमें जिहालत से उसको अपनी क़ामियाबी समझकर अल्लाह की 'बत्शे शदीद (सख़्त पकड़) से ग़ाफ़िल हो जाती हैं और इसलिए तारीख़ बार-बार अपने सबक़ को दोहराती रहती है।

5. तजुर्बा इस पर गवाह है कि हक़ व सदाक़त की तहरीक और न सिर्फ़ यह, बल्कि हर इक़िलाबी तहरीक जिस दर्जा क्रौम के नवजवानों पर असरअंदाज़ होती है, बड़ी उम्र के लोग क्रौम पर इस तेज़ी के साथ असरअंदाज़ नहीं होते। साइक्लॉजी के माहिर लोग इसकी यह वजह बयान करते हैं कि बड़ी उम्र वालों के दिल व दिमाग़ चूँकि उम्र के बड़े हिस्से में पुराने रस्म व रिवाज़ के आदी हो जाते और सोसाइटी के पुराने निज़ाम से अर्से तक मानूस रह चुके होते हैं और उसकी नस-नस में पुरानी बातें बैठ चुकी होती हैं, इसलिए हर वह तहरीक जो पुराने निज़ाम या घिसी-पीटी रस्मों के खिलाफ़ ज़ाहिर होती है, उनके दिल व दिमाग़ उसके नये असर से पीड़ा और तक्लीफ़ महसूस करते हैं और पुरानी-नई बातों का टकराव उनके लिए बोझ बन जाता है इसलिए वे नए इक़िलाब से मानूस होने की बजाए और ज़्यादा दहशत में पड़ जाते हैं, अलबत्ता इनमें से जो दिल व दिमाग़ जज़्बे के मुक़ाबले में अक्ल को और तास्सुर के मुक़ाबले में दलीलों को रहनुमा बना लेते हैं और हर मामले में नए-पुराने से हट कर मतानत और संजीदगी के साथ उनके फ़ायदे और नुक़सान पर ग़ौर करने के आंदी होते हैं वे इस आम उसूल से अलग हैं और जब भी वे इक़िलाबी तहरीक के लिए ज़बरदस्त मददगार साबित होते हैं, मगर जमाअतों और क्रौमों में आमतौर से उनकी तायदाद कम होती है लेकिन, बड़ी उम्रवाले लोगों के खिलाफ़ चूँकि नवजवानों के दिल न दिमाग़ बड़ी हद तक ग़ैर जानिबदार (निष्पक्ष) होते और पुराने रस्म व रिवाज़ के लिए अभी तक पके

हुए नहीं होते, उन पर नए नक्श बहुत जल्द उभर आते हैं और वे किसी तब्दीली और किसी इक्लिबाब को, सिर्फ इसलिए कि वे नई बातों की दावत दे रहे हैं, वहशत भरी नज़रों से नहीं देखते, बल्कि दिलचस्पी के साथ उसकी तरफ बढ़ते और साफ़ दिल व दिमाग से उस पर गौर करते हैं।

अब यह इक्लिबाबी तहरीक की ज़िम्मेदारी है कि अगर उसमें सच्चाई और हक़तलबी काम कर रही है और जमाअतों और क़ौमों को ग़लत रास्ते से निकाल कर सीधे रास्ते की तरफ़ दावत देती है, तो उसकी तरफ़ तेज़ी के साथ भीड़ की भीड़ बढ़ने वालों और पैरवी करने वालों की ज़िंदगी में चार चांद लग जाते हैं और उनका वजूद इस पूरी दुनिया के लिए रहमत साबित होता है और अगर मामला इसके खिलाफ़ है, तो वह इन तर व ताज़ा और साफ़ दिल व दिमाग़ रखनेवाले नवजवानों को तबाही और बर्बादी के रास्ते पर लगा देती है और उनका वजूद पूरी इंसानियत के लिए मुसीबत और अज़ाब बन जाता है।

सबा और सैले इरम

(लगभग 200ई०)

तम्हीद (प्रस्तावना)

क़ौमों की तरक्की और तनज़्जुली का पस मंज़र (उन्नति-अवनति की पृष्ठभूमि) बख़्त व इत्तिफ़ाक़ (भाग्य और संयोग) पर टिका नहीं होता, बल्कि कुदरत के क़ानून के मुक़रर किए गए उसूल के मुताबिक़ पेश आता है, अलबत्ता कभी ऊरूज व ज़वाल (उन्नति-अवनति) की वजहें इतनी वाज़ेह और साफ़ होती हैं कि आम तौर से ये देखने में आ जाती हैं और या अक्ल की सरसरी तवज्जोह से पहचान ली जाती हैं और कभी उनका वजूद ऐसी वज्हों से होता है जिनका ताल्लुक़ आम वज्हों और वसीलो से अलग होता है, अल्लाह तआला की फ़रमांबरदारी और नाफ़रमानी से जुड़ा होता है, यानी देखने में अगरचे एक क़ौम में, मिसाल के तौर पर वे तमाम हालात और वज्हें पाई जाती हों, जिनसे किसी क़ौम को तरक्की मिलती है, फिर भी वह क़ौम अचानक

हलाकत व बर्बादी की भेंट चढ़ जाती है और इंसानी दुनिया के लिए उसकी हलाकत हैरत में डाल देने वाली बन जाती है, लेकिन जब अल्लाह की ओर से उनकी सरकशी, बगावत और अल्लाह के हुक्मों की बराबर खिलाफवर्जी का परदा चाक हो जाता है और अल्लाह की वह्य, उनके अमल और अमल के बदले की तफ़सील को सबके सामने ले आती है, तब बुद्धि रखने वाले लोग यह यक़ीन कर लेते हैं कि जिस क्रौम की इज्तिमाई ज़िंदगी के ख़ुबसूरत खोल में ऐसी मक्रूह और धिनौनी शक्ल मौजूद थी, तो बेशक उसकी हलाकत व तबाही संयोग की वजह से नहीं, बल्कि अल्लाह के क़ानून व अमल के बदले के ठीक मुताबिक़ हुई है।

सबा और क्रौमे सबा का वह सबक़ भरा हादसा और उन की तरक्कियों का नसीहत भरा वाक़िया, जो नीचे दिया जा रहा है क्रौमों की तरक्की-तबाही के उस दूसरे क़ानून की वजह से ही आया था और तारीख़ के पन्ने इस सच्चाई के गवाह हैं कि वह क्रौम ऐश व इशरत की बुलन्दी पर बिना किसी ख़ौफ़ और ख़तरे के ज़िंदगी बसर कर रही थी और एकदम हलाकत व बर्बादी के गहरे खड्ड में सिर्फ़ संयोग से नहीं गिर गई थी बल्कि दूर-दूर तक पहुँचे हुए बुरे आमाल के बदले में उसको ये बुरे दिन देखने पड़े थे, जो तारीख़ के वाक़ियों में बड़ी अहमयित रखते और क्रौमों के बनने-बिगड़ने की तारीख़ में हज़ारों सबक़ व नसीहत जुटाते हैं।

सबा और क्रौमे सबा

सबा क़हतानी क़बीले की मशहूर शाख़ है, जबकि क़हतान का ताल्लुक़ उम्मे सामिया से है, लेकिन इसमें इख़िलाफ़ है कि वह बनू इस्माईल में से है और अदनानी और क़हतानी एक ही सिलसिला है या यह कि अदनानी तो बनी इस्माईल हैं और क़हतानी उनसे अलग एक पुराना सिलसिला है। अरब के तारीख़दां कहते हैं कि सबा लक़ब है और नाम अम्र या अब्द शम्स है। आज के दौर के तारीख़ वाले इसी को सही समझते हैं और यह भी कहते हैं कि 'सबा' के मतलब में 'तिजारत' के मानी दाख़िल हैं और 'सबा की क्रौम' (क्रौमे सबा), चूँकि तिजारत पेशा क्रौम थी, इसलिए 'सबा' के नाम से मशहूर हुई।

सबा और हुकूमत के तबके

तारीख़दानों के हिसाब से सबा की हुकूमत दो तबकों में बंटी रही है और फिर हर दो तबकों की हुकूमत का ज़माना अलग-अलग दो दौरों में बंटा हुआ है। पहले तबके का पहला दौर लगभग 11 सौ ईसा पूर्व से शुरू हो कर 550 ईसा पूर्व पर ख़त्म होता है। यह इसकी तरक्की का ज़माना है और हज़रत सुलैमान (ﷺ) के ज़माने की मलिका सबा (बिलक्रीस) इसी दौर से ताल्लुक रखती है। पहले तबके का दूसरा दौर 550 ईसा पूर्व से शुरू होकर 115 ईसा पूर्व पर ख़त्म होता है। सैले इरम और सबा का बिखराव इसी दौर से मुताल्लिक है। कुरआन में सूर: दुख़ान और सूर: क़ाफ़ में जिन 'तुब्बज' वालों का ज़िक्र किया गया है उनका ताल्लुक दूसरे तबके के इस दौर से है। मुख़्तसर यह कि लगभग आठवीं सदी ईसा पूर्व में 'सबा' की हुकूमत अरब की शानदार तरक्कीयाफ़्ता हुकूमत थी।

सबा की इमारतें और उनका रहन-सहन

सबा की शानदार इमारतों के तज़्ज़िरे पुराने और नए तारिख़दानों के यहां बहुत ज़्यादा मिलते हैं। कहते हैं कि उनका महल ग़मदान कारीगरी का बेहतरीन नमूना था। (इसके मुताल्लिक बयान अगले पन्नों पर देखें।) यह क़स्र बीस मंज़िलें रखता था और ऊपर की मंज़िल बहुत ही ज़्यादा कीमती आबगीनों (हीरे-जवाहरात) से बनाई गई थी। इसका ज़िक्र हज़रत सुलैमान (ﷺ) के क़िस्से में हो चुका है। इसी तरह और भी बेनज़ीर इमारतें थीं। सबा की हुकूमत की सीमाओं के अन्दर सोने और जवाहरात की खाने थीं, हज़र मौत और यमन का इलाक़ा खुशबूदार चीज़ों के लिए मशहूर था, जबकि अमान और बहरैन के मोती दुनिया में बेमिसाल समझे जाते थे। इसी तरह यमन का साहिल पूरे इलाक़े की (पैदावार के लिए) मंडी था और शाम, मिस्र, यूरोप और हिन्दुस्तान व हब्श के दर्मियान तिजारत के अकेले ठेकेदार 'सबा' ही थे। तौरात में सबा की दौलत क सरवत और उनके तमदुन (संस्कृति) की महानता के बहुत ज़्यादा तज़्ज़िरे मिलते हैं।

सद्दे मआरिब (मआरिब का बांध)

अरब में मुस्तक़िल नदियां नहीं हैं। अक्सर वर्षा के पानी पर गुज़र है और कहीं-कहीं पहाड़ी चश्मे भी हैं। वर्षा का पानी हो या पहाड़ी चश्मों का, तमाम पानी बहकर वादी के रेगिस्तान में सूख कर बर्बाद हो जाता है। क़ौम सब ने इस पानी को काम में लाने और बाग़ों और खेतों को हरा-भरा बनाने के लिए यमन के दूर-दूर तक के इलाक़ों में एक सौ से ज़्यादा बांध बांधे थे और उनकी वजह से पूरा मुल्क सरसब्ज़ व शादाब बना हुआ था। इन्हीं बांधों में से सबसे बड़ा और शानदार बांध 'सद्दे मआरिब' था, जो राजधानी मआरिब में बनाया गया था।

इस सद्द के बारे में पुराने-नये तारीख़दानों और सैर-सपाटा करनेवालों ने जो हालात लिखे हैं, वे यह साबित करते हैं कि सब को इंजिनियरिंग के फ़न और मैथमेटिक्स में बड़ा कमाल हासिल था।

मआरिब के दक्खिन में दाएं-बाएं दो पहाड़ हैं जो अबलक़ पहाड़ के नाम से मशहूर हैं और उनके दर्मियान बड़ी लम्बी-चौड़ी घाटी है जिसका उज़्निया की घाटी कहते हैं। जब पानी बरसता या पहाड़ी चश्मों से बह निकलता, तो घाटी नदी बन जाती। सब ने यह देख कर 800 ई०पूर्व में इन दोनों पहाड़ों के दर्मियान बांध का बांधना शुरू कर दिया और असें तक उसके बनाने का सिलसिला जारी रहा।

अरब के कुछ तारीख़दां कहते हैं कि यह बांध दो वर्ग मील में था और अर्जुल कुरआन के लेखक एक यूरोपीय पर्यटक (सय्याह) अज़माऊ के मज़्मून (लेख) के हवाले से बयान करते हैं कि यह एक सौ फिट लम्बी और पचास फिट चौड़ी दीवार है, जिसका बहुत बड़ा हिस्सा टूट चुका है और तिहाई अब भी बाक़ी है और वे यह भी तहरीर फ़रमाते हैं कि इस सय्याह (पर्यटक) ने उसका बहुत अच्छा-सा नक्शा तैयार करके अपने मज़्मून के साथ छपा है जो फ्रेंच एशियाटिक सोसाइटी के जर्नल में छपा है और जिसको उन्होंने अरज़ुल कुरआन में भी नक़ल किया है।

अरब के तारीख़दां यह भी कहते हैं सब ने उसको इस तरह तामीर

किया था कि पानी को रोकने के बाद मौसमों के इख़िलाफ़ के पेशे नज़र सिंचाई के लिए पानी के ऊपर-नीचे तीन दर्जे कायम कर दिए थे और हर दर्जे में तीस-तीस खिड़कियां रखी थीं, जिनके ज़रिए पानी को खोला और बंद किया जाता था और फिर उनके नीचे एक बहुत बड़ा हौज़ बनाया था। उसके दाएं-बाएं लोहे के दो बड़े-बड़े फाटक थे। हौज़ का पानी जिनके ज़रिए तक्सीम होकर मआरिब के दोनों तरफ़ नहरों, गोलों और जबहों के ज़रिए ज़रूरत के मुताबिक़ काम में आता था। इस शानदार बांध की वजह से लगभग 300 वर्ग मील तक दाएं-बाएं छुहारों के बाग़, मेवों और फलों के बहुत सुन्दर बाग़ और मुर्गज़ार, 'दार चीनी', औफ़ और हर तरह के खुशबूदार पेड़ों के घने बाग़ इतने ज़्यादा हो गए थे कि तमाम इलाक़ा चमनिस्तान और फिरदौस बना हुआ था।

यमन की फ़ितरी खुसूसियतों के लिहाज़ से खुशबुओं, फलों और फूलों के पेड़ों की ज़्यादती मआरिब के बांध की वजह से इसमें शानदार बढ़ौत्तरी और तरक्की, तिजारती कारोबार और खनिज पदार्थों (मादनियात) की ज़्यादती की वजह से सोना, चांदी और जवाहरात की बहुतायत ने क्रौमे सबा में इस दर्जा, ऐशपरस्ती, खुशहाली, और इत्मीनान पैदा कर दिया था कि वे हर वक्त खुशी-खुशी अल्लाह की नेमतों का फ़ायदा उठाते और रात व दिन सुख-वैभव का जीवन जी रहे थे।

और देश के बहारस्तानों और चमनिस्तानों की वजह से जलवायु में इतना ठहराव था कि सबा के लोग मच्छरों, मक्खियों और पिस्सुओं जैसे तक्लीफ़ पहुंचाने वाले कीड़ों से पाक और हिफ़ाज़त में थे। 'जन्नतानि अय्यमीनिंव-व शिमाल०'

(34 : 15)

गरज़ हर क्रिस्म की राहत और ऐश की जिंदगी पर यह और ज़्यादा था कि यमन से शाम तक जिस मशहूर शाहराह (Main Road) पर सबा वालों के तिजारती क्राफ़िलों का आना-जाना था, उसके भी दोनों तरफ़ खुबसूरत बलसान और दारचीनी के खुशबूदार पेड़ों का साया था और करीब-करीब फ़ासले से सफ़र को आरामदेह बनाने के लिए कारवां सराएं बनाई गई थीं जो शाम के इलाक़े तक उनको इस आराम के साथ पहुंचाती थीं कि ठंडे पानी, मेवों और फूलों की ज़्यादती यह भी महसूस नहीं होने देती थी कि वे अपने

वतन में हैं या कठिनाई भरे सफ़र में। यहां तक कि जब खुशबूदार साया और सुकून देने वाली हवा में उनका कारवां इन कारवांसरायों में ठहरता, मेवे और ताज़ा फल खाता और ठंडा-मीठा पानी पीता हुआ हिजाज़ और शाम तक आना-जाना रखता, तो पड़ौसी क़ौमें रशक व हसद से उन पर निगाहें उठातीं और हैरत व ताज्जुब के साथ उनके इस ऐश व इशरत पर दांतों तले उंगलियां दबा लेती थीं, जैसा कि आप उनके ज़माने के तारीख़दानों की जुबान से सुन चुके हैं कि वे किन लफ़्ज़ों में उनकी खुशहाली का तज्क़रा कर रहे हैं और जिसको अल्लाह ने बेहद (उनके लिए) सस्ता कर दिया था।

इन तारीख़ी तफ़्सील के बाद अब हमको कुरआन की इन आयतों को पढ़ना चाहिए जो सबा की इन खुशहालियों का ज़िक्र करते हुए उसको अहलेसबा पर अल्लाह तआला का शानदार इनाम व इकराम ज़ाहिर करती हैं—

तर्जुमा—बेशक अहलेसबा के लिए उनके वतन में अल्लाह की कुदरत की अजीब व ग़रीब निशानी थी। दो बाग़ों का (सिलसिला) दाएं-बाएं और अल्लाह ने उनको यह फ़रमा दिया था, ऐ सबा वालो! अपने परवरदिगार की तरफ़ से बख़्शी हुई रोज़ी खाओ और उसका शुक्र करो, शहर है पाकीज़ा और परवरदिगार है बख़्शने वाला (34 : 12)

कुरआन मजीद की ऊपर की लाइनों को पढ़िए, कुरआन कहता है कि सबा के अपने घर में अल्लाह तआला की बेनज़ीर और अजीब व ग़रीब निशानी मौजूद थी, वह यह कि सैंकड़ों मील तक उनके शहर के दाएं-बाएं मेवों, फलों और खुशबूदार चीज़ों के पेड़ों का घना सिलसिला बाग़ों की शक्ल में मौजूद था। यह अल्लाह तआला के दिए हुए रिज़्क की कुदरती ख़ासियतों के ज़रिए, जो अल्लाह की 'फ़ितरत' के हाथों एतदाल पर रहा, सर्द व खुश्क तबई नश्व व नुमा की शक्ल में ज़ाहिर हुआ और दूसरा पानी पहुंचाने के बेहतर तरीक़े की शक्ल में, जो असल में कायनात के पैदा करने वाले की दी हुई अक्ल और सूझ-बूझ और समझ का नतीजा था, पस अहले सबा का फ़र्ज़ है कि वे इस खुशऐशी और अम्न व सुकून पर जो उनके वतन ही में बे-मेहनत हासिल है, उसके शुक्र गुज़ार बन्दे बनें, अंगर वे इन नेमतों का शुक्र अदा करेंगे और खुदा के रिश्ते को मज़बूत करने के लिए उसकी मर्ज़ी के मताबिक़ ज़िदंगी गुज़ारते

रहेंगे, तो बेशक उन्हें यह समझना चाहिए कि एक ओर उनकी दुनिया की जिंदगी के लिए उनको ऐसा उम्दा और पाक-साफ़ वतन हासिल है और दूसरी ओर उनकी हमेशा की जिंदगी और आखिरत की निजात के लिए उनका परवरदिगार बहुत बख़्शने वाला है।

अहले सबा और अल्लाह की नाफ़रमानी

अहले सबा एक मुद्दत तक तो इस दुनिया की जन्नत को अल्लाह की शानदार अमानत और नेमत ही समझते और इस्लाम का दामन थामे हुए अल्लाह के अहकाम का पूरा करना अपना फ़र्ज समझते रहे, लेकिन खुशहाली, इतिहाई ऐशपरस्ती और हर किस्म की नेमतों के मिल जाने से धीरे-धीरे उनमें भी वही रद्दी अख़्लाक पैदा हो गए, जो उनके पहले की पिछली घमंड में चूर और तकब्बुर वाली क़ौमों में मौजूद थे और यह यहां तक तरक्की करते रहे कि उन्होंने दीने हक़ को भी छोड़-छाड़ दिया और कुफ़र व शिर्क की पिछली जिंदगी को दोबारा अपना लिया। फिर भी रब्बे ग़फ़ूर (बख़्शने वाले पालनहार) ने फ़ौरन पकड़ नहीं की, बल्कि उसकी भारी रहमत ने मोहलत देने के क़ानून से काम लिया और नबियों ने उनको हक़ के रास्ते पर चलने की हिदयत दी और बताया कि इन नेमतों का मतलब यह नहीं है कि तुम दौलत, सरवत, जाह व हशमत के नशे में चूर होकर मस्त हो जाओ और न यह कि अच्छे अख़्लाक को छोड़ बैठो और कुफ़र व शिर्क अख़्तियार करके खुदा के साथ बगावत का एलान कर दो, सोचो, और ग़ौर करो कि यह राह बुरी है और उसका अंजाम बुरा अंजाम है।

मुहम्मद बिन इसहाक़ इब्ने मुनब्बह की रिवायत के ज़रिए कहते हैं कि इस दौरान उनके पास अल्लाह के तेरह नबी रिसालत का हक़ अदा करने के लिए आए, मगर अन्होंने तनिक भी तवज्जोह न दी और अपनी मौजूदा ऐशपरस्ती को हमेशा की विरासत समझ कर शिर्क और कुफ़र की बद मस्तियों में मुब्तला रहे।

आखिर तारीख़ ने खुद को दोहराया और उनका अंजाम भी वही हुआ जो पिछले ज़माने में अल्लाह की नाफ़रमान क़ौमों का हो चुका है।

सैले इरम

चुनांचे अल्लाह तआला ने उन पर दो क्रिस्म का अज़ाब मुसल्लत कर दिया, जिसकी वजह से उनके जन्नत जैसे बाग़ बर्बाद हो गए और उनकी जगह जंगली बेरियों, कांटेदार पेड़ और पीलू के पेड़ उगकर यह गवाही देने और इब्रत की कहानी सुनाने लगे कि अल्लाह की लगातार नाफ़रमानी और सरकशी करने वाली क़ौमों का यह अंजाम होता है।

पहली सज़ा

हुआ यह कि जिसकी तामीर पर इनको बहुत नाज़ था और जिसकी बदौलत उनकी राजधानी के दोनों तरफ़ तीन सौ वर्ग मील तक ख़ूबसूरत और हसीन बाग़ और सरसब्ज़ व शादाब खेतों और फ़स्तों से चमन गुलज़ार बना हुआ था, वह खुदा के हुक्म से टूट गया और अचानक उसका पानी सैलाब बना हुआ वादी में फैल गया और मआरिब और ज़मीन के उन तमाम हिस्सों पर जिनमें फ़रहत पहुंचाने वाले बाग़ थे, छा गया और उन सबको डुबा करके बर्बाद कर डाला और जब पानी धीरे-धीरे सूख गया तो उस पूरे इलाक़े में बाग़ों की जन्नत की जगह पहाड़ों के दोनों किनारों से वादी के दोनों तरफ़ झाऊ के पेड़ों के झुंड और जंगली बेरों के झुंड और उन पीलू के पेड़ों ने ले ली, जिन का फल बद मज़ा, और कसेलापन लिए हुए होता है।

और खुदा के इस अज़ाब को अहले मआरिब और क़ौमे सबा की कोई ताक़त न रोक सकी और बांध बांधने में इंजिनियरिंग और मैथेमेटिक्स के फ़न की जिस महारत का जो सबूत उन्होंने दिया था वह उसके टूटने के वक़्त सब बेकार होकर रह गया और अहले सबाके लिए इसके अलावा कोई रास्ता बाक़ी न रहा कि अपने प्यारे वतन और बड़े शहर मआरिब और उसके पड़ोस को छोड़कर बिखर जाएं।

कुरआन ने इसी सबक़ भरे वाक़िए को बयान करके खुली निगाह वाले और जागते दिल रखने वाले इंसान को नसीहत का यह सबक सुनाया है—

तर्जुमा— 'फिर उन्होंने (क़ौमे सबा ने) उन पैग़म्बरों की नसीहतों से मुंह

फेर लिया, पस हमने उन पर बांध तोड़ने का सैलाब भेज दिया और उनके दो (उम्दा) बागों के बदले दो ऐसे बाग उगा दिए, जो बद मज़ा फलों, झाऊ और कुछ बेरी के पेड़ों के झुंड थे, यह हमने उनकी नाशुकगुजारी की सज़ा दी और हम नाशुक क़ौम ही को सज़ा दिया करते हैं। (34 : 16 - 17)

गौर कीजिए यह सैलाब ज़ाहिरी अस्बाब से किस तरह आया? क्या इसलिए कि 'मआरिब का बांध' पुराना टूट-फूट का शिकार हो गया था? नहीं, क्योंकि अगर ऐसा होता तो जिस क्रिस्म के इंजिनियरिंग के माहिरों ने उसको बनवाया था, सब में उसकी उस वक़्त भी कमी न थी और वे इसके अलावा देश के अलग-अलग हिस्सों में सैंकड़ों बांध बनाते रहते थे, फिर क्या वे उसकी टूट फूट और पुरानेपन का इतना इतिज़ाम भी नहीं कर सकते थे कि अगर उसको अपनी तबई उम्र पर टूटना ही है तो पानी के ज़ोर को इस तरह कम कर दिया जाए या इसके लिए तामीर में ऐसे इज़ाफ़े कर दिए जाएं कि जिससे यह अचानक टूटकर इस भारी मुसीबत की वजह न बन सकता। फिर यह सैलाब क्यों आया? क्या इसलिए कि इस हकीक़त के जान लेने के वावजूद कि यह बांध बहुत जल्द टूट-फूट कर इस भारी तबाही की वजह बनने वाला है, उन्होंने काहिली और सुस्ती से इसकी परवाह नहीं की, तो तारीख की रोशनी में यह भी ग़लत है, इसलिए कि सब हुकूमत के बारे में जो वक़्त की तारीख़ी गवाहियां मिली हैं, वे यह ज़ाहिर करती हैं कि वे इस बांध की मज़बूती, और हर क्रिस्म के हिफ़ाज़ती मामलों के बारे में बहुत मुतमइन थे और बराबर उससे सिंचाई का काम ले रहे थे।

सच तो यह है कि पुरानी और नई तारीख़ें इस हौलनाक तारीख़ी वाक़िए की वजहों के बारे में बिल्कुल ही ख़ामोश हैं और इसलिए ख़ामोश हैं कि सब पर यह अज़ाब, शक नहीं कि अचानक और उम्पीद के बिल्कुल खिलाफ़ आया, जिससे वे खुद भी हैरान व सरासीमा हो कर रह गए और वे इसके सिवा और कुछ न समझ सके कि यह जो कुछ हुआ, अचानक ग़ैबी हाथ से हुआ, क्योंकि बांध की मज़बूती और इतिज़ाम में देखने में कोई ख़राबी नहीं थी, फिर यकायक बांध का टूट जाना और पानी का भारी बाढ़ की शक्ल में फैल कर, तमाम जन्नतनिशां इलाक़े को तबाह व बर्बाद न कर देना अल्लाह के अज़ाब

के अलावा और क्या हो सकता है। उन्होंने जब जायज़ और पाक खुशऐशी को अय्याशी और बद-अतवारी में बदल दिया, अल्लाह की दी हुई नेमतों का शुक्र अदा करने के बजाए घमंड और ग़ुरूर के साथ नेमतों की नाक़द्री की, नबियों और पैग़म्बरों के बार-बार रुशद व हिदायत पहुंचाने के बावजूद शिर्क और कुफ़र पर इसरार किया तो अचानक अल्लाह का अज़ाब उनको आकर तबाह व बर्बाद न करता तो आर क्या होता, जैसा कि ऊपर की आयतों में अल्लाह का इशार्द है।

दूसरी सज़ा

मआरिब के 'पानी के बांध' के टूट जाने पर इन बस्तियों के बाशिंदे बिखर कर दूसरे इलाक़ों में चले गए और कुछ यमन के ही दूसरे इलाक़ों में जा बसे, मगर अल्लाह के अज़ाब की तक्मील अभी बाक़ी थी, इसलिए कि सब ने सिर्फ़ ग़ुरूर, सरकशी और कुफ़र और शिर्क ही के ज़रिए अल्लाह की नेमतों को नहीं ठुकराया था, बल्कि उनको यमन से शाम तक राहत पहुंचाने वाली आबादियों और करवांसरायों की वजह से वह सफ़र भी नापसंद था जिसमें उनको यह महसूस नहीं होता था कि सफ़र की परेशानियां क्या होती हैं और पानी की तक्लीफ़ और खाने-पीने की तक्लीफ़ किस चीज़ का नाम है और क़दम-क़दम पर मीलों तक दोनों तरफ़ खुशबुओं और फलों के बाग़ों की वजह से गर्मी और तपन की पीड़ा को भी नहीं जानते थे।

उन्होंने इन नेमतों पर अल्लाह का शुक्र अदा करने के बजाए बनी इसराईल की तरह नाक-भों चढ़ाकर यह कहना शुरू कर दिया कि यह भी कोई ज़िंदगी है कि इसांन सफ़र के इरादे से घर से निकले तो यह भी न मालूम हो कि सफ़र की हालत मे है या अपने घर में। वे भी क्या खुशनसीब इंसान हैं जो भारी हिम्मत के साथ सफ़र की हर क्रिस्म की तक्लीफ़ उठाते, पानी और खाने-पीने के लिए तक्लीफ़ें सहते और राहत व आराम के सामानों के न मिल पाने की वजह से सफ़र की लज़ज़त का मज़ा चखते हैं। ऐ काश! हमारा सफ़र भी ऐसा हो जाए कि हम यह महसूस करने लगे कि वतन से किसी दूर की जगह का सफ़र करने निकले हैं और मंज़िल की दूरी की तक्लीफ़ सहते हुए।

सफ़र और ग़ैर-सफ़र में फ़र्क़ कर सकें।

बदबख़्त और नाशुक्के इंसानों की यह नाशुक्की थी, जिसकी तमन्नाओं और आरज़ूओं से बेचैन होकर खुदा के अज़ाब को दावत दे रहे थे और उसके बुरे अंजाम से ग़ाफ़िल हो चुके थे।

सबा ने जब इस तरह नेमत की नाशुक्की को आख़िर तक पहुंचा दिया तो अब अल्लाह तआला ने भी उनको दूसरी सज़ा यह दी कि यमन से शाम तक उनकी तमाम आबादियों को वीरान कर दिया, जो नज़दीक-नज़दीक बराबर छोटे-छोटे कस्बों, गांवों, करवां सरायों और तिजारती मंडियों की शक्ल में आबाद थीं और उनके राहत और आराम में क़िफ़ालत करती थीं और सफ़र की हर क़िस्म की परेशानियों से उनको बचाए रखती थीं और इस तरह पूरे इलाक़े में ख़ाक़ उड़ने लगी और यमन से शाम तक नव आबादियों का यह सिलसिला वीराने में तब्दील होकर रह गया।

चुनांचे कुरआन मजीद की ये आयतें इसी सच्चाई का एलान करती हैं—

तर्जुमा—‘हमने उनके (मुल्क) और बरकत वाली आबादियों (शाम) के दर्मियान बहुत सी खुली आबादियां क़ायम कर दी थीं और उनमें सफ़र की मंज़िलें (कारवां सराए) मुक़रर की थीं और कह दिया था, चलो इन आबादियों के दर्मियान दिन-रात बिना किसी डर और ख़तरे के, मगर उन्होंने कहा, ऐ हमारे परवरदिगार! हमारे सफ़रों (मंज़िलों) के दर्मियान दूरी कर दे और यह कह कर उन्होंने खुद अपनी जानों पर जुल्म किया। बस हमने उनको कहानी बना दिया और उनको पारा-पारा कर दिया। बेशक़ इस (वाक़िए) में इबरात (सवक़) की निशानियां हैं सब्र करने वालों और शुक्र गुज़ारों के लिए!’

(सबा 18 : 19)

तारीख़दां कहते हैं कि सबा के मुक़ाबले में बहुत दिनों से रूमियों की यह ख़्वाहिश थी कि किसी तरह वे भी हिन्दुस्तान और अफ़रीक़ा के साथ अरबों की तरह सीधे-सीधे तिजारत करके ज़्यादा से ज़्यादा फ़ायदा उठाएं, मगर अरब किसी तरह इसका मौक़ा नहीं देते थे और तिजारती साहिलों पर क़ब्ज़ा जमाए हुए थे, लेकिन पहली सदी ईसा पूर्व में रूमियों ने एक के बाद एक, मिस्र व शाम पर क़ब्ज़ा कर लिया और अब उनको मौक़ा मिला कि वे

अपने मंसूबे को पूरा करें, लेकिन तिजारती मर्कज़ों के लिए जो शाहराह 'इमामे मुवीन' अरबों ने बना रखी थी, वह खुश्की का रास्ता था और गुज़रने वालों के लिए अरबों से वास्ता पड़ना लाज़िमी था और रूमी इन पहाड़ी राहों को पार करने में वैसे भी पेशानी महसूस करते थे, इसलिए उन्होंने अरबों के डर से बचे रहने के लिए यह किया कि हिन्दुस्तान और अफ़रीका की तिजारत के खुश्की के रास्ते को समुद्री रास्ते में तब्दील कर दिया और लाल सागर में नावों के ज़रिए तमाम माल मिस्र और शाम के बन्दरगाह पर उतारने लगे। नतीजा यह निकला कि तिजारत के इस नए तरीक़े ने यमन से शाम तक सबा की तमाम नव-आबादियों को बर्बाद कर दिया और वहां कुछ ही दिनों में खाक उड़ने लगी और सबा का यह ख़ानदान बिखर कर रह गया। किसी ने शाम की राह ली तो किसी ने ओमान की और किसी ने इराक़ का रुख़ किया तो किसी ने हिजाज़ की ओर, कोई नज्द पहुंचा तो किसी ने बहरैन की राह अख़्तियार की और अहलेसबा की हुकूमत का शीराज़ा इस तरह बिखर गया कि वे सच में एक कहानी बन कर रह गए और 'फ़-जअलना हुम अहादीस' और 'मज़ज़क़नाहुम कुल-ल मुमज़ज़क़' का सही नक्शा आखों के सामने आ गया, गोया—

देखो मुझे जो दीदा-ए-इबरत निगाह हो
मेरी सुनो जो गोशे नसीहत नयोश है।

सैले इरम का फैलाव

यह बात भी खुल कर बताने की है कि सैले इरम का यह सानहा और हादसा सारे यमन पर पेश नहीं आया, बल्कि यमन की राजधानी मआरिब और उसके आस-पास के इलाक़ों में सैंकड़ों मील तक इसकी तबाही मचाने वाला असर पड़ा और उस वक़्त सिर्फ़ वही क़बीले वतन छोड़ने पर मजबूर हुए जो इन जगहों पर आबाद थे, अलबत्ता जब दूसरा अज़ाब आया तो पूरे यमन पर असर पड़ा और सबा के बाक़ी क़बीले भी बिखर गए और सबा की हुकूमत का ख़त्मा हो गया।

सबा की मज़हबी हालत

कुरआन ने सूरः सबा में सबा की मज़हबी हालत पर जो रोशनी डाली है, उससे यह मालूम होता है कि सबा के ऊंचे तबके का मज़हब सूरज परस्ती (सितारा परस्ती) रहा है या सच्ची यहूदियत (यहूदी धर्म यानी मूसा عليه السلام का धर्म यानी यहूदी धर्म) जबकि दूसरे तबके में सनमपरस्ती कौमी मज़हब रहा या ईसाई धर्म, कभी-कभी उनमें नज़र आ जाता है।

कुछ तफ़्सीरी नुक्ते

1. मआरिब और यमन का यह इलाका जिस की तफ़्सील ऊपर गुज़र चुकी है, दुनिया में फिरदौस (जन्नत) की नज़ीर (मिसाल) बन गया था और उनके मुल्क की यह सूरते हाल अल्लाह तआला के खास करम पर ही बनी थी इसीलिए कुरआन ने इसको अल्लाह की निशानी कहा है—

तर्जुमा—बिला शुबहा अहले सबा के लिए उनके वतन में अल्लाह की कुदरत की अजीब व ग़रीब निशानी थी, दो बाग़ों का सिलसिला—दाहेने और वाएं'।

तर्जुमा—‘शहर है पाक और परवरदिगार है बख़्शने वाला’, और उसके वाद है—

तर्जुमा—‘पस उन्होंने अल्लाह से मुंह फेरा’

इन दोनों जुम्लों से यह मालूम होता है कि सबा पहले मुसलमान थे, मगर धीरे-धीरे उन्होंने कुफ़र अख़्तियार किया, जैसा कि इस आयत से भी ज़ाहिर होता है। ‘ज़ालि-क जज़ैनाहुम’ (यह है जिसका बदला हमने उन्हें दिया।)

(34 : 19)

हज़रत सुलैमान عليه السلام के क़िस्से में यह बयान किया जा चुका है कि सबा ने 950 ई० पू० में इस्लाम कुबूल किया। सदियों तक उन्होंने इस अमानत को सीने से लगाए रखा, लेकिन पिछली क़ौमों की तरह उन्होंने मुंह फेरना शुरू कर दिया, तब अल्लाह के पैग़म्बरों ने खुद आकर या अपने नायबों के ज़रिए उनको हिदायत की तरफ़ बुलाया, मगर उन्होंने भी बनी इसराईल की तरह अल्लाह

की नेमतों को ठुकराया, तब हज़रत ईसा عليه السلام से एक सदी पहले अल्लाह की ओर से सैले इरम की तबाही का अज़ाब आया और उसने सबा के खानदान के टुकड़े-टुकड़े कर दिए।

नतीजे और सबक़

अल्लाह ने कुरआन मजीद में वाज़ व नसीहत के चार तरीक़े बयान फ़रमाए हैं—

1. **तज़्कीर बिआलाइल्लाह-** (अल्लाह की नेमतों से याद देहानी) यानी अल्लाह तआला ने अपने बन्दों पर जिन नेमतों की अरज़ानी फ़रमाई है उनको याद करके अल्लाह के हुक्मों की तरफ़ मुतवज्जह करना। सूर: आराफ़ में इर्शाद है—

तर्जुमा—‘पस अल्लाह की नेमतों को याद करो और ज़मीन में फ़साद करते मत फ़िरो।’ (9 : 94)

2. **तज़्कीर बिअय्यामिल्लाह-** अल्लाह के दिनों या ज़मानों से याद देहानी, यानी उन पिछली क़ौमों के हालात बयान करके नसीहत व इबरत दिलाना, जिन्होंने अल्लाह की इताअत व फ़रमांबरदारी की वजह से कामियाबी और दोनों दुनिया की फ़लाह हासिल की और या सरकशी और ढिठाई इतिहा पर पहुंच कर हलाकत व तबाही मोल ली और अल्लाह के अज़ाब को अपने लिए ज़रूरी कर दिया या दूसरे लफ़्ज़ों में क़ौमों की तरक्की व पस्ती को पेश करके इबरत का सामान मुहय्या करना। सूर: इब्राहीम में है—

तर्जुमा—‘और ऐ पैग़म्बर! इनको नसीहत कीजिए क़ौमों के ऊरुज व ज़वाल (तरक्की व पस्ती) को याद दिला कर।’ (15 : 5)

3. **तज़्कीर बिमा बादल मौत-** यानी बरज़ख़ और क्रियामत के हालात सुना कर इबरत दिलाना, सूर: कहफ़ में है—

तर्जुमा—‘पस कुरआन के ज़रिए नसीहत करो उस शख्स को जो अल्लाह की धमकी यानी मौत के बाद के अज़ाब से डरता है’ (50-45)

पस क़ौमे सबा का यह वाक़िया ‘तज़्किरा बि अय्यामिल्लाह’ से ताल्लुक़ रखता है और हमको यह सबक़ देता है कि जब कोई क़ौम ऐश व राहत और

सरवत व ताक़त के घमंड में आकर नाफ़रमानी और सरकशी पर उतर आती है, तो पहले तो अल्लाह तआला उसको मोहलत देता और उसको सीधे रास्ते पर लाने के लिए अपनी हुज्जत को अखिरी हद तक पूरा करता है। अगर इस पर भी वह हक़ कुबूल करने की दुश्मन रहती और बगावत व सरकशी के उस ऊंची कसौटी पर पहुंच जाती है कि उस को अल्लाह की नेमतें और दी हुई राहतें भी नागवार गुज़रने लगती हैं और वह उनको ठुकराने लगती है तो पकड़ का क़ानून-अपने फौलादी पंजे आगे बढ़ाता और ऐसी बदबख़्त क़ौम को पारा-पारा कर देता और हलाकत और बरबादी को आसमान पर उतार देता है और उनकी सारी शान दुनिया के सामने एक कहानी बन कर रह जाती है—

‘कुल सीरु फ़िल अर्जि फ़न्ज़ुरु कै-फ़ का-न आक्रिबतुल मुज्जिमीन

(19 : 69)

तर्जुमा : ‘तो कह दे, फ़िरो मुल्क में, तो देखो कैसा हुआ अंजाम गुनाहगारों का।’

अस्हाबुल उख़दूद या क़ौमे तुब्बअ

उख़दूद

‘ख़द’ या ‘उख़दूद’ के मानी गढ़े, खाई और खंदक के हैं। यह एक वचन है और इसका बहुवचन ‘अखादीद’ आता है, चूंकि बयान किए गए वाक़िए में काफ़िर बादशाह और उसके अमीरों व सरदारों ने खंदकें और गढ़े खुदवा कर और उनके अन्दर आग धधकवाकर ईसाई मोमिनों को उनमें डाल कर ज़िंदा जला दिया था। इस निस्वत से इन काफ़िरों को ‘अस्हाबुल उख़दूद’ कहा जाता है।

कुरआन और अस्हाबे उख़दूद

सूरः बुरूज में अस्हाबुल उख़दूद का वाक़िया बयान करने के मोज़जे भरे तरीक़े के साथ इस तरह ज़िक्र किया गया है—

तर्जुमा— 'शुरू अल्लाह के नाम से जो बेहद मेहरबान और निहायत रहम वाला है। क़सम है आसमान की जिसमें बुर्ज है और उस दिन की जिसका वायदा है और उस दिन की जो हाज़िर होता है और उस दिन की जिसके पास हाज़िर होते हैं, मारे गए खाइयां खोदने वाले, आग है बहुत ईंधन वाली जब वे उस पर बैठे और जो कुछ वे करते थे मुसलमानों के साथ, अपनी आंखों से देखते थे और उनसे बदला नहीं लेते थे, मगर सिर्फ़ इस बात का कि वे यक़ीन लाए अल्लाह पर जो ज़बरदस्त है, तारीफ़ों का हक़दार है, जिसका राज है आसमानों में और ज़मीन में और अल्लाह के सामने है हर चीज़, बेशक! जो, ईमान से बिचलाए ईमान वाले मर्दों और औरतों को, फिर तौबा न करे तो उनके लिए अज़ाब है दोज़ख़ का और उनके लिए अज़ाब है आग में जलने का। बेशक जो लोग यक़ीन लाए (अल्लाह पर) और उन्होंने भलाइयाँ कीं, उनके लिए जन्नत है, जिनके नीचे नहरें बहती हैं। यह है बहुत बड़ी कामियाबी।' (85 : 1-11)

वाक़िए की तफ़्सील

तफ़्सीर लिखने वालों ने इन आयतों की तफ़्सीर में कई वाक़िए नक़ल किए हैं। हज़रत मौलाना हिफ़ज़ुर्रमान स्योहारवी रह० ने इन तमाम रिवायतों पर तफ़्सील से बहस की है और इस नतीजे पर पहुंचे हैं कि मशहूर ताबई मुक़ातिल की इबारत के मुताबिक़ कुरआन में जिस वाक़िए का ज़िक्र किया गया है, वह नजरान और जूनवास से ताल्लुक़ रखता है और तहक़ीक़ करने वालों का रुझान भी इसी ओर है।

यह वाक़िया साहबे सीरत मुहम्मद बिन इसहाक़ ने मुहम्मद बिन काब रह० की सनदी सिलसिले में नक़ल किया है, वह फ़रमाते हैं, कि शाम और हिजाज़ के दर्मियान जो बस्ती नजरान के नाम से मशहूर है, उसके बाशिंदे बुत-परस्त और मुशिरक थे और उनके करीब की आबादी में एक साहिर (जादूगर) रहता और वह नजरान के लड़कों को सहर (जादू) की तालीम दिया करता था। कुछ दिनों के बाद नजरान और जादूगर की बस्ती के दर्मियान एक राहिब (ईसाई सन्यासी) ने आकर अपना ख़ेमा डाल लिया, यानी वहीं ठहर गया।

वहब बिन मुनब्बह कहते हैं कि उसका नाम मैमून था। नजरान के जो लड़के जादूगर से जादूगरी की तालीम हासिल करते थे, उन में एक लड़का अब्दुल्लाह बिन तामिर भी था। एक दिन अब्दुल्लाह राहिब के खेमे में चला गया। राहिब नमाज़ में लगा हुआ था। अब्दुल्लाह को राहिब की नमाज़ और इबादत का तरीका बहुत पसन्द आया और उसके पास आने-जाने लगा और उससे उसके दीन को सीखना शुरू कर दिया और ईमान ले आया और राहिब से सच्चे मसीही धर्म की तालीम हासिल करके धीरे-धीरे उस दीन का आलिम बन गया। अब उसने राहिब से यह इसरार (आग्रह) किया कि मुझको इस्मे आजम के बारे में कुछ बताइए, मगर राहिब यह कह कर टालता रहा कि भतीजे! मुझे यह डर है कि तू उसको बरदाश्त न कर सकेगा, क्योंकि तुझको कमज़ोर पाता हूं। लड़का खामोश हो गया।

यहां तो यह सिलसिला जारी था और उधर अब्दुल्लाह का बाप तामिर यह समझता रहा कि मेरा लड़का साहिर से डर खा रहा है। कुछ दिन खामोश रह कर लड़के से सब्र न हो सका और उसने यक़ीन कर लिया कि राहिब बुख़ल कर रहा है और बताना नहीं चाहता। यह सोच कर उसने तीरों का मुट्ठा लिया और हर एक तीर पर खुदा का एक-एक नाम लिखा और फिर आग रोशन की और एक-एक तीर को उसमें डालना शुरू किया, तीर धीरे-धीरे आग की भेंट चढ़ते रहे और जलते रहे, मगर एक तीर जब आग में पहुंचा तो फ़ौरन उछलकर दूर जा गिरा। लड़का समझ गया, इस पर इस्मे ज़ात खुदा हुआ है और यही इस्मे आजम है और इसके बाद राहिब को सारा क़िस्सा कह सुनाया। राहिब ने सुना तो अब्दुल्लाह को नसीहत की कि इसको हिफ़ाज़त के साथ अपने पास रखना।

अब्दुल्लाह ने उसको दीने हक़ की तब्लीग़ का ज़रिया बना लिया। वह जिस किसी को मरीज़ पाता तो उससे यह कहता कि अगर तू एक अल्लाह पर ईमान ले आए और मोमिन (ईमान वाला) बन जाए तो मैं तेरे लिए अल्लाह तआला से दुआ करूं कि तुझको तन्दुरुस्त कर दे और जब वह शख्स सच्चेदिल से ईमान ले आता तो यह दुआ करता और मरीज़ चंगा होता।

धीरे-धीरे यह बात नजरान के बादशाह तक पहुंची। उसने लड़के को

बुलाया और कहा कि तूने मेरे राज में फ़साद मचाया और मेरे और मेरे बाप-दादा के दीन की मुखालफ़त शुरू कर दी, इसलिए अब तेरी सज़ा यह है कि तुझको क़त्ल कर दिया जाए।

लड़का कहने लगा, बादशाह! मेरा क़त्ल तेरी कुदरत से बाहर है।

बादशाह ने ग़ज़बनाक होकर हुक्म दिया कि इसको पहाड़ की चोटी से गिरा दो। सरकारी आदमियों ने उसको पहाड़ की चोटी से गिरा दिया, मगर अल्लाह की कुदरत ने उसको सही सालिम रखा और वह बादशाह के पास वापस आ गया। अब बादशाह ने हुक्म दिया कि इसको नदी में ले जाकर डूबो दो, लेकिन वह दरिया में फेंक दिए जाने के बावजूद न डूबा और उसको ज़रा भी कोई तकलीफ़ न पहुंची, तब लड़के ने बादशाह से कहा कि अगर तू वाक़ई मुझ को क़त्ल कर देना चाहता है तो उसकी सिर्फ़ एक ही शक़ल है और वह यह कि तू एक अल्लाह का नाम लेकर मुझ पर हमला कर, तो मैं मारा जा सकता हूं। बादशाह ने एक अल्लाह का नाम लेकर लड़के पर हमला किया तो लड़के की जान चली गई, मगर साथ ही अल्लाह के अज़ाब ने बादशाह को भी उसी जगह हलाक कर दिया।

शहर वालों ने जब लड़के और बादशाह के दर्मियान जंग का यह नज़ारा देखा, तो वे सब सच्चे दिल से एक अल्लाह पर ईमान ले आए और मुसलमान हो गए और उन्होंने सच्चाई के साथ हज़रत ईसा ~~अलैहि सलाम~~ और इंजील की पैरवी को अपना दीन बना लिया, चुनांचे नजरान में ईसाई धर्म के हकीक़ी और सच्चे दीन की बुनियाद इसी वाक़िए से पड़ी।

नजरान में ईसाई धर्म का फैलाव और लड़के और राहिब के वाक़िए का तज़्करा यहूदी मज़हब के मानने वाले शाह यमन ज़ूनवास तक भी पहुंचा। उसने सुना तो बड़े गुस्से में आ गया और भारी फ़ौज लेकर नजरान पहुंचा और तमाम शहर में मुनादी करा दी कि कोई आदमी ईसाई धर्म पर क़ायम नहीं रह सकता, या तो वह यहूदी धर्म कुबूल कर ले, वरना मरने के लिए तैयार हो जाए।

नजरान के लोगों के दिलों में ईसाई धर्म इतना घर कर चुका था कि उन्होंने मर जाना कुबूल किया, मगर ईसाई धर्म से मुंह न मोड़ा। ज़ूनवास ने

यह देखा तो सख्त गुस्से में आ गया और हुक्म दिया कि शहर की गलियों और शाहराहों में खंदकें और खाइयां खोदी जाएं और उनमें आग धधकाई जाए। जब फौजियों ने इसकी तामील कर दी, तो उसने शहरियों को जमा करके हुक्म दिया कि जो आदमी यहूदी धर्म कुबूल करने से इंकार करता जाए मर्द हो या औरत या बच्चा, उसको जिंदा आग में डाल दो। चुनांचे इस हुक्म के मुताबिक बीस हजार के करीब मज़नूम इसांनों को शहीद होना पड़ा। यही वह वाकिया है, जिसका जिक्र अल्लाह ने सूर: बुरूज में किया है।

कुति-ल असहाबुल उख्दूदि० अन-नारि जातिल वकुद

क्रौम तुब्बअ

तुब्बअ की हक़ीक़त

तुब्बअ असल में हबशी लफ़्ज़ है या असल सामी, इसके बारे में अरब तारीख़दानों की राय यह है कि यह अरबी (सामी) लफ़्ज़ है और तुब्बअ से मतबूअ (सरदार) के माने समझे जाते हैं और नए तहक़ीक़ वाले यह कहते हैं कि यह लफ़्ज़ असल में हबशी भाषा का है और इसके मानी है काहिर व ग़ालिब यानी अरबी में 'सुलतान' और हबशी भाषा में तुब्बअ एक ही मानी वाले लफ़्ज़ (पर्यायवाची) हैं।

पिछले पन्नों में बयान किए गए वाक़िए को नक़ल करने के बाद इब्ने इसहाक़ कहता है कि ज़ूनवास यमन का मशहूर बादशाह है। उसका असल नाम ज़रआ था, मगर सिंहासन पर बैठने के बाद यूसुफ़ ज़ूनवास के नाम से मशहूर हुआ। उसके बाप का नाम तुब्बान असद था और अबूक़र्ब कुन्नियत रखता था। यमन के इन बादशाहों का लक़ब 'तुब्बअ' था। इसलिए तारीख़ की किताबों में यह ख़ानदान तबाए यमन कहलाता है। अबू कुरैब वह पहला तुब्बअ है, जिसने बुतपरस्ती छोड़कर यहूदी धर्म कुबूल कर लिया था। उसने मदीना पर हमला करके उस पर क़ब्ज़ा कर लिया था, मगर बनी कुरैज़ा के दो यहूदी उलेमा के कहने पर सच्चे दीन मूसवी को कुबूल करके मदीना से वापस

चला आया और फिर मक्का मुअज्जमा पहुंच कर काबे पर ग़िलाफ़ चढ़ाया और दोनों यहूदी उलेमा को यमन साथ ले आया। उन्होंने यमन में यहूदी धर्म की तब्लीग़ (प्रचार) की और धीरे-धीरे यमन वालों ने यहूदियत (यहूदी धर्म) अपना लिया।

कुरआन और क़ौम तुब्बअ

कुरआन ने तुब्बअ का ज़िक्र दो जगहों पर सूर: क़ाफ़ और सूर: दुख़ान में किया है। सूर: दुख़ान में मुख़्तसर तौर पर उनकी मादी ताक़त व कूवत का ज़िक्र करके यह बताया गया है कि जब अल्लाह की नाफ़रमानी करके वे हलाकत से न बचे, तो कुरैश, जो उनके मुक़ाबले में कुछ भी नहीं थे, सरकशी करके कैसे बच सकते थे और सूर: क़ाफ़ में सिर्फ़ मुज़िम क़ौमों की फ़ेहरिस्त में उनका ज़िक्र किया गया है।

तर्जुमा—ये (कुरैश) बेहतर (मज़बूत और ताक़तवर) हैं या तुब्बअ की क़ौम और जो इनसे पहले गुज़र गई, हमने उनको इसलिए हलाक कर दिया कि वे मुज़िम थे। (44 : 37)

तर्जुमा—‘इन (मक्का के मुशिरकों) से पहले नूह की क़ौम ने, अस्हाबुर्स्स ने, समूद, आद, फ़िरऔन, इख़्वाने लूत, अस्हाबुल ऐका और क़ौमे तुब्बअ ने (अल्लाह के पैग़म्बरों को) झुठलाया है।’ (50 : 12-14)

इन्ने इसहाक़ के बयान के मुताबिक़ यमन के यहूदी बादशाहों का लक़ब तुब्बअ वाज़ेह होता है, इस तरह बादशाह ज़ूनवास का लक़ब, जिसका ज़िक्र ‘अस्हाबुलउख़दूद’ के सिलसिले में आ चुका है ‘तुब्बअ’ हुआ। मुख़्तसर यह कि ‘अस्हाबुलउख़दूद’ का दूसरा नाम क़ौमे तुब्बअ हुआ, जिसका ज़िक्र ऊपर की आयतों में किया गया है। वल्लाहु आलम।

सबक़ और नसीहत

1. जब इंसान इफ़िरादी और इज्तिमाई ज़िदंगी में अल्लाह के ख़ौफ़ से बेपरवाह हो जाता है और उसकी दौलत व हुकूमत क नशा किब्र व ग़रूर को उस बुलन्दी पर पहुंचा देता है जिस पर चढ़ कर उसकी निगाह में तमाम

चला आया और फिर मक्का मुअज़्जमा पहुंच कर काबे पर ग़िलाफ़ चढ़ाया और दोनों यहूदी उलेमा को यमन साथ ले आया। उन्होंने यमन में यहूदी धर्म की तब्लीग़ (प्रचार) की और धीरे-धीरे यमन वालों ने यहूदियत (यहूदी धर्म) अपना लिया।

कुरआन और क़ौम तुब्बअ

कुरआन ने तुब्बअ का ज़िक्र दो जगहों पर सूर: काफ़ और सूर: दुख़ान में किया है। सूर: दुख़ान में मुख़्तसर तौर पर उनकी मादी ताक़त व क़ूवत का ज़िक्र करके यह बताया गया है कि जब अल्लाह की नाफ़रमानी करके वे हलाकत से न बचे, तो कुरैश, जो उनके मुक़ाबले में कुछ भी नहीं थे, सरकशी करके कैसे बच सकते थे और सूर: काफ़ में सिर्फ़ मुज़िम क़ौमों की फ़ेहरिस्त में उनका ज़िक्र किया गया है।

तर्जुमा—ये (कुरैश) बेहतर (मज़बूत और ताक़तवर) हैं या तुब्बअ की क़ौम और जो इनसे पहले गुज़र गई, हमने उनको इसलिए हलाक कर दिया कि वे मुज़िम थे। (44 : 37)

तर्जुमा—‘इन (मक्का के मुशिरकों) से पहले नूह की क़ौम ने, अस्हाबुरस्स ने, समूद, आद, फ़िरऔन, इख़्वाने लूत, अस्हाबुल ऐका और क़ौमे तुब्बअ ने (अल्लाह के पैग़म्बरों को) झुठलाया है।’ (50 : 12-14)

इन्ने इसहाक़ के बयान के मुताबिक़ यमन के यहूदी बादशाहों का लक़ब तुब्बअ वाज़ेह होता है, इस तरह बादशाह ज़ूनवास का लक़ब, जिसका ज़िक्र ‘अस्हाबुलउख़दूद’ के सिलसिले में आ चुका है ‘तुब्बअ’ हुआ। मुख़्तसर यह कि ‘अस्हाबुलउख़दूद’ का दूसरा नाम क़ौमे तुब्बअ हुआ, जिसका ज़िक्र ऊपर की आयतों में किया गया है। वल्लाहु आलम।

सबक़ और नसीहत

1. जब इंसान इफ़िरादी और इज्तिमाई ज़िदंगी में अल्लाह के ख़ौफ़ से बेपरवाह हो जाता है और उसकी दौलत व हुकूमत क नशा किब्र व ग़रूर को उस बुलन्दी पर पहुंचा देता है जिस पर चढ़ कर उसकी निगाह में तमाम

मख्लूक हेच और हक्रीर नज़र आने लगती है, तो अख़्लाक़े हसना और बुलन्द ज़्वात उससे किनारा अपना लेते हैं और वह अपनी ज़ात और ज़ाती गरज़ों के अलावा और कुछ नहीं देखता। तब यकायक ग़ैरते हक़ को हरकत होती है और वह इस तरह बुलन्दी से पटक देती है कि पस्ती व ज़िल्लत के तारीक़ है और वह इस तरह बुलन्दी से पटक देती है कि पस्ती व ज़िल्लत के तारीक़ ग़ार के अलावा उसके लिए और कोई जगह बाक़ी नहीं रहती। 'अना रब्बुकुमल आला' (मैं ही तुम्हारा सबसे बड़ा रब हूँ) कहने वाला हक़ीक़ी रब की ऐसी कड़ी पकड़ में आ जाता है कि कायनात की भरपूर ताक़त न उसके काम आती है, न दुनिया की दौलत व हशमत और उसके आगे सर झुका कर यह इक्रार करना पड़ता है कि 'इन-न बत-श रब्बि-क ल-शदीद०' (बेशक तुम्हारे रब की पकड़ बहुत सख़्त है।) (85 : 12)

2. इंसान इंसानियत की ख़ास ख़ूबियों और निशानियों से बनता है, वरना हैवान से भी बदतर है और इंसानियत का तक्राज़ा यह है कि जब इंसान को हर किस्म की दौलत व हशमत और सामान मयस्सर हो और सतवत व ताक़त भी बे-अन्दाज़ नसीब हो, तो उस वक़्त भी खुदा और खुदा के डर से हरगिज़ बेगाना न हो।

ज़फ़र मर्हूम ने क्या ख़ूब कहा है—

ज़फ़र आदमी उसको न जानिएगा वह हो कैसा ही साहिबे फ़हम व ज़का

जिसे ऐश में यादे खुदा न रही, जिसे तैश में ख़ौफ़े खुदा न रहा।

तर्जुमा— 'और ऐ क़ौमे आद! वह वक़्त याद करो, जब तुम को क़ौमे नूह के बाद उनका जानशीं बनाया और तुमको मख़्लूक़ में हर तरह की फ़राख़ी अता की, पस अल्लाह की नेमतों को याद करो।' (7 : 69)

तर्जुमा— 'और ज़मीन में फ़साद करते न फ़िरो।' (7 : 74)

तर्जुमा— 'और हमने बेशक तुमको ज़मीन में कुदरत व सतवत अता की और तुम्हारे लिए उनमें ज़िदंगी के सामान बऱ्ख़ो, फिर तुममें बहुत कम शुक्र गुज़ार हैं' (7-10)

3. इंसान जब अल्लाह तआला पर मज़बूत यक़ीन कर लेता और ईमान की मिठास से फ़ैज़याब हो जाता है तो फिर कायनात की बड़ी से बड़ी ताक़त और दुनिया का हौलनाक ज़ुल्म भी उसको हक़ व सदाक़त से डगमगा नहीं सकता और वह इस्तिक़ामत का पहाड़ बनकर ईसार व कुरबानी का पैकर

साबित होता है, चुनांचे 'अस्हाबे उख़दूद' का वाक़िया इसकी ज़िन्दा गवाही है।

4. 'जज़ा अज़ जिन्से अमल' अल्लाह तआला का बोलता क़ानून है, लेकिन यह ज़रूरी नहीं है कि ज़ालिम व मुतकब्बिर को जुल्म व क़िब्र के वजूद में आते ही फ़ौरन सज़ा मिल जाए, इसलिए कि रहमत की सिफ़त के तज़ाज़े के तौर पर यहां साथ-साथ मोहलत देने का क़ानून भी काम कर रहा है, अलबत्ता जब अचानक पकड़ कर ली जाती है, तो फिर छुटकारा नामुम्किन है।

अस्हाबुल फ़ील (570 ई०)

हब्शा और नजाशी

आज के दौर में कुछ साल पहले तक हब्शा को अबीसीनिया कहा जाता था और आज कल इथोपिया कहा जाता है। अरब, हब्शा के बादशाह को नजाशी का लक़ब देते रहे हैं। अस्हमा बिन अबजर मशहूर नजाशी था, जिसने खुश-क्रिस्मती से नबी अकरम के नबी बनाए जाने का ज़माना पाया और उसे इस्लाम की दौलत मिली। हब्शा का मज़हब और उनका रहन-सहन शुरू से ही मिस्र (अरब) के मज़हब व तमहुन का असर अपनाता रहा है, जब मिस्र में ईसाई धर्म फैला तो हब्शा भी ईसाई धर्म की ओर चल पड़ा।

नोट : कुछ साल पहले तक अबीसीनिया का हुक्मरां ईसाई था। यह शख़्सी हुक्ूमत थी। इस कुक्मरां का दावा था कि उसके पास रिसालत के ज़माने के बहुत से तबरूक एक लोहे के संदूक में हिफ़ाज़त से रखे हैं, जिनको वह दूसरी जंग में अपने मुल्क पर इटली के कब्जे के वक़्त, हवाई जहाज़ में इतिहाई अज़ीज़ समझ कर अपने साथ लन्दन ले गया था। (मुरत्तिब)

अबरहा अल अशरम

अबरहा शाही खानदान से था और नाककटा था, इसलिए अरबवाले उसको अबरहा अल-अशरम कहते हैं। अरबी में अशरम नाक कटे को कहते

हैं। उसकी हुकूमत की शुरूआत 525 ई० से होती है। यह ईसाई धर्म में बड़ा जोशीला था, उसने बहुत से गिरजा बनवाए। सबसे बड़ा और मशहूर गिरजा राजधानी सनआ में बनवाया, जिसको अरब 'अल-कलीस' कहते हैं, जो यूनानी लफ़्ज़ कलीसा का अरबी बनाया हुआ है। यह गिरजा बनावट के एतबार से बेमिसाल है। उसने यह तमन्ना ज़ाहिर की कि अरब वाले जो मक्का में हज करने जमा होते हैं, उन सबका रुख इस कलीसा की तरफ़ मोड़ दिया जाए और यही हज की जगह बन जाए। अरबों ने जब यह सुना तो बहुत बिगड़े।

अस्हाबे फ़ील (हाथी वाले)

अरब की तारीख इसकी गवाह है कि तमाम अरब, भले ही उनका ताल्लुक किसी भी मज़हब या फ़िरके से हो, काबे की बहुत ज़्यादा अज़मत करते और अपने-अपने अक़ीदे के मुताबिक़ उसका हज करना मुक़द्दस फ़र्ज़ समझते थे और यही वजह थी कि ख़ास काबा के अन्दर अरब के अलग-अलग फ़िरकों के बुत (तीन सौ साठ की तायदाद में) नसब (गड़े हुए) थे।

बहरहाल जब सनआ में ठहरे हुए किसी हिजाज़ी ने यह सुना कि अबरहा ने 'अल कलीस' को इस नीयत से बनाया है, तो उसको गुस्सा आया और उसने रात ही में मौक़ा पाकर उस कलीसा को नजिस कर दिया। अबरहा को जब सुबह को यह मालूम हुआ और तहक़ीक़ के बाद पता चला कि यह काम किसी हिजाज़ी का है, तो गुस्से से बे-क्राबू हो गया और गिरजा की बेहुर्मती देखकर ग़ैज़ व ग़जब में पेच व ताब खाने लगा और क्रसम खायी कि अब काबा इब्राहीमी को बर्बाद किए बग़ैर चैन से न बैठूंगा। यह इरादा करके अबरहा भारी फ़ौज़ और हाथियों की एक तायदाद लेकर मक्का की तरफ़ रवाना हुआ। यह ख़बर तमाम अरब क़बीलों में हवा पर सवार होकर पहुंच गई और तमाम अरब में इससे बेचैनी पैदा हो गई।

सबसे पहले यमन के ही एक अमीर जूनस ने यमन से निकल कर अरब के अलग-अलग क़बीलों के पास क़ासिद भेजे कि मैं अबरहा का मुक़ाबला करना चाहता हूं। आपको चाहिए कि आप इस नेक मक्सद में मेरा साथ दें। चुनांचे वह आगे बढ़कर अबरहा के मुक़ाबले में आ गया और उससे लड़ा, मगर

हार का मुंह देखना पड़ा और जूनस गिरफ्तार कर लिया गया। इसके बाद कुछ और मुखालफ़तों का मुक़ाबला करता हुआ मुग़म्मस की घाटी तक पहुंचने में कामियाब हो गया।

मुग़म्मस पहुंच कर अबरहा ने एक हबशी फ़ौजी अफ़सर को, जिसका नाम अस्वद बिन मक्सूद था, हुक्म दिया कि वह मक्का जाकर छापा मारे। अस्वद मक्का के करीब पहुंचा, तो कुरैश और दूसरे क़बीलों के ऊंटों और भेड़-बकरियों के रेवड़ को जो बड़ी तायदाद में चर रहे थे, पकड़ कर अपनी फ़ौज में ले गया। उनमें अब्दुल मुत्तलिब के भी सौ ऊंट शामिल थे।

उस ज़माने में अब्दुल मुत्तलिब कुरैश के सरदार थे। यह हाल देखकर कुरैश, कनाना, हुज़ैल और दूसरे क़बीलों ने आपस में मश्विरा किया कि अबरहा का मुक़ाबला किस तरह किया जाए? मश्विरे के बाद यह तै पाया कि हममें लड़कर जीतने की ताक़त नहीं है, इसलिए हमको मक्का छोड़कर करीब की पहाड़ी पर चले जाना चाहिए। अभी ये लोग मक्का ही में थे कि अबरहा की ओर से ख़ब्बाता अल-हुमैरी पहुंचा और मालूम किया कि मक्का का सरदार कौन है? लोगों ने अब्दुल मुत्तलिब बिन हाशिम की तरफ़ इशारा किया। ख़ब्बाता ने कहा कि मैं अबरहा की तरफ़ से आया हूं। हमारे बादशाह का यह हुक्म है कि आप तक यह पैग़ाम पहुंचा दूं कि हमारा इरादा आप लोगों को नुक़सान पहुंचाने का नहीं है और न हम आपसे लड़ने आए हैं। पस अगर तुम्हारा इरादा मुक़ाबला करने और रोकने का हो तो तुम जानो और अगर तुम हमारे इस इरादे में रोक न बनो, तो हमारा बादशाह आपसे मुलाक़ात की ख़्वाहिश रखता है।

अब्दुल मुत्तलिब ने जवाब दिया, हमारा बिल्कुल इरादा नहीं है कि हम तुम्हारे बादशाह से लड़ें और न हममें यह ताक़त है। यह अल्लाह का घर है और उसके बरग़ज़ीदा नबी इब्राहीम की यादगार, पस अगर अल्लाह इसकी हिफ़ाज़त करना चाहेगा, तो वह कर सकता है और अगर उसको इसकी हिफ़ाज़त नहीं चाहिए, तो हम मुक़ाबला करने के क़ाबिल बिल्कुल नहीं हैं।

गरज़ इस ग़तचीत के बाद अब्दुल मुत्तलिब अबरहा की फ़ौज में पहुंचे और एक दरवारी की तरफ़ से सिफ़ारिश और तआरुफ़ (परिचय) कराने पर

उसके सामने पेश हुए। अब्दुल मुत्तलिब बहुत शानदार और बहुत ख़ुबसूरत इंसान थे। अबरहा ने देखा तो उनके साथ इज्जत से पेश आया और अपने बराबर उनको जगह दी।

बातचीत शुरू हुई तो उनकी बातों और खिताब के अन्दाज़ से अबरहा बहुत ज़्यादा मुतास्सिर हुआ। बात-चीत के दौरान जब मामले पर बात आई तो अब्दुल मुत्तलिब ने शिकायत की कि आपके सरदार ने मेरे ऊंट गिरफ़्तार कर लिए हैं, इसलिए आप से दरख़्वास्त है कि उनको मेरे हवाले कर दीजिए।

अबरहा ने यह सुना तो कहा, अब्दुल मुत्तलिब! मैं तो तुमको बहुत अक्लमंद और समझदार समझता था, लेकिन इस मांगने पर सख्त ताज्जुब है, तुमको मालूम है कि मैं काबा के ढाने के लिए आया हूँ, जो तुम्हारी निगाह में सबसे ज़्यादा अज़मत वाला और मुक़द्दस है, लेकिन तुमने उसके बारे में एक जुम्ला भी नहीं कहा और ऐसी छोटी और हक़ीर बात का ज़िक्र कर रहे हो?

अब्दुल मुत्तलिब ने जवाब दिया, बादशाह! ये ऊंट चूँकि मेरी मिल्कियत हैं, इसलिए मैं ने उनके बारे में दरख़्वास्त पेश की और काबा मेरा घर नहीं, खुदा का मुक़द्दस घर है, वह अपने आप इसकी हिफ़ाज़त करने वाला है। मैं कौन हूँ जो उसके लिए सिफ़ारिश करूँ?

अबरहा कहने लगा, अब इसको मेरे हाथ से कोई नहीं बचा सकता।

अब्दुल मुत्तलिब ने जवाब दिया, आप जानें, रब्बुल-बैत (घर का रब) जाने।

यहां पहुंच कर बात-चीत का सिलसिला ख़त्म हो गया और अबरहा ने अपने फ़ौजियों को हुक्म दिया कि अब्दुल मुत्तलिब के ऊंट वापस कर दिए जाएं।

इन्हे इसहाक़ कहते हैं कि अब्दुल मुत्तलिब के साथ बनी बक्र का सरदार यामर बिन नफ़ासा और बनी हुज़ैल का सरदार ख़ुवैलद बिन ख़ासला भी थे। ख़ाना होने से पहले उन्होंने अबरहा के सामने यह पेशकश की कि अगर काबा के गिराने से बाज़ आ जाएं, तो हम जिज़या का एक तिहाई माल आपकी ख़िदमत में हाज़िर कर देंगे, मगर अबरहा ने अपनी ताक़त के नशे में इस पेशकश को ठुकरा दिया और अपने इरादे पर अड़ा रहा, तब ये लोग नाकाम

वापस आ गए।

अब्दुल मुत्तलिब ने वापस आकर कुरैश और अरब के दूसरे कबीलों को जमा किया और उनको पूरी बातें सुना कर यह मश्विरा दिया कि अब हम सबको करीब ही किसी पहाड़ी पर जमा हो जाना चाहिए, ताकि इस मंज़र को अपनी आंख से न देख सकें। जब अहले मक्का पहाड़ पर जाने लगे, तो अब्दुल मुत्तलिब की क्रियादत में काबतुल्लाह में हाज़िर हुए और उसकी जंजीर पकड़ कर दरबारे इलाही में यह दुआ की—

ऐ अल्लाह! हम इस बारे में ग़मगीन नहीं हैं कि जब हम अपनी चीज़ों की हिफ़ाज़त कर सकते हैं तो अपनी चीज़ (काबे) की तुझको ज़रूर हिफ़ाज़त करनी चाहिए और तेरी तदबीर पर न सलीब की ताक़त ग़ालिब आ सकती है और न सलीब वालों की कोई तदबीर। हां, अगर तू ही यह चाहता है कि इनको अपने मुक़द्दस घर को ख़राब करने दे, तो फिर हम कौन? जो तेरा जी चाहे सो कर।’

इसके बाद अब्दुल मुत्तलिब और तमाम कुरैश मक्का को ख़ाली करके करीब के पहाड़ों पर चले गए और घाटियों में पनाह ले कर हालात का इन्तिज़ार करने लगे।

अगली सुबह को अबरहा ने अपनी फ़ौज मक्का की ओर बढ़ाई। अगली क़तारों में हाथी थे और उसके पीछे भारी फ़ौज। अभी यह फ़ौज मक्का तक नहीं पहुंची थी कि राह ही में अचानक परिंदों के गोल के गोल नमूदार हुए और फ़ौज के सर पर फ़िज़ा में छा गए, उनकी चोंच और उनके पंजों में कंकड़ियां थीं। परिंदों ने इन कंकड़ियों को फ़ौज पर फेंकना शुरू किया। जिस आदमी को कंकड़ियां लगती थीं बदन फोड़ कर बाहर निकल आती थीं और तुरन्त ही अंग गलने-सड़ने लगते थे। नतीजा यह निकला कि थोड़ी देर में सारी फ़ौज तहस-नहस होकर रह गई।

मुहम्मद बिन इसहाक कहते हैं कि कुछ लोग इसी हाल में फ़ौज से भाग कर यमन और हबशा पहुंचे और उन्होंने अबरहा और उसकी फ़ौज की तबाही का हाल सुनाया।

मशहूर महदिस इब्ने अबी हातिम, उबैद बिन उमैर की रिवायत से नक़ल

करते हैं कि जब अबरहा की फ़ौज मक्का की ओर बढ़ी तो तेज हवा चली और समुन्दर की ओर से परिंदों का ज़बरदस्त लश्कर (फ़ौज) परे के परे बांधे हुए है, उनके मुंह और उनके दोनों पंजों में कंकड़ियों थीं। उन्होंने पहले तो आवाज़ की और फिर फ़ौज पर कंकड़ियां मारने लगे, साथ ही तुंद व तेज हवा चलने लगी, जिसने पत्थर की इस वर्षा को फ़ौज के लिए बहुत बड़ी मुसीबत बना दिया। चुनांचे जिस आदमी पर ये कंकड़ियां गिरीं, बदन फोड़ कर बाहर निकल आई और फिर बदन गलने और सड़ने लगा और इस तरह पत्थर के इन टुकड़ों ने सारी फ़ौज को छलनी कर डाला।

कहते हैं कि अबरहा ने फ़ौज को हुक्म दिया कि वह मक्का की तरफ़ बढ़े, जब वह मक्का के करीब पहुंची तो हाथियों की क़तार में सबसे पहले उस हाथी ने आगे बढ़ने से इंकार कर दिया, जिस पर अबरहा सवार था। फ़ीलबान अगरचे उसको आंकस पर आंकस लगा रहा था और जुबानी डांट-डपट रहा था, मगर वह किसी तरह आगे बढ़ने का नाम नहीं लेता था, लेकिन जब उसको यमन की ओर चलाते थे तो वह तेज़ी के साथ चलने लगता था। इस हालत में अचानक परिन्दों के गोल ने आ घेरा।

गोया कुदरत की तरफ़ से यह अबरहा के लिए आखिरी तंबीह थी कि वह अब भी समझ जाए कि उसका यह इरादा बातिल और नापाक है और यह हिम्मत असल में अल्लाह की ताक़त को चैलेंज है, इसलिए उसको इससे बाज़ आ जाना चाहिए, लेकिन उस बदबख्त ने इसकी कोई परवाह नहीं की और अपने किरदार के नतीजे को पहुंच गया।

कुछ रिवायतों में यह भी है कि जब परिन्दों के पत्थरों की बारिश से अबरहा की फ़ौज बर्बाद हो गई तो उसमें कुछ आदमी जो बदहाली के साथ फ़रार होकर यमन पहुंचे थे, उनमें से खुद अबरहा भी इस हालत में पहुंचा कि उसके तमाम अंग गल सड़कर गिर चुके थे और वह सिर्फ़ एक गोشت का लोथड़ा नज़र आता था।

यानी कुदरत ने जिस तरह फिराउन को गर्क कर देने के बाद उसकी लाश को इसलिए किनारों पर फेंक दिया था कि वह मिस्र के क्रिस्तियों और बनी इसराईल दोनों के लिए सबक बने, इसी तरह यमन और हब्श के बाशिंदों

के सबक के लिए अबरहा को इस हालत में यमन पहुंचाया कि वे यह गौर करें कि जिस आदमी ने अपनी माही ताक़त के घमंड पर अल्लाह की ताक़त को चैलेंज किया था, आज कुदरत के ज़बरदस्त हाथ ने उसका यह हाल कर दिया कि— 'फ़-हल अन्तुम मुन्तहून०'

कुरआन और अस्हाबे फ़ील

कुरआन ने इस वाक़िया के सूर: फ़ील में बयान को अपने मोज़ों भरे तरीक़े के साथ इस तरह ज़िक्र किया है, गोया ज़ाते अक्दस मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर अल्लाह तआला का बहुत बड़ा एहसान और उनके एज़ाज़ व इकराम का शानदार 'निशान' है।

तर्जुमा—(ऐ मुहम्मद!) क्या तूने नहीं देखा, तुझको मालूम नहीं कि तेरे परवरदिगार ने हाथियों वालों के साथ क्या मामला किया? क्या उनके फ़रेब को नाकारा नहीं बना दिया और भेज दिए उन पर परिंदों के झुंड के झुंड, वे फेंक रह थे उन पर कंकड़ियां, पस कर दिया उनको खाए हुए भूसे की तरह।

(105 : 1-5)

अस्हाबे फ़ील का यह अजीब व ग़रीब वाक़िया मुहर्रम के महीने में हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की पैदाइश से चालीस या पचास दिन पहले पेश आया, अरबों में यह वाक़िया इस दर्जा अहमियत व शोहरत रखता था कि उन्होंने इस साल का नाम 'आमुलफ़ील' (हाथियों वाला साल) रख दिया और उसके बाद तारीख़ी वाक़ियों को उसी के हिसाब से गिनने लगे जो ईस्वी सन् के हिसाब से 591 ई० और रूमी सन् के हिसाब से 886 सिकन्दरी के मुताबिक़ होता है।

वाक़िए की हकीक़त

हैरत होती है कि इस वाक़िए से मुताल्लिक़ बहुत से लोग अजीब-अजीब क्रिस्म की तावील पेश करते हैं। वे यह नहीं समझ पाते कि अगर इस वाक़िए में अल्लाह ने एक बहुत ही कमज़ोर और छोटे परिंदे और बहुत ही छोटी और हकीर चीज़ से ऐसा काम न लिया होता जिसके के लिए एक भारी फ़ौज और

लड़ाई का बेपनाह सामान चाहिए था, तो फिर इसके बयान की ज़रूरत ही क्या थी। अरब की दूसरी रिवायतों में और अरब तारिख़दानों में यह वाक़िया इतना ज्यादा मशहूर व मारुफ़ था कि जब नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर मक्के की मुबारक ज़िंदगी में सूरः फ़ील नाज़िल हुई तो मुशिरकों, यहूदियों और ईसाइयों को इस दुश्मनी के बावजूद जो आपकी मुबारक ज़ात से उनको थी, किसी तरफ़ से भी इस सूरः में बयान किए गए वाक़िए के खिलाफ़ कोई आवाज़ न उठी कि यह वाक़िया ग़लत है या इसकी असल हकीक़त यह नहीं है, बल्कि दूसरी है।

यह भी नहीं कहा जा सकता कि चूँकि यह वाक़िया सिर्फ़ ज़ाते अक्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से ही नहीं बल्कि तमाम अरब खासतौर से कुरैश की अज़मत व इज़्ज़त बढ़ाता था, इसलिए किसी ने उसके खिलाफ़ आवाज़ बुलन्द नहीं की, यह बात इसलिए ग़लत है कि जिस वक़्त यह सूरः नाज़िल हुई है, उस वक़्त अरब में मज़हबी फ़िरकाबन्दी के एतबार से अरब के अलग-अलग हिस्सों में आमतौर से और नजरान के मशहूर शहर में खासतौर से ईसाई धर्म, मक्का के मुशिरकों और मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम दोनों का हरीफ़ व रक़ीब था, इसलिए वे अरबी नज़ाद होने को नज़रअंदाज़ कर सकते थे, मगर ईसाई धर्म की इस तौहीन को, जो उनके ख़्याल से मक्का के कुरैश की इज़्ज़त बढ़ाती थी या मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) की अज़मत को एक लम्हे के लिए भी बरदाश्त नहीं कर सकते थे, बल्कि वे और यहूदी दोनों ऐसे वाक़िए का सुनना भी ग़वारा न करते, जो उनके क़िबला 'सख़रा वैतुल मक्दिस' के अलावा ऐसी जगह 'काबा' की हज़ारों गुना अज़मत ज़ाहिर करता है, जिसके क़िबला बनने को वह नफ़रत की निगाह से देखते और एलानिया उसको झुठलाते थे।

बहरहाल तारीख़ की साफ़ और बे-मिलावट गवाही यह साबित कर रही है कि आज के एक ईसाई ने भी इस वाक़िए के खिलाफ़ जुबान खोलने की ज़ुरात नहीं की और हिजरत के बाद जब आपकी ख़िदमते अक्दस में नजरान का वफ़द आया तो वह अपने ख़्याल में इस्लाम के खिलाफ़ जिस क्रिस्म की नुक्ताचीनियां कर सकता था और मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और

कुरआन के झुठलाने में जो दलीलें दे सकता था, वे सब उसने पेश किए, लेकिन इस वाकिए के खिलाफ एक हर्फ भी जुबान से नहीं निकाला और अगर ऐसा हुआ होता तो जिस तारीख ने साढ़े तेरह सौ वर्ष से इन तमाम एतराजों को अपने दामन में महफूज रखा है, जो मुखालिफों की ओर से नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम, कुरआन और इस्लाम पर किए गए हैं, वह कैसे इस एतराज को भुला सकती थी।

नोट : मौलाना हिफ्जुर्रहमान साहब स्योहारवी रह० ने यूरोपीय लिखने वालों के अलावा रोशन ख्याल मुसलमानों की तावीलों के भरपूर जवाब दिए हैं। शौक रखने वाले असल किताब से रुजू कर सकते हैं। (मुरत्तिब)

इसलिए तास्सुब से पाक हक़ीक़त पर नज़र रखने वाली निगाह को यह फ़ैसला करना पड़ेगा कि यह वाकिया अपनी तफ़्सील के साथ जिस तरह अरब रिवायतों और अरब के तारीख़दानों के यहां महफूज और मशहूर है, वह क़तई तौर पर सही है और सही न होने की आख़िर कौन-सी वजह है कि सूरः फ़ील के उतरते वक़्त इस वाकिए को गुज़रे हुए सिर्फ़ 42-43 साल हुए थे और वतनी रिवायतों से सुनने वाले लाखों की तायदाद में तमाम अरब के इलाक़ों में मौजूद थे और किसी ने भी इसकी तावील में जुबान नहीं खोली।

सबक़ और नसीहत

1. मज़हब की तारीख पढ़ने से यह मालूम होता है कि अल्लाह की 'क़ौमों और उम्मतों में अज़ाब देने वाला क़ानून' हिक्मत के तक्राज़े के तहत दो दौर में बंटा रहा है—

(क) जब तक दीने हक़ की पैरवी करने वाले और अल्लाह के पैग़म्बरों की इत्तिबा करने वालों की तायदाद दुश्मनों और मुखालिफ़ों के मुक़ाबले में इतनी थोड़ी रही है कि आम हालात में वे दुश्मन के मुक़ाबले से माज़ूर रहे हैं, तो इस पूरे दौर में अल्लाह तआला की तरफ़ से ज़मीन व आसमान यानी चांद-सितारों और ज़मीन व आसमान की चीज़ों के ज़रिए उनकी मदद और हिमायत का सामान होता रहा है और हक़ और सच्चाई से सरकश क़ौमों पर कुदरत, बग़ैर वास्ते के सीधे सीधे ज़मीनी व आसमानी अज़ाब नाज़िल करती

रही है, चुनांचे कौमे नूह, आद, अस्हाबे ऐका, फिरऔन और कौमे फिरऔन वगैरह कौमें, उम्पतें सब इसी क्रिस्म के अज़ाब से हलाक व बर्बाद की गई। यह दौर हज़रत मूसा عليه السلام पर ख़त्म हो जाता है।

(ख) अब हक़ व सदाक़त के जानिसारों की तायदाद इस दर्जे पर पहुंच गई कि वे अगरचे दुश्मनों के मुक़ाबले में थोड़े भी रहे हों, तब भी अपनी तायदाद की अक्सरियत के लिहाज़ से दुश्मन के खिलाफ़ सीना तान कर खड़े होने के क़ाबिल हैं, तो फिर 'अल्लाह की सुन्नत यह रही है कि खुद हक़ के फ़िदाकारों और मुसलमानों को यह हुक्म दिया गया कि लड़ाई के मैदान में निकल कर अल्लाह के दुश्मनों का मुक़ाबला करें और अपनी जान की बाज़ी लगाकर मिल्लते बैज़ा और दीने हक़ की हिमायत के लिए सीने को ढाल बनाएं और साथ ही सच्चे रसूलों के ज़रिए यह वायदा भी दिया जाता रहा कि नतीजे के तौर पर जीत और मदद तुम्हारा ही हिस्सा है, 'वअन्तुमुल आलौन इन कुन्तुम मोमिनीन' और यह नुसरत और फ़तह कभी अल्लाह के फ़रिश्तों को जिहाद में साथ देने से पूरी की जाती है और कभी इसकी ज़रूरत नहीं समझी जाती।

गरज़ जिन कौमों ने भी हक़ व सदाक़त के ज़ाहिर हो जाने और अल्लाह के सच्चे पैग़म्बरों की सच्चाई को जान लेने के बाद अ़दायत व ग़रूर के रास्ते से, हक़ की तालीम से न सिर्फ़ मुंह मोड़ा, बल्कि उसको मिटाने की नाकाम कोशिश की, तो अल्लाह तआला ने हमेशा उनको 'अमल के बदले' के आसमान पर खींच कर और अलग-अलग क्रिस्म के अज़ाब चखा कर ज़िंदगी की किताब से मिटा दिया और अगरचे उनके अज़ाब देने का क़ानून आमतौर से उन्हीं दो दौरों के अन्दर टिका रहा, फिर भी अल्लाह की हिक्मत किसी खास तरीक़े के दायरे में महदूद नहीं है।

2. अल्लाह के काबे के खिलाफ़ अस्हाबे फ़ील की लश्करकशी अगरचे उम्पतों के अज़ाब के क़ानून के दूसरे दौर में पेश आई, लेकिन ऐसे हालात और ऐसे ज़माने में पेश आई, जो पहले दौर से मेल खाते हैं, यानी 'फ़तरते वह्य' (वह्य के कट जाने) का ज़माना जिसमें न कोई रसूल है और न कोई नबी और न वक़्त के सच्चे दीन के हामिल ही नज़र आते हैं, और हैं भी तो बिखरे लोग

हैं न कि असरदार जमाअत कि वह काबतुल्लाह की हिफाजत के लिए सीना तान ले, बल्कि एक दीन की दावत देने वाले मसीही ही इब्राहीमी काबे और तौहीद के मरकज को बर्बाद करने पर उतारू नज़र आता है।

और मक्का के मुशिरक शिरक व कुफ़र के बावजूद अगरचे बैतुल्लाह की अज़मत के क्रायल हैं, मगर ऐसी भारी फ़ौज के मुक़ाबले में ठहरने की ताब नहीं रखते, जिसके साथ भारी भरकम देव जैसे हाथी भी हैं और काबे को रब्बे काबा के भरोसे छोड़कर पहाड़ की घाटियों में पनाह ले लेते हैं, तो ऐसी हालत में दो ही शक्तें हो सकती थीं—

एक यह कि अबरहा और उसकी फ़ौज (हाथी वालों) को उम्मतों के अज़ाब देने के क़ानून के पहले दौर के मुताबिक़ हलाक व बर्बाद कर दे, ताकि यह वाक़िया इंसानी क़ानून के लिए सबक़ हासिल करने की वजह बने। चुनांचे हज़रते हक़ की जानिब से यही दूसरी सूरत सामने आई और कुदरत के उसके एजाज़ ने 'अस्हाबे फ़ील' (हाथी वालों) पर जो आसमानी अज़ाब नाज़िल किया था, सूर: फील में उसी को बयान किया गया है— 'ज़ालि-क हुवल हक्क' (यह हक़ है) 'व मा ज़ालि-क अलल्लाहि बिअज़ीज़' (और वे अल्लाह पर हावी होने वाले नहीं।)

3. यह वाक़िया हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की पैदाइश से कुछ दिन पहले पेश आया। यह वह वक़्त था, जबकि कायनात का गोशा-गोशा खुदा-परस्ती और एक अल्लाह होने (तौहीद) के नज़्मों से महसूस हो चुका था। खुदा की भेजी हुई सच्ची तालीम के दावेदार हर जगह मौजूद थे, मगर सच्ची तालीम गुम हो चुकी थी और दीन और मिल्लतों की असल रूप-रेखा और उनकी हक़ीक़ी शक्त व सूरत को बिगाड़ने और बदलने के मरज़ ने तबाह कर दिया था। हर जगह शिरक व कुफ़र का दौर-दौरा था, कहीं बुत परस्ती हो रही थी, तो किसी जगह तारों की पूजा का शोर था, कहीं आग पूजा इबादत का मक्सद थी, तो किसी जगह अनासिर परस्ती (तत्त्व पूजा) दीन का नस्बुलऐन बन चुकी थी, कहीं तसलीस (ईसाइयत) ने जगह पाकर हज़रत ईसा को 'मसीह इब्नुल्लाह' बनाया था, तो किसी गिरोह ने 'उज़ैरुब्नुल्लाह' कह कर मज़हब के नाम का सहारा लिया था तो गरज़ सारी कायनात में या खुदा का

इंकार काम कर रहा था और या फिर अस्नाम परस्ती, अनासिर परस्ती, कवा-कब परस्ती, जीव-पूजा ने फ़लसफ़ों वाले विचार की आड़ लेकर शिर्क व कुफ़र को नुमायां किया, इसलिए यहां खुदा परस्ती के अलावा और सब कुछ मौजूद था। अगर कोई चीज़ गुम थी, तो वह सिर्फ़ एक अल्लाह की परस्तिश ही थी।

इन हालात को देखते हुए हक़ की ग़ैरत का यह फ़ैसला हुआ कि अब वह हिदायत के नूर को रोशन करे और रिसालत का वह सूरज चमके जो किसी खास दुनिया के एक इलाक़े को ही नहीं, बल्कि तमाम दुनिया और सारी कायनात को सीधा रास्ता दिखाए और कायनात परस्ती से हटाकर खुदा परस्ती सिखाए, वह खोए हुए लोगों को सीधा रास्ता दिखाए और भटके हुए गुलामों को हक़ीक़ी मालिक व आका से मिलाए, टूटे हुआं का रिश्ता जोड़े और जाहिलियत की जंजीरों को तोड़े, वह ख़लील عليه السلام की दुआ और मसीह عليه السلام के नवेद का हासिल हो और इस तौहीद के मक़ज़ 'काबा' को हक़ीक़ी अज़मत व हुर्मत की दावत देने वाला, जो खुदा-परस्ती के लिए सबसे पुराना और मुक़द्दस घर है और जिसके बनाने और नया करने का शरफ़ इब्राहीम व इस्माईल (अलैहिमस्लाम) जैसे पैग़म्बरों को बख़्शा गया। आज इसराईल के ख़ानदान से दावते हक़ की अमानत वापस ले ली गई, क्योंकि उन्होंने ख़ियानत की और अपने बुज़ुर्गों की नसीहत को भुला दिया। 'नाबुदु इला-ह-क व इला-ह आबाइ-क इब्राही-म व इस्माई-ल व इस्हाक़ (2 : 133) आज इस्माईल का ख़ानदान नवाज़ा गया और खुदा की पाक अमानत 'सलालतु इस्माईली' को अता कर दी गई। वक़्त आ रहा है कि रिसालत व नुवूवत का यह चांद बहुत जल्द हिरा के ग़ार से निकले और हक़ीक़त का सूरज बनकर दुनिया पर चमके, उसकी मिल्लत मिल्लते इब्राहीमी कहलाए और दुनिया में खुदा का सबसे पहला घर 'काबा' फिर दुनिया का क़िबला और कायनात का मरकज़ बने।

4. सूर: फ़ील के पढ़ने से दो बातें साफ़ तौर पर समझ में आ जाती हैं—

एक यह कि इस वाक़िए से अल्लाह की तरफ़ से काबतुल्लाह की हुर्मत व अज़मत की हिफ़ाज़त का सोचा-समझा नतीजा निकलता है।

अब रहा यह मामला कि इस वाक़िए को बयान करने का जो मक़्सद है वह अपने अन्दर क्या भेद रखा है, तो अगरचे खुदा की हिक्मतों का एहाता

करना, फ़ानी इंसान की सलाहियत से बाहर की चीज़ है, फिर भी अगर ध्यान दिया जाए तो दो हिक्मतें नुमायां नज़र आती हैं—

1. यह वाक़िया आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) की पैदाइश के लिए एक ज़बरदस्त 'निशान' की हैसियत रखता है, इसलिए कि कुदरत के निज़ाम के उभरे हुए निशान हमें यह पता देते हैं कि इस दुनिया में जब भी कोई बड़ा इक़िलाब बरपा होता है, तो उसके आने से पहले ज़रूर ऐसी निशानियां ज़ाहिर होती हैं कि जिनको देखकर हक़ीक़त समझने वाले और सबक़ लेने वाले इंसान की निगाह आने वाले इक़िलाब का अन्दाज़ा कर लेती है और इंसान ही नहीं बल्कि हज़रते हक़ ने जानदारों तक में छोटी-छोटी बातों के एहसास को भी सलाहियत दी है, वह आंधी-पानी के तूफ़ान और भूचाल जैसे वाक़ियों का पता सिर्फ़ निशानियों में पा लेते और वक़्त से पहले ही अपनी बेचैनी और तक्लीफ़ के एहसास के ज़रिए दूर तक पहुंच रखने वाले इंसानों को इन हक़ीक़तों का इल्म करा देते हैं।

2. इस वाक़िए का ज़िक्र करके अल्लाह ने कुरैश को अपना बहुत बड़ा एहसान याद दिलाया है कि वे यह न भूल जाएं कि जिस वक़्त 'काबा' की अज़मत के क़ायल होने के बावजूद अबरहा (हाथी वाले) के उस मुक़ाबले से आजिज़ रहे थे, जिसमें उसने 'काबा' की बर्बादी का बेड़ा उठाया था, उस वक़्त हमने अपनी कामिल कुदरत के 'एजाज़ वाले निशान' से वह कर दिखाया कि दुश्मन की शरारत भरी तदबीर और उसका बुरा इरादा दोनों ख़ाक में मिल कर रह गए।

क्या तुमने इस सबक़ भरे वाक़िए से यह सबक़ हासिल नहीं किया कि यह सब कुछ तुम्हारी खुशनूदी के लिए नहीं था, जबकि तुम शिर्क की अंधेरियों में डूबे हुए और कुफ़र की गन्दगियों में लत-पत थे, बल्कि काबे की उस अज़मत को बाक़ी रखने के लिए था, जिसकी तामीर बूढ़े पैग़म्बर हज़रत इब्राहीम और जवां साल इस्माईल के मुक़द्दस हाथों से हुई और जिसके बारे में उन्होंने यह फ़रमाया—

तर्जुमा—ऐ मेरे परवरदिगार! मैंने बसाया है अपनी कुछ औलाद को बिन खेती की सरज़मीन में, तेरे बाइज़्ज़त और बाहुर्मत घर के पास। (14 : 37)

समझो और मामले की हकीकत पर गौर करो और अल्लाह के पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की मुख़ालफ़त से बाज़ आ जाओ।

इस बात की ताईद सूरः फ़ील से मिली हुई सूरः कुरैश से भी होती है, इसलिए कि इस सूरः में कुरैश को यह तवज्जोह दिलाई गई है या इन पर अपने उस एहसान को ज़ाहिर किया गया है कि अरब कबीलों की आपसी बात-बात पर लड़ाइयों और मामूली-मामूली मामले पर झगड़ों के बावजूद वे हरमे मक्का में किस तरह मामून व महफूज़ (सुरक्षित) हैं और न सिर्फ़ यह बल्कि उसकी ख़िदमत से मुताल्लिक होने की वजह से हरम से बाहर सर्दी और गर्मी, दो मौसमों में अपने महबूब तिजारती सफ़रों में शाम और यमन तक बिना कोई ख़ौफ़ और ख़तरा महसूस किए आते जाते हैं और कोई आंख उठाकर भी उनकी ओर देखने नहीं पाता।

तो क्या वे इस एहसान के शुक्रगुज़ार नहीं होते और हरम और काबा की सभी अज़मत को सरबुलन्द करने के लिए अल्लाह का आख़िरी पैग़म्बर (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) तुमको जिस सच्चाई की ओर बुलाता है, उस पर लपक पड़ने को तैयार नहीं होते, उनको यह बात हरगिज़ ज़ेब (शोभा) नहीं देती।

तर्जुमा—पस उनको चाहिए कि वे उसके घर के परवरदिगार की सच्ची परस्तिश करें कि जिसने उनकी भूख के लिए रोज़ी का सामान जुटाया और उनको ख़ौफ़ और ख़तरे से मामून व महफूज़ कर दिया। (106 : 3-4)

5. अबरहा मज़हबी तौर पर ईसाई था और इसलिए वह बैतुल्लाह (काबा) की अज़मत को किसी तरह बरदाश्त नहीं कर सकता था और उसका वजूद गोया एक ख़ार था जो कांटे की तरह उसके दिल में चुभ रहा था। उसने सोचा कि 'काबा' मामूली पत्थरों की एक सादा इमारत है, अगर इसके मुक़ाबले में एक ऐसी ख़ुबसूरत और बेनज़ीर इमारत कलीसा (गिरजा) की शक्ल में तैयार की जाए जो क्रीमती पत्थरों और मोती-जवाहरात से सजी हो, तो इस तरह मैं सारे अरब की जवज्जोह 'काबा' से हटा सकूंगा और नयी इबादतगाह को पूरी दुनिया की तवज्जोह की जगह बना सकूंगा।

यह सोच कर एक तरफ़ उसने यमन की राजधानी सनआ में एक बेनज़ीर

गिरजा 'अल-क़लीस' बनवाया और दूसरी तरफ़ एक मामूली वाक़िए को हीला बना कर काबा की बरबादी का तहैया किया। नतीजा जो कुछ हुआ, तफ़्सील से ज़िक्र किया गया, लेकिन इस वाक़िए में इस ओर इशारा मालूम होता है कि दुनिया की तमाम क़ौमों में सबसे ज़्यादा ईसाइयों को ही इस बैतुल्लाह 'काबा' के साथ अ़दावत रहेगी और वे अपने सभ्य या असभ्य हर दौर में उसके खिलाफ़ अपनी अ़दावत ज़ाहिर करते रहेंगे और हमेशा तौहीद के इस मर्कज़ के पीछे पड़े रहेंगे।

चुनांचे माज़ी (भूतकाल) की तारीख़ इस पर गवाह है कि जब कभी ईसाइयों को इसका मौक़ा मिला उन्होंने अमली तौर पर अपनी अ़दावत ज़ाहिर किए बग़ैर न छोड़ा और अगरचे अल्लाह तआला ने इस सिलसिले में हमेशा उनके इरादों को नाकाम रखा, मगर वे बहरहाल अपने दिली बुज़्र ब अ़दावत का सबूत दिए बिना न रहे।

6. काबा 'बैतुल्लाह' यानी 'ख़ुदा का घर' कहलाता है, इसका यह मतलब नहीं कि अल-आयाज़ुबिल्लाह' (ख़ुदा की पनाह) अल्लाह किसी घर में रहता है या वह घर का मुहताज है, बल्कि सच तो यह है कि उसने अपनी ख़ालिस इबादत की ग़रज़ से, दूर-दूर के इलाक़े तक के मुसलमानों और सच्चे इबादत गुज़ारों के लिए काबा को मर्कज़ व म्हवर बनाया है और यह इसलिए कि अल्लाह दिशाओं से परे और पाक है और इंसान अपने काम में दिशाओं में से किसी दिशा का मुहताज, तो बहुत ज़रूरी था कि तमाम कायनात के तौहीद की पैरवी करने वाले और इबादत करने वाले रब्बुल आलमीन की इबादत और उनकी मिल्ली और दीनी ज़िदंगी के लिए एक मर्कज़ हो, ताकि वे बिखराव और टूट-फूट से बचे रहें और इज्तिमाई एका का सबक़ सीखें।

इसलिए उसके लिए वह मुक़दस इमारत 'शआइरुल्लाह' करार दे दी गई, जिसको बुज़ुर्ग़ नबी हज़रत इब्राहीम और उनके मुक़दस बेटे इस्माईल ने दुनिया में सबसे पहले सिर्फ़ एक अल्लाह की परस्तिश के लिए बनाया था और जो तौहीद के एलान की सबसे पुरानी यादगार थी।

फ़स किसी मुसलमान के लिए यह जायज़ नहीं कि वह काबा की इसलिए अज़मत करे कि वह 'सनम' (मूर्ति) है या अपने आप में पूजनीय है, इसलिए

कि जो ऐसा समझेगा वह मुसलमान नहीं बल्कि मुशिरक कहलाएगा बल्कि उसकी ज़ियारत इसलिए है कि वह 'शआइरुल्लाह' (अल्लाह की निशानी) में से है और है तौहीद का मक़ज़।

'फ़ातबिरु या उलिल अब्सार'

हज़रत ईसा عليه السلام

कुरआन और हज़रत ईसा عليه السلام

जिस तरह नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ख़ातमुल अंबिया वरुसुल हैं, उसी तरह ईसा अलैहिस्सलाम ख़ातमुल अंबिया बनी इसराईल हैं और मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और हज़रत ईसा عليه السلام के दर्मियान कोई दूसरा नबी नहीं भेजा गया। दर्मियान का यह ज़माना वह्य के रुक जाने का ज़माना रहा है। हज़रत ईसा عليه السلام मुजद्दिद अंबिया-ए-बनी इसराईल हैं, क्योंकि क़ानूने रब्बानी (तौरात) के बाद बनी इसराईल की रुशद व हिदायत के लिए इंजील से ज़्यादा मर्तबे वाली कोई किताब नाज़िल नहीं हुई जिससे असल में तौरात के क़ानून की तक्मील हुई है। यह भी कि हज़रत ईसा عليه السلام सरवरे कायनात मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सबसे बड़े मुनाद (पुकारने वाले) और मुबशिशर (खुशख़बरी देने वाले) हैं।

कुरआन ने हज़रत ईसा عليه السلام के हालात को बड़ी तफ़्सील से बयान किया है और उनकी पाक ज़िदंगी को तम्हीद के तौर पर और उनकी मां हज़रत मरयम عليه السلام की ज़िदंगी के वाक़ियों को रोशन किया है ताकि कुरआन की याददहानी का मक़सद 'बिअय्यामिल्लाह' पूरा हो। हज़रत ईसा عليه السلام को कुरआन में किसी जगह 'मसीह' और 'अब्दुल्लाह' के लक़ब से और किसी जगह 'कुन्नियत' (उपनाम) 'इब्ने मरयम' के नाम से ज़ाहिर करते हुए याद किया गया है।

इमरान व हन्ना

हज़रत ज़करीया और हज़रत यस्या के हालात में गुज़र चुका है कि बनी इसराईल में इमरान एक इबादतगुज़ार और दीनदार शख्स थे और अपनी इबादत और दीनदारी की वजह से नमाज़ की इमामत भी उन्हीं के सुपुर्द थी और उनकी बीवी हन्ना भी बहुत पारसा और आबिदा थीं। इमरान औलाद वाले न थे और उनकी बीवी हन्ना औलाद की बहुत ज़्यादा तमन्ना करती थीं।

कहते हैं कि एक बार हन्ना ने देखा कि एक परिन्दा अपने बच्चे को खिला रहा है। यह देख कर औलाद की तमन्ना ने बहुत जोश मारा और बेचैनी की हालत में अल्लाह के दरबार में दुआ के लिए हाथ उठा दिए और अर्ज किया, परवरदिगार! इसी तरह मुझको भी औलाद अता कर कि वह हमारी आंखों का नूर और दिल का सुरूर बने। दिल से निकली हुई दुआ मक्बूल हुई और हन्ना ने कुछ दिनों बाद महसूस किया कि वह हामिला (गर्भवती) हैं। कुरआन में यह वाक़िया इस तरह बयान हुआ है—

तर्जुमा—‘जब इमरान की बीवी ने कहा, ऐ अल्लाह! मैंने नज़र मान ली है कि मेरे पेट में जो बच्चा है, वह तेरी राह में आज़ाद है, पस तू उसको मेरी ओर से कुबूल फ़रमा, बेशक तू सुनने वाला और जानने वाला है। फिर जब उसने जना तो कहने लगी, परवरदिगार! मेरे लड़की पैदा हुई है और अल्लाह ख़ूब जानता है जो उसने जना है, लड़का और लड़की बराबर नहीं हैं (यानी हैकल की ख़िदमत लड़की नहीं कर सकती, लड़का कर सकता है) और मैं ने तो उसका नाम मरयम रखा है और मैं उसको (औलाद को) शैतान रजीम के फ़िल्ने से तेरी प्रनाह में देती हूँ।’ (3 : 36)

हज़रत मरयम जब सूझ-बूझ वाली उम्र को पहुंचीं तो सब की रायों से ‘यह सईद अमानत’ हज़रत ज़करीया عليه السلام के सुपुर्द कर दी गई। तो हज़रत ज़करीया ने हज़रत मरयम के सिनफ़ी (लैंगिक) एहतारामों का लिहाज़ करते हुए हैकल के करीब एक हुजरे को उनके लिए ख़ास कर दिया, ताकि वे दिन में वहां रहकर अल्लाह की इबादत करती रहें और जब रात आती तो उनको अपने मकान पर उनकी ख़ाला ‘अल यशाअ’ के पास ले जाते और वह वहीं रात गुज़ारतीं।

हज़रत मरयम का जुह्द व तक्वा (संयम व ईश-भय)

हज़रत मरयम दिन व रात अल्लाह की इबादत में लगी रहतीं और जब हैकल की खिदमत के लिए उनकी बारी आती, तो उसको भी अच्छी तरह अंजाम देती थीं, यहां तक उनका जुह्द व तक्वा बनी इसराईल में एक कहावत बन गया। अल्लाह तआला ने फ़रिश्तों के ज़रिए उनको यह खुशखबरी सुनाई—

तर्जुमा— ‘(ऐ पैग़म्बर! वह वक्त याद कीजिए) जब फ़रिश्तों ने कहा, ऐ मरयम! बेशक अल्लाह तआला ने तुझको बुजुर्गी दी और पाक किया और दुनिया की औरतों पर तुझको बरगज़ीदा किया। ऐ मरयम! अपने पालनहार के सामने झुक जा और सज्दा कर और नमाज़ पढ़ने वालों के साथ नमाज़ अदा कर।’ (3 : 42-43)

ऊपर की आयत में हज़रत मरयम عليها السلام की फ़ज़ीलत ने उनकी ज़ात से मुतल्लिक कई मसूअले बहस में पैदा कर दिए हैं, जैसे—

1. क्या औरत नबी हो सकती है?
2. क्या हज़रत मरयम नबी थीं?
3. अगर नबी नहीं थीं तो फ़ज़ीलत की आयत का क्या मतलब है?

(हज़रत मौलाना हिफ़ज़ुर्रहमान स्योहारवी रह० ने) इन तीनों सवालों पर तफ़्सीली बहस के बाद इस ख़्याल का इज़हार किया है कि—

1. औरत नबी हो सकती है और
2. हज़रत मरयम عليها السلام का नबी होना क़तई तौर पर सही है,
3. इसलिए फ़ज़ीलत की आयत का मतलब भी साफ़ हो जाता है, वह यह कि हज़रत मरयम عليها السلام को कायनात की तमाम औरतों पर फ़ज़ीलत हासिल है। जो औरतें नबी नहीं हैं, उन पर इसलिए कि मरयम नबी हैं और जो औरतें नबी हैं (जैसे हज़रत हव्वा, हज़रत सारा, हज़रत हाजरा वग़ैरह) इन पर इसलिए कि वे इन कुरआनी त़ुनियादों की वजह से, जो उनकी फ़ज़ीलतों और कमालों से ताल्लुक रखती हैं, बाक़ी नबी औरतों पर बरतरी रखती हैं।

(तफ़्सील के ख़्वाहिशमंद असल किताब की तरफ़ रुजू करें —मुरत्तिब)

हज़रत मसीह عليه السلام के हालात

यहूदी अपनी मज़हबी रिवायतों की बुनियाद पर जिन उलुलअज़्म पैग़म्बरों के आने के इतिज़ार में थे, उनमें मसीह عليه السلام भी थे और हज़रत यस्या عليه السلام ने उनको बताया था कि वह न एलिया हैं, न वह नबी और न मसीह, बल्कि मसीह को भेजे जाने को बताने वाले और मुबशिशर हैं। कुरआन ने भी हज़रत ज़करीया और हज़रत यस्या के वाक़िए को हज़रत ईसा عليه السلام की बशारत देने वाला और पता देने वाला बताया है, जैसा कि सूर: बक़र: 2 : 37 से वाज़ेह है। कुरआन ने हज़रत ईसा की पैदाइश के वाक़िए को इस तरह बयान किया है—

तर्जुमा—‘(वह वक़्त ज़िक्र के क़ाबिल है,) जब फ़रिश्तों ने मरयम से कहा, ऐ मरयम! अल्लाह तुझको अपने कलिमे की बशारत देता है, उसका नाम मसीह ईसा बिन मरयम होगा। वह दुनिया व आख़िरत में वज़ाहत, रौब व दबदबा वाला और हमारे क़रीबों में से होगा और वह गोद में और दूध पीने के ज़माने में लोगों से कलाम करेगा और वह नेकों में से होगा।’

मरयम ने कहा, ‘मेरे लड़का कैसे हो सकता है जबकि मुझको किसी मर्द ने हाथ तक न लगाया?’

फ़रिश्ते ने कहा, अल्लाह तआला जो चाहता है, उसी तरह पैदा कर देता है। वह जब किसी चीज़ के लिए हुक्म करता है तो कह देता है, ‘हो जा’ और वह हो जाती है और अल्लाह उसको किताब व हिक्मत और तौरात व इंजील का इल्म अता करेगा और वह बनी इसराईल की तरफ़ अल्लाह का रसूल होगा।’ (3 : 45-48)

तर्जुमा—‘और ऐ पैग़म्बर! किताब में मरयम का वाक़िया ज़िक्र करो, उस वक़्त का ज़िक्र, जब वह एक जगह पूरब की तरफ़ थी, अपने घर के आदमियों से अलग हुई, फिर उसने उन लोगों की तरफ़ से परदा कर लिया। पस हमने उसकी तरफ़ अपना फ़रिश्ता भेजा और वह भले-चंगे आदमी के रूप में नुमायां हो गया। मरयम उसे देख कर घबरा गई, वह बोली, अगर तू नेक आदमी है, तब मैं रहमान खुदा के नाम पर तुझसे पनाह मांगती हूँ।’

फ़रिश्ते ने कहा, मैं तेरे परवरदिगार का भेजा हुआ हूँ और इसलिए

नमूदार हुआ हूं कि तुझे एक पाक फ़रज़ंद (बेटा) दे दूं।'

मरयम बोली, 'यह कैसे हो सकता है कि मेरे लड़का हो, हालांकि किसी मर्द ने मुझे छुआ नहीं और न मैं बद-चलन हूं?'

फ़रिश्ते ने कहा, होगा ऐसा ही। तेरे परवदिगार ने फ़रमाया, यह मेरे लिए कुछ मुश्किल नहीं। वह कहता है, यह इसलिए होगा कि उस (मसीह) को लोगों के लिए निशान बना दूं और मेरी रहमत उसमें ज़ाहिर हो और यह ऐसी ही बात है, जिसका होना तै हो चुका है' (19 : 16-21)

जिब्रील अमीन ने मरयम ~~को~~ को यह खुशख़बरी सुना कर उनके गरेबान में फूंक दिया और इस तरह अल्लाह तआला का कलिमा उन तक पहुंच गया। अल्लाह तआला ने इसकी तफ़्सील को सूरः अंबिया, सूरः तहरीम और सूरः मरयम में जिक्र फ़रमाया है।

तर्जुमा— 'और उस औरत (मरयम) का मामला, जिसने अपनी पाकदामनी को क़ायम रखा, फिर हमने उसमें अपनी 'रूह' को फूंक दिया और उसको और उस लड़के को जहानवालों के लिए 'निशान' ठहराया है।' (21 : 91)

तर्जुमा— 'और इमरान की बेटी मरयम' कि जिसने अपनी अस्मत को बरक़रार रखा, पर हमने उसमें अपनी रूह को फूंक दिया।' (66 : 12)

तर्जुमा— 'फिर उस होने वाले फ़रज़ंद का हमल ठहर गया। (अपनी हालत छुपाने के लिए) लोगों से अलग होकर दूर चली गई, फिर उसे दर्दज़ेह (बच्चा जनने के वक़्त का दर्द) का इज़्तिराब ख़जूर के एक पेड़ के नीचे ले गया। (वह उसके तने के सहारे बैठ गई) उसने कहा, काश! मैं इससे पहले मर चुकी होती। मेरी हस्ती को लोग भूल गए होते, उस वक़्त (एक पुकारने वाले फ़रिश्ते ने) उसे नीचे से पुकारा, ग़मगीन न हो, तेरे परवरदिगार ने तेरे तले नहर जारी कर दी है और ख़जूर के पेड़ का तना पकड़ कर अपनी तरफ़ हिला, ताज़ा और पंके हुए फलों के ख़ोशें तुझ पर गिरने लगेंगे, खा पी (और अपने बच्चे के नज़ारे से) आंखें ठंडी कर, फिर अगर कोई आदमी नज़र आए (पूछ-गछ करने लगे) तो (इशारे से) कह दे, मैंने खुदा-ए-रहमान के हुज़ूर रोज़े की मन्नत मान रखी है, मैं आज किसी आदमी से बात-चीत नहीं कर सकती।

फिर ऐसा हुआ कि वह लड़के को साथ लेकर अपनी क़ौम के पास आई, लड़का उसकी गोद में था। लोग (देखते ही) बोल उठे, 'मरयम! तूने अजीब

ही बात कर दिखाई और इतनी बड़ी तोहमत का काम कर गुजरी। ऐ हारून की बहन! न तो तेरा बाप बुरा आदमी था, न तेरी मां बदचलन थी, (तू यह क्या कर बैठी?) इस पर मरयम ने लड़के की तरफ इशारा किया (कि यह तुम्हें बतला देगा कि हकीकत क्या है?) लोगों ने कहा, भला हम इससे क्या बात करें जो अभी गोद में बैठने वाला दूध पीता बच्चा है।'

मगर लड़का बोल उठा, मैं अल्लाह का बन्दा हूं। उसने मुझे किताब दी और नबी बनाया, उसने मुझे बाबरकत किया, भले ही मैं किसी जगह हूं। उसने मुझे नमाज़ और ज़कात का हुक्म दिया जब तक ज़िंदा रहूं, यही मेरा शिज़ार हो। उसने मुझे अपनी मां का खिदमत गुज़ार बनाया, ऐसा नहीं कि खुदसर और नाफ़रमान होता, मुझ पर उसकी तरफ़ से सलामती का पैग़ाम है। जिस दिन पैदा हुआ, जिस दिन मरूंगा और जिस दिन फिर ज़िंदा उठाया जाऊंगा।

(19 : 22-23)

नोट : कहते हैं कि हारून मरयम के ख़ानदान में एक आबिद व ज़ाहिद इंसान और बहुत नेक नफ़स मशहूर था। (तफ़सीर इब्ने कसीर)

क्रौम ने जब एक दूध पीते बच्चे की जुबान से हिक्मत भरी बातें सुनीं तो हैरत में पड़ गई और उसको यक़ीन हो गया कि मरयम का दामन बिला शुबहा हर क्रिस्म की बुराई और खोट में पाक है और इस बच्चे की पैदाइश का मामला यक़ीनन अल्लाह की तरफ़ से एक 'निशान' है।

यह ख़बर ऐसी नहीं थी कि छिपी रह जाती, करीब और दूर सब जगह इस हैरत में डाल देने वाले वाक़िए और ईसा عليه السلام की मोज़जें वाली विलादत के चर्चे होने लगे और इंसानी तबयीतों ने इस मुक़द्दस हस्ती से मुताल्लिक़ शुरू ही से अलग-अलग करवटें बदलनी शुरू कर दीं। अस्थाबे ख़ैर ने इसके वजूद को अगर सआदत व बरकत का चांद समझा तो शरीर लोगों ने उसकी हस्ती को अपने लिए बुरा फ़ाल जाना और बुज़ व हसद के शोलों ने अन्दर ही अन्दर उनकी फ़ितरी इस्तेदाद को खाना शुरू कर दिया।

मरज़ इसी टकराने वाली फ़िज़ा के अन्दर अल्लाह तआला अपनी निगरानी में मुक़द्दस बच्चे की तर्बियत और हिफ़ाज़त करता रहा, ताकि उसके हाथों बनी इसराईल के मुर्दा दिलों को ताज़ा ज़िंदगी बख़्शे और उनकी

रूहानियत के सूखे पेड़ को एक बार फिर फलदार बनाए।

तर्जुमा—‘और हमने ईसा बिन मरयम और उसकी मां (मरयम) को अपनी कुदरत का) निशान बना दिया और उन दोनों का एक ऊंचा मुक़ाम (बैतुल्लह्म) पर ठिकाना बनाया, जो ठहरने के क़ाबिल और चश्मे वाला है।’

(23 : 50)

कुरआन मजीद ने हज़रत ईसा عليه السلام के बचपन के हालात में से सिर्फ़ इसी अहम वाक़िए का ज़िक्र किया है। बाक़ी बचपन के दूसरे हालात को, जिनका ज़िक्र कुरआन के वाज़ और नसीहत के ख़ास मक्सद से ताल्लुक नहीं रखता था, नज़रंदाज़ कर दिया।

मुबारक हुलिया

मेराज की हदीस (बुख़ारी शरीफ़) के मुताबिक़ नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इश़ाद फ़रमाया कि मेरी मुलाक़ात हज़रत ईसा से हुई तो मैंने उनको दर्मियानी क़द वाला सुर्ख़ व सफ़ेद पाया। बदन ऐसा साफ़ व शफ़्फ़ाफ़ था, मालूम होता था अभी हम्माम से नहा कर आए हैं और कुछ रिवायतों में है कि आपके बाल कंधे तक लटके हुए थे और कुछ हदीसों में है कि रंग खिलता हुआ गेहुवां था।

रसूल बनाए गए

यहूदियों के अक़ीदे का और अमली ज़िंदगी का मुकम्मल नक्शा तो तौरात में मौजूद है, लेकिन इन हक़ीक़तों और इनके नतीजों को कुरआन में भी इस तरह वयान किया गया है—

तर्जुमा—‘और वेशक़ हमने मूसा को किताब (तौरात) अ़ता की और उसके बाद हम (तुम में) पैग़म्बर भेजते रहे और हमने ईसा बिन मरयम को वाज़ेह मोज़े देकर भेजा और हमने उसको रूहे पाक (जिब्रील) के ज़रिए कूवत व ताईद अ़ता की। क्या जब तुम्हारे पास (ख़ुदा का) पैग़म्बर अपने हुक्म लेकर आया, जिन पर अ़मल करने को तुम्हारा दिल नहीं चाहता था, तो तुमने ग़ुरूर को शेया (नहीं) बना लिया? पस (पैग़म्बरों की) एक जमाअत को झुठलाते हो

तो एक जमाअत को क़त्ल कर देते हो और कहते हो कि हमारे दिल (हक़ कुबूल करने के लिए) ग़िलाफ़ में हैं। (यह नहीं) बल्कि इनके कुफ़र करने पर खुदा ने इनको मलकन कर दिया है, पस बहुत बड़े से हैं, जो ईमान ले आए हैं। (2 : 87-88)

तर्जुमा—‘और (ऐ ईसा!) जब हमने बनी इसराईल (की फ़कड़ और क़त्ल के इरादे) को तुझ से बाज़ रखा, उस वक़्त जबकि तू उनके पास खुले मोज़जे लेकर आया, तो क़ह्व बनी इसराईल में से इंकार करनेवालों ने, यह कुछ नहीं है, मगर खुला जादू है।’ (5 : 110)

तर्जुमा—‘और मैं तस्दीक़ करने वाला हूँ तौरात की जो मेरे सामने है और (इसलिए आया हूँ) ताकि तुम्हारे लिए कुछ चीज़ें हलाल कर दूँ। जो तुम्हारे टेढ़ेपन की क़ह से) तुम पर हराम कर दी गई थीं और मैं तुम्हारे पास तुम्हारे परवरदिगार की निशानी लेकर आया हूँ, पस अल्लाह का ख़ौफ़ करो और मेरी पैरवी करो। बेशक़ अल्लाह मेरा और तुम्हारा परवरदिगार है। पस उसी की इबादत करो, यही सीधी राह है। पस जबकि ईसा ने उनसे कुफ़ महसूस किया, तो फ़रमाया, ‘अल्लाह के लिए कौन मेरा मददगार है’, तो शागिर्दों ने ज़वाब दिया, हम हैं अल्लाह के (दीन के) मददगार।’ (3 : 50-52)

तर्जुमा—फिर उनके बाद (नूह व इब्राहीम के बाद) हमने अपने रसूल भेजे और उनके बाद ईसा बिन मरयम को रसूल बना कर भेजा और उसको किताब (इंजील) अता की। (57 : 27)

तर्जुमा—(वह वक़्त याद करने के लायक़ है) जब अल्लाह तज़ाला क्रियामत के दिन कहेगा, ‘ऐ ईसा बिन मरयम! मेरी उस नेमत को याद कर, जो मेरी ओर से तुझ पर और तेरी मां पर उतरी, जबकि मैंने रूहुल कुद्स (जिब्रील ~~अल्ले~~) के ज़रिए तेरी ताईद की कि तू क़लाम करता था मां की गोद में और बुढ़ापे में और जबकि मैंने तुझको सिखाई किताब, हिक़मत, तौरात और इंजील।’ (5 : 110)

तर्जुमा—और (वह वक़्त याद करो) जब ईसा बिन मरयम ने कहा, ऐ बनी इसराईल! बेशक़ मैं तुम्हारी तरफ़ भेजा हुआ अल्लाह का पैग़म्बर हूँ, तस्दीक़ करने वाला हूँ तौरात की जो मेरे सामने है और बशारत सुनाने वाला हूँ एक पैग़म्बर की, जो मेरे बाद आएगा। उसका नाम अहंमद है। (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम)

खुली निशानियां

दुस्आन के क्रिस्से

हर मौके पर मोजर्जों की बहस में गुजर चुका है कि हक़ और सच्चाई के मानने और अपनाने में इसांनी फ़ितरत हमेशा दो तरीकों से मानूस रही है—

एक यह कि 'हक़ की दावत देने वाले की हक़परस्ती और सच्चाई, दलीलों की ताक़त और उनकी रोशनी के ज़रिए साबित और वाज़ेह हो जाए, और दूसरा तरीका यह कि दलीलों के साथ-साथ अल्लाह की ओर से उसके सच होने की ताईद में, कुदरत के आम क़ानून से अलग, अस्बाब व वसाइल के बग़ैर और इल्म व फ़न हासिल किए बग़ैर उसके हाथ पर अजीब मामलों का मुज़ाहरा इस तरह हो कि आम व ख़ास उसके मुक़ाबले में आजिज़ और पिछड़ जाएं और उनके लिए अस्बाब व वसाइल के बग़ैर उन मामलों की ईजाद नामुम्किन हो।

पहले तरीके के साथ यह दूसरा तरीका इंसान की अक़ल व फ़िक्र और उसकी नफ़िसयाती कैफ़ियतों में ऐसा इक़िलाब पैदा कर देता है कि उनका विजदान यह मानने पर मजबूर हो जाता है कि हक़ की दावत देने वाले (नबी, पैग़म्बर) का यह अमल असल में खुद उसका अमल नहीं है, बल्कि उसके साथ खुदा की ताक़त काम कर रही है और बेशक यह उसके सच्चे होने की एक और दलील है। चुनांचे कुरआन मजीद में आयत—

तर्जुमा—'और न फेंका था तूने जिस वक़्त कि फेंका था, लेकिन अल्लाह ने फेंका था।'

(8 : 17)

में यही हक़ीक़त ज़ाहिर करनी मक्सूद है, मगर इन हर दो तरीकों में से उन सोचने-समझने वालों पर जो सोचने-समझने की ताक़त में ऊंचा मक़ाम रखते हैं, पहला तरीका ज़्यादा असरदार साबित होता है और वे दूसरे तरीके को पहले तरीके की ताईद व तक्वियत की हैसियत से कुबूल करते और हक़ीक़ी दावत देने वाले (नबी व पैग़म्बर) की नुबूवत व रिसालत के दावे के सच होने का और ज़्यादा अमली सबूत समझ कर उस पर ईमान ले आते हैं।

और इन सोचने-समझने वालों के खिलाफ़ क़ूवत व इक़्तिदार वाले और उनकी ज़ेह्नियत से मुतास्सिर आम इंसानी दिल तस्दीक़ के दूसरे तरीक़े से ज़्यादा मुतास्सिर होते और नबी और पैग़म्बर के मोज़ज़े भरे कामों को कायनात की ताक़त व क़ूवत के दायरे से ऊपर वाली हस्ती का इसदा व क़ूवत यक़ीन करने पर मजबूर हो जाते हैं और उन मामलों को 'ख़ुदाई निशान', समझ कर हक़ व सदाक़त की दावत के सामने सर झुका देते हैं।

मुख़्तसर यह कि अल्लाह की किताब और उसके जुम्लों पर आयत और आयतों के इतलाक़ से तो कुरआन की कोई लम्बी सूः ही ख़ाली होगी, तमाम कुरआन में जगह-जगह इस ज़्यादती के साथ उसका इस्तेमाल हुआ है कि उसकी सूची मुस्तक़िल मौज़ू बन सकती है।

इसी तरह 'खुली निशानियों' से मुराद अगरचे अल्लाह की किताब (कुरआन, तौरात, ज़बूर, इंजील) और उनकी आयतों को ही समझा गया है, मगर किसी-किसी जगह उसको मोज़ज़ों के लिए भी इस्तेमाल किया गया है।

तक्ज्जोह के क़ाबिल बात और मोज़ज़ों की हक़ीक़त

नबी और रसूल के भेजे जाने का मक़सद कायनात की रुशद व हिदायत और दीन व दुनिया की फ़लाह व ख़ैर की रहनुमाई है और वह अल्लाह की ओर से आई वह्य की रोशनी में इस मंसबी फ़र्ज़ को अंजाम देता और इल्म व बुरहान और हक़ की हुज्जत के ज़रिए सच्चाई का रास्ता दिखाता है। वह यह दावा नहीं करता कि फ़ितरत (प्रकृति) और फ़ितरत से परे के मामलों में हिस्सा लेना भी उनका मंसबी काम है, बल्कि वह बार-बार यह एलान करता है कि मैं ख़ुदा की ओर से खुशख़बरी देने वाला और डराने वाला और अल्लाह की ओर बुलाने वाला बनकर आया हूँ, मैं इंसान हूँ और ख़ुदा का नबी, इससे ज़्यादा और कुछ नहीं हूँ, तो फिर उसके सच्चाई के इस दावे के इम्तिहान और परख के लिए उसकी तालीम, उसकी तर्बियत और उसकी शख़्सियत का बहस में आ जाना यक़ीनी तौर पर माकूल, लेकिन उससे फ़ितरत से परे और आदत के खिलाफ़ अजीब व ग़रीब चीज़ों की मांग अक़ल के खिलाफ़ और बेजोड़ बात मालूम होती है और यह नज़र आता है, जैसे किसी अच्छे तबीब (हकीम,

डाक्टर) की हकीमी के दावे पर उससे यह मांग की जाए कि वह जादुई खटके की एक उम्दा अलमारी या तकड़ी का एक अजीब क्रिस्म का खिलौना बना कर दिखाए। तबीब ने यह दावा नहीं किया था कि वह माहिर तोहार या बढ़ई है, बल्कि उसका दावा तो जिस्मानी मरजों के इलाज का है। इसी तरह पैगम्बर ख़ुदा का यह दावा नहीं होता कि वह ख़ुदा की तरह क़यनात पर हर क्रिस्म के इस्तेमाल का मालिक व क़ादिर है, बल्कि उसका दावा तो यह है कि वह तमाम रूहानी मरजों के लिए कामिल तबीब और माहिर हकीम है।

बहरहाल 'अल्लाह की सुन्नत' यह जारी रही है कि जब किसी क़ौमी हिदायत या तमाम इंसानी क़यनात की कामियाबी के लिए नबी और पैगम्बर भेजा जाता है, तो उसको अल्लाह की तरफ़ से मज़बूत दलीलों और अल्लाह की आयतों (मोज़ज़ों) से यानी दोनों से नवाज़ा जाता है, वह एक ओर अल्लाह की वक़्त के ज़रिए क़यनात को मज़ाश व मज़ाद (खाने-पीने) से मुताल्लिक करने-न करने के हुक्मों से नवाज़ा जाता है और बेहतरीन दस्तूर व निज़ाम पेश करता है तो दूसरी तरफ़, अल्लाह की मस्हलत के मुताबिक़ 'ख़ुदाई निशानों' का मुज़ाहरा (प्रदर्शन) करके अपने सच्चे होने और अल्लाह की तरफ़ से होने का सबूत देता है, साथ ही हर एक पैगम्बर को इसी तरह के मोज़ज़े और निशानियां दी जाती हैं, जो उस ज़माने की इल्मी तरक्कियों या क़ौमी और मुल्की ख़ुसूसियतों के मुनासिब होने के बावजूद टकराने वालों को मजबूर करें और पछाड़ें और कोई उनके मुक़ाबले में आने कि हिम्मत न कर सके और अगर तास्सुब और ज़िद दर्मियान में रोक न बनें तो अपनी कोशिशों से की गई तरक्कियों और ख़ुसूसियतों के हक़ीक़तों से आगाह होने की वजह से यह मानने पर मजबूर हो जाएं कि यह जो कुछ सामने है, इंसानों की कुदरत से ऊपर, उनकी पहुंच से बाहर और सिर्फ़ एक ख़ुदा ही की जानिब से है।

जैसे हज़रत इब्राहीम के ज़माने में ज्योतिष-शास्त्र (इल्मे नुजूम Astronomy) और इल्मे कीमिया (Chemistry) का बहुत ज़ोर था और साथ ही उनकी क़ौम तारों के असरात को उनके निजी असर समझती और उनको सही असरंदाज़ होने वाले यक़ीन करके एक अल्लाह की जगह उनकी परस्तिश करती थी और उनका सबसे बड़ा देवता शम्स (सूरज) था, क्योंकि वह रोशनी

और हरारत (गर्मी) दोनों रखता था और यही दोनों चीजें उनकी निगाह में कायनात की बक्रा और फ़लाह के लिए असल बुनियाद थीं और इसी वजह से दुनिया में 'आग' को उसका मज़हर मान कर उसकी भी पूजा की जाती थी। इसके अलावा उनको चीजों के ख़वास व असरात और उनके रद्दे अमल (Reaction) पर काफ़ी पकड़ थी, गोया आज की इल्मी दुनिया के लिहाज़ से वे अमल के केमिकल तरीक़े को भी बड़ी हद तक जानते थे।

इसलिए अल्लाह तआला ने इब्राहीम को उनकी क़ौम की हिदायत और खुदा परस्ती की तालीम के लिए एक तरफ़ ऐसी रोशन दलीलें दीं, जिनके ज़रिए वे क़ौम के ग़लत अक़ीदों को झुठलाएं और हक़ को हक़ बताने की ख़िदमत अंजाम दें और मज़ाहिर परस्ती (ऊपरी चमक-दमक देख कर उनकी पूजा) की वजह से हकीक़त के चेहरे पर अंधेरे का जो परदा पड़ गया था, उसको चाक करके रोशन चेहरे को नुमायां कर सकें।

तर्जुमा—'और यह हमारी दलील है जो हमने इब्राहीम को उसकी क़ौम के मुक़ाबले में अता की, हम जिस का दर्जा बुलन्द करना चाहते हैं, कर दिया करते हैं, बेशक तेरा रब हिक्मत वाला और जानने वाला है' (6 : 83)

और दूसरी तरफ़ जब तारा-परस्त और बुत-परस्त बादशाह से लेकर क़ौम के आम लोगों ने उनकी दलीलों और सबूतों से ला-जवाब होकर अपनी माद्दी ताक़त के घमंड पर उन्हें धधकती आग में झोंक दिया, तो उसी बड़े पैदा करने वाले ने जिसकी दावत व इर्शाद की ख़िदमत हज़रत इब्राहीम عليه السلام अंजाम दे रहे थे।

तर्जुमा—'तू सर्द और सलामती बन जा।' (21 : 69)

कह कर अपनी कुदरत का वह शानदार निशान (मोजज़ा) अता किया, जिस ने बातिल के रोबदार ऐवान में ज़लज़ला पैदा कर दिया और तमाम क़ौम उस खुदाई मुज़ाहरे से हैरान व परेशान और ज़लील व ख़ासिर (घाटे में) होकर रह गई।

तर्जुमा—'और चाहने लगे उसका बुरा, फिर उन्हीं को डाला हमने नुक़सान में।' (29 : 70)

और हज़रत मूसा عليه السلام के ज़माने में जादू मिस्त्री, उलूम व फ़ुनून में बहुत

ज्यादा नुमायां और इम्तियाजी शान रखता था और मिस्रियों को जादू के फ़न में कमाल हासिल था, इसलिए हज़रत मूसा को क़ानूने हिदायत (तौरात) के साथ-साथ 'यदे बैज़ा' और 'असा' जैसे मोज़जे दिए गए और हज़रत मूसा عليه السلام ने मिस्र के जादूगरों के मुक़ाबले में जब उनका मुज़ाहरा किया तो जादू के तमाम माहिर उसको देख कर एक साथ पुकार उठे कि बेशक यह जादू नहीं, यह तो उससे अलग और इंसानी ताक़त से कहीं ऊंचा मुज़ाहरा है, जो हक्कीकी खुदा ने अपने सच्चे पैग़म्बरों की ताईद के लिए उनके हाथ पर कराया है, क्योंकि हम जादू की हक्कीक़त को ख़ूब अच्छी तरह जानते हैं और यह कह कर उन्होंने फिरऔन और क्रौमे फिरऔन के सामने बे-ख़ौफ़ी के साथ एलान कर दिया कि वह आज से मूसा और हारून अलैहिमस्सलाम के एक खुदा की परस्तिश करेंगे।

तर्जुमा—और सब जादूगर सज्दे में गिर पड़े, कहने लगे, हम तो जहानों के परवरदिगार पर ईमान ले आए, जो मूसा और हारून का परवरदिगार है।

(8 : 120-122)

मगर फिरऔन और दरबार के सरदार अपनी बदबख़्ती से यही कहते रहे—

तर्जुमा—'फिरऔन ने दरबारियों से जो आस-पास (बैठे) थे, कहा कि इसमें कोई शक़ नहीं कि यह बड़ा जादूगर है।' (26 : 34)

तर्जुमा—'गरज जब उन लोगों के पास मूसा हमारी खुली दलीलें लेकर आए, तो उन लोगों ने (मोज़जे देख कर) कहा कि यह तो (सिफ़ी) एक जादू है कि (ख़ामख़ाह अल्लाह तआला पर) झूठ गढ़ा जाता है और हमने ऐसी बात कभी नहीं सुनी कि हमारे अगले बाप-दादों के वक़्त में भी हुई हो।' (28 : 36)

(28 : 36)

हज़रत ईसा और मोज़जे

इसी तरह हज़रत ईसा عليه السلام के ज़माने में तिब्ब का इल्म (Medical Science) और भौतिक ज्ञान (Physics) की बहुत चर्चा थी और यूनान के कमाल पर बहुत ज़्यादा असर डाल रही थी और मुल्कों में सदियों से बड़े

तबीब और फ़लसफ़ी अपनी हिक्मत व दानिश और तिब्ब के कमालों का मुज़ाहरा कर रह थे, मगर एक खुदा की तौहीद और दीने हक़ की तालीम से आम व ख़ास लोग आमतौर से महरूम थे और खुद बनी इसराईल भी जो कि नबियों की नस्ल में होने पर हमेशा फ़ख़ करते रहते थे, गुमराहियों में पड़े हुए थे।

पस इन हालात में 'अल्लाह की सुन्नत' ने जब हज़रत ईसा को रुश्द व हिदायत के लिए चुन लिया, तो एक तरफ़ उनको हुज्जत व बुरहान (इंजील) और हिक्मत से नवाज़ा तो दूसरी तरफ़ ज़माने के ख़ास हालात के मुनासिब कुछ ऐसे निशान (मोजज़े) भी अता फ़रमाए, जो उस ज़माने के कमाल वालों और उनके पीछे चलने वालों पर इस तरह असर डालने वाले हों कि हक़ तलाश करने वाले को यह मानने में कोई शक़ बाक़ी न रहे कि बेशक़ ये अमल हासिल किए गए इल्मों से जुदा, सिर्फ़ अल्लाह की ओर से रसूले बरहक़ की ताईद में ज़ाहिर हुए हैं और तास्सुब रखने वाले और सरकश के पास इसके अलावा और कोई रास्ता न रहे कि उनको 'खुला जादू' कह कर अपने बुग्ज़ व हसद की आग़ को और बढ़ा दे।

ईसा عليه السلام के उन मोजज़ों में से जिनका मुज़ाहरा उन्होंने क़ौम के सामने किया, कुरआन ने चार मोजज़ों का खुल कर ज़िक़्र किया है—

1. वह खुदा के हुक्म से मुर्दे को ज़िंदा कर दिया करते थे।
2. और पैदाइशी अंधे को आंख वाला और कोढ़ को चंगा कर दिया करते थे।

3. वह मिट्टी से परिंदा बनाकर उसमें फूंक देते थे और अल्लाह के हुक्म से उसमें रूह पड़ जाती थी।

4. वह यह भी बता दिया करते थे कि किसने क्या खाना खाया और क्या खर्च किया और क्या घर में भंडारा जमा कर रखा है।

क़ौमों में ऐसे मसीहा मौजूद थे जिनके इलाज व मुआलजे और अपनी तदबीरों से, मायूस मरीज़ शिफ़ा पाते थे, उनमें भौतिक-ज्ञान के माहिर ऐसे फ़लसफ़ी भी कम न थे जो रूह व माद्दा (आत्मा व भूत द्रव्य) की हक़ीक़तों और आसमानी और ज़मीनी चीज़ों पर बेमिसाल नज़रियों और तजुर्बों के

मालिक समझे जाते थे और चीजों की हकीकत पर उनकी गहरी नज़र और महारत कमाल वालों के लिए फ़ख़ की चीज़ थी, लेकिन अब उनके सामने ईसा عليه السلام ने सामान और वसीला अपनाए बग़ैर इन मामलों का मुज़हारा किया, तो उन पर भी हिदायत और गुमराही की कुदरती तक्सीम के मुताबिक़ यही असर पड़ा कि जिस आदमी के दिल में हक़ की तलब पाई जाती थी, उसने मान लिया कि बेशक़ इस क्रिस्म का मुज़ाहरा इंसानी पहुंच से बाहर और सच्चे नबी की ताईद व तस्दीक़ के लिए अल्लाह की तरफ़ से है और जिन दिलों में घमंड, हसद, और जलन और दुश्मनी थी, उनके तास्सुब ने वही कहने पर मजबूर किया, जो उनके पहले के नबी और रसूल कहते आए थे—

‘यह कुछ नहीं मगर खुला जादू है।’

(37 : 15)

चौथे मोज़े के बारे में तफ़्सीर लिखने वाले कहते हैं कि इसके मुज़ाहरे की वजह यह पेश आई कि मुख़ालिफ़ जब रुश्द व हिदायत की उनकी दावत से नफ़रत करके उनको झुठलाते और उनकी पेश की हुई खुली निशानियों (मोज़ों) को सेहर और जादू कहते तो साथी मज़ाक़ के तौर पर यह भी कह दिया करते थे कि अगर तुम अल्लाह तआला के ऐसे मक्बूल बन्दे हो तो बताओ आज हमने क्या खाया है और क्या बचा रखा है? तब ईसा عليه السلام उनके मज़ाक़ को संजीदगी में बदल देते और अल्लाह की वह्य की मदद से उनके सवाल का जवाब दे दिया करते थे।

मगर कुरआन हकीम ने इस मोज़े को जिस अन्दाज़ में बयान किया है उसको ध्यान देकर पढ़ने-समझने से मालूम होता है कि इस ‘निशान’ के मुज़ाहरे की वजह तफ़्सीर लिखने वालों की बयान की हुई तौजीह से ज़्यादा बारीक़ और फैली हुई मालूम होती है और वह यह कि ईसा पैग़ामे हिदायत और तब्लीगे हक़ की ख़िदमत अंजाम देते हुए ज़्यादातर लोगों को दुनिया में फंसे हुए होने, हिदायत व दौलत का लालच देने और ऐश-पसन्द ज़िंदगी की रग़बत से बाज़ रखने पर बयान के अलग-अलग तरीक़ों के ज़रिए तवज्जोह दिलाया करते थे, तो जिस तरह कुछ सईद रूहें इस कलिमा-ए-हक़ के सामने सर झुका दिया करती थीं, इसके खिलाफ़ घटिया और दुष्ट इंसान उनके बेहतर वाज़ों से दिली नफ़रत और दूरी रखने के बावजूद मुत्तास्सिर करने वाली

हस्तियों से ज्यादा उनको यह बताती कि हम तो हर वक़्त आपके इस इशार्द को पूरा करने में लगे रहते हैं, इसलिए कि कुदरते हक़ ने यह फ़ैसला किया कि इन मुनाफ़िक़ों की मुनाफ़क़त के नुक़सान को ख़त्म करने के बजाए हज़रत ईसा عليه السلام को ऐसा 'निशान' दिया जाए कि इस ज़रिए से हक़ व बातिल खुल कर सामने आ जाए और अल्लाह के हुक्क़ और इंसान के हुक्क़ के मारे जाने पर ज़ख़ीरा करने का जो सामना किया जा रहा है, उसका परदा चाक कर दिया जाए।

इन चार क्रिस्म के खुदाई निशान (मोज़ज़ों) के अलावा खुद हज़रत ईसा की बग़ैर बाप की पैदाइश भी एक शानदार 'खुदाई निशान' था, जिसके बारे में अभी तफ़्सील से बातें बयान की गईं।

हज़रत मसीह عليه السلام के हाथ पर जो मोज़ज़े ज़ाहिर किए गए या उनकी पैदाइश जिस मोज़ज़ाना तरीक़े से हुई, यहूदियों ने हसद की वजह से उसका इन्कार किया, तो किया लेकिन कुछ फ़ितरतपरस्त इस्लाम के दावेदार हज़रात ने भी उनके इन्कार के लिए राह पैदा करने की नाकाम कोशिश फ़रमाई है, इनमें से कुछ लोग वे हैं जिन्होंने इस इन्कार को ज़ाती फ़ायदे के लिए नहीं, बल्कि फ़ितरतपरस्त और खुदा के इन्कारी नए यूरोपीय उलेमा से मरऊब होने की वजह से यह रवैया अपनाया है, ताकि उनकी मज़हबियत पर अज़ाइब-परस्ती का इल्ज़ाम न लग सके।

इसी तरह एह्या-ए-मौता (मुरदा को ज़िंदा कर देना) के मोज़ज़े का भी इन्कार करते हुए यह दावा किया है कि अल्लाह तआला मौत के बाद किसी को इस दुनिया में क्रियामत से पहले ज़िंदगी नहीं बख़्शेगा, लेकिन इस दावे के खिलाफ़ कई जगहों पर ऐसा साबित किया हुआ मौजूद है कि अल्लाह तआला ने इस दुनिया में मौत देने के बाद ताज़ा ज़िंदगी बख़्शी है। (देखिए आयतें 2: 73, 259, 260) इन तमाम वाक़ियों में मुरदा के ज़िंदा किए जाने के खुले और साफ़ मानी साबित हैं (इसी तरह हज़रत मसीह عليه السلام की बिन बाप पैदाइश का भी इन्कार किया गया है और क़लम का ग़ैर-ज़रूरी ज़ोर लगाया गया है। लेकिन इस मसूअले की मुवाफ़िक़ और मुख़ालिफ़ रायों से हटकर एक ग़ैर जानिबदार मुसन्निफ़ (लेखक) जब हज़रत मसीह की पैदाइश के मुताल्लिक़

कुरआन की तमाम आयतों को पढ़ेगा, तो उस पर यह हकीकत आसानी से वाज़ेह हो जाएगी कि कुरआन हज़रत मसीह ~~ऋ~~ से मुताल्लिक यहूदियों का घटना और ईसाइयों का बढ़ना, दोनों के खिलाफ अपना वह मंसबी फ़र्ज अदा करना चाहता है, जिसके लिए कुरआन की हक़ की दावत सामने आई है।

यहूदी और ईसाई इस बारे में दो क़तरई मुख़ालिफ़ और आपस में टकराने वाली दिशाओं में चले गए हैं। यहूदी कहते हैं कि हज़रत मसीह झूठे और शोबदे (जादू) दिखाने वाले थे और ईसाई कहते हैं कि वह खुदा या खुदा के बेटे या तीन के तीसरे थे। इन हालात में कुरआन ने उन आयतों और वक़्यों के खिलाफ़ इल्म व यक़ीन की राह दिखाते हुए दोनों के खिलाफ़ यह फ़ैसला किया कि हक़ का रास्ता इफ़रात व तफ़रीत के दर्मियान है और सीधे रास्ते की यही सबसे बड़ी पहचान है।

वह कहता है कि वाज़ेह रहे कि हज़रत ईसा ~~ऋ~~ झूठे नहीं थे, बल्कि अल्लाह के सच्चे पैग़म्बर और राहे हक़ की सच्ची दावत देने वाले थे। उन्होंने दावते हक़ की तस्दीक़ के लिए जो कुछ अजीब बातें कर दिखाईं, वे नबियों के मोज़ज़ो की लिस्ट में शामिल हैं, न कि जादूगरों और तमाशा दिखाने वालों की और यह भी सही है कि उनकी पैदाइश बग़ैर बाप के हुई, मगर इससे यह कैसे इलज़ाम आ सकता है कि वह खुदा या खुदा के बेटे हो गए? क्या जो शख़्स इंसानी ज़रूरतों यानी खाने-पीने का मुहताज हो वह अब्द और इंसान के अलावा खुदा या माबूद हो सकता है? नहीं, हरगिज़ नहीं।

तो जबकि कुरआन ने यहूदियों और ईसाइयों के उन तमाम बातिल अक़ीदों को खुले लफ़्ज़ों में रद्द करके, जो उन्होंने हज़रत मसीह ~~ऋ~~ के बारे में क़ायम कर लिए थे, इस्लाह का अपना फ़रीज़ा अंजाम दिया। यह कैसे मुम्किन था कि अगर बिन बाप की पैदाइश का वाक़िया बातिल और ग़ौर-वाक़ई था और जो सहारा बन रहा था उलूहियते मसीह के बारे में खुलकर, कुरआन रद्द न करता, बल्कि इसके खिलाफ़ वह जगह-जगह इस वाक़िए को ठीक उस तरह बयान करता जाता जैसा कि इंजील में बयान किया गया है, उसका फ़र्ज था कि सबसे पहले उसी पर कड़ी चोट लगाता और सिर्फ़ इतना कह कर कि हज़रत मसीह का बाप फ़लां आदमी था, उस सारी इमारत

को जड़ से उखाड़ फेंकता, जिस पर मसीह के इलाह होने की बुनियाद रखी गई। मगर उसने यह तरीका अस्त्रियार न किया, बल्कि यह कहा कि यह बात किसी तरह भी मसीह के अल्लाह होने की दलील नहीं बन सकती? इसलिए कि—

तर्जुमा— 'ईसा की मिसाल अल्लाह के नज़दीक जैसे मिसाल आदम की, बनाया उसको मिट्टी से फिर कहा कि हो जा, वह हो गया।' (3 : 59)

पस अगर बिन बाप की पैदाइश मसीह को अल्लाह का दर्जा दे सकती है, तो आदम को उससे ज़्यादा अल्लाह बनाए जाने का हक़ हासिल है कि वह बिना मां-बाप के पैदा हुए।

बहरहाल जिन तावील-परस्तों ने हज़रत मसीह ~~ऋषि~~ की बिन बाप की पैदाइश से मुताल्लिक आयतों के जुम्लों को जुदा-जुदा करके ग़लत बातें पैदा की हैं, वे इसलिए बातिल हैं कि जब इस वाक़िए से मुताल्लिक आयतों को इकट्ठा करके पढ़ा जाए तो एक लम्हे के लिए भी आयतों के मानी में बिन बाप पैदाइश के मानी के सिवा दूसरे किसी भी मानी की गुजांइश नहीं रहती।

इसके अलावा जहां तक इस मसले का अक्ली पहलू है, सो अक्ल भी इसके मुम्किन होने को मुहाल करार नहीं देती, यहां तक कि आजकल तो यहां तक हो चुका है कि इंसानी पैदाइश आंखों देखे पैदा होने के आम तरीक़े के अलावा कुछ दूसरे तरीक़ों से भी होने लगी है और इन तरीक़ों को कुदरत के क़ानून के खिलाफ़ इसलिए कहा नहीं जा सकता कि हमने कुदरत के तमाम क़ानूनों का एहाता नहीं कर लिया है, बल्कि इंसान जितना ही इल्म और समझ की ओर बढ़ता जाता है, उसके सामने कुदरत के क़ानून के नये-नये गोशे खुलने लगते हैं।

पस अगर यह सही है कि जो बात कल नामुम्किन नज़र आती थी, आज यह मुम्किन कही जा रही है और जल्द या देर, उसके वाक़े होने पर यक़ीन किया जा रहा है, तो फिर नहीं मालूम कुदरत के इस क़ानून से इंकार कर देने के क्या मानी हैं? जिसका इल्म अभी तक अगरचे हमको हासिल नहीं है, मगर नबियों और रसूलों जैसी कुद्सी सिफ़ात हस्तियों पर इस इल्म की हक़ीक़त खुली हुई है तो क्या इल्मी दलील का यह भी कोई पहलू है कि जिस बात

का हमको इल्म न हो और अक्ल उसको नामुम्किन और मुहाल न साबित करती हो, उसका इंकार सिर्फ इल्म न होने की वजह से कर दिया जाए।

अब इन खुली निशानियों को कुरआन मजीद से सुनिए और नसीहत और सबक हासिल कीजिए कि इन पुराने वाकियों को याद दिलाने का कुरआन का यही बड़ा मक्सद है।

तर्जुमा—‘और अल्लाह सिखाता है उस (ईसा ~~ऋषि~~) को किताबे हिक्मत तौरात और इंजील और वह रसूल है बनी इसराईल की तरफ, (वह कहता है) कि बेशक मैं तुम्हारे परवरदिगार की तरफ से ‘निशान’ लेकर आया हूँ। वह यह कि मैं तुम्हारे लिए मिट्टी से परिंदा की शक्ल बनाता, फिर उसमें रूह फूंक देता हूँ और वह अल्लाह के हुक्म से जिंदा परिंदा बन जाता है और पैदाइशी अंधे को आंख वाला कर देता हूँ और सफ़ेद दाग़ के कोढ़ को अच्छा कर देता हूँ और अल्लाह के हुक्म से मुर्दा को जिंदा कर देता हूँ और तुमको बता देता हूँ जो तुम खाकर आते हो और जो तुम घर में ज़खीरा रख आते हो, सो अगर तुम हकीकी ईमान रखते हो तो बेशक इन मामलों में (मेरी सच्चाई और अल्लाह की ओर से होने के लिए) ‘निशान’ है और मैं तौरात की तस्दीक करने वाला हूँ जो मेरे सामने है और (इसलिए भेजा गया हूँ) ताकि कुछ चीज़ों को जो तुम पर हराम हो गई हैं, तुम्हारे लिए हलाल कर दूँ, तुम्हारे लिए परवरदिगार ही के पास से ‘निशान’ लाया हूँ, पस तुम अल्लाह से डरो और (उसके दिए हुए हुक्मों में) मेरी इताअत करो, बेशक अल्लाह तआला ही मेरा और तुम्हारा परवरदिगार है, सो उसकी इबादत करो, यही सीधा रास्ता है।’

(3 : 48-51)

तर्जुमा—‘ऐ ईसा बिन मरयम! तू मेरी इस नेमत को याद कर, जबकि तू मेरे हुक्म से गारे से परिंदा बना देता और फिर उसमें फूंक देता था और वह मेरे हुक्म से जिंदा परिंदा बन जाता था और जब कि तू मेरे हुक्म से पैदाइशी अंधे को आंख वाला और सफ़ेद दाग़ के कोढ़ को अच्छा कर देता था और जबकि तू मेरे हुक्म से मुर्दा को जिंदा करके क़ब्र से निकालता था।’

(5 : 110)

तर्जुमा—‘फिर जब वह (ईसा) उनके पास खुले निशान लेकर आया तो उन्होंने (यानी बनी इसराईल) ने कहा, यह तो खुला जादू है।’ (61 : 6)

नबियों ने जब कभी भी क़ौमों के सामने अल्लाह की आयतों का मुज़ाहरा किया है, तो इंकार करने वालों ने हमेशा उनके मुताल्लिक एक बात ज़रूर कही है, 'यह खुला हुआ जादू है।' पस क्या एक हक़ को तलाश करने वाला और ग़ैर-मुतास्सिब इंसान के लिए यह जवाब इस ओर रहनुमाई नहीं करता कि नबियों के इस किस्म के मुज़ाहरे ज़रूर कुदरत के आम क़ानूनों से जुदा ऐसे इल्म के ज़रिए ज़ाहिर होते थे, जो सिर्फ़ उन कुद्सी सिफ़ारत हस्तियों के लिए ही ख़ास रहा है और इनके अलावा इंसानी दुनिया उसकी हक़ीक़त के बारे में इंकार पर तुली हुई थी, उसके इंकार के लिए इससे बेहतर दूसरी ताबीर नहीं थी कि वे इन मामलों को 'जादू' कह दें। इसलिए इन मामलों को जादू कहना भी उनके 'मोज़ा' और 'अल्लाह का निशान' होने की ज़बरदस्त दलील है।

हज़रत ईसा और उनकी तालीम का खुलासा

बहरहाल हज़रत ईसा عليه السلام बनी इसराईल को हुज्जत और बुरहान और अल्लाह की आयतों के ज़रिए देने हक़ की तालीम देते रहते और उनके भूले हुए सबक़ को याद दिला कर मुर्दा दिलों में नई जिंदगी बख़्शते रहते थे।

अल्लाह और अल्लाह की तौहीद पर ईमान, नबियों और रसूलों की तस्दीक़, आख़िरत पर ईमान, अल्लाह के फ़रिश्तों पर ईमान, क़ज़ा व क़द्र पर ईमान, अल्लाह के रसूलों और किताबों पर ईमान, भले अख़्लाक़ के अपनाने, बुरे अमलों से बचने, अल्लाह की इबादत से चाव, दुनिया में लगे रहने से नफ़रत और अल्लाह के कुंवे (अल्लाह की मख़्लूक) से मुहब्बत, यही वह तालीम और उस पर जोर था जो उनकी जिंदगी का मशग़ला और मंसबी फ़र्ज़ बना हुआ था, वे बनी इसराईल को तौरात, इंजील और हिक्मत भरी नसीहतों के ज़रिए इन मामलों की तरफ़ दावत देते, मगर बदबख़्त यहूदी अपनी टेढ़ी फ़ितरत, सदियों से आ रही सरकशी और अल्लाह की तालीम से बगावत की बदौलत इस दर्जा शिद्दत पसंद बन गए थे और नबियों और रसूलों के क़त्ल ने उनके दिलों को हक़ व सदाक़त के कुबूल करने में इस दर्जा सख़्त बना दिया था कि एक छंटी-सी जमाअत के अलावा उनकी जमाअत की भारी अक्सरीयत ने उनकी मुख़ालफ़त और उनके साथ हसद व बुज़्र को अपना शिआर और

अपनी जमाअती जिदंगी का शिआर बना लिया और इसलिए नबियों की बेहतरीन सुन्नत के मुताबिक रुशद व हिदायत के हलकों में दुन्यवी जाह व जलाल के लिहाज़ से कमज़ोर व नातवां और निचले पेशेवर तबक़े की अक्सरीयत नज़र आती थी। कमज़ोरों का यह तबक़ा अगर इख़्लास व दयान्तदारी के साथ हक़ की आवाज़ को अपनाता तो बनी इसराईल का वह सरकश और मग़रूर हलक़ा उन पर और अल्लाह के पैग़म्बर पर फ़स्तियां कसता, तौहीन व तज़लील का मुज़ाहरा करता और अपनी अमली जदो जुहद का बड़ा हिस्सा मुख़ालफ़त में लगाता रहता था।

तर्जुमा—‘और जब ईसा ज़ाहिर दलीलें लेकर आए तो कहा, बेशक तुम्हारे पास ‘हिक्मत’ लेकर आया हूँ और इसलिए आया हूँ ताकि उन कुछ बातों को साफ़ कर दूँ जिनके बारे में तुम आपस में झगड़ रहे हो, पस अल्लाह से डरो और मेरी इताअत करो। बेशक अल्लाह ही मेरा और तुम्हारा परवरदिगार है, सो उसकी परस्तिश करो यही सीधी राह है।’ फिर वे आपस में गिरोहबन्दी करने लगे, सो उन लोगों को दर्दनाक अज़ाब के ज़रिए हलाकत और ख़राबी है।’ (43 : 63-65)

तर्जुमा—और (वह वक़्त याद करो) जब ईसा बिन मरयम ने कहा, ऐ बनी इसराईल! बेशक मैं तुम्हारी तरफ़ अल्लाह का पैग़म्बर हूँ, तस्दीक़ करने वाला हूँ तौरात की, जो मेरे सामने है और खुशख़बरी देने वाला हूँ एक रसूल की, जो मेरे बाद आएगा नाम उसका अहमद है। पस जब (ईसा) आया उनके पास मोज़े लेकर तो वे (बनी इसराईल) कहले लगे, यह तो खुला जादू है। (61 : 6)

तर्जुमा—‘फिर जब ईसा ने इन (बनी इसराईल) से कुफ़र महसूस किया तो कहा, ‘अल्लाह की तरफ़ मेरा कौन मददगार है?’

हवारियों ने जवाब दिया, ‘हम हैं अल्लाह के (दीन के) मददगार। हम अल्लाह पर ईमान ले आए और तुम गवाह रहना कि हम मुसलमान हैं। ऐ हमारे परवरदिगार! जो तूने उतारा है, हम उस पर ईमान ले आए ‘और हमने रसूल की पैरवी अख़्तियार कर ली, पस तू हमको (दीने हक़ की) गवाही देने वालों में से लिख ले।’ (3 : 52-53)

हवारी ईसा ﷺ

मगर ईसा ﷺ दुश्मनों और मुखालिफों की शरारतों और बेहूदगियों के बावजूद अपने मंसबी फ़र्ज 'दावत इलल हक़' (हक़ की तरफ़ दावत देने) में हमेशा सरगर्म रहते और रात व दिन बनी इसराईल की आबादियों और बस्तियों में हक़ का पैग़ाम सुनाते और रोशन दलीलों और अल्लाह की वाज़ेह आयतों के ज़रिए लोगों को हक़ व सदाक़त कुबूल करने पर तैयार करते रहते थे। अल्लाह और अल्लाह के हुक्म से सरकश और बागी इंसानों की इस भीड़ में ऐसी सईद रूहें भी निकल आती थीं जो ईसा ﷺ की हक़ की दावत की ओर लपकतीं और सच्चाई के साथ दीने हक़ को अपनाती थीं जो हज़रत ईसा ﷺ की सोहबत में रहकर और फ़ायदा उठा कर, न सिर्फ़ ईमान ही ले आती थीं, बल्कि दीने हक़ की सरबुलंदी और कामियाबी के लिए उन्होंने जान व माल की बाज़ी लगा कर दीन की ख़िदमत के लिए खुद को वक़फ़ कर दिया था और अक्सर व बेशतर हज़रत मसीह ﷺ के साथ रह कर तब्लीग़ व दावत का काम सरअंजाम देती थीं। इसी खुसूसियत की वजह से वे 'हवारी' (रफ़ीक़) और अन्सारुल्लाह (अल्लाह के दीन के मददगार) के मुक़द्दस अलकाब से मुअज़्ज़ज़ व मुस्ताज़ की गई।

चुनांचे इन बुजुर्ग हस्तियों ने अल्लाह के पैग़म्बर की पाक ज़िंदगी को अपना आदर्श बनाया और सख़्त-से-सख़्त और नाज़ुक से नाज़ुक हालात में भी उनका साथ नहीं छोड़ा और हर तरह मददगार साबित हुई।

तर्जुमा—और (ऐ ईसा! वह वक़्त याद करो) जब कि मैंने हवारियों की ओर (तेरी मारफ़त) यह व्हय की कि मुझ पर और मेरे पैग़म्बर पर ईमान लाओ, तो उन्होंने जवाब दिया 'हम ईमान लाए और ऐ खुदा! तू गवाह रहना कि हम बिला शुब्हा मुसलमान हैं।' (5 : 111)

तर्जुमा—ऐ ईमान वालो! तुम अल्लाह के (दीन के) मददगार हो जाओ जैसा कि ईसा बिन मरयम अलैहिस्सलाम ने जब हवारियों से कहा, अल्लाह के रास्ते में कौन मेरा मददगार है तो हवारियों ने जवाब दिया, 'हम हैं अल्लाह (की राह) के मददगार।' पस बनी इसराईल की एक जमाअत ईमान ले आई, एक ग़िरोह ने कुफ़र अख़्तियार किया, सो हमने मोमिनों की उनके दुश्मनों के

मुक़ाबले में ताईद की, पस वे (मोमिन) ग़ालिब रहे।

(61 : 14)

पिछले पन्नों में यह वाज़ेह हो चुका है कि ईसा के ये हवारी ज़्यादातर ग़रीब और मज़दूर तबक़े में से थे, क्योंकि नबियों (अलैहिमुस्सलाम) की दावत व तब्लीग़ के साथ 'अल्लाह की सुन्नत' यही जारी रही है कि उनके हक़ की आवाज़ को लपकने और देने हक़ पर जान निछावर करने का मुज़ाहरा करने के लिए पहले ग़रीब और कमज़ोर तबक़ा ही आगे बढ़ता है और नीचे के लोग ही फ़िदाकारी का सबूत देते हैं और वक़्त के इक़््तदार में बैठी और ज़बरदस्त हस्तियां अपने गुरूर और घमंड के साथ मुक़ाबले के लिए सामने आती और मुख़ालिफ़ सरगर्मियों के साथ अल्लाह का कलिमा सरबुलन्द करने के रास्ते में भारी पत्थर बन जाती हैं, लेकिन जब अल्लाह का 'अमल के बदले' का क़ानून अपना काम करता है, तो नतीजे में फ़लाह और कामियाबी उन कमज़ोर हक़ के फ़िदाकारों का हिस्सा हो जाता है और घमंड में चूर हस्तियां या हलाक़त के गहरे गढ़े में जा गिरती हैं और या मक़हूर व मग़्लूब होकर झुक जाने के अलावा कोई रास्ता नहीं रखती।

ईसा ﷺ के हवारी और

कुरआन व इंजील का मवाज़ना

कुरआन ने ईसा ﷺ के हवारियों की हक़ीक़त बयान की है। सूर: आले इमरान की आयतें तुम्हारे सामने हैं। हज़रत मसीह ﷺ जब देने हक़ की मदद के लिए पुकारते हैं तो सबसे पहले जिन्होंने 'नहनु अन्सारुल्लाह' (हम हैं अल्लाह के मददगार) का नारा बुलन्द किया, वे यही पाक हस्तियों थीं। सूर: सफ़्फ़ में अल्लाह रब्बुल-आलमीन ने जब मुसलमानों को मुख़ातब करके 'कूनू अन्सारुल्लाह' (हो जाओ तुम मदद देने वाले अल्लाह के) की तर्गीब दी, तो 'तज़्कीर बिअय्यामिल्लाह' (अल्लाह के वाक़ियों की तज़्कीर) के पेशे नज़र इन्हीं हस्तियों का ज़िक्र किया और इन्हीं की मिसाल और नज़ीर देकर हक़ की मदद के लिए उभारा और सूर: माइदा में उनके इमान के कुबूल करने और हक़ की दावत के सामने सर झुका देने का जो नज़्श खींचा है, वह भी उनके खुलूस, हक़तलवी और हक़-कोशी की हमेशा ज़िंदा रहने वाली तस्वीर है।

यह सब कुछ तो उस वक्त का हाल है, जब तक हज़रत ईसा عليه السلام उनके दर्मियान मौजूद हैं, लेकिन आपके 'आसमान पर उठा लिए जाने' के बाद भी उनकी इस्तिक़ामत से भरी (जमाव वाली) और पुराने दीन की फ़िदाकाराना ख़िदमत के बारे में सूर: सफ़्फ़ की आयत 'फ़-अय्यदनल्लज़ी-न आमनू अला अदूव्विहिम फ़ अस्बहू ज़ाहिरीन०' (61 : 14) में काफ़ी इशारा मौजूद है और शाह अब्दुल क़ादिर नव्वरल्लाहु मरक़दहू ने इसी बुनियाद पर इस आयत की तफ़्सीर करते हुए तारीख़ी गवाही का इस तरह ज़िक्र फ़रमाया है—

'हज़रत ईसा عليه السلام के बाद उनके चारों (हवारियों) ने बड़ी मेहनतें की हैं, तब उनका दीन फैला। हज़रत यसूअ के उन तमाम हवारियों में से जिनकी तारीफ़ में जगह-जगह बाइबिल बखान करता है, एक दो या दस पांच नहीं, सबके सब निहायत बुज़दिली और ग़दारी के साथ उस वक्त हज़रत मसीह عليه السلام से अलग हो गए, जब दीने हक़ की मदद और हिमायत के लिए सबसे ज़्यादा उनको ज़रूरत थी और जबकि अल्लाह के पैग़म्बर (अलैहिस्सलाम) दुश्मनों के नरगे में फंसे हुए थे।

मगर इंजील की इस गवाही के खिलाफ़ सूर: आले इमरान में कुरआन मजीद ने यह गवाही दी है कि उस नाज़ुक वक्त में जब हज़रत ईसा ने अपने हवारियों को दीने हक़ की मदद और यारी के लिए पुकारा, तो सबने पूरे अज़्म, हौसला और फ़िदा हो जाने वाले जज़्बे के साथ यह जवाब दिया, 'नहनु अन्सारुल्लाह' (3 : 52) फिर हज़रत मसीह के सामने दीन पर अपने जमे रहने और अपने खुलूस भरे ईमान के बारे में गवाही देकर मदद का पूरा-पूरा यक़ीन दिलाया और फिर सूर: सफ़्फ़ में कुरआन मजीद ने यह भी ज़ाहिर किया कि इन हवारियों ने हज़रत ईसा से जो कुछ कहा था, उनकी मौजूदगी में और उनके बाद भी, सच्ची वफ़ादारी के साथ उसे निबाहा और इसमें शक नहीं, वे सच्चे मोमिन साबित हुए और इसलिए अल्लाह ने भी उनकी मदद फ़रमाई और उनको हक़ के दुश्मनों के मुक़ाबले में कामियाब किया।

इंजील और कुरआन के इस मवाज़ने को देख कर एक इंसाफ़ पसन्द यह कहे बग़ैर नहीं रह सकता कि इस मामले में 'हक़' कुरआन के साथ है और ईसाई उलेमा ने इंजील में घट-बढ़ करके इस क्रिस्म के गढ़े हुए वाक़ियों का

इज़ाफ़ा इसलिए किया है, ताकि सदियों बाद के खुद के गढ़े हुए अक़ीदे 'मसीह के सलीब (फांसी) का अक़ीदा' से मुताल्लिक़ दास्तान सही तर्तीब पर कायम हो सके कि जब मसीह को सलीब पर लटकाया गया, तो उन्होंने यह कहते-कहते जान दे दी, 'ऐली! ऐली! लिमा सबक़तनी' (ऐ खुदा! ऐ खुदा! तूने मुझे क्यों अकेला-तंहा छोड़ दिया।' और किसी एक आदमी ने भी मसीह ﷺ का साथ न दिया। बहरहाल हवारियों से मुताल्लिक़ बाइबिल की ये बातें घट-बढ़ वाली गढ़ी हुई दास्तान से ज़्यादा कोई हैसियत नहीं रखतीं।

माइदा का उतरना

कुरआन मजीद ने माइदा के उतरने के वाक़िए को मोज़ज़े भरे बयान के तरीक़े के साथ ज़िक़्र किया है—

तर्जुमा—'और (देखो) जब ऐसा हुआ था कि हवारियों ने कहा था, ऐ ईसा बिन मरयम! क्या तुम्हारा परवरदिगार ऐसा कर सकता है कि आसमान से हम पर एक ख़्वान उतार दे? (यानी हमारे खाने के लिए आसमान से ग़ैबी सामान कर दे।) ईसा ﷺ ने कहा, खुदा से डरो (और ऐसी फ़रमाइशें न करो) अगर तुम ईमान रखते हो।'

उन्होंने कहा, (मक्सद इससे अल्लाह की कुदरत का इम्तिहान नहीं है, बल्कि) हम चाहते हैं कि (हमें खाना मिले तो) उसमें से खाएं और हमारे दिल आराम पाएं और हम जान लें कि तूने हमें सच बताया था और इस पर हम गवाह हो जाएं।

इस पर ईसा बिन मरयम ने दुआ की, ऐ अल्लाह! ऐ हमारे परवरदिगार! हम पर आसमान से एक ख़्वान भेज दे कि उसका आना हमारे लिए और हमारे अगलों-पिछलों राव के लिए ईद करार पाए और नेरी तरफ़ से (फ़ज़ल व करम) एक निशानी हो, हमें रोज़ी दे, तू सबसे बेहतर रोज़ी देने वाला है।'

अल्लाह ने फ़रमाया, मैं तुम्हारे लिए ख़्वान भेजूंगा, लेकिन जो शख़्स इसके बाद भी (हक़ के रास्ते से) इन्कार करेगा तो मैं उसे (अमल के बदले में) अज़ाब दूंगा, ऐसा अज़ाब कि तमाम दुनिया में किसी आदमी को भी वैसा अज़ाब नहीं दिया जाएगा।

यह माइदा नाज़िल हुआ या नहीं, कुरआन ने इसके बारे में कोई तफ़्सील बयान नहीं की और न किसी हदीस में इसका कोई तज़िक़रा पाया जाता है, अलबत्ता सहाबा और ताबिईन की रिवायतों में इसका तफ़्सील से ज़िक्र किया गया है—

मुजाहिद और हसन बसरी (रह०) फरमाते हैं कि माइदा नाज़िल नहीं हुआ, इसलिए कि अल्लाह तआला ने उसके नाज़िल होने को जिस शर्त से जोड़ दिया, तलब करने वालों ने यह महसूस करते हुए कि इंसान कमज़ोरियों का मज्मूआ है, कहीं ऐसा न हो कि किसी लज़िश या मामूली खिलाफ़वर्ज़ी की बदौलत उस दर्दनाक अज़ाब के हक़दार ठहरें, अपने सवाल को वापस ले लिया। इसके अलावा अगर माइदे का नुज़ूल हुआ होता, तो वह ऐसा अल्लाह का निशान (मोजज़ा) था कि ईसाई उन पर जितना भी फ़ख्र करते, वह कम था और उनके यहां इसकी जितनी भी शोहरत होती, वह बेजा नहीं होती, फिर भी उनके यहां माइदा के इस नुज़ूल का कोई तज़िक़रा नहीं पाया जाता।

और हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास और हज़रत अम्मार बिन यासिर रज़ि० से नक़ल किया गया है कि यह वाक़िया पेश आया और माइदे का नुज़ूल हुआ। ज़्यादा-तर लोगों का रुझान इसी तरफ़ है। अलबत्ता इसके नाज़िल होने की तफ़्सील में अलग-अलग क़ौल पाए जाते हैं।

इस मसले में शाह अब्दुल कादिर (नव्वरल्लाहु मरक़दहू) मुजाहिद और हसन बसरी के हमनवा मालूम होते हैं और माइदा के नाज़िल होने के मुताल्लिक़ इन दोनों जमाअतों से अलग एक और लतीफ़ बात इर्शाद फ़रमाते हैं। मूज़िहुल कुरआन में है—

(हल यस्ततीऊ 5 : 112) (हो सके), यह मानी कि हमारे वास्ते तुम्हारी दुआ से इतना आदत के खिलाफ़ करे या न करे, फ़रमाया कि 'इत्तकुल्लाह' (डरो अल्लाह से) यानी बन्दे को चाहिए कि अल्लाह को न आज़माए कि मेरा कहा मानता है या नहीं, अगरचे खुदावन्द (आक्रा व मालिक) बहुतेरी मेहरबानी करे 'व नकूनु अलैहा मिनशशाहिदीन' (5 : 113) यानी बरक़त उम्मीद पर मांगते हैं और (ताकि) मोजज़ा हमेशा मशहूर रहे, आज़माने को नहीं कहते हैं। वह ख़ान उतरा इक़शंबा (इतवार) को, वह नसारा (ईसाई) की ईद है। जैसे हमारे

लिए जुमा का दिन। कुछ कहते हैं, वह ख़्वान उतरा चालीस दिन तक और फिर कुछ ने नाशुक्री की यानी हुक्म हुआ था कि फ़क़ीरों और मरीजों को खिला दें, न कि महज़ूज़ (तवंगर) और चंगे को, फिर क़रीब अस्सी आदमी सुजर और बन्दर हो गए। (मगर) यह अज़ाब पहले यहूदियों में हुआ था, पीछे किसी को नहीं हुआ।

और कुछ कहते हैं (माइदा) न उतरा, डरावा सुन कर मांगने वाले डर गए। न मांगा, लेकिन पैग़म्बर की दुआ बेकार नहीं जाती और इस कलाम (कुरआन) में नक़ल बे-हिक्मत नहीं, शायद इस दुआ का यह असर है कि हज़रत ईसा की उम्मत (नसारा-ईसाई) में माल के पहलू से आसूदगी हमेशा रही और जो कोई उनमें नाशुक्री करे, तो शायद आख़िरत में सबसे ज्यादा अज़ाब पावे। इसमें मुसलमान को इबरत है कि अपनी मुदआ ख़िलाफ़े आदत के रास्ते से न चाहे, फिर उसकी शुक्रगुज़ारी बहुत मुश्किल है। ज़ाहिरी अस्बाब पर क़नाअत करे, तो बेहतर है। इस किस्से से भी साबित हुआ कि अल्लाह तआला के आगे हिमायत नहीं पेश की जाती।

इस सिलसिले में हज़रत अम्मार बिन यासिर रज़ि० ने बाज़ नसीहत से मुताल्लिक़ बहुत ख़ूब बात इर्शाद फ़रमाई है—

ईसा से उनकी क़ौम ने माइदा के नाज़िल होने की दरख़्वास्त की तो अल्लाह की जानिब से जवाब मिला, 'तुम्हारी दरख़्वास्त इस शर्त के साथ मंज़ूर की जाती है कि न उसमें ख़ियानत करना, न उसको छुपाए रखना और न उसको ज़ख़ीरा करना, वरना यह बन्द कर दिया जाएगा और तुमको ऐसा सबक़ भरा अज़ाब दूंगा जो किसी को न दिया जाएगा।'।

‘ऐ अरब के लोगो! तुम अपनी हालत पर ग़ौर करो कि तुम ऊंटों और बकरियों की दुम पकड़ कर जंगलों में चराते फिरते थे, फिर अल्लाह तआला ने अपनी रहमत से तुम्हारे दर्मियान ही से एक बर्गज़ीदा रसूल भेजा, जिसके हसब व नसब को तुम अच्छी तरह जानते हो। उसने तुम को यह ख़बर दी कि तुम बहुत जल्द अजम पर ग़ालिब आ जाओगे और उस पर छा जाओगे और उसने तुमको सख़्ती के साथ मना फ़रमाया कि माल व दौलत की फ़रावानी देख कर हरगिज़ तुम चांदी और सोने के ख़ज़ाने न जमा करना, मगर

खुदा की क्रसम! कि ज्यादा दिन व रात न गुजरेंगे कि तुम जरूर सोने-चांदी के खजाने जमा करोगे और इस तरह खुदा-ए-बरतर के दर्दनाक अज़ाब के हक़दार बनोगे।

—तफ़सीर इब्ने कसीर, भाग 2, सूर: माइदा

‘रफ़अ इलस्समाइ’ यानी जिंदा आसमान पर उठा लिया जाना

हज़रत ईसा ~~ख़~~ ने न शादी की और न रहने-सहने के लिए घर बनाया। वह शहर-शहर और गांव-गांव अल्लाह का पैग़ाम सुनाते और देने हक़ की दावत व तब्लीग़ का फ़र्ज़ अंजाम देते और जहां भी रात आ पहुंचती, वहीं राहत के किसी सर व सामान के बग़ैर रात गुज़ार देते थे। चूँकि उनकी ज़ाते अक़्दस से मख़्लूक़े खुदा जिस्मानी व रूहानी दोनों तरह की शिफ़ा और तस्कीन पाती थी, इसलिए जिस तरफ़ भी उनका गुजर हो जाता, इंसानों की भीड़ अच्छी अक़्रीदत के साथ जमा हो जाती और वालिहाना मुहब्बत के साथ उन पर निसार हो जाने को तैयार रहती थी।

यहूदियों ने इस बढ़ती हुई मक्बूलियत को इतिहाई हसद और सख़्त ख़तरे की निगाह से देखा और जब उनके बिगड़े हुए दिन किसी तरह उसको सह न सके, बल्कि यहूदी बनी इसराईल तो अपनी मज़हबी किताबों की पेशीनगोइयों के मुताबिक़ दो शख़्सियतों ‘मसीह हिदायत’ और ‘मसीह ज़लालत’ के इतिज़ार में थे लेकिन बदक्रिस्मती कि जब ‘मसीह हिदायत’ ज़ाहिर हुए तो उन्होंने उसको ‘मसीह ज़लालत’ समझा और उनके सरदारों फ़कीहों, फ़रीसियों (Pharisee) और सदूक़ियों (Sadducee) (यहूदियों के दो फ़िरक़े) ने ज़ाते अक़्दस के ख़िलाफ़ साज़िश शुरू की और तै यह पाया कि इस हस्ती के ख़िलाफ़ कामियाबी हासिल करने के अलावा इसकी कोई शक्ल नज़र नहीं आती कि वक़्त के बादशाह को भड़का कर उसको दीवार पर चढ़ा दिया जाए।

पिछली कुछ सदियों से यहूदियों के बयान न करने के क़ाबिल हालात की वजह से उस ज़माने में यहूदिया के बादशाह हीरोवेस की हुकूमत अपने बाप-दादा के इलाक़ों में से मुश्किल से चौथाई पर क़ायम थी और वह भी नाम के लिए और असल हुकूमत व इक़््तदार, वक़्त के बुतपरस्त शहंशाह कैसरे

रूम को हासिल था और उसकी मातहती में प्लातीस यहूदिया के अक्सर इलाक़े का गवर्नर या बादशाह था।

यहूदी अगरचे इस बुतपरस्त बादशाह के इक्तदार को अपनी बदबख़्ती समझकर उससे नफ़रत करते थे, मगर हज़रत मसीह के खिलाफ़ दिलों में भड़की हसद की आग ने और सदियों की गुलामी से पैदा हुई पस्त ज़ेहनियत ने ऐसा अंधा कर दिया कि अंजाम और नतीजे की फ़िक्र से बेपरवाह हो कर प्लातीस के दरबार में जा पहुंचे और अर्ज किया 'आली जाह' यह आदमी न सिर्फ़ हमारे लिए, बल्कि हुकूमत के लिए ख़तरा बनता जा रहा है, अगर फ़ौरन ही इसकी जड़ न काट दी गई तो न हमारा दीन ही सही हालत में बाक़ी रह सकेगा और डर है कि कहीं आपके हाथ से हुकूमत का इक्तदार भी न चला जाए, इसलिए कि इस आदमी ने अजीब व ग़रीब शोबदे (करतब) दिखा कर दुनिया को अपना चाहने वाला बना लिया है और हर वक़्त इस घात में लगा है कि आप लोगों की इस ताक़त के बल पर कैसर और आप को हरा कर खुद बनीइसराईल का बादशाह बन जाए। इस आदमी ने लोगों को सिर्फ़ दुनिया को रास्ते से ही गुमराह नहीं किया, बल्कि इसने हमारे दीन तक को भी बदल डाला और लोगों को बद-दीन बनाने में लगा हुआ है। पस इस फ़िल्ने की रोक-थाम बहुत ज़रूरी है ताकि बढ़ता हुआ यह फ़िल्ना शुरू ही में कुचल डाला जाए।'।

गरज़ काफ़ी बात-चीत और सोच-विचार के बाद पिलातीस ने उनको इजाज़त दे दी कि वे हज़रत मसीह को गिरफ़्तार कर लें और शाही दरबार में मुज़िम की हैसियत से पेश करें। बनी इसराईल के सरदार, फ़कीह और काहिन वह फ़रमान हासिल करके बेहद खुश हुए और पूरे घमंड में आकर एक दूसरे को मुबारकबाद देने लगे कि आख़िर हमारी साज़िश कामियाब हुई और हमारी तदबीर का तीर ठीक निशाने पर बैठ गया और कहने लगे कि अब ज़रूरत इस बात की है कि ख़ास मौक़े के इंतज़ार में रहा जाए और किसी अकेलेपन या तंहाई के मौक़े पर इस तरह उसको गिरफ़्तार किया जाए कि जनता में बेचैनी न पैदा न होने पाए।

दूसरी तरफ़ हज़रत ईसा और उनके हवारियों की बात-चीत को सूरः आले इमरान और सूरः सफ़ के हवाले से नक़ल किया जा चुका है कि हज़रत ईसा ने जब यहूदियों की कुफ़्र और इंकार और दुश्मनी भरी चालों को महसूस किया तो एक जगह अपने हवारियों को जमा किया और उनसे फ़रमाया कि बनी इसराईल के सरदारों और काहिनों की मुखालिफाना सरगर्मियां तुमसे छिपी नहीं हैं। अब वक़्त की नज़ाकत और कड़ी आजमाइश व इम्तिहान की घड़ी का करीब होना तक्राज़ा करता है कि मैं तुमसे सवाल करूँ कि तुममें कौन वे लोग हैं जो कुफ़्र के इंकार के सैलाब के सामने सीना तान कर खड़े हों और अल्लाह के दीन के मददगार बनें।

हज़रत ईसा का यह इर्शाद मुबारक सुनकर सब ने बड़े जोश व ख़रोश और सच्चे ईमान के साथ जवाब दिया, हम हैं अल्लाह के मददगार, एक अल्लाह के परस्तार, आप गवाह रहें कि हम मुस्लिम वफ़ा शिआर हैं और अल्लाह के दरबार में हम अपनी इस इताअत केशी और फ़रमांबरदारी पर जमे रहने के लिए यों दुआ के लिए हाथ उठाए हैं, ऐ परवरदिगार! हम तेरी उत्तारी हुई किताब पर ईमान ले आए और सच्चे दिल से तेरे पैग़म्बर की पैरवी करने वाले हैं। ऐ अल्लाह! तू हमको सच्चाई और हक़ के फ़िदाकरों की फ़ेहरिस्त में लिख ले।

हज़रत ईसा عليه السلام और उनके दावत व तबलीग़ के फ़रीजे के खिलाफ़ बनी इसराईल के यहूदियों में मुखालिफ़ सरगर्मियों के मुताल्लिक़ हालात का यह हिस्सा तो ज़्यादातर ऐसा है कि कुरआन व इंजील के दर्मियान उसूली तौर पर कोई इख़िलाफ़ नहीं, लेकिन इसके बाद के बयान के पूरे हिस्से में दोनों की क़तई तौर पर अलग-अलग राहें हैं और उनके बीच इस हद तक टकराव है कि किसी तरह भी एक दूसरे के करीब नहीं लाया जा सकता। अलबत्ता इस जगह पहुंच कर दोनों यानी यहूदियों और ईसाइयों का आपसी मेल हो जाता है और दोनों के बयान वाक़िए से मुताल्लिक़ एक ही अक़ीदा पेश करते हैं। फ़र्क़ है तो यह कि यहूदी इस वाक़िए को अपना कारनामा और अपने लिए फ़ख़ की चीज़ समझते हैं और ईसाई इससे बनी इसराईल के यहूदियों की एक लानत के क़ाबिल जद्दोज़ेहद यक़ीन करते हैं।

दूसरी तरफ़ हज़रत ईसा और उनके हवारियों की बात-चीत को सूरः आले इमरान और सूरः सफ़ के हवाले से नक़ल किया जा चुका है कि हज़रत ईसा ने जब यहूदियों की कुफ़ और इंकार और दुश्मनी भरी चालों को महसूस किया तो एक जगह अपने हवारियों को जमा किया और उनसे फ़रमाया कि बनी इसराईल के सरदारों और काहिनों की मुखालिफाना सरगर्मियां तुमसे छिपी नहीं हैं। अब वक़्त की नज़ाकत और कड़ी आजमाइश व इम्तिहान की घड़ी का करीब होना तक्राज़ा करता है कि मैं तुमसे सवाल करूँ कि तुममें कौन वे लोग हैं जो कुफ़ के इंकार के सैलाब के सामने सीना तान कर खड़े हों और अल्लाह के दीन के मददगार बनें।

हज़रत ईसा का यह इशार्द मुबारक सुनकर सब ने बड़े जोश व ख़रोश और सच्चे ईमान के साथ जवाब दिया, हम हैं अल्लाह के मददगार, एक अल्लाह के परस्तार, आप गवाह रहें कि हम मुस्लिम वफ़ा शिआर हैं और अल्लाह के दरबार में हम अपनी इस इताअत केशी और फ़रमांबरदारी पर जमे रहने के लिए यों दुआ के लिए हाथ उठाए हैं, ऐ परवरदिगार! हम तेरी उतारी हुई किताब पर ईमान ले आए और सच्चे दिल से तेरे पैग़म्बर की पैरवी करने वाले हैं। ऐ अल्लाह! तू हमको सच्चाई और हक़ के फ़िदाकारों की फ़ेहरिस्त में लिख ले।

हज़रत ईसा عليه السلام और उनके दावत व तबलीग़ के फ़रीज़े के खिलाफ़ बनी इसराईल के यहूदियों में मुखालिफ़ सरगर्मियों के मुताल्लिक़ हालात का यह हिस्सा तो ज़्यादातर ऐसा है कि कुरआन व इंजील के दर्मियान उसूली तौर पर कोई इख़िलाफ़ नहीं, लेकिन इसके बाद के बयान के पूरे हिस्से में दोनों की क़तई तौर पर अलग-अलग राहें हैं और उनके बीच इस हद तक टकराव है कि किसी तरह भी एक दूसरे के करीब नहीं लाया जा सकता। अलबत्ता इस जगह पहुंच कर दोनों यानी यहूदियों और ईसाइयों का आपसी मेल हो जाता है और दोनों के बयान वाक़िए से मुताल्लिक़ एक ही अक़ीदा पेश करते हैं। फ़र्क़ है तो यह कि यहूदी इस वाक़िए को अपना कारनामा और अपने लिए फ़ख़ की चीज़ समझते हैं और ईसाई इससे बनी इसराईल के यहूदियों की एक लानत के काबिल जद्दोजेहद यक़ीन करते हैं।

यहूदी और ईसाई दोनों का मिला-जुला बयान है कि यहूदी सरदारों और काहिनों को यह पता चला कि इस वक्त यसूअ लोगों की भीड़ से अलग अपने शागिर्दों के साथ एक बन्द मकान में मौजूद हैं। यह मौका बेहतरीन है, उसको हाथ से जाने न दीजिए। तुरन्त ही ये लोग मौके पर पहुंच गए और चारों तरफ से यसूअ का घेराव करके यसूअ को गिरफ्तार कर लिया और तौहीन व तज़लील करते हुए प्लातीस के दरबार में ले गए, ताकि वह उनको सूली पर लटकाए और अगरचे प्लातीस ने यसूअ को बेकसूर समझकर छोड़ देना चाहा, मगर बनी इसराईल के जोश दिलाने पर मजबूर होकर सिपाहियों के हवाले कर दिया। सिपाहियों ने उनको कांटों का ताज पहनाया, मुंह पर थूक, कोड़े लगाए और हर तरह की तौहीन व तज़लील करने के बाद मुज्रिमों की तरह सूली पर लटका दिया और दोनों हथों में मीखें ठोंक दीं। सीने को बरछी की अनी से छेद दिया और इस बेबसी की हालत में उन्होंने यह कहते हुए जान दे दी, 'ऐली, ऐली तिया सबक्रतनी' (ऐ मेरे खुदा! ऐ मेरे खुदा! तूने मुझ को क्यों छोड़ दिया?)

तफ़सील में थोड़े बहुत फ़र्क के साथ यही फ़र्ज की हुई दास्तान बाक़ी तीनों इंजीलों में भी ज़िक्र की गई है। चारों इंजीलों की इस मुत्तफ़का मगर फ़र्जी दास्तान के पढ़ने के बाद तबियत पर कुदरती असर यह पड़ता है कि हज़रत मसीह की मौत इतिहाई बेकसी और बे-बसी की हालत में दर्दनाक तरीक़े से हुई, अगरचे अल्लाह के पाक और मुक़द्दस बन्दों के लिए यह कोई ताज्जुब की बात न थी, बल्कि अल्लाह के दरबार में पहुंच रखने वालों के लिए इस क्रिस्म की कड़ी आजमाइशों का मुज़ाहरा अक्सर होता रहा है, लेकिन इस वाक़िए का यह पहलू उसके फ़र्ज किए हुए और गढ़े हुए होने पर खुले दिन की तरह गवाह है कि हज़रत यसूअ ने एक अज़्म वाले पैग़म्बर बल्कि भले मर्द की तरह इस वाक़िए को सब्र और अल्लाह की रिज़ा के साथ अंगेज़ नहीं किया, बल्कि एक इतिहाई मायूस इंसान की तरह शिक्वा करते-करते जान दे दी। 'ऐली ऐली तिया सबक्रतनी' कहते हुए जान दे देना मायूसी और शिक्वा की वह सूरतेहाल है जो किसी भी तरह हज़रत मसीह  के शायाने शान नहीं कही जा सकती।

फिर इस वाकिए का यह पहलू भी कम हैरत में डालने वाला नहीं है कि इंजील के कौल के मुताबिक यसूअ मसीह ने इस हादसे से पहले तीन बार अल्लाह तआला से दरखास्त की, ऐ मेरे बाप! अगर हो सके तो यह (मौत का) प्याला मुझ से टल जाए।' और जब यह दरखास्त किसी तरह कुबूल न हुई तो मायूस होकर यह कहना पड़ा, 'अगर यह मेरे लिए बगैर नहीं टल सकती तो तेरी मर्जी पूरी हो।'।

हैरत में डालने वाली तो यह बात है कि जब अक्रीदा 'कफ़ारा' के मुताबिक हज़रत मसीह का यह मामला अल्लाह और उसके बेटे (अल अयाजु बिल्लाह) के दर्मियान तै शुदा था तो फिर इस दरखास्त का क्या मतलब और अगर बशरी तक्राजे के तौर पर था तो अल्लाह की मर्जी मालूम हो जाने और इस पर क़नाअत कर लेने के बाद फिर यह बेसब्र और मायूस इंसानों की तरह जान देने की क्या वजह?

यहूदियों की गढ़ी हुई इस दास्तान को चूँकि ईसाइयों ने कुबूल कर लिया, तो यहूदी फ़ख़ व गुरुर करते हुए इस पर बहुत खुश हैं और कहते हैं कि मसीह नासरी अगर 'मसीह मौऊद' होता हो अल्लाह तआला इस बेबसी और बेकसी के साथ उसको हमारे हाथ में न देता कि वह मरते वक़्त तक अल्लाह से शिकवा करता रहा कि उसको बचाए, मगर अल्लाह ने उसकी कोई मदद न की, हलाँकि हमारे बाप-दादा उस वक़्त भी काफ़ी भड़काते रहे कि अगर तू हक़ीक़त में अल्लाह का बेटा और मसीह मौऊद है तो क्यों तुझ को अल्लाह ने हमारे हाथों इस ज़िल्लत से न बचा लिया।

वाकिया यह है कि ईसाइयों के पास, जबकि इस चुभते हुए इलज़ाम का कोई जवाब न था और वाकिए की इन तफ़्सीली बातों को मान लेने के बाद 'कफ़ारा अक्रीदे' की कोई कीमत बाक़ी नहीं रह जाती थी, तब उन्होंने वाकिए की इन तफ़्सीलों के बाद एक पारा बयान का और इज़ाफ़ा किया।

यूहन्ना की इंजील में है—

'लेकिन जब उन्होंने यसूअ के पास आकर कर देखा कि वह मर चुका है, तो उसकी टांगें न तोड़ दीं, मगर उनमें से एक सिपाही ने भाले से उसकी पसली छेदी और फ़ौरी तौर पर उससे खून और पानी बह निकला....

इन बातों के बाद अरमलीता के रहने वाले यूसुफ़ ने जो यूसूअ का शार्गिद था, यहूदियों के डर से खुफ़िया तौर पर प्लातीस से इजाज़त चाही कि यूसूअ की लाश ले जाए। प्लातीस ने इजाज़त दे दी पस वह आकर उसकी लाश ले गया और नेकदेमस भी आया, जो पहले यूसूअ के पास रात को गया था और पचास सेर के करीब मरावर रऊद मिला हुआ लाया। पस उन्होंने यूसूअ की लाश को लेकर उसे सूती कपड़े में खुशबूदार चीज़ों के साथ कफ़नाया जिस तरह कि यहूदियों में कफ़न-दफ़न करने का दस्तूर है और जिस जगह उसे सलीब दी गई, वहां एक बाग़ था और उस बाग़ में एक नई क़ब्र थी, जिसमें अभी कोई रखा न गया था, पस उन्होंने यहूदियों की तैयारी के दिन की वजह से यूसूअ को वहीं रख दिया।

हफ़्ते के पहले दिन मरयम मगदलेनी ऐसे तड़के, कि अभी अंधेरा ही था, क़ब्र पर आई और पत्थर को क़ब्र से हटा हुआ देखा, पस वह शमऊन पितरस और उसके दूसरे शार्गिद के पास जिसे यूसूअ अजीज़ रखता था, दौड़ी हुई गई और उनसे कहा कि खुदावन्द को क़ब्र से निकाल ले गए और हमें मालूम नहीं कि उसे कहां रख दिया लेकिन मरयम बाहर क़ब्र के पास खड़ी रोती रही और जब रोते-रोते क़ब्र की तरफ़ झुक के अन्दर नज़र की तो दो फ़रिश्तों को सफ़ेद पोशाक पहने हुए एक को सरहाने और दूसरे को पांयती बैठे देखा, यहां यूसूअ की लाश पड़ी थी। उन्होंने उससे कहा, ऐ औरत! तू क्यों रोती है?

उसने उनसे कहा, इसलिए कि मेरे खुदावन्द को उठा ले गए और मालूम नहीं कि उसे कहां रखा। यह कहकर वह पीछे फिरी और यूसूअ को खड़े देखा और न पहचाना कि यह यूसूअ है। यूसूअ ने उससे कहा, मरयम! वह फिर कर उससे इबरानी जुबान में बोली 'रबूनी' यानी ऐ उस्ताद! यूसूअ ने उसे कहा, मुझे न छू, क्योंकि मैं अब तक बाप के पास ऊपर नहीं गया, लेकिन मेरे भाइयों के पास जाकर उनसे कहो कि मैं अपने बाप और तुम्हारे बाप के और अपने खुदा और तुम्हारे खुदा के पास ऊपर जाता हूं। मरयम मगदलेनी ने आकर शार्गिदों को ख़बर दी कि मैंने खुदावन्द को देखा और उसने मुझसे ये बातें कहीं।

फिर उसी दिन, जो हफ़्ते का पहला दिन था, शाम के वक़्त जब वहां

के दरवाजे, जहां शार्गिद थे, यहूदियों के डर से बन्द थे, यसूअ आ कर बीच में खड़ा हुआ और उसने कहा कि तुम्हारी सलामती हो और यह कर उसने अपने हाथ और पसली उन्हें दिखाई, पस शार्गिद खुदावन्द को देखकर खुश हुए।

यसूअ ने फिर उनसे कहा कि तुम्हारी सलामती हो, जिस तरह बाप ने मुझे भेजा है, उसी तरह मैं भी तुझे भेजता हूं और यह कह उनको फूँका और उनसे कहा, 'रुहुल कुद्स', 'लो....' (इंजील यूहन्ना, बाब 18 आयतें 33, 34, 38 से 44 तक और बाब 2, आयत 1 से 22 तक)

हर एक आदमी मामूली गौर व फ़िक्र के बाद आसानी से समझ सकता है कि बयान का यह पारा बयान के पहले हिस्से के साथ बे-रबत और क़तई तौर पर बेजोड़ है, बल्कि यह अन्दाज़ा लगाना ही मुश्किल हो जाता है कि ये दोनों तफ़्सीलें एक ही शख्स से मुताल्लिक हैं, क्योंकि बयान का पहला पारा एक ऐसी शख्सियत का नक्शा है जो बेबस व बेकस, मायूस और अल्लाह से शिकायत करने वाली नज़र आती है और बयान का दूसरा हिस्सा ऐसी हस्ती का रोशन चेहरा पेश करती है जो खुदाई सिफ़तों से मुत्तसिफ़ जाते वारी की मुक़र्रब और पेश आने वाले वाक़ियों से मुतमइन और मसरूर है, बल्कि उनके वाक़े होने की तमन्ना करने वाली और उनको अपने फ़र्ज़ की अदाग़ी का अहम हिस्सा समझती है

वर्वीं तफ़ावुत रह अज़ कुजास्त ता वकुजा

वहरहाल हक़ीक़त चूँकि दूसरी थी और बड़े अर्से के बाद 'कफ़ारे' के अक़ीदे की विदअत ने ईसाइयों को उसके खिलाफ़ इस गढ़े हुए अफ़साने के लिखने पर मजबूर कर दिया, इसलिए कुरआन ने हज़रत मरयम और हज़रत ईसा के मुताल्लिक दूसरे गोशों की तरह इस गोशे से भी जिहालत व तारीकी का परदा हटाकर हक़ीक़त हाल के रोशन चेहरे को जलवा-आरा करना ज़रूरी समझा और उसने अपना वह फ़र्ज़ अंजाम दिया, जिसको दुनिया के मज़हबों की तारीख़ में कुरआन की दावते तज्दीद व इस्लाह कहा जाता है।

उसने बताया कि जिस ज़माने में बनी इसराईल, पैग़म्बरे हक़ और रसूले खुदा (ईसा विन मरयम) के खिलाफ़ खुफ़िया तदबीरों और साज़िशों में मसरूफ़

और उन पर नाज़ां थे, उसी ज़माने में खुदा-ए-बरतर के क़ानूने क़ज़ा व क़द्र ने यह फ़ैसला लागू कर दिया कि कोई ताक़त और मुखालिफ़ कूवत ईसा बिन मरयम पर क़ाबू नहीं पा सकती और हमारी मुहक़म तदबीर उसके दुश्मनों के हर 'मक्र' (चाल) से बचाए रखेगी और नतीजा यह निकला कि जब बनी इसराईल ने उनपर नरगा किया तो उनको खुदा के पैग़म्बर पर किसी तरह दस्तरस हासिल न हो सकी और उनको तमाम हिफ़ाज़त के साथ उठा लिया गया और जब बनी इसराईल मकान में घुसे तो सूरतेहाल उन पर मुश्तबह हो गई और वे ज़िल्लत व रुसवाई के साथ अपने मक़सद में नाकाम रहे और इस तरह खुदा ने अपना वायदा पूरा कर दिया जो ईसा बिन मरयम की हिफ़ाज़त के लिए किया गया था।

इसकी तफ़सील यह है कि जब ईसा ने यह महसूस फ़रमाया कि अब बनी इसराईल के कुफ़र व इंकार की सरगर्मियां इस दर्जा बढ़ गईं कि वे मेरी तौहीन, तज़लील, बल्कि क़त्ल के लिए साज़िशें कर रहे हैं, तो उन्होंने ख़ासतौर से एक मकान में अपने हवारियों को जमा किया और उनके सामने सूरतेहाल का नक्शा पेश फ़रमा कर इश़ाद फ़रमाया, इम्तिहान की घड़ी सर पर है, कड़ी आजमाइश का वक़्त है, हक़ को मिटाने की साज़िशें पूरे ज़ोरों पर हैं, अब मैं तुम्हारे दर्मियान ज़्यादा नहीं रहूंगा, इसलिए मेरे बाद देने हक़ पर जमाव उसके फैलाव और बढ़ोत्तरी और यारी मदद का मामला सिर्फ़ तुम्हारे साथ जुड़ने वाला है, इसलिए मुझे बताओ कि खुदा के रास्ते में सच्चा मददगार कौन-कौन है?

हवारियों ने यह हक़ कलाम सुन कर कहा, हम सभी खुदा के दीन के मददगार हैं, हम सच्चे दिल से खुदा पर ईमान लाए हैं और अपनी ईमानी सच्चाई का आप ही को गवाह बनाते हैं और यह कहने के बाद इंसानी कमज़ोरियों के पेशे नज़र अपने दावे पर ही बात ख़त्म नहीं कर दी, बल्कि अल्लाह तआला के दरबार में हाथ उठा कर दुआ करने लगे कि जो कुछ हम कह रहे हैं, तू उस पर हमको जमा और हमको अपने दीन के मददगारों की फ़ेहरिस्त में लिख ले।

इस तरफ़ से मुत्तमइन होकर अब हज़रत ईसा ﷺ दावत व इश़ाद के अपने फ़रीजे (कर्तव्य) के साथ-साथ इस इंतिज़ार में रहे कि देखिए दुश्मनों की

सरगर्मियां क्या रुख अख्तियार करती हैं और अल्लाह का फ़ैसला क्या होता है? अल्लाह ने इस सिलसिले में कुरआन के ज़रिए यहूदियों और ईसाइयों के ग़लत ज़न्न व गुमान के खिलाफ़ 'इल्म व यक़ीन की रोशनी' बख़्शते हुए यह भी बताया कि जिस वक़्त दुश्मन अपनी खुफ़िया चालों में लगे हुए थे, उसी वक़्त हमने भी अपनी कामिल कुदरत की खुफ़िया चाल के ज़रिए यह फ़ैसला कर लिया कि ईसा बिन मरयम के बारे में हक़ के दुश्मनों की चाल का कोई पेच भी कामियाब नहीं होने दिया जाएगा और बेशक अल्लाह तआला की कामिल कुदरत की छिपी तदबीरों के मुक़ाबले में किसी को पेश नहीं किया जा सकेगा, इसलिए कि उसकी तदबीर से बेहतर कोई तदबीर हो ही नहीं सकती।

तर्जुमा— 'और उन्होंने (यहूदियों ने ईसा के खिलाफ़) खुफ़िया तदबीर की और अल्लाह ने (यहूदियों की धोखेबाज़ियों के खिलाफ़) खुफ़िया तदबीर की और अल्लाह सबसे बेहतर खुफ़िया तदबीर का मालिक है।' (3 : 54)

अरबी डिक्शनरी में 'मकर' के मानी खुफ़िया तदबीर (चाल) और धोखा करने के हैं, और क़ायदा 'मुशाकला' के मुताबिक जब कोई आदमी किसी के जवाब या दिफ़ाअ (Defence) में खुफ़िया तदबीर करता है तो वह अख़्लाक़ और मज़हब की निगाह में कितनी ही अच्छी तदबीर क्यों न हो, उसको भी 'मकर' ही कहा जाएगा जैसा कि हर भाषा के मुहावरे में बोला जाता है 'बुराई का बदला बुराई है' हालांकि हर आदमी यह यक़ीन रखता है कि बुराई करने वाले के जवाब में उतने ही मुक़ाबले का जवाब देना अख़्लाक़ और मज़हब दोनों की निगाह में 'बुराई' नहीं है, फिर भी दोनों को हमशक्ल दिखा दिया जाता है। इसी को 'मुशाकला' कहते हैं और यह अच्छे क़लाम का एक हिस्सा समझा जाता है।

गरज खुफ़िया तदबीर दोनों तरफ़ से थी, एक तरफ़ बुरी, दूसरी तरफ़ बेहतर तदबीर, साथ ही एक तरफ़ अल्लाह की कामिल तदबीर थी, जिसमें कमी और कमज़ोरी का इम्कान नहीं और दूसरी तरफ़ धोखे और फ़रेब की ख़ामियां थीं जो मकड़ी के जाल की तरह बिखर कर रह गईं।

आख़िर वह वक़्त आ पहुंचा कि बनी इसराईल के सरदारों, काहिनों और

फ़कीहों ने हज़रत ईसा ~~ऋषि~~ का एक बन्द मकान में घेराव कर लिया। आप और हवारी एक मकान में बन्द हैं और दुश्मन चारों तरफ़ से घेराव किए हुए हैं, इसलिए कुदरती तौर पर अब यह सवाल पैदा हुआ कि वह क्या शकल हो जिससे दुश्मन नाकाम रहे और हज़रत ईसा ~~ऋषि~~ को किसी तरह की तकलीफ़ भी न पहुंचे, ताकि अल्लाह कि हिफ़ाज़त का वायदा और उसकी भली तदबीर पूरी हो, तो उसके बारे में कुरआन ने बताया कि बेशक खुदा का वायदा पूरा हुआ और उसकी मज़बूत तदबीर ने ईसा को दुश्मनों के हाथों से हर तरह महफूज रखा और सूरत यह पेश आई कि उस नाजुक घड़ी में हज़रत ईसा को अल्लाह की व्हय ने यह खुशख़बरी सुनाई, 'ईसा ख़ौफ न कर, तेरी मुद्दत पूरी की जाएगी (यानी तुमको दुश्मन क़त्ल नहीं कर सकेंगे और न तुम इस वक़्त मौत से दो चार होगे) और होगा यह कि मैं तुझको अपनी तरफ़ (मला-ए-अला की तरफ़) उठा लूंगा और उन काफ़िरोں से हर तरह तुझको पाक रखूंगा, (यानी ये तुझ पर किसी क़िस्म का क़ाबू न पा सकेंगे) और तेरे मानने वालों को इन काफ़िरोں पर हमेशा ग़ालिब रखूंगा, (यानी बनी इसराईल के मुकाबले में क़ियामत तक ईसाई और मुसलमान ग़ालिब रहेंगे और उनको कभी इन दोनों पर हाकिमाना इक्तिदार नसीब नहीं होगा, फिर अंजामे कार मेरी तरफ़ (मौत के बाद) लौट आना है। पस मैं इन बातों पर हक़ का फैसला दूंगा, जिनके बारे में तुम आपस में इख़िलाफ़ कर रहे हो।

तर्जुमा— '(वह वक़्त ज़िक्र के लायक़ है) जब अल्लाह तआला ने ईसा से कहा, ऐ ईसा! बेशक मैं तेरी मुद्दत को पूरा करूंगा और तुझको अपनी तरफ़ उठा लेने वाला हूं और तुझको काफ़िरोں (बनी इसराईल) से पाक रखने वाला हूं और जो तेरी पैरवी करेंगे उनको तेरे इंकार करने वालों पर क़ियामत तक के लिए ग़ालिब रखने वाला हूं, फिर मेरी तरफ़ ही लौटना है, फिर मैं उन बातों का फ़ैसला करूंगा जिनके बारे में (आज) तुम झगड़ रहे हो।' (3 : 55)

तर्जुमा— (क़ियामत के दिन अल्लाह तआला हज़रत ईसा को अपने एहसानों को गिनाते हुए फ़रमाएगा) और वह वक़्त याद करो जब मैंने बनी इसराईल को तुझ से रोक दिया (यानी वे किसी तरह तुझ पर क़ाबू न पा सके) जबकि तू उनके पास मोज़जे लेकर आया और उनमें से काफ़िरोں ने कह दिया

‘यह तो जादू के सिवा और कुछ नहीं है।’

(5 : 110)

तो अब जबकि हज़रत ईसा को यह इत्मीनान दिला दिया गया कि इस ज़बरदस्त घेराव के बावजूद दुश्मन तुमको क़त्ल न कर सकेंगे और तुमको ग़ैबी हाथ मला-ए-आला की ओर उठा लेगा और इस तरह दीन के दुश्मनों के नापाक हाथों से आप हर तरह महफूज़ कर दिए जाएंगे, तो इस जगह पहुंच कर एक दूसरा सवाल पैदा हुआ कि यह किस तरह हुआ और वाक़िए ने क्या शक़ल अख़्तियार कर ली? क्योंकि यहूदी और ईसाई कहते हैं कि मसीह को सूली पर लटकाया और मार भी डाला। तब कुरआन ने बताया कि मसीह बिन मरयम के क़त्ल और फांसी की पूरी दास्तान बिल्कुल ग़लत और झूठ है, बल्कि असल मामला यह है कि जब मसीह को ज़िंदा ही मला-ए-आला की ओर उठा लिया गया और उसके बाद दुश्मन मकान के अन्दर घुस पड़े, तो उन पर सूरते हाल मुश्तबह कर दी गई और वे किसी तरह न जान सके कि आखिर इस मकान में से मसीह कहाँ चला गया?

तर्जुमा—‘और (यहूदी मलऊन करार दिए गए) अपने इस क़ौल पर कि हमने मसीह ईसा बिन मरयम पैग़म्बर ख़ुदा को क़त्ल कर दिया। हालांकि उन्होंने न उसको क़त्ल किया और न सूली पर चढ़ाया, बल्कि (ख़ुदा की ख़ुफ़िया तदबीर के बदौलत) असल मामला उन पर शक के घेरे में आ गया और जो लोग उसके क़त्ल के बारे में झगड़ रहे हैं, बेशक वे उस (ईसा) की ओर से शक में पड़े हुए हैं। उनके पास हक़ीक़ते हाल के बारे में ज़न्न (अटकल) की पैरवी के सिवा इल्म की रोशनी नहीं है। उन्होंने ईसा को यक़ीनन क़त्ल नहीं किया, बल्कि उनको अल्लाह ने अपनी जानिब (मला-ए-आला की जानिब) उठा लिया और अल्लाह ग़ालिब हिक्मत वाला है। (4 : 157-158)

कुरआन का वह बयान है जो यहूदियों और ईसाइयों के गढ़े हुए फ़साने (कहानी) के खिलाफ़ उसने हज़रत ईसा बिन मरयम के मुताल्लिक़ दिया है। अब दोनों बयान आपके सामने हैं और अद्ल व इंसाफ़ का तराज़ू आपके हाथ में। पहले हज़रत मसीह की शख़्सियत और उनकी दावत व इश्राद के मिशन को तारीख़ी हक़ीक़तों की रोशनी में मालूम कीजिए और उसके बाद एक बार फिर उन तफ़्सीली वाक़ियों पर नज़र डालिए जो एक अज़्म वाले पैग़म्बर,

अल्लाह के दरबार का करीबी और ईसाइयों के बातिल अक्रीदे के मुताबिक खुदा के बेटे को खुदा के फ़ैसले के सामने मायूस, बेचैन, बेयार व मददगार और खुदा की शिकायत करने वाले ज़ाहिर करते हैं और साथ ही बयान के इस टकराव पर भी गौर फ़रमाइए कि एक ओर कफ़ारा अक्रीदे की बुनियाद सिर्फ़ इस पर कायम है कि हज़रत मसीह खुदा का बेटा बनकर आया ही इस ग़रज़ से कि सूली पर चढ़ कर दुनिया के गुनाहों का कफ़ारा हो गए और दूसरी तरफ़ फांसी और मसीह को क़त्ल की दास्तान इस बुनियाद पर खड़ी की गई है कि जब वायदा किया गया वह वक़्त आ पहुंचा है तो खुदा का यह फ़र्ज़ी बेटा अपनी हक़ीक़त और दुनिया में वजूद पाने को यकायक भुला करके 'ऐली-ऐली लिमा सबक़तनी' का हसरत भरा जुम्ला जुबान से कहता है और अल्लाह की मर्ज़ी पर अपनी नाखुशी ज़ाहिर करता हुआ नज़र आता है। क्या किसी आदमी को यह सवाल करने का हक़ नहीं है कि अगर ईसाइयों के बयान किए गए वाक़ियों के दोनों हिस्से सही और दुरुस्त हैं तो इन दोनों में आपस में यह टकराव कैसा और एक दूसरे के मुताबिक़ न होने के क्या मानी?

पस अगर एक हक़ीक़त देखनेवाली और दूर तक पहुंच रखने वाली निगाह इन तमाम पहलुओं को सामने रखकर और वाक़िए और हालात की इन तमाम कड़ियों को आपस में जोड़ कर इस मसले को समझे तो वह हक़ की तस्दीक़ को सामने रखकर बे-झिझक यह फ़ैसला करेगा कि बाइबिल की यह दास्तान टकराव वाली और गढ़ी हुई दास्तान है और कुरआन ने इस सिलसिले में जो फ़ैसला दिया है वही सही और सच्चा फ़ैसला है।

तारीख़ गवाह है कि हज़रत मसीह के बाद से सेंट-पाल के पहले तक ईसाई 'यहूदियों' की इस वक़्वास भरी दास्तान से विल्कुल बे-ताल्लुक थे, लेकिन जब सेंट-पाल (पॉलोस रसूल) ने तसलीस (तीन खुदा को मानना) और कफ़ारे पर ना। ईसाई धर्म की बुनियाद रखी तो कफ़ारे के अक्रीदे को मज़बूत बनाने के लिए यहूदियों की इस वक़्वास भरी दास्तान को भी मज़हब का हिस्सा बना दिया।

हज़रत ईसा عليه السلام से मुताल्लिक कुछ तफ़्सीरी और दूसरे अहम मसूअले कुरआन के वाज़ेह बयान व मा क़-त-लूहु व मास-ल-बूहु के बाद 'वलाकिन शुब्बि-ह लहुम' की तफ़्सीर

अब एक बात बाक़ी रह जाती है कि सूर: निसा की आयत 4 : 157 में 'व मा क़-त लूहु व मा स-ल-बूहु', के बाद 'वलाकिन शुब्बिहा लहुम' की तफ़्सीर क्या है? यानी वह क्या चीज़ थी जो यहूदियों पर छा गई, तो कुरआन इसका जवाब इस जगह पर भी और आले इमरान में भी एक ही देता है और वह 'र फ़-अ इलस्सामाइ' है। आले इमरान में इसको वायदे की शक्ल में ज़ाहिर किया 'व राफ़िउ-क इलैय' (3-55) और निसा में वायदा पूरा करने की सूरत में यानी 'बल र-फ़-अ-ल्लाहु इलैहि' (4 : 158) जिसका खुलासा यह निकलता है कि घेराव के वक़्त जब हक़ का इन्कार करने वाले गिरफ़्तारी के लिए अन्दर घुसे तो वहां ईसा को न पाया। यह देखा तो सख़्त हैरान हुए और किसी तरह अन्दाज़ा न लगा सके कि सूरतेहाल क्या पेश आई और इस तरह 'वला किन शुब्बि-ह लहुम' जैसे बनकर रह गए। इसके बाद कुरआन कहता है—

'इन्नल्लज़ी-नख़्तलफू फ़ीहि लफ़ी शक्किम मिन्हु मालहुम बिही मिन इलिमन इल्लत्तिबाइज़्ज़िन्नि व मा क़-त-लूहु यक्कीना (4 : 157) इसमें एक जैसी हालत जो पेश आई उसका नक्शा बयान किया गया है और इससे दो बातें खुलकर सामने आती हैं—

एक यह कि यहूदी इस सिलसिले में इस तरह शक में पड़ गए थे कि गुमान और अटकल के सिवा उनके पास इल्म व यक्कीन की कोई शक्ल बाक़ी नहीं रह गई थी और—दूसरी बात यह कि उन्होंने किसी को क़त्ल करके यह मशहूर किया कि उन्होंने 'मसीह' को क़त्ल कर दिया या फिर आयत मुहम्मद सल्ल० के ज़माने के यहूदियों का हाल बयान कर रही है।

पस कुरआन के इन वाज़ेह एलानों के बाद जो हज़रत मसीह की हिफ़ाज़त के सिलसिले में किए गए हैं और जिनको तफ़्सील के साथ ऊपर की

सतरों में बयान कर दिया गया है, इन दोनों छोटी-छोटी चीज़ों की तफ़्सील का तअल्लुक सहाबा के आसार और तारीख़ी रिवायतों पर रह जाता है और इस सिलसिले में सिर्फ़ उन्हीं रिवायतों और आसार को माना जाएगा जो अपनी सेहत और रिवायत के साथ-साथ इन बुनियादी तफ़्सीलों से न टकराती हों, जिनका ज़िक्र कुरआन मजीद ने अलग-अलग जगहों पर खुल कर किया है और 'कुरआन का बाज़ बाज़ की तफ़्सीर कर देता है' के उसूल पर, जिनसे यह साबित होता है कि हज़रत ईसा को दुश्मन हाथ तक न लगा सके और वह महफूज़ मला-ए-आला की तरफ़ उठा लिए गए और जैसा कि हयाते ईसा की बहस में अभी कुरआनी नस्स (आयतों) से साबित होगा कि वह क्रियामत वाक़े होने के लिए 'निशान' हैं और इसलिए दो बार इस दुनिया में वापस आकर और ज़िम्मेदारी की ख़िदमत अंजाम देकर फिर मौत से दो चार होंगे।

क़त्ल किए गए और फांसी पर चढ़ाए गए शख्स से मुताल्लिक आसार व तारीख़ की जो मिली-जुली रिवायतें हैं, उनका हासिल यह है कि सनीचर की रात में हज़रत ईसा عليه السلام बैतुल मक्दिस के एक बन्द मकान में अपने हवारियों के साथ मौजूद थे कि बनी इसराईल की साज़िश से दमिश्क के बुतपरस्त बादशाह ने हज़रत ईसा عليه السلام की गिरफ्तारी के लिए एक दस्ता भेजा। उसने आकर घेराव कर लिया। इसी बीच अल्लाह तआला ने ईसा को मला-ए-आला की जानिब उठा लिया। जब सिपाही अन्दर दाख़िल हुए तो उन्होंने हवारियों में एक ही शख्स को हज़रत ईसा عليه السلام की जैसी शक्ल का पाया और उसको गिरफ्तार करके ले गए और फिर उसके साथ वह सब कुछ हुआ, जिसका ज़िक्र पिछले पन्नों में हो चुका है।

इन्हीं रिवायतों में कुछ उसका नाम यूदस बिन करियायूता बयान करते हैं और कुछ जरजस और दूसरे दाऊद बिन लोज़ा कहते हैं। ये और दूसरी तफ़्सील न कुरआन में ज़िक्र की गई है और न मफ़ूअ हदीसों में, इसलिए ज़ौक वालों को अख़्तियार है कि वे सिर्फ़ कुरआन ही की इन थोड़ी-सी बातों पर भरोसा करें कि हज़रत का आसमान पर उठाया जाना और हर तरह दुश्मनों से हिफ़ाज़त, के साथ ही साथ यहूदियों पर मामला मुश्तबह होकर किसी दूसरे को क़त्ल करना, यहूदियों और ईसाइयों के पास इस सिलसिले में इल्म व

यक़ीन से महसूस होकर गुमान और शक व शुबहा में मुब्तला हो जाना और क़ुरआन का हक़ीक़ते वाक़िया को इल्म व यक़ीन की रोशनी में ज़ाहिर कर देना, ये सभी साबित की हुई हक़ीक़तें हैं। 'वलाकिन शुब्बि-हलहुम' और 'इन्नल्लज़ी-नख़ालफू- फ़ीहि लफ़ी शक्किम मिन्हु' (आयत) की तफ़्सीर में इन रिवायतों की तफ़्सील को मान लें और यह समझ कर मानें कि इन आयतों की तफ़्सीर उन तफ़्सीलों पर टिकी हुई नहीं है बल्कि यह बात ज़्यादा है जो आयतों की सही तफ़्सीर की ताईद में है—

हज़रत ईसा अलैहिसल्लाम की ज़िंदगी

सूर: आले इमरान, माइदा और निसा की इन आयतों से यह साबित हो चुका है कि हज़रत ईसा से मुताल्लिक़ अल्लाह की हिक्मत का यह फ़ैसला हुआ कि उनको ज़िन्दा हालत में ही मला-ए आला की ओर उठा लिया जाए और वह दुश्मनों और काफ़िरों से महफूज़ उठा लिए गए, लेकिन क़ुरआन ने इस मसले में सिर्फ़ इसी को काफ़ी नहीं समझा, बल्कि मौक़े-मौक़े से उनकी ज़िंदगी पर आयतों के ज़रिए कई जगह रोशनी डाली है और उन जगहों में इस ओर भी इशारे किए हैं कि हज़रत मसीह की लम्बी ज़िंदगी और आसमान की तरफ़ उठाए जाने में क्या हिक्मत काम कर रही थी, ताकि हक़ वालों के दिल ईमान की ताज़गी से खिल जाएं और बातिल वाले अपनी दिल की तंगी पर शरमाए।

ल यूमिनन-न बिही क़ब-ल मौतिही

तर्जुमा— 'और कोई अहले किताब में से बाक़ी न रहेगा, मगर यह कि वह ज़रूर ईमान लाएगा ईसा पर और उस (ईसा) की मौत से पहले और वह (ईसा) क़ियामत के दिन उन पर (अहले किताब पर) गवाह बनेगा।' (4 : 159)

इस आयत से पहले की आयतों में वही ज़िक्र किया गया वाक़िया आया है—जो ऊपर आया है कि ईसा को न सूली पर चढ़ाया गया और न क़त्ल किया गया बल्कि अल्लाह तआला ने अपनी ओर उठा लिया, यह यहूदियों और ईसाइयों के उस अक़ीदे के रद्द में है जो उन्होंने झूठे तरीक़े से और अटकल

से कायम कर लिया था, उनसे कहा जा रहा है कि हज़रत मसीह के मुताल्लिक फांसी पर चढ़ाए जाने और क़त्ल किए जाने का दावा लानत के काबिल है, क्योंकि बुहतान और लानत जुड़वां हैं। इसके बाद इस आयत में पहली बात की तस्दीक में इस जानिब तवज्जोह दिलाई जा रही है कि आज अगर इस मलऊन अक़ीदे पर फ़ख़र कर रहे हो, तो वह वक़्त भी आने वाला है जब ईसा बिन मरयम अल्लाह तआला की हिक्मत व मस्लहत को पूरा करने के लिए ज़मीनी कायनात पर वापस तशरीफ़ लाएंगे और उसे आंखों से देखने के वक़्त अहले किताब (यहूदी-ईसाई) में से हर एक मौजूद हस्ती को कुरआन के फ़ैसले के मुताबिक़ ईसा عليه السلام पर ईमान लाने के सिवा कोई चारा-ए-कार बाकी न रहेगा और फिर जब वे अपनी ज़िंदगी की मुदत ख़त्म करके मौत की गोद में चले जाएंगे, तो क्रियामत के दिन अपनी उम्मत (अहले किताब) पर उसी तरह गवाह होंगे, जिस तरह तमाम नबी और रसूल अपनी-अपनी उम्मतों पर गवाह बनेंगे।

यह हक़ीक़त कुछ छिपी हुई नहीं है कि हज़रत ईसा के बारे में अगरचे यहूदी व ईसाई दोनों फ़ांसी और क़त्ल के वाक़िए से इत्तिफ़ाक़ करते हैं, लेकिन इस सिलसिले में दोनों के अक़ीदे की बुनियाद क़तई तौर पर आपस में टकराने वाले उसूल पर कायम है। यहूदी हज़रत मसीह को गढ़ कर बातें बनाने वाले और झूठ कहते और दज्जाल समझते हैं और इसलिए फ़ख़र करते हैं कि उन्होंने यसूअ मसीह को फांसी पर भी चढ़ाया और फिर इस हालत में मार भी डाला।

इसके खिलाफ़ ईसाइयों का अक़ीदा यह है कि दुनिया का पहला इंसान आदम गुनाहगार था और सारी दुनिया गुनाहगार थी, इसलिए खुदा की सिफ़त 'रहमत' ने इब्नियत (बेटा होने) की शक्ल अख़्तियार की और उसको दुनिया में भेजा, ताकि वह यहूदियों के हाथों सूली पर चढ़े और मारा जाए और इस तरह कायनात माज़ी (भूतकाल) और मुस्तविबल (भविष्य) के गुनाहों का 'कफ़़ारा' बनकर दुनिया की नजात की घजह बने।'

सूर: निसा की आयतों में कुरआन ने साफ़-साफ़ कह दिया कि हज़रत मसीह عليه السلام के क़त्ल के दावे की बुनियाद किसी भी अक़ीदे की बुनियाद पर

हो, लानत के क़ाबिल और ज़िल्लत और घाटे की वजह है। खुदा के सच्चे पैग़म्बर को झूठा समझकर यह अक़्रीदा रखना भी लानत की वजह और खुदा के बन्दे और मरयम के पेट से पैदा इंसान को खुदा का बेटा बना कर और 'कफ़्रारे' का झूठा अक़्रीदा गढ़ कर मसीह को फांसी पाया हुआ और क़त्ल किया हुआ मान लेना भी गुमराही और इल्म व हक़ीक़त के खिलाफ़ अटकल का तीर है और इस सिलसिले में सही और हक़ीक़त पर मन्नी फ़ैसला वही है, जो कुरआन ने किया है और जिसकी बुनियाद 'इल्म व यक़ीन और वह्य इलाही' पर क़ायम है।

हज़रत ईसा की ज़िंदगी और उनका उतरना और सहीह हदीसें

कुरआन ने जिन मोज़ों भरे इस्ति़सार के साथ हज़रत ईसा के आसमान पर उठाए जाने, आज की ज़िंदगी और क़ियामत की अ़लामतें बन कर आसमान से उतरने के बारे में साफ़ किया है, हदीसों के सही ज़ख़ीरे में इन आयतों की ही तफ़्सील बयान करके इन हक़ीक़तों को रोशन किया गया है। चुनांचे इमामे हदीस बुख़ारी व मुस्लिम, दोनों ही ने (सहीह बुख़ारी, सहीह मुस्लिम) हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० से यह रिवायत सनद के कई तरीक़ों से नक़ल की है—

“अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इश़ाद फ़रमाया— 'उस ज़ात की क़सम, जिस के क़ब्ज़े में मेरी जान है, ज़रूर वह वक़्त आने वाला है कि तुम में ईसा बिन मरयम, हाकिम व आदिल बन कर उतरेंगे, वह सलीब को तोड़ेंगे और ख़िंज़ीर (सूअर) को क़त्ल करेंगे (यानी मौजूदा ईसाई धर्म को मिटाएंगे और जिज़या उठा देंगे (यानी अल्लाह के निशान को देख लेने के बाद इस्लाम के सिवा कुछ भी कुबूल नहीं होगा और इस्लामी अहक़ाम में रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के जिज़या का हुक्म उसी वक़्त तक के लिए है) और माल इतना ज़्यादा होगा कि कोई उसके कुबूल करने वाला नहीं मिलेगा और खुदा के सामने एक सज्दा दुनिया और उसमें जो कुछ है, उससे ज़्यादा क़ीमत रखेगा (यानी माल की ज़्यादती की वजह से ख़ैरात व सदक़ात के मुक़ाबले में नफ़ल इबादतों की अहमियत बढ़ जाएगी)

हो, लानत के क़ाबिल और ज़िल्लत और घाटे की वजह है। खुदा के सच्चे पैग़म्बर को झूठ समझकर यह अक़ीदा रखना भी लानत की वजह और खुदा के बन्दे और मरयम के पेट से पैदा इंसान को खुदा का बेटा बना कर और 'कफ़्रारे' का झूठा अक़ीदा गढ़ कर मसीह को फांसी पाया हुआ और क़त्ल किया हुआ मान लेना भी गुमराही और इल्म व हक़ीक़त के खिलाफ़ अटकल का तीर है और इस सिलसिले में सही और हक़ीक़त पर मन्बी फ़ैसला वही है, जो कुरआन ने किया है और जिसकी बुनियाद 'इल्म व यक़ीन और वह्य इलाही' पर क़ायम है।

हज़रत ईसा की ज़िंदगी और उनका उतरना और सहीह हदीसें

कुरआन ने जिन मोज़ों भरे इख़्तिसार के साथ हज़रत ईसा के आसमान पर उठाए जाने, आज की ज़िंदगी और क़ियामत की अलामतें बन कर आसमान से उतरने के बारे में साफ़ किया है, हदीसों के सही ज़ख़ीरे में इन आयतों की ही तफ़्सील बयान करके इन हक़ीक़तों को रोशन किया गया है। चुनांचे इमामे हदीस बुख़ारी व मुस्लिम, दोनों ही ने (सहीह बुख़ारी, सहीह मुस्लिम) हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० से यह रिवायत सनद के कई तरीक़ों से नक़ल की है—

“अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इश़ाद फ़रमाया— ‘उस ज़ात की क़सम, जिस के क़ब्जे में मेरी जान है, ज़रूर वह वक़्त आने वाला है कि तुम में ईसा बिन मरयम, हाकिम व आदिल बन कर उतरेंगे, वह सलीब को तोड़ेंगे और ख़िंज़ीर (सूअर) को क़त्ल करेंगे (यानी मौजूदा ईसाई धर्म को मिटाएंगे और जिज़या उठा देंगे (यानी अल्लाह के निशान को देख लेने के बाद इस्लाम के सिवा कुछ भी कुबूल नहीं होगा और इस्लामी अहक़ाम में रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के जिज़या का हुक्म उसी वक़्त तक के लिए है) और माल इतना ज़्यादा होगा कि कोई उसके कुबूल करने वाला नहीं मिलेगा और खुदा के सामने एक सज्दा दुनिया और उसमें जो कुछ है, उससे ज़्यादा क़ीमत रखेगा (यानी माल की ज़्यादती की वजह से ख़ैरात व सदक़ात के मुक़ाबले में नफ़ल इबादतों की अहमियत बढ़ जाएगी)

फिर हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० ने फ़रमाया, अगर तुम (कुरआन से इसकी गवाही) चाहो तो यह आयत पढ़ो (व इम-मिन अहलिल किताब—आयत) और कोई अहले किताब में से न होगा, मगर (ईसा की) मौत से पहले उस पर (ईसा पर) ज़रूर ईमान ले आएगा और वह (ईसा ~~ऋषि~~) क़ियामत के दिन उन पर गवाह होगा।' (किताबुल अबिया)

बुख़ारी और मुस्लिम में नाफ़ेज़ मौला अबू क़तादा अंसारी रज़ि० की सनद से हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० की यह रिवायत नक़ल की गई है—

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, उस वक़्त तुम्हारा क्या हाल होगा जब तुममें इब्ने मरयम उतरेंगे और इस हालत में उतरेंगे कि तुम्हीं में से एक आदमी तुम्हारी इमामत कर रहा होगा। (किताबुल अबिया)

यह और इसी क्रिस्म की हदीस का बहुत बड़ा ज़ख़ीरा है जो हज़रत ईसा बिन मरयम ~~ऋषि~~, पैग़म्बर बनी इसराईल से मुताल्लिक हदीस और तफ़्सील की किताबों में नक़ल की गई है और सनद की ताक़त के लिहाज़ से सहीह और हसन से कम दर्जा नहीं रखती और शोहरत और तवातुर के एतबार से जिनका यह हाल है कि इमाम तिमिज़ी के मुताबिक़ हदीस के हाफ़िज़ इमामुद्दीन बिन कसीर, हदीस के हाफ़िज़ इब्ने हज़र अस्क़लानी और दूसरे हदीस के इमाम, सोलह जलीलुल क़द्र सहाबा रज़ि० ने इनको रिवायत किया है जिनमें से कुछ साहबा का यह दावा है कि नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने ये बातें सैकड़ों सहाबा के मज्मा में खुल्वा देकर फ़रमाई और ये सहाबा किराम बिना किसी इन्कार और बेग़ानेपन के इन रिवायतों को बुलफ़ा-ए-राशिदीन की ख़िलाफ़त के दौर में एलानिया सुनाते थे। चुनांचे इन जलीलुल क़द्र सहाबा से जिन हज़ारों सहाबा ने सुना, उनमें से ये ऊंचे दर्जे की हस्तियां ज़िक्र के काबिल हैं जिनमें का हर आदमी हदीस की रिवायत में ज़ब्त व हिफ़ज़, सक़ाहत और इल्मी बड़प्पन को सामने रखकर इमामत व क़ियामत का दर्जा रखता है। जैसे सईद बिन मुसय्यिब, नाफ़ेज़ मौला अबू क़तादा, हज़ला बिन अली अल-अस्तमी, अब्दुरहमान बिन आदम, अबू सलमा अबू अग्र, अता बिन बश्शार, अबू सुहैल, मूसिर बिन ग़िफ़ारा, यस्या बिन अबी

अम्र, जुबैर बिन नुजैर, उर्व: बिन मसऊद सक्कफी, अब्दुल्लाह बिन ज़ैद अंसारी, अबू ज़रआ, याक़ूब बिन आमिर, अबू नसरा, अबुतुफ़ैल रहमतुल्लाहि अलैहिम०

फिर इन बड़े उलेमा और नामी मुहद्दीसीन (यानी हदीस के नामी माहिर) से जिन अनगिनत शार्गिदों ने सुना, उनमें से हदीस-रिवायतों के तबक़े में, जिनको हदीस और कुरआन के इल्मों की जानकारी का बुलन्द रुतबा हासिल है और अपन-अपने वक़्त के 'इमामुल हदीस' और 'अमीरुल मोमिनीन फ़िल हदीस' मान लिए गए हैं, कुछ के नाम नीचे दिए जाते हैं—

इब्ने शहाब ज़ोहरी, सुफ़ियान बिन ऐनीया, लैस, इब्ने अबी ज़ेब, औज़ाई, क़तादा, अब्दुरहमान बिन अबी उम्र, सुहैल, जबला बिन सुहैल, अली बिन ज़ैद, अबू राफ़ेज़, अब्दुरहमान बिन जुबैर, नोमान बिन सालिम, मामर, अब्दुल्लाह बिन उबैदुल्लाह (रहमहुमुल्लाह)

ग़रज़ इन रिवायतों और सही हदीसों को सहाबा, ताबिईन, तबा ताबिईन, यानी वक़्त के बेहतरीन तबक़े में इस दर्जा जगह मिल चुकी थी और वह बग़ैर किसी इन्कार के इस दर्जा कुबूल करने के लायक़ हो चुकी थी कि हदीस के इमामों के नज़दीक हज़रत ईसा ~~ख़ुदा~~ की ज़िंदगी और उतरने से मुताल्लिक़ इन हदीसों के मानी व मतलब के लिहाज़ से तवातुर का दर्जा हासिल था और इसीलिए वे बे-झिझक इस मसले को 'अहदीसे मुतवातिरा' से साबित और मुसल्लम कहते थे और हक़ीक़त भी यह है कि रिवायते हदीस के तमाम तबक़ों और दर्जों में इन रिवायतों को 'तलक्का बिल कुबूल' का यह दर्जा हासिल रहा है कि हर दौर में उसके रावियों में 'हदीस के इमाम' और रिवायते हदीस के 'मदार' (आधार) नज़र आते हैं। यही वजह है कि सहाबा पर मौक़ूफ़ मरफ़ूअ हदीसों और रिवायतों के नक़ल करने वालों में इमाम अहमद, इमाम बुख़ारी, इमाम मुस्लिम, अबू दाऊद, नसई, तिर्मिज़ी, इब्ने माजा जैसे हदीस के इमामों के नाम शामिल हैं और वे सब इन रिवायतों के सहीह और हसन होने पर एक राय रखते हैं और यही वजह है कि हज़रत ईसा के आसमान पर उठाए जाने और ज़िंदगी और आसमान से उतरने पर उम्मत मुत्तफ़िक़ हो चुकी है, चुनांचे अक़ाइद व क़लाम के इल्म की मशहूर किताब 'अक़ीदा सफ़ारीनी' में उम्मत के इस इत्तिफ़ाक़ को खोलकर बयान किया गया है।

‘और क्रियामत की निशानी में से तीसरी निशानी यह है कि हज़रत (मसीह) ईसा बिन मरयम आसमान से उतरेंगे और उनका आसमान से उतरना किताब (क़ुरआन) सुन्नत (हदीस) और इज्मा-ए-उम्मत से क़तई तौर पर साबित है। (क़ुरआन व हदीस से उतरना साबित करने के बाद फ़रमाते हैं) जहां तक उम्मत के इज्माअ का ताल्लुक है, तो इसमें ज़रा शुबहा नहीं कि हज़रत ईसा عليه السلام के आसमान से उतरने पर उम्मत का इज्माअ है और इस बारे में इस्लामी शरीअत के मानने वालों में से किसी एक का भी इख़िलाफ़ मौजूद नहीं, अलबत्ता फ़लसफ़ियों और मुलहिदों (अल्लाह के न मानने वालों) ने ईसा عليه السلام के उतरने का इंकार किया है और इस्लाम में उनका इंकार बिल्कुल बे-मानी है।

उतरने के वाक़िए सहीह हदीसों की रोशनी में

हज़रत ईसा के उतरने से मुताल्लिक सहीह हदीसों से जो तफ़्सील सामने आती है, उनको तर्तीब के साथ यों बयान किया जा सकता है—

क्रियामत का दिन अगरचे तै है, मगर अल्लाह के अलावा किसी को इसका इल्म नहीं है और यह अचानक वाक़े होगा। ‘और उनके पास क्रियामत का इल्म है।’ (31 : 34) ‘और क्रियामत का इल्म खुदा ही को है।’ ‘हत्ता इज़ा जाअत हुमुस्साअतु बग़ततन’ (6 : 31) (यहां तक कि उन पर अचानक क्रियामत की घड़ी आ जाएगी) ‘ला तातीकुम इल्ला बग़ततन’ (7 : 187) ‘क्रियामत तुम पर नहीं आएगी, मगर अचानक।’ और जिब्रील عليه السلام की हदीस में है, ‘मल मसऊलु अन्हा बि आलम मिन साइल’ (जिब्रील से फ़रमाया) क्रियामत के बारे में आपसे ज़्यादा मुझे भी इल्म नहीं। जो थोड़ा बहुत इल्म आपको है, उसी क़दर मुझको भी इल्म है। और एक हदीस में है, तुम मुझसे क्रियामत के बारे में सवाल करते हो, तो इसका इल्म तो अल्लाह की हो है।’ अलबत्ता क़ुरआन ने और सहीह हदीसों ने कुछ ऐसी निशानियों बयान की हैं जो क्रियामत के क़रीब पेश आएंगी और उनसे सिर्फ़ उसके नज़दीक हो जाने का पता चल सकता है। ‘क्रियामत की शर्तों में एक बड़ी निशानी हज़रत ईसा

ﷺ का मला-ए-आला से उतरना है, जिसकी तफ़सील यह है—

‘मुसलमानों और ईसाइयों के दर्मियान ज़बरदस्त लड़ाई चल रही होगी मुसलमानों की क्रियादत व इमामत रसूलुल्लाह ﷺ में से एक ऐसे आदमी के हाथ में होगी जिसका लक़ब मेंहदी होगा। इस लड़ाई के दर्मियान ही में मसीह ज़लालते दज्जाल का ख़ुरूज होगा, यह यहूदी नस्ल का और काना होगा। कुदरत के करिशमे ने उसकी पेशानी पर ‘का-फ़ि-र’ (क़ाफ़िर) लिख दिया होगा जिसको ईमान वाले ईमानी फ़रासत (बुद्धि मत्ता) से पढ़ सकेंगे और उसके झूठ-फ़रेब से जुदा रहेंगे। यह पहले तो ख़ुदाई का दावा करेगा और शोबदे बाज़ों की तरह शोबदे दिखाकर लोगों को अपनी तरफ़ मुतवज्जह करेगा, मगर इस सिलसिले को कामियाब न देखकर कुछ दिनों के बाद ‘मसीहे हिदायत’ होने का दावा करेगा। यह देख कर यहूदी बड़ी तायदाद में, बल्कि क़ौमी हैसियत से उसकी पैरवी करने वाले बन जाएंगे और यह इसलिए होगा कि यहूदी ‘मसीहे हिदायत’ का इन्कार करके उनके क़त्ल का दावा कर चुके हैं और मसीहे हिदायत के आने के आज तक इंतज़ार में है। इसी हालत में एक दिन दमिशक़ (सीरिया) की जामा मस्जिद में मुसलमान मुंह अंधेरे नमाज़ के लिए जमा होंगे, नमाज़ के लिए इक़ामत हो रही होगी और मेहदी मौऊद इक़ामत के मुसल्ले पर पहुंच चुके होंगे कि अचानक एक आवाज़ सबको अपनी ओर मुतवज्जह कर लेगी। मुसलमान आंख उठाकर देखेंगे तो सफ़ेद बादल छाया हुआ नज़र आएगा और थोड़ी-सी देर में यह दिखाई देगा के ईसा दो पीली ख़ूबसूरत चादरों में लिपटे हुए और फ़रिश्तों के बाज़ुओं पर सहारा दिए हुए मला-ए-आला से उतर रहे हैं। फ़रिश्ते उनको मस्जिद के मीनारे पर उतार देंगे और वापस चले जाएंगे।

अब हज़रत ईसा ﷺ का ताल्लुक़ ज़मीनी कायनात के साथ दोबारा जुड़ जाएगा और वह फ़ितरत के आम क़ानून के मुताबिक़ मस्जिद के सेहन में उतरने के लिए सीढ़ी तलब कर रहे होंगे, फ़ौरन तामील होगी और वह मुसलमानों के साथ नमाज़ की सफ़ों में आ खड़े होंगे। मुसलमानों का इमाम (मेंहदी मौऊद) ताज़ीम के तौर पर पीछे हटकर हज़रत ईसा से इमामत की दरख़्वास्त करेगा। आप फ़रमाएंगे कि यह इक़ामत तुम्हारे लिए कही गई है,

इसलिए तुम ही नमाज़ पढ़ाओ।

नमाज़ से फ़रागत के बाद जब मुसलमानों की इमामत हज़रत ईसा के हाथों में आ जाएगी और वे हथियार लेकर मसीहे ज़लालत (दज्जाल) के क़त्ल के लिए रवाना हो जाएंगे और शहर पनाह के बाहर उसको बाब लुद पर सामने पाएंगे। दज्जाल समझ जाएगा कि उसके फ़रेब और ज़िदंगी के खात्मे का वक़्त आ पहुंचा, इसलिए डर की वजह से रांग की तरह पिघलने लगेगा और हज़रत ईसा आगे बढ़कर उसको क़त्ल कर देंगे और फिर जो यहूदी दज्जाल के साथ रहने से क़त्ल से बच जाएंगे वे और ईसाई सब इस्लाम कुबूल कर लेंगे और मसीहे हिदायत की सच्ची पैरवी के लिए मुसलमानों के कंधे से कंधा मिला कर खड़े नज़र आएंगे, उसका असर मुशिरक जमाअतों पर भी पड़ेगा और इस तरह उस ज़माने में इस्लाम के अलावा कोई मज़हब बाक़ी नहीं रहेगा।

इन वाक़ियों के कुछ दिनों के बाद याजूज-माजूज निकलेंगे और अल्लाह की हिदायत के मुताबिक़ हज़रत ईसा عليه السلام मुसलमानों को उस फ़िल्ने से बचाए रखेंगे। हज़रत ईसा عليه السلام की हुकूमत का ज़माना चालीस साल रहेगा और इस बीच वह इज़दवाजी ज़िदंगी (दाम्पत्य जीवन) बसर करेंगे और उनकी हुकूमत के दौर में अद्ल व इंसाफ़ और ख़ैर व बरकत का यह हाल होगा कि बकरी और शेर एक घाट में पानी पीएंगे और बदी और शरारत के अनासिर (तत्व) दब कर रह जाएंगे। (इब्ने असाकिर)

नोट— और मुस्लिम में है कि हुकूमत का दौर सात साल रहेगा।

मसीह عليه السلام की वफ़ात

हुकूमत के चालीस साल के दौर के बाद ईसा عليه السلام का इतिक़ाल हो जाएगा और नबी अकरम ﷺ के पहलू में दफ़न होंगे, हज़रत अबू हुरैरह رضي الله عنه की लम्बी हदीस में है कि—

‘फिर वह दुनिया की कायनात पर उतर कर चालीस साल क्रियाम करेंगे और इसके बाद वफ़ात पा जाएंगे और मुसलमान उनके जनाज़े की नमाज़ पढ़ेंगे और उनको दफ़न करेंगे।

—इब्ने हिब्बान

और तिमिज़ी ने मुहम्मद बिन यूसुफ़ बिन अब्दुल्लाह बिन सलाम की

सनदे हसन के सिलसिले से हज़रत अब्दुल्लाह बिन सलाम रज़ि० से यह रिवायत नक़ल की है—

‘अब्दुल्लाह बिन सलाम ने फ़रमाया, तौरात में मुहम्मद ﷺ की सिफ़त (हुलिया व सीरत) का ज़िक्र किया गया है और यह भी लिखा है कि ईसा बिन मरयम उनके साथ (पहलू में) दफ़न होंगे।

हज़रत ईसा और आख़िरत का दिन

सूर: माइदा में हज़रत ईसा के अलग-अलग हालात का ज़िक्र किया गया है। फिर सूर: का आख़िर भी उन्हीं के तज़िकरे पर ख़त्म होता है। इस जगह अल्लाह तआला ने एक तो क़ियामत के उस वाक़िए का नक्शा खींचा है, जब नबियों से उनकी उम्मतों के बारे में सवाल होगा और वे बड़े अदब से अपनी लाइल्मी ज़ाहिर करेंगे और अर्ज़ करेंगे, ‘ऐ खुदा! आज का दिन तूने इसलिए मुक़रर फ़रमाया है कि हर मामले में हक़ीक़तों को सामने रखकर फ़ैसला सुनाए और हम चूँकि सिर्फ़ ज़ाहिरी चीज़ों ही पर हुक्म लगा सकते हैं और दिलों और हक़ीक़तों को देखने वाला तेरे सिवा कोई नहीं, इसलिए आज हम क्या गवाही दे सकते हैं, सिर्फ़ यही कह सकते हैं कि हमें कुछ मालूम नहीं, तू ग़ैब का जानने वाला हैं, इसलिए तू ही सब कुछ जानता है।

तर्जुमा—वह दिन (ज़िक्र के क़ाबिल है) जबकिं अल्लाह तआला पैग़म्बरों को जमा करेगा, फिर कहेगा (अपनी-अपनी उम्मतों की जानिब से) क्या जवाब दिए गए? वे (पैग़म्बर) कहेंगे, (तेरे इल्म के सामने) हम कुछ नहीं जानते।

(5 : 109)

अगली आयतों में हज़रत ईसा के जवाब का ज़िक्र किया गया है। उसके बयान का तरीक़ा नबियों के जवाब के साथ मेल खाता है—

तर्जुमा—और (वह वक़्त भी ज़िक्र के क़ाबिल है) जब अल्लाह तआला ईसा बिन मरयम से कहेगा, क्या तूने लोगों (बनी इसराईल) से कह दिया था कि मुझको और मेरी मां को अल्लाह के अलावा खुदा बना लेना। ईसा कहेंगे, ‘पाकी तुझको ही शोभा देती है, मेरे लिए कैसे मुम्किन था कि मैं वह बात कहता जो कहने के लायक़ नहीं।’ अगर यह बात मैंने उनसे कही होती तो

यक्रीनन तेरे इल्म में होती, (इसलिए कि) तू वह सब कुछ जानता है, जो मेरे जी में है और मैं तेरा भेद नहीं पा सकता। बेशक तू ग़ैब की बातों का ख़ूब जानने वाला है। मैंने उस बात के अलावा कि जिसका तू ने मुझे हुक्म दिया, उनसे और कुछ नहीं कहा, वह यह कि सिर्फ़ अल्लाह ही की पूजा करो जो मेरा और तुम्हारा सब का रब है।' और मैं उन पर उस वक़्त तक का गवाह हूँ जब तक मैं उनके दर्मियान रहा। फिर जब तूने मुझको क़ब्ज़ कर लिया, तब तू ही उन पर निगहबान था और तू हर चीज़ पर गवाह है। अगर तू इन सबको अज़ाब चखाए तो ये तेरे बन्दे हैं और अगर इनको बख़्श दे, पस तू ही बेशक ग़ालिब हिक्मत वाला है (5 : 116-118)

हज़रत ईसा जब अपना जवाब दे चुकेगें, तब अल्लाह तआला यह इशार्द फ़रमाएगा—

तर्जुमा—अल्लाह तआला फ़रमाएगा, यह ऐसा दिन है कि जिसमें सच्चों की सच्चाई ही काम आ सकती है। उन्हीं के लिए जन्नत है जिनके नीचे नहरें बहती हैं और जिनमें वे हमेशा-हमेशा रहेंगे और वे अल्लाह से राज़ी और अल्लाह उनसे राज़ी (का ऊंचा मुक़ाम पाएंगे) यह बहुत ही बड़ी कामियाबी है। (5 : 119)

हज़रत ईसा عليه السلام का जवाब एक जलीलुल क़द्र पैग़म्बर की शान की अज़मत के ठीक मुताबिक़ है। वह पहले अल्लाह के दरबार में उज़्र रखेंगे कि यह कैसे मुम्किन था कि मैं ऐसी नामुनासिब बात कहता जो क़तई तौर पर हक़ के खिलाफ़ है 'सुब-हा-न-क मा यकूनु ली अन अकू-ल मा लै-स ली बिहक्क' फिर अदब के लिहाज़ के तौर पर अल्लाह के हक़ीक़ी इल्म के सामने अपने इल्म को हेच बे-इल्मी जैसा ज़ाहिर करेंगे 'इन कुन्तु कुलतुहू फ-क़द अलिम-तहू मा फ़ी नफ़सी वाला आलमुमा फ़ी नफ़िस-क इन्न-क अन-त अल्लामुल गुयूब० और इसके बाद अपने फ़र्ज़ की अंजामदेही का हाल गुज़ारिश करेंगे, 'मा कुल्लु लहुम इल्ला मा अमरतनी बिही अनिअ बुदुल्ला-ह रब्बी वा रब्बकुम' और फिर उम्मत ने हक़ की इस दावत का क्या जवाब दिया, उसके मुताल्लिक़ ज़ाहिर बातों की गवाही का भी इस ढंग से ज़िक़्र करेंगे जिसमें उनकी गवाही अल्लाह की गवाही के मुक़ाबले में बे कीमत नज़र आए। 'व कुन-त अलैहिम शहीदम-मा दुमतु फ़ीहिम फ़लम्मा तवफ़फ़ैतनी कुन-त अन्तरक़ी-ब

अलैहीम व अन-त अला कुल्लि शैइन शहीद' और इसके बाद यह जानते हुए कि उम्मत में मोमिनीन कानितीन भी हैं और मुन्किरीन जाहिदीन भी— अज़ाब के वाक़े होने और मग़ि़रत तलब करने का इस अंदाज़ से ज़िक्र करेंगे जिससे एक तरफ़ अल्लाह के मुकरर किए हुए अमल के बदले के क़ानून की ख़िलाफ़वर्जी भी न मालूम हो और दूसरी ओर उम्मत के साथ रहमत व शफ़क़त के जज़्बे का जो तक्राज़ा है वह पूरा हो जाए'। इन तुअज़ि़ब हुम फ़-इन्नहुम हबादुक व इन तग़ि़र लहुम, फ़-इन्न-क अन्तल अज़ीजुल हकीम०

जब हज़रत ईसा अर्जदाश्त या जवाब के मज़मून को ख़त्म कर चुके तो रब्बुल आलमीन ने अपने अदल के क़ानून का यह फ़सैला सुना दिया, ताकि रहमत व मग़ि़रत के हक़दार को मायूसी न पैदा हो, बल्कि मुसरत व शादमानी से, उनके दिल रोशन हो जाएं और अज़ाब के हक़दार ग़लत उम्मीदें न क़ायम कर सकें। 'क़ालल्लाहु हाज़ा यौमुन यनफ़उस्सादिक़ी-न सिदक़हुम' (आयत) (5 : 119)

इन तमाम तफ़्सीलों का हासिल यह है कि इन आयतों का आगा-पीछा साफ़-साफ़ बता देता है कि यह वाक़िया क़ियामत के दिन पेश आएगा और हज़रत ईसा के मला-ए-आला पर उठाए जाने के वक़्त नहीं पेश हुआ।

हज़रत ईसा की इस्लाह की दावत और बनी इसराईल के फ़िरक़े

पीछे यह बताया जा चुका है कि अल्लाह ने हज़रत ईसा عليه السلام को इंजील अता की थी और यह इलहामी किताब असल में तौरात का तुक्मिला (Supplement) थी। यानी हज़रत ईसा की तालीमी बुनियाद अगरचे तौरात पर ही क़ायम थी, मगर यहूद की गुमराहियों, मज़हबी बगावतों और सारकशियों की वजह से, जिन सुधारों की ज़रूरत थी, अल्लाह तआला ने हज़रत मसीह की मारफ़त इंजील की शक़ल में उनके सामने पेश कर दिया था। हज़रत मसीह को नबी बनाए जाने से पहले यहूदियों की एतक्रादी और अमली गुमराहियां अगरचे बहुत ज़्यादा हो गई थीं और हज़रत मसीह عليه السلام ने नबी बनाए जाने के बाद इन सबक सुधार के लिए क़दम उठाया भी, फिर कुछ अहम बुनियादी बातें ख़ास तौर पर इस्लाह के काबिल थीं, जिन्हें सुधारने के लिए हज़रत

मसीह बहुत ज्यादा सरगर्मे अमल रहे।

1. यहूदियों की एक जमाअत कहती थी कि नेक-बद की जज़ा-सज़ा इस दुनिया में मिल जाती है, बाक़ी क्रियामत, आख़िरत, आख़िरत में जज़ा व सज़ा, हश्श व नश्श ये सब बातें ग़लत है। ये 'सदूक़ी' थे।

2. दूसरी जमाअत अगरचे इन तमाम चीज़ों को हक्क समझती थी, मगर साथ ही यह यक़ीन रखती थी कि अल्लाह से मिलने के लिए यह बिल्कुल ज़रूरी है कि दुनिया की लज़ज़तों और दुनिया वालों से किनाराक़श होकर सन्यासी का जीवन अपनाया जाए, चुनाचे वे बस्तियों से अलग ख़ानकाहों और झोपड़ियों में रहना पसन्द करते थे, मगर यह जमाअत हज़रत मसीह के नबी बनाए जाने से कुछ पहले अपनी यह हैसियत भी खो चुकी थी और अब 'दुनिया त्याग देने' के परदे में दुनिया की हर क्रिस्म की गन्दगी में लथ-पत नज़र आती थी। ज़ाहिरी तौर पर रस्म व रिवाज ज़ाहिदों का-सा होता, मगर ये तंहाइयों में वह सब कुछ नज़र आता जिनसे खुले गुनाहगार भी एक बार शर्म से आंखें बंद कर लें, ये 'फ़रीसी' कहलाते थे।

तीसरी जमाअत मज़हबी रस्मों और हैकल की ख़िदमत से मुताल्लिक़ थी, लेकिन उनका भी यह हाल था कि जिन रास्तों और ख़िदमतों को 'अल्लाह के लिए' करना चाहिए था और जिन आमाल के नेक नतीजे ख़ुलूस पर टिके हुए थे, उनको तिजारती कारोबार बना लिया था और जब तक हर एक रस्म और हैकल की ख़िदमत पर भेंट और नज़्र न ले लें, क़दम न उठाएं, यहां तक कि इस मुक़द्दस कारोबार के लिए उन्होंने तौरात के हुक्मों में भी घट-बढ़ कर दी थी, ये 'काहिन' थे।

4. चौथी जमाअत इन सब पर हावी और मज़हब की ठेकेदार थी। इस जमाअत ने जनता में धीरे-धीरे यह अक़ीदा पैदा कर दिया था कि मज़हब और दीन के उसूल व एतकाद कुछ नहीं हैं, मगर 'वह' जिनको वे सही कह दें, उनको यह अख़्तियार हासिल है कि वे हलाल को हराम और हराम को हलाल बना दें, दीन के हुक्मों में इज़ाफ़ा या कमी कर दें, जिसको चाहें जन्नत का परवाना लिख दें और जिसको चाहें जहन्नम की तहरीर दे दें। अल्लाह के यहां उनका फ़ैसला अटल और अनमिट है। गरज़ बनी इसराईल के 'अरबाबम मिन

दूनिल्लाह' बने हुए थे और तौरात के लफ़्ज़ी और मानवी हर क्रिस्म की घट-बढ़ में इस दर्जा बहादुर थे कि उसको दुनियातलबी का मुस्तक़िल सरमाया बना लिया था और आम व ख़ास की खुशनूदी के लिए ठहराई हुई कीमत पर दीन के हुक्मों को बदल डालना उनका दीनी काम था, ये 'अहबार' या 'फ़कीह' थे।

ये थीं वे जमाअतें और ये थे उनके अक़ीदे और अमल जिनके दर्मियान हज़रत मसीह भेजे गए ताकि वह उन की इस्लाह करें। उन्होंने हर एक जमाअत के ग़लत अक़ीदों और अमलों का जायज़ा लिया, रहम व मुहब्बत के साथ उनके ग़ेबों और ख़राबियों पर उंगली उठाई, उनको सुधरने पर उभारा और उनके ख़्यालों, अक़ीदों और उनके अमलों और किरदारों की गन्दागियों को ढेर करके उनका रिश्ता कायनात के पैदा करने वाले अल्लाह के साथ दोबारा कायम करने की कोशिश की, मगर इन बदबख़्तों ने अपनी काली करतूतों में सुधार लाने से साफ़ इंकार कर दिया और न सिर्फ़ यह बल्कि उनको 'मसीह ज़लालत' कह कर उनकी हक़-व इर्शाद की दावत के दुश्मन और उनके खिलाफ़ साज़िशें करके उनकी जान को लग गए।

चारों इंजीलें

हज़रत मसीह पर जो इंजील नाज़िल हुई थी, उसके बारे में तमाम इल्म वालों का, जिनमें खुद नसारा भी शामिल हैं, इत्तिफ़ाक़ है कि उनमें से कोई एक भी हज़रत मसीह पर उतरी हुई इंजील नहीं है, बल्कि यूनानी और उनसे नक़ल किए गए दूसरी जुबानों के तर्जुमे हैं जो तब्दीली और घट-बढ़ का बराबर शिकार होते रहे हैं और सिर्फ़ यही नहीं कि ये चारों इंजीलें, इंजीले मसीह नहीं हैं, बल्कि किसी इल्मी, तारीख़ी और मज़हबी सनद से उनका मसीह के शागिदों का लिखा होना भी साबित नहीं है, बल्कि बाद के लिखने वालों की लिखी हुई हैं, अलबत्ता इन तर्जुमों में बाज़ नसीहतों और हिक्मत के मुक़ामों के सिलसिले में एक हिस्सा ऐसा ज़रूर है जो हज़रत मसीह ~~ﷺ~~ के इर्शाद से लिया गया है, इसलिए नक़ल में कहीं-कहीं असल की झलक नज़र आ जाती है।

(मौलाना हिफ्जुर्रहमान स्योहारवी ने मौजूदा इंजील के बारे में बहुत जोरदार तहकीक़ पेश की है, जिसका यह हासिल है। मोरस बकाई ने 'इंजील, साइंस और कुरआन' में भी इंजील से मुताल्लिक़ तहकीक़ी बातें की हैं, जिस पर तवज्जोह दी जानी चाहिए)

कुरआन और इंजील

कुरआन मजीद की बुनियादी तालिम यह है कि जिस तरह अल्लाह एक है, उसी तरह उसकी सच्चाई भी एक ही है और वह कभी किसी खास क्रौम, खास जमाअत और खास गिरोह की विरासत नहीं रही, बल्कि हर क्रौम और हर मुल्क में अल्लाह की रुशद व हिदायत का पैग़ाम, एक ही बुनियाद पर क़ायम रहते हुए उसके सच्चे पैग़म्बरों या उसके नायबों के जरिए हमेशा दुनिया के लिए सीधे रास्ते की दावत देने वाला और उस तरफ़ बुलाने वाला रहा है और उसी का नाम 'सीधा रास्ता' और 'इस्लाम' है और कुरआन इसी भूले हुए सबक़ को याद दिलाने आया है और यही वह आखिरी पैग़ाम है जिसने तमाम पुराने मज़हब की सच्चाइयों को अपने अन्दर समो कर पूरी ज़मीनी कायनात की हिदायत का बेड़ा उठाया है और अब इसलिए उसका इंकार गोया अल्लाह की तमाम सच्चाइयों का इंकार है। इसी बुनियादी तालीम के पेशेनज़र उसने हज़रत मसीह की शान की बड़ाई को सराहा, और यह माना कि बेशक़ इंजील इलहामी किताब और अल्लाह की किताब है, लेकिन साथ ही जगह-जगह दलीलों के साथ यह भी बतलाया कि अहले किताब उलेमा ने इसकी सच्ची तालीम को मिटा डाला, बदल डाला और हर क्रिस्म की तब्दीली करके इसकी तालीम को शिर्क व कुफ़र की तालीम बना दिया। लेकिन किसी किसी जगह पर अहले किताब को तौरात और इंजील के खिलाफ़ अमल पर मुलज़िम बनाते हुए मौजूदा तौरात व इंजील के हवाले भी देता है जिससे मालूम होता है कि कुरआन नाज़िल होते वक़्त असल नुस्खे भी, अगरचे बिगड़ी हुई शक्ल में ही क्यों न हो, पाए जाते थे, बहरहाल उस वक़्त भी ये दोनों किताबें लफ़्ज़ी और मानवी दोनों क्रिस्म की तहरीफ़ात से इतनी बिगड़ चुकी थीं कि वे मूसा की तौरात और ईसा की इंजील कहलाने की हक़दार नहीं रही

थीं। चुनांचे कुरआन ने असल किताबों की अज़मत और अहले किताब के हाथों उनकी तहरीफ़ और उनका बिगाडा जाना दोनों को खोल कर बयान किया है।

तर्जुमा—(ऐ मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम!) अल्लाह ने तुझपर किताब को उतारा हक़ के साथ, जो तस्दीक़ करने वाली है उन किताबों की जो उनके सामने हैं। और उतारा उसने तौरात और इंजील को (कुरआन से) पहले, जो हिदायत हैं लोगों के लिए और उतारा फ़ुरक़ान (हक़ व बातिल में फ़र्क़ करने वाली)’

(3-3, 4)

तर्जुमा—‘और सिखाता है वह किताब को, हिक्मत को, तौरात को, इंजील को।’

(3 : 48)

तर्जुमा—ऐ अहले किताब! तुम किस लिए इब्राहीम के बारे में झगड़ते हो और हाल यह है कि तौरात और इंजील का नुज़ूल नहीं हुआ, मगर इब्राहीम के बाद, पस क्या तुम इतना भी नहीं समझते?

(3 : 65)

तर्जुमा—और पीछे भेजा हमने ईसा बिन मरयम को, जो तस्दीक़ करनेवाला है उस किताब की जो सामने है तौरात और दी हमने उसको इंजील जिसमें हिदायत और नूर है और अपने से पहली किताब की तस्दीक़ करती है और पूरी तरह हिदायत और नसीहत है परहेज़गारों के लिए और चाहिए कि अहले इंजील उसके मुताबिक़ फ़ैसले दें जो हमने इंजील में उतार दिया और जो अल्लाह के उतारे हुए क़ानून के मुवाफ़िक़ फ़ैसला नहीं देता, पस यही लोग फ़ासिक़ हैं।’

(5 : 46-47)

तर्जुमा— और अगर वे तौरात व इंजील को क़ायम रखते, (घटा-बढ़ा कर उनको बिगाड़ न डालते) और उसको क़ायम रखते, जो उसकी जानिब उनके परवरदिगार की जानिब से उतारा हुआ है तो अलबत्ता वे (फ़ारिग़ुल बाली के साथ) खाते अपने ऊपर से और अपने नीचे से, कुछ उनमें बीच का रास्ता अपनाने वाले अच्छे लोग हैं और अक्सर उनके बद-अमल है।’ (5-66)

तर्जुमा—(ऐ मुहम्मद ﷺ!) कह दीजिए, ऐ अहले किताब! तुम्हारे लिए टिकने की कोई जगह नहीं है, जब तक तौरात और इंजील और उस चीज़ से जिसको तुम्हारे परवरदिगार ने तुम पर नाज़िल किया, क़ायम न करो (ताकि उसका नतीजा कुरआन की तस्दीक़ निकले)

तर्जुमा—‘और जब मैंने तुझको (ऐ ईसा!) सिखाई किताबे हिक्मत तौरात और इंजील।’

(5-110)

तर्जुमा—(भले लोग) वे शख्स हैं जो पैरवी करते हैं रसूल की जो नबी उम्मी है और जिसका जिक्र अपने पास तौरात और इंजील में लिखा पाते हैं।
(7 : 157)

तर्जुमा—बेशक अल्लाह ने खरीद लिया है मोमिनों से उनकी जानें और उनके मालों को इस बात पर कि उनके लिए जन्नत है, वे अल्लाह के रास्ते में जंग करते हैं, पस क़त्ल करते हैं और क़त्ल होते हैं, उनके लिए अल्लाह का वायदा सच्चा है जो तौरात और इंजील में किया गया है। (9 : 111)

गरज़ यह तारीफ़ व तौसीफ़ है उस तौरात और इंजील की जो तौराते मूसा' और 'इंजीले ईसा' कहलाने की हक़दार और हक़ीक़त में अल्लाह की किताब थीं, लेकिन यहूदियों और ईसाइयों ने इन इलहामी (आसमानी) किताबों के साथ क्या मामला किया, इसका हाल भी कुरआन ही की जुबान से सुनिए।

तर्जुमा—क्या तुम उम्मीद रखते हो कि वे तुम्हारी बात मान लेंगे, हालांकि उनमें एक गिरोह ऐसा था, जो अल्लाह का कलाम सुनता था, फिर उसको बदल डालता था बावजूद इस बात के कि वह उसके मतलब को समझता था और जान-बूझ कर घट-बढ़ करते थे। (2 : 75)

तर्जुमा—पस अफ़सोस उन (इल्म के दावेदारों) पर जिनका शेवा यह है कि खुद अपने हाथ से किताब लिखते हैं, फिर लोगों से कहते हैं, यह अल्लाह की तरफ़ से है और यह सब कुछ इसलिए करते हैं ताकि उसके मुआवज़े में एक हक़ीर-सी क़ीमत दुन्यवी फ़ायदे की हासिल करें। पस अफ़सोस उस पर जो कुछ वे लिखते हैं और अफ़सोस इस पर जो कुछ वे इसके ज़रिए से कमाते हैं। (2 : 78)

तर्जुमा—वे अहले किताब अल्लाह की किताब (तौरात और इंजील) के वाक़ियों को उनकी सही जगह से बदल डालते हैं, यानी लफ़्ज़ों में और उनके मानी में दोनों में तहरीफ़ यानी बिगाड़ पैदा करते हैं। (5 : 13)

इनके अलावा 'समने क़लील' (मामूली पूंजी) के बदले अल्लाह को बेच देने से मुताल्लिक तो वक्ररः, आले इमरान, निसा और तौबा में कई आयतें मौजूद हैं जिनका हासिल यह है कि यहूदी-ईसाई तौरात-इंजील को दोनों तरह बेचा करते थे, लफ़्ज़ों में बदलाव के ज़रिए भी और मानी में बदलाव के सिलसिले से भी, गोया सोने-चांदी के लालच में आम व खास की ख़्वाहिशों

के मुताबिक अल्लाह की किताब की आयतों में लफ्ज़ और मानी दोनों पहलुओं से बदलाव उनके बेच देने की हैसियत रखती है, जिससे बढ़कर शक्रावत और बदबख्ती का दूसरा कोई अमल नहीं और जो हर हाल में लानत के लायक है।

कुरआन और तस्लीस का अक़ीदा

कुरआन नाज़िल होने के वक़्त तमाम मसीही जिन बड़े फ़िरकों में तक्सीम थे सालूस के मुताल्लिक उनका अक़ीदा तीन अलग-अलग उसूलों पर टिका हुआ था, एक फ़िरका कहता था कि मसीह ही खुदा है और खुदा ही मसीह की शक़ल में दुनिया में उतर आया है और दूसरा फ़िरका कहता था कि मसीह इब्नुल्लाह (खुदा का बेटा) है और तीसरा कहता था कि एक का भेद तीन में छिपा हुआ है— बाप, बेटा, मरयम और इस जमाअत में भी दो गिरोह थे और दूसरा गिरोह हज़रत मरयम की जगह 'रूहुल-कुद्स' को 'अक्नूमे सालिस' कहता था, गरज़ वे हज़रत मसीह को 'सालिसे सलासा' (तीन का तीसरा) तस्लीम करते थे। इसलिए कुरआन की हक़ की सदा ने तीनों जमाअतों को अलग-अलग भी मुखातब किया है और एक साथ भी और दलीलों की रोशनी में मसीही दुनिया पर यह वाज़ेह किया है कि इस बार में हक़ का रास्ता एक और सिर्फ़ एक है और वह यह कि मसीह मरयम के पेट से पैदा हुए हैं और इंसान और खुदा के सच्चा पैग़म्बर और रसूल हैं। बाक़ी जो कुछ भी कहा जाता है, महज़ बातिल है, चाहे इसमें घटाया गया हो, जैसा कि यहूदियों 'का अक़ीदा है कि अल अयाज़ बिल्लाह (अल्लाह की पनाह) वह शोबदे बाज़ और झूठे थे या बढ़ाया गया हो जैसा कि ईसाइयों का अक़ीदा है कि वह खुदा है और खुदा के बेटे हैं या तीन में तीसरे हैं।

कुरआन ने सिर्फ़ यही नहीं कहा कि ईसाइयों के रह करने वाले पहलू को ही इस सिलसिले में वाज़ेह किया हो, बल्कि इसके अलावा हज़रत मसीह की बुलन्द शान की असल हक़ीक़त क्या है और अल्लाह के नज़दीक उनको क्या कुर्बत हासिल है, इस पर भी नुमायां रोशनी डाली है, ताकि इस तरह यहूदियों के अक़ीदे का भी खंडन हो जाए और इफ़रात व तफ़रीत से जुदा राहे हक़ सामने नज़र आने लगे।

हज़रत मसीह अल्लाह के करीबी और बरगज़ीदा रसूल हैं

तर्जुमा—मसीह ने कहा बेशक मैं अल्लाह का बन्दा हूँ और उसने मुझको नबी बनाया और मुझको मुबारक ठहराया, जहाँ भी मैं रहूँ और उसने मुझको नमाज़ की और ज़कात की वसीयत फ़रमाई, जब तक भी ज़िंदा रहूँ और उसने मुझे मेरी माँ के लिए नेक और भला बनाया और मुझको सख़्तगीर और बदबख़्त नहीं बनाया, मुझ पर सलामती हो, जब मैं पैदा हुआ, जब मैं मर जाऊँ और जब हश्श के लिए ज़िंदा उठाया जाऊँ। (18 : 30 : 32)

तर्जुमा—‘वह (मसीह) नहीं है, मगर ऐसा बन्दा, जिस पर हमने इनाम किया और हमने उसको मिसाल बनाया है बनी इसराईल के लिए और अगर हम चाहते तो कर देते हम तुम में से फ़रिश्ते ज़मीन में चलने-फिरने वाले और बेशक वह (मसीह) निशान है क़ियामत के लिए, पस इस बात पर तुम शक न करो और मेरी पैरवी करो, यही सीधा रास्ता है। (43 : 58-61)

तर्जुमा—‘और (वह वक़्त याद करो) जब ईसा बिन मरयम ने कहा, ऐ बनी इसराईल! बेशक मैं तुम्हारी तरफ़ अल्लाह का रसूल हूँ, तस्दीक़ करने वाला हूँ जो मेरे सामने है तौरात और खुशख़बरी देने वाला हूँ एक रसूल की, जो मेरे बाद आएगा, उसका नाम अहमद है।’ (61 : 6)

हज़रत मसीह न ख़ुदा हैं, न ख़ुदा के बेटे

तर्जुमा—‘बेशक उन लोगों ने कुफ़र अख़्तियार किया जिन्होंने यह कहा, बेशक अल्लाह वही मसीह इब्ने मरयम है। कह दीजिए कि अगर अल्लाह यह इरादा कर ले कि मसीह बिन मरयम, मरयम और ज़मीनी कायनात पर जो कुछ भी है, सबको हलाक कर डाले, तो कौन आदमी है जो अल्लाह से (उसके खिलाफ़) किसी चीज़ के मालिक होने का दावा कर सके और अल्लाह के लिए ही बादशाही है आसमानों की और ज़मीन की, वह जो चाहता है, उसको पैदा कर सकता है और अल्लाह हर चीज़ पर कुदरत रखने वाला है। (5 : 17)

तर्जुमा—बेशक उन लोगों ने कुफ़र किया, जिन्होंने कहा, बेशक अल्लाह वही मसीह बिन मरयम है, हालांकि मसीह ने यह कहा, ऐ बनी इसराईल! अल्लाह की इबादत करो, जो मेरा और तुम्हारा परवरदिगार है, बेशक जो अल्लाह के साथ शरीक ठहराता है, पस यक्कीनन अल्लाह ने उस पर जन्नत

को हराम कर दिया है और उसका ठिकाना जहन्नम है और ज़ालिमों के लिए कोई मददगार नहीं है। (5 : 72)

तर्जुमा—‘और उन्होंने कहा, अल्लाह ने ‘बेटा’ बना लिया है, वह तो इन बातों से پاک है, बल्कि (उसके खिलाफ़) अल्लाह के लिए ही है जो कुछ भी आसमानों और ज़मीन में है, हर चीज़ अल्लाह के लिए ताबेदार है।’

(2 : 116)

तर्जुमा—‘बेशक ईसा की मिसाल अल्लाह के नज़दीक आदम की-सी है कि उसको मिट्टी से पैदा किया, फिर उसको कहा, हो जा, तो वह हो गया।’

(3 : 59)

तर्जुमा—ऐ अहले किताब! अपने दीनी मसूअले में हद से न गुज़रो और अल्लाह के बारे में हक़ के अलावा कुछ न कहो, बेशक मसीह बिन मरयम अल्लाह के रसूल हैं और उसका कलिमा हैं जिसको उसने मरयम पर डाला (यानी बग़ैर बाप के उसके हुक्म से मरयम के पेट में वजूद मिला) और उसकी रूह हैं, पस अल्लाह पर और उसके रसूलों पर ईमान लाओ और तीनों (अक्रानीम) ने कहा, इससे बाज़ आ जाओ, तुम्हारे लिए बेहतर होगा। बेशक अल्लाह एक है पाक है इससे कि उसका बेटा हो। उसी के लिए है (बिला ग़ैर की शिक़त के) जो कुछ भी है आसमानों और ज़मीन में और काफ़ी है ‘अल्लाह वकील’ हो कर। (4 : 171)

तर्जुमा—‘वह (ख़ुदा) मूजिद (नए सिरे से बनाने वाला) है आसमानों और ज़मीन का, उसके लिए बेटा कैसे हो सकता है और न उसके बीवी है और उसने कायनात की हर चीज़ को पैदा किया है और वह हर चीज़ को जानने वाला है।’ (6 : 102)

तर्जुमा—‘मसीह बिन मरयम नहीं हैं मगर ख़ुदा के रसूल, बेशक उनसे पहले रसूल गुज़र चुके हैं और उनकी वालिदा सिद्दीक़ा हैं। ये दोनों खाना खाते थे। (यानी दूसरे इंसानों की तरह खाने-पीने वग़ैरह मामलों में भी वे मुहताज थे।) (5 : 75)

तर्जुमा—‘हरगिज़ मसीह इससे नागवारी नहीं अख़्तियार करेगा, कि वह अल्लाह का बन्दा कहलाए और न क़रीबी फ़रिश्ते, यहां तक कि रूहुल कुद्स

(जिब्रील) नाक भों चढ़ाएंगे और जो इबादत से नागवारी ज़ाहिर करे और घमंड करे, तो करीब है कि अल्लाह तआला उन सबको अपनी तरफ़ इकट्ठा करेगा यानी जज़ा व सज़ा के दिन सब हक़ीक़ते हाल खुल जाएगी।' (4 : 172)

तर्जुमा— 'और यहूदी कहते हैं कि उज़ैर खुदा का बेटा है और ईसाई कहते हैं कि मसीह खुदा का बेटा है। ये उनके मुंह की बातें हैं, रेस करने लगे अगले काफ़िरों की बात की, अल्लाह उनको हलाक करे, कहां से फिरे जाते हैं।' (9 : 30)

तर्जुमा— (ऐ मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम!) कह दीजिए, अल्लाह एक है, अल्लाह बेनियाज़ हस्ती है, न किसी का बाप है और न किसी का बेटा और कायनात में कोई उस जैसा नहीं है। (112 : 1-3)

कुरआन ने इस सिलसिले में अपनी सच्चाई और अक़ीदे और अमल की इस्लाह का जो दलीलों के साथ वाज़ेह एलान किया, उसके पढ़ने के साथ-साथ यह बात भी तक्ज़ोह के काबिल है कि मौजूदा किताब मुक़द्दस इंजील में मिलावट पैदा करने और बिगाड़ने के बावजूद जिस शक्ल व सूरत में आज मौजूद है, वह किसी एक जगह पर भी सालूस (Trinity) के इस अक़ीदे का पता नहीं देती, इसलिए तसलीस के अक़ीदे में ईसाइयों के लिए मौजूदा किताबे मुक़द्दस से भी कोई हुज्जत व दलील नहीं मिलती और इसलिए बग़ैर किसी शक व शुबहे के यह कहना हक़ है कि तसलीस का यह अक़ीदा बुतपरस्ती वाले अक़ीदों की मिलावट का नतीजा है।

कफ़ारा

मौजूदा मसीहियत (ईसाई धर्म) का दूसरा अक़ीदा, जिसने मसीही दीन की हक़ीक़त को बर्बाद कर डाला, 'कफ़ारे' का अक़ीदा है। इसकी बुनियाद इस कल्पना पर रखी गई है कि तमाम कायनात (जिसमें नेक लोग और नबी और रसूल सभी शामिल हैं) शुरू ही से गुनाहगार है। आख़िर अल्लाह की रहमत को जोश आया और उसकी मशीयत ने इरादा किया कि बेटे को दुनिया की कायनात में भेजे और वह सूली पर चढ़ा हुआ होकर पहले और आख़िरी तमाम कायनात के गुनाहों का कफ़ारा हो जाए और इस तरह दुनिया को

क़ससुल अंबिया

नजात और मुक्ति हासिल हो सके लेकिन इस अक़ीदे को जोरदार बनाने के लिए कुछ ज़रूरी हिस्सों की ज़रूरत थी, जिनके बग़ैर यह इमारत नहीं खड़ी की जा सकती थी, इसलिए रसूल के ज़माने में सबसे पहले मसीही दीन ने यहूदी दीन के इस अक़ीदे को मान लिया कि उनको फांसी के तख़्ते पर भी चढ़ाया गया और मार भी डाला गया और इसको मान लेने के बाद दूसरा क़दम यह उठाया कि 'अल्लाह की सिफ़त रखने के बावजूद' मसीह का फांसी पाना और क़त्ल होना अपने लिए नहीं, बल्कि कायनात की निजात के लिए था। चुनांचे जब उस पर यह हादसा गुज़र गया तो उसने फिर 'अल्लाह होने' की चादर ओढ़ ली और आलमे लाहूत में बाप और बेटे के दर्मियान दोबारा लाहूती रिश्ता क़ायम हो गया।

पस जब मज़हब में एक अल्लाह के साथ सही अक़ीदा और नेक अमली गुम हो जाए और निजात का दारोमदार अमल व किरदार के बजाए 'कफ़ारे' पर क़ायम हो जाए, उसका नतीजा मालूम?

कुरआन ने इसी तरह जगह-जगह यह वाज़ेह किया है कि नजात के लिए अक़ीदे का सही होना यानी सही खुदापरस्ती और नेक अमली के अलावा कोई दूसरा रास्ता नहीं है और जो आदमी भी इस 'सीधे रास्ते' को तर्क करके 'खुशगुमानी' और वहम व गुमान को आदर्श बनाएगा और नेक अमली और सही खुदा परस्ती पर न चलेगा, बिला शुबहा गुमराह है और सीधे रास्ते से पूरी तरह महरूम।

तर्जुमा—जो लोग अपने को मोमिन कहते हैं और जो यहूदी हैं और जो ईसाई हैं और जो साबी हैं, उनमें से जो भी अल्लाह पर और आख़िरत के दिन पर ईमान ले आया और उसने नेक अमल किए, तो यही वे लोग हैं, जिनका बदला उनके परवरदिगार के पास है, न उन पर डर छायेगा और न वे गुमगीन होंगे।

(2 : 62)

यानी कुरआन की धर्मों और मिल्लतों में सुधार लाने की दावत का मक़सद यह नहीं है कि यहूदी, ईसाई और साबी गिरोहों की तरह एक नया गिरोह 'मोमिन' के नाम से इस तरह इज़ाफ़ा कर दे कि गोया वह भी एक क़ौमी, नस्ली या मुल्की गिरोहबन्दी है, चाहे उसकी खुदापरस्ती की ज़िंदगी

और अमल की जिंदगी कितनी ही ग़लत और बर्बाद हो या सिरे से ग़ायब हो, मगर उस गिरोहबन्दी का आदमी होने की वजह से ज़रूर कामियाब और खुदा की जन्नत व रिज़ा का हक़दार है, कुरआन का मक़सद हरगिज़ यह नहीं है, बल्कि वह यह ऐलान करने आया है कि उसकी सच्ची दावत से पहले कोई आदमी किसी भी गिरोह और मज़हबी जमाअत से ताल्लुक़ रखता हो, अगर उसने (कुरआन की सच्ची तालीम) के मुताबिक़ खुदापरस्ती और नेक अमली को अख़्तियार कर लिया है, तो बेशक वह नजात पाया हुआ और कामियाब है, वरना तो वह ग़ैर मुसलमान घर में पैदा हुआ, पला और बढ़ा और उसी सोसाइटी में जिंदगी गुज़ार कर मर गया, मगर कुरआन की सच्ची दावत के मुताबिक़ खुदापरस्ती और नेक अमली दोनों से महरूम रहा या मुख़ालिफ़ (विरोधी), तो उसको न कामियाबी है, न फ़लाह, बाक़ी रहा मसीही धर्म के कफ़़ारे का ख़ास मसूअला, तो कुरआन ने उसे ग़लत क्रार देने के लिए यह रास्ता अपनाया कि जिन बुनियादों पर उसको क़ायम किया गया था, उसकी जड़ ही काट दी।

तवज्जोह करने की बात

यह बात कभी नहीं भूली जानी चाहिए कि पिछले धर्मों और क़ौमों के बिगड़ने और घटने-बढ़ने से घट-बढ़ करने वालों को बहुत ज़्यादा मदद मिली कि बुनियादी अक़ीदों में खुले लफ़्ज़ों के इस्तेमाल के बजाए वक़्त के ताबीर करने वालों, तफ़्सीर लिखने वालों और तर्जुमानी करने वालों ने इशारों, इस्तिज़ारों और तश्बीहों से बहुत ज़्यादा काम लिया। इन ताबीरों का नतीजा यह निकला कि जब हक़ मज़हबों का मूर्ति पूजकों और फ़लसफ़ियों से वास्ता पड़ा और उन्होंने किसी न किसी तरह इस दीने हक़ को कुबूल कर लिया, तो अपने फ़लसफ़ियाना और मुशिरकाना अफ़कार व ख़्यालात के लिए उन्हीं इस्तिज़ारों और तश्बीहों को सहारा बनाया और धीरे-धीरे मिल्लते हक़ीक़ी की सूरत बदल कर उसको माजूने मुरक्कब बना डाला। इसी हक़ीक़त को देखते हुए कुरआन ने क़ूद बारी, तौहीद, रिसालत, इलहामी किताबें, अल्लाह के फ़रिश्ते, गरज़ बुनियादी अक़ीदों में दोहरे लफ़्ज़, पेचदार तश्बीह और तौहीद

में खलल डालने वाले इशारों-कनायों के बजाए खुले-साफ़ लफ्जों को अपनाया है, ताकि किसी खुदा के न मानने वाले और मुशिरक फ़लसफ़ी को ख़ालिस तौहीद में शिरक और अटकलों की नई-नई बातों का मौक़ा हाथ न आने पाए और अगर कोई आदमी इसके बाद भी बेजा हिम्मत करे तो खुद कुरआन की खुली आयतें ही उनके इलहाद के टुकड़े-टुकड़े कर दें।

नोट : मुरत्तिब की तरफ़ से हज़रत मरयम, हज़रत ईसा की पैदाइश, ज़िंदगी और मोज़े वग़ैरह से मुताल्लिक कई मसले बहस में आ गए हैं। हज़रत मौलाना स्योहारवी ने तमाम मसलों पर खुलकर बातें की हैं, लेकिन इन बहसों का खुलासा मुम्किन नहीं है, इसलिए मजबूरी में उन्हें छोड़ा जा रहा है, जो पाठक ख़्याल महसूस करें उनसे दरख़्वास्त है कि वे असल किताब से रुजू फ़रमावें।

हज़रत मुहम्मद ﷺ

हज़रत मुहम्मद और कुरआन मजीद

कुरआन कलामे इलाही है और अख़िरी नबी हज़रत मुहम्मद सल्ल० पर उतरा है। कुरआन इल्म व यक़ीन की रोशनी है और ज़ाते अक़दस उनका अमली नमूना, आदर्श और नक़्शा हैं—

‘ल-क़द का-न लकुम फ़ी रसूलिल्लाहि उस्तुन ह-स-ना’

कुरआन रुशद व हिदायत और मुहम्मद ﷺ राशिद व हादी, कुरआन हक़ व सदाक़त के लिए दावत व पैग़ाम है और नबी अकरम उसकी दावत देने वाले और पैग़म्बर हैं, इसलिए कुरआन का हर एक जुम्ला और उसकी एक-एक आयत किसी-न-किसी हैसियत में ज़ाते कुदसी सिफ़ात (अल्लाह) से ताल्लुक रखती है, तो अब किस तरह यह कहा जाए कि कुरआन में इतनी जगह उसकी मुक़द्दस हस्ती का ज़िक्र है।

एक बार हज़रत आइशा रज़ि० से कुछ सहाबा ने अज़र्ज किया कि आप नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ज़िंदगी के कुछ हालात हमें

सुनाएं। हज़रत आइशा सिदीका रज़ि० ने ताज्जुब के साथ मालूम किया, क्या तुम कुरआन नहीं पढ़ते जो मुझसे नबी ﷺ के अख़्लाक के बारे में सवाल करते हो? बेशक उनका अख़्लाक तो कुरआन ही था। आपकी तमाम अख़्लाकी ज़िंदगी कुरआन के सांचे में ढली हुई थी। कुरआन जो कुछ कहता है, मुहम्मद ﷺ ने उसी को कर दिखाया। पस कुरआन के किसी हिस्से को सामने लाना गोया हयाते तैयबा को सामने लाना है।

अलबत्ता कुरआन ने जिन आयतों में आप के मुबारक नाम या बुलन्द औसाफ़ का ख़ास तौर पर ज़िक्र किया, 'ऐ नबी' या 'ऐ रसूल' कह कर मुखातब किया, उसकी तफ़्सील नीचे के नक्शे से ज़ाहिर होती है। इस नक्शे में जो जम्हूर के नज़दीक मानी हुई बातें हैं, (नबी और रसूल के अलावा जिन नामों और सिफ़तों की तफ़्सील चाहिए थीं) वे यह हैं—

1. मुहम्मद, 2. अहमद, 3. अब्दुल्लाह, 4. शाहिद, 5. बशीर, 6. नज़ीर, 7. मुबशिश, 8. मुज्जविकर, 9. अज़ीज़, 10. रऊफ़, 11. रहीम, 12. अमीन, 13. मुज्जम्मिल, 14. मुदस्सिर, 15. मुन्ज़िर, 16. हादी, 17. यासीन, 18. रहमत, 19. नेमत, 20. ता-हा, 21. नूर, 22. हक्र, 23. सिराजे मुनीर, 24. शहीद, 25. दाई इलल्लाहि (अल्लाह की तरफ़ दावत देने वाला), 26. खातूमन्नबीयीन, 27. नबी, 28. रसूल, 29. अब्दुहू

कुरआन और सहीह हदीसों में नबी अकरम ﷺ के नामों और सिफ़तों का ज़िक्र है, इस्लामी उलेमा ने उस पर मुस्तक़िल किताबें लिखी हैं। मशहूर मुहदिस अबूबक्र बिन अरबी ने शरहे तिमिज़ी में उनकी गिनती चौंसठ बताई है, कुछ ने निन्नानवे और कुछ इल्म वालों ने उसको एक हज़ार तक पहुंचाया है।

(फ़तुलबारी)

बुख़ारी शरीफ़ की एक मरफूअ हदीस में है कि आपने इर्शाद फ़रमाया, मेरे पांच नाम हैं—

1. मुहम्मद हूं, 2. अहमद हूं, 3. माही यानी कुफ़ व शिर्क को मिटाने वाला हूं, 4. हाशिर हूं, इसलिए कि क़ियामत के दिन तमाम कायनात से पहले अल्लाह के दरबार में हाज़िर हूंगा, और 5. आक्रिब हूं (इमाम ज़ोहरी के क़ौल

के मुताबिक़ आख़िरी पैग़म्बर हूँ।)

हाफ़िज़ इब्ने हज़र अस्क़लानी रह० के मुताबिक़ इस्लाम के उलेमा का ज़िन पर इत्तिफ़ाक़ है यानी क़ुरआन में आपके ज़िन नामों और सिफ़तों का ज़िक़्र किया गया है, वे यह हैं—

1. अश-शाहिद, 2. अल-बशीर, 3. अन-नज़ीर, 4. अल-मुबीन, 5. अदाई इलल्लाहि, 6. अस्सिराजुल मुनीर, 7. अल मुज्ज़क्किर, 8. अर-रहमत, 9. अन-नेमत, 10. अल-हादी, 11. अश-शहीद, 12. अल-अमीन, 13. अल-मुज्ज़म्मिल, 14. अल मुद्दस्सिर और हदीसों में ज़िक़्र किए गए आपके नामों और सिफ़तों में नीचे लिखी सिफ़तें ज़्यादा मशहूर हैं—

1. अल-मुतवक्किल, 2. अल-मुख्तार, 3. अल-मुस्तफ़ा, 4. अश-शफ़ीउल मुशफ़िफ़ा 5. अस्सादिकुल मसदूक़।

बहरहाल मुहम्मद और अहमद दो अस्मा (नाम) हैं और बाक़ी अस्मा-सिफ़ात व अलक़ाब और क़ुरआन में आपके पाक नाम से जुड़े हुए एक सूरः का नाम सूरः मुहम्मद है, जिसके शुरू ही में आपके इस्मे गिरामी का ज़िक़्र है—

व आमिनू बिमा नुज्ज़िल अला मुहम्मदिं-वहुवल हक़कु मिर्बिहिम, और सिर्फ़ एक जगह सूरः सफ़़ में अहमद नक़ल किया गया है। यानी हज़रत मसीह ﷺ की इस बशारत के तज़्क़रे में यह नाम आया है जो आपके आने से मुताल्लिक़ उन्होंने बनी इसराईल को सुनाई थी—

‘व मुबशिशरम बिरसूलिंय्याती मिम-बादी इस्मुहू अहमद’

यह हक़ीक़त भुलाने लायक़ नहीं है कि आपके नाम और सिफ़तें सिर्फ़ रस्मी नहीं हैं, कि मां-बाप ने जो चाहा, नाम रख दिया, दोस्तों और साथियों ने जिस सिफ़त व लक़ब से चाहा, पुकार लिया, बल्कि उन नामों और सिफ़तों का आपकी ज़िंदगी और आपके अख़्लाक़ व अ़ामाल के साथ बहुत गहरा ताल्लुक़ है, जैसा कि अभी माही, हाशिर और अ़ाकिब के बारे में खुद तर्जुमाने वह्य की जुवान से सुन चुके हो या जैसे मुहम्मद उस हस्ती को कहते हैं जिसके तज़्क़रे हमेशा ख़ूबी और नेकी के साथ होते हों, ये पिछले नबियों की बशारतें और मुस्तद्बिल में ज़िंदगी के तज़्क़रों की तरफ़ इशारा है और अहमद

उसे कहते हैं जो सबसे ज्यादा अल्लाह की हम्द (गुण-गान) करता हो। यह मुबारक ज़ात की कामिल बन्दगी और कामिल इंसान होने को ज़ाहिर करता है। बेशक आप खुदापरस्त इंसानों के लिए खुशखबरी सुनाने वाले और डराने वाले, और फ़िल्ना पैदा करने वाले फ़सादियों, काफ़िरों और मुशिरकों के लिए मुज़िर व नज़ीर (सज़ा से डराने वाले) हैं। क्रियामत के दिन, सच्चे और झूठे दोनों पर शाहिद हैं, हक़ के लिए खुली आंख वाले और हक़ के लिए कान खुले रखने वालों के लिए याददेहानी कराने वाले हैं। राहे हक़ से हटे हुए के लिए हादी (हिदायत का रास्ता बताने वाले) और खुदा से भागे हुआओं के लिए पुकारने वाले हैं। उनका वजूद रहमत है कायनाते आलम के लिए और उनकी हस्ती कायनात के निज़ाम के लिए नज़्मा है। जेहल्ल व शिर्क के लिए नूर हैं और अल्लाह के पैग़ाम के लिए नबी व रसूल, मुसीबतों और परेशानियों में अज़ीज़ हैं और इंसानों की ज़िंदगी के हर हिस्से के लिए रऊफ़ व रहीम, उनकी आवाज़ हक़ की आवाज़ है और उनकी ज़ात सच्ची और अमानतदार, कुरआन खुदा का आखिरी पैग़ाम है, इसलिए वह आखिरी नबी हैं, उनका भेजा जाना पूरी दुनिया के लिए है, इसलिए ताहा व यासीन हैं और नुबूवत के आसमान के चमकते सूरज हैं और रिसालत की कायनात के बशीर (बशारत देने वाले) व नज़ीर (डराने वाले), दीन व मिल्लत की सुलतानी के बावजूद ग़दाए कमलीपोश हैं, इसलिए मुज़्ज़म्मिल हैं और मुद्दस्सिर, फिर कमाल यह कहना कि 'मैं तो इंसान हूँ, अल्लाहुम-म सल्ले व सल्लिम व बारिक अलैहि, खुदा पर तवक्कुल उसकी बहुत बड़ी सिफ़त और वह खुदा का बरगज़ीदा और मुख्तार है, अल्लाह के दरबार में अबरार व मुक़र्रिबों से भी ज़्यादा मुस्तफ़ा, मुज्ताबा, नेकी करने वालों और सालेहीन के लिए अश-शफ़ीअ व मुशफ़फ़अ और ज़िंदगी के हर शोबे में अस्सादिक़ व मस्टूक़ है। सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लाम

नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की बशारतें (ख़ुशख़बरियां)

मौलाना ख़ाजा अलताफ़ हुसैन हालीने 'मुसद्दस मद्द व जज़रे इस्लाम' में एक जामे (काव्य) बन्द में तमाम बशारतों की तरफ़ जवज्जोह दिलाई है—

यकायक हुई ग़ैरते हक़ को हरकत
बढ़ा जानिबे बूक़बीस अबरे रहमत
अदा ख़ाके बत्हा ने की वह वदीअत
चले आते थे जिसकी देने शहादत,
हुई पहलू-ए-आमना से हुवेदा
दुआ-ए-ख़लील और नवेदे मसीहा।

‘चले आते थे जिसकी देने ‘शहादत’ की मुम्मल तफ़्सील के लिए हज़रत मौलाना हिफ़ज़ुर्रहमान स्योहारवी रह० ने तौरात व इंजील से लम्बे टुकड़े और कुरआन पाक से उसका खुले तौर पर मिलना पेश किया है, जिसका ख़ुलासा करना मुश्किल है, इसलिए इस बन्द के सिर्फ़ आखिरी शेर की तफ़्सील पेश की जाती है।’ (मुरत्तिब)

एक बार खुद नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इन्हीं बशारतों की तरफ़ इशारा करते हुए फ़रमाया—

(यानी) मैं अपने बाप इब्राहीम की दुआ हूँ और ईसा मसीह की बशारत हूँ (यानी) ख़लील की दुआ और मसीह का नवेद।’

कुरआन मजीद ने इब्राहीम की दुआ का ज़िक्र इस तरह किया है—

तर्जुमा—‘ऐ हमारे परवरदिगार! इन (अरबों) ही में एक रसूल भेज जो इन पर तेरी आयतें पढ़े और इनको किताब व हिक्मत सिखाए और इनको (हर क्रिस्म की बुराइयों से) पाक करे। बेशक तू ग़ालिब और हिक्मत वाला है।’

(2 : 129)

और मसीह की बशारत का ज़िक्र सूरः सफ़्फ़ में इस तरह नक़ल किया गया है—

तर्जुमा— 'और (वह वक्त जिक्र के काबिल है) जब ईसा बिन मरयम ने कहा, 'ऐ बनी इसराईल! मैं तुम्हारी तरफ़ अल्लाह का रसूल हूँ। तस्दीक़ करने वाला हूँ तौरेत की, जो मेरे सामने मौजूद है और बशारत देने वाला हूँ एक रसूल की जो मेरे बाद आएगा और उसका नाम अहमद (फ़ारक़लीत) होगा, पस जब उनके पास वह (खुदा का पैग़म्बर) दलीलें लेकर आया, तो वे कहने लगे, यह तो खुला जादू है।' (61 : 6)

इन दुआओं के नतीजे में सआदत की जो सुबह आई, उसके लिए मुरत्तिब (संग्रहकर्ता) की ओर से जौक़ वालों के लिए सीरतुन्नबी भाग-1 से एक ईमान बढ़ाने वाले हिस्से को बढ़ाकर पेश किया जाता है।

जुहरे कुदसी

दुनिया के चमन में रूह परवर बहारें आ चुकी हैं। चखें नादराकारने कभी-कभी बज़्मे आलम को इस सर व सामान से सजाया कि निगाहें खीरा होकर रह गई।

लेकिन आज की तारीख़ वह तारीख़ है, जिसके इन्तिज़ार में पीरे कुहन साल दह ने करोड़ों वर्ष लगा दिए। सय्यारगाने फ़लक इसी दिन के शौक़ में अज़ल से चश्म बराह थे, चखें कुहन मुदत हाए दराज़ से उसी सुबहे जाँ-नवाज़ के लिए लैल व नहार की करवटें बदल रहा था। कारकुनाने क़ज़ा व क़द्र की बज़्म आराइयां, अनातिर की जिदत तराज़ियां, माह व खुर्शीद की फ़रोग अंगेज़ियां, अब्र व वाद की तरदस्तियां, आलमे कुदसी के अनफ़ासे पाक, तौहीदे इब्राहीम, जमाले यूसुफ़ मोज़ज़ तराज़ी मूसा, जाँनवाज़ी मसीह, सब इसी लिए था कि यह कीमती मताए शंहशाहे क़ौनैन (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के दरबार में काम आएंगे।

आज की सुबह वही सुबहे जानवाज़, वही साअते हुमायूं, वही दौरे फ़रुख़ फ़ाल है।

अरबाबे सियर अपने महदूद पैराए बयान में लिखते हैं कि, 'आज की रात ऐवाने किसरा के चौदह कंगूरे गिर गए, आतशकदा फ़ारस बुझ गया, दरिया-ए-सादा खुश्क हो गया,' लेकिन सच यह है कि ऐवाने किसरा नहीं,

बल्कि शाने अजम, शौकते रूम, औजे चीन के क्रस हाए फ़लक बोस गिर पड़े, आतशे फ़ारस नहीं, बल्कि जहीमे शर, आतशक्दा-ए कुफ़र, आजर कदा-ए-गुमराही सर्द होकर रह गए, सनम ख़ानों में ख़ाक उड़ने लगी, बुतकदे ख़ाक में मिल गए, मजूसियत का शीराज़ा बिखर गया, नसरानियत के औराक़े ख़जांदीदा एक-एक करके झड़ गए।

तौहीद का ग़लग़ला उठा, चमनिस्ताने सआदत में बहार आ गई, आफ़ताबे हिदायत की शुआएं हर-हर तरफ़ फैल गईं। अख़्लाके इंसानी का आईना परतवे कुदस से चमक उठा—

यानी अब्दुल्लाह का यतीम, आमना का जिगर गोशा, शाहे हरम, हुक्मराने अरब, फ़रमांवाए आलम, शाहंशाहे कौनैन—

शम्सा न मस्नदे हफ़त अख़तरां
खात्मे रुसुल खातमे पैग़म्बरां,
अहमदे मुरसल कि खिरद ख़ाक ओस्त
हर दो जहां बस्ता-ए-फ़तराक ओस्त
उम्मी व गोया बज़ुबाने फ़सीह
अज़ अलिफ़ आदम व मीमे मसीह,
रस्मे तुरंज अस्त कि दर रोज़गार
पेश व हद मेवा पस आरद बहार

आलमे कुदस से आलमे इम्कान में तशरीफ़ फ़रमा-ए-इज़्ज़त व इज्जाल हुआ।

मुबारक सुबह

दीनों और मिल्लतों की तारीख़ गवाह है कि हज़रत ईसा عليه السلام के ज़ाहिर होने पर लगभग छह सदियां बीत चुकी हैं और दुनिया खुदा के पैग़म्बरों की मारफ़त हासिल की हुई हक़ की सच्चाई को भुला चुकी है, तमाम इंसानी दुनिया खुदापरस्ती के बजाए मज़ाहिर परस्ती में पड़ी हुई है और हर मुल्क में इंसान से लेकर पेड़-पौधों तक की परस्तिश फ़ख़ करने की चीज़ बनी हुई है। कोई इंसान को अवतार (खुदा) कह रहा है, तो कोई खुदा का बेटा। एक

मादापरस्त है तो दूसरा खुद अपनी आत्मा को ही खुदा समझ रहा है। सूरज की पूजा है, चांद और तारों की पूजा है, जानवरों, पेड़ों और पत्थरों की इबादत है, आग, पानी, हवा, मिट्टी के सामने खड़े होकर मांगा जा रहा है। गरज कायनात की हर चीज़ पूजा के लायक है और नहीं है तो ज़ाते वाहिद पूजा के काबिल नहीं है और न उसके एक होने का ख़्याल ही ख़ालिस है और न उसके हर चीज़ से बेनियाज़ होने का। उसको अगर माना जाना भी है तो दूसरों की इबादत और परस्तिश के ज़रिए। वह अगर पैदा करने वाला है तो दूसरों के वास्ते और ज़रूरत के साथ मादा, रूह और तर्कीब, सब ही बातों का मुहताज है। वह अगर तमाम चीज़ों का मालिक है भी तो इंसान, जानवर, पेड़, पत्थर के बलवूते पर, गरज सारी दुनिया में असल कारफ़रमाई मज़ाहिर (ज़ाहिरी चीज़ों) की थी और 'हक़ की ज़ात' सिर्फ़ नाम के लिए। हक़ीक़त से आंखें चुराई जा रही थीं, मगर मजाज़ के साथ। इश्क़ का जौक ज़ाते हक़ से वाद में था, मगर मज़ाहिर से क़ुरबत हक़ की सआदत का सरमाए से बंगानापन था, मगर मख़्लूक की इबादत का आम चलन था और हर तरफ़, 'हम उनका नहीं पूजते, मगर इसलिए ताकि वे खुदा की तरफ़ हमारी कुर्बत का ज़रिया बन जाएं' (38 : 3) का मज़ाहरा नज़र आता था।

यही वह तारीक़ दौर था, जिसमें 'अल्लाह की सुन्नत' यानी खुदा की हिदायत व ज़लालत के क़ानून ने माज़ी की तारीख़ को फिर दोहराया और हक़ की ग़ैरत ने फ़ितरत के रहे अमल (Reaction) के क़ानून को हरकत दी, यानी हिदायत का सूरज सआदत वाले बुर्ज से निकला और चारों तरफ़ छाई हुई शिर्क व जिहालत और रस्म व रिवाज की अंधेरियों को फ़ना करके दुनिया को डल्म व यक़ीन की रोशनी से जगमगा दिया।

रबीउलअव्वल, मुताबिक़ 20 अप्रैल 571 ई० सुबह, वह सुबहे सआदत थी जब तहज़ीब व तमदुन से महरूम बिन खेती की सरज़मीन मक्का के एक मुअज़्ज़ज़ क़बीले ने कु़ैश (बनी हाशिम) में अब्दुल्लाह बिन अब्दुल मुत्तलिब के यहां यानी आमना बिनत वहव के यहां आफ़तावे रिसालत मुहम्मद (ﷺ) पैदा हुए।

ॐ अल्लाह! वह सुबह कितनी सआदतों वाली थी जिसने कायनात को

रुश्द व हिदायत के निकलने की जानदार ख़बर सुनाई और वह घड़ी कितनी मुबारक थी जो दुनिया के लिए खुशख़बरी का पैग़ाम लाई। दुनिया का ज़रा-ज़रा जुबाने हाल से वे नग्मे गा रहा था कि वक़्त आ पहुंचा कि अब दुनिया से बदबख़्ती दूर हो और खुशबख़्ती से दुनिया भर जाए, शिर्क व कुफ़र का परदा चाक हो और हिदायत का सूरज रोशन हो और चमके, मज़ाहिर परस्ती बातिल ठहरे और एक खुदा की तौहीद ज़िंदगी का मक़सद करार पाए।

दुनिया तो क्या, मुल्क, क़बीला और ख़ानदान को भी यह इल्म न था कि दुनिया के तमाम धर्म, जिस सूरज के निकलने के इतिज़ार में हैं, वे इस ग़ैर मुहज़ज़ब सरज़मीन और अब्दुल मुत्तलिब के घराने से निकलेगा कि उसकी पैदाइश को ख़ास अहमियत देते और विलादत की तारीख़ को अपने सीने में महफ़ूज़ रखते, मगर जिस पैदा करने वाले ने उसको मुक़द्दस हस्ती बनाने का फैसला किया, उसी ने इसे एक मोज़ज़ा और तारीख़ी निशान भी ज़ाहिर कर दिया और वह हाथी वालों का वाक़िया था।

एतबार करने लायक़ और मुस्तनद रिवायतें गवाह हैं कि नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की विलादत इस वाक़िए के कुछ महीने बाद हुई।

इस वाक़िए में जो ख़ास बातें पाई जाती हैं, उन्हें देखते हुए यह अरब के लिए आमतौर से और हिजाज़ियों के लिए ख़ासतौर से बड़ा अजीब और हैरत में डालने वाला वाक़िया था और इसलिए वे कभी उसको भुला नहीं सकते थे, इसलिए उन्होंने उनका नाम ही अ़मुलफ़ील (हाथियों वाला साल) रख दिया। मगर वे यह न समझ सके थे कि असल में यह वाक़िया एक (निशान) है उस जलीलुल क़द्र हस्ती के ज़ाहिर होने का जो एक दिन तमाम दुनिया को तौहीद के मर्कज़ और इब्राहीमी क़िब्ले पर जमा कर देगी और इसको ग़ैरल्लाह (बुतों) की गन्दगियों से पाक करके तौहीद के नग्मों के लिए ख़ास कराएगी, क्योंकि यही वह पहली जगह है जो सिर्फ़ एक अल्लाह की परस्तिश के लिए बनाया गया। यह मन्दिर नहीं था कि मूर्ति की पूजा की जाए, यह गिरजा और कलीसा भी न था कि यसूअ़ मसीह और कुंवारी मरयम की मूर्तियों के सामने सर झुकाया जाए न यह आग का भंडारा था कि आग के नूर का मज़हर करार देकर उसकी पूजा की जाए और न यहूदियों का वज़ीफ़ा था कि हज़रत उज़ैर

रुश्द व हिदायत के निकलने की जानदार खबर सुनाई और वह घड़ी कितनी मुबारक थी जो दुनिया के लिए खुशखबरी का पैगाम लाई। दुनिया का जर्जर-जर्जर जुबाने हाल से वे नग्मे गा रहा था कि वक्त आ पहुंचा कि अब दुनिया से बदबख्ती दूर हो और खुशबख्ती से दुनिया भर जाए, शिर्क व कुफ्र का परदा चाक हो और हिदायत का सूरज रोशन हो और चमके, मज़ाहिर परस्ती बातिल ठहरे और एक खुदा की तौहीद जिंदगी का मक्सद करार पाए।

दुनिया तो क्या, मुल्क, कबीला और खानदान को भी यह इल्म न था कि दुनिया के तमाम धर्म, जिस सूरज के निकलने के इतिजार में हैं, वे इस ग़ैर मुहज्ज़ब सरज़मीन और अब्दुल मुत्तलिब के घराने से निकलेगा कि उसकी पैदाइश को खास अहमियत देते और विलादत की तारीख़ को अपने सीने में महफ़ूज़ रखते, मगर जिस पैदा करने वाले ने उसको मुक़द्दस हस्ती बनाने का फ़ैसला किया, उसी ने इसे एक मोज़ज़ा और तारीख़ी निशान भी ज़ाहिर कर दिया और वह हाथी वालों का वाक़िया था।

एतबार करने लायक और मुस्तनद रिवायतें गवाह हैं कि नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की विलादत इस वाक़िए के कुछ महीने बाद हुई।

इस वाक़िए में जो खास बातें पाई जाती हैं, उन्हें देखते हुए यह अरब के लिए आमतौर से और हिजाज़ियों के लिए खासतौर से बड़ा अजीब और हैरत में डालने वाला वाक़िया था और इसलिए वे कभी उसको भुला नहीं सकते थे, इसलिए उन्होंने उनका नाम ही अमूलफ़ील (हाथियों वाला साल) रख दिया। मगर वे यह न समझ सके थे कि असल में यह वाक़िया एक (निशान) है उस जलीलुल क़द्र हस्ती के ज़ाहिर होने का जो एक दिन तमाम दुनिया को तौहीद के मर्कज़ और इब्राहीमी क़िब्ले पर जमा कर देगी और इसको ग़ैरल्लाह (बुतों) की गन्दगियों से पाक करके तौहीद के नग्मों के लिए खास कराएगी, क्योंकि यही वह पहली जगह है जो सिर्फ़ एक अल्लाह की परस्तिश के लिए बनाया गया। यह मन्दिर नहीं था कि मूर्ति की पूजा की जाए, यह गिरजा और कलीसा भी न था कि यसूअ् मसीह और कुंवारी मरयम की मूर्तियों के सामने सर झुकाया जाए न यह आग का भंडारा था कि आग के नूर का मज़हर करार देकर उसकी पूजा की जाए और न यहूदियों का वज़ीफ़ा था कि हज़रत उज़ैर

को खुदा का बेटा बनाकर उसकी पाकी के नग्मे गाए जाएं, बल्कि यह तो खुदा और सिर्फ एक खुदा की इबादत के लिए बनाया गया था।

तर्जुमा—‘बेशक सबसे पहला घर जो बरकरार हुआ लोगों के वास्ते यही है जो मक्का में है।’ (3 : 96)

गरज़ रसूल बनाए जाने के बाद जब कुदरत ने मोज़ाना शान से ‘आमुलफ़ील’ (हाथियों के साल) में आपकी विलादत का छिपा राज़ खोल दिया तब दुनिया ने यह समझा कि अबरहा और उसकी फ़ौज से अल्लाह के काबे की यह हिफ़ाज़त इसलिए थी कि वह वक़्त करीब आ पहुंचा, जब दोबारा यह मुक़द्दस जगह एक अल्लाह की इबादत और ख़ालिस तौहीद का मर्कज़ बनने का शरफ़ हासिल करनेवाला है। पस जो ताक़त भी इस बड़े मक़्सद से टकराएगी, खुद ही टुकड़े-टुकड़े होकर रह जाएगी।

अबरहा ईसाई था और अरब के लोग (कुरैश) मुशिरक, फिर कौन कह सकता है कि अबरहा और उसकी फ़ौज की बर्बादी कुरैश की मदद और हिमायत के लिए थी। नहीं, बल्कि इसलिए सब कुछ हुआ कि अल्लाह की मशीयत के खिलाफ़ अबरहा की ख़्वाहिश थी कि यमन (सनआ) में जो खूबसूरत गिरजा (अल-क़लीस) बाप-बेटा-रूहुल कुद्स (तसलीस-Trinity) के फ़रोग देने को बनाया गया था तौहीद के मर्कज़ ‘काबतुल्लाह’ की जगह वह सबकी जवज्जोह का मर्कज़ बने और इस मक़्सद के लिए उसने काबा ढाने के लिए फ़ौजी चढ़ाई की, इधर कुरैश यानी सारा अरब उसका मुक़ाबला नहीं कर सकता था। अबरहा वक़्त के तमाम जंगी हथियारों और साज़ व सामान का मालिक और कुरैश इन सबसे बिल्कुल महरूम, तब ग़ैरते हक़ हरकत में आई और दुनिया ने देख लिया कि दुनिया की ताक़त के घमंड पर अल्लाह की मशीयत से टकराने वाला खुद ही फ़ना के घाट उतर गया और तौहीद का मर्कज़ ‘काबा’ खुदाई हिफ़ाज़त के साए में उसी तरह कायम रहा—

तर्जुमा—‘बेशक इस बात में बड़ा ही सबक़ है, उस आदमी के लिए जो अल्लाह से ख़ौफ़ रखता है।’ (79 : 26)

कुरआन ने सूरः फ़ील में इसी हक़ीक़त को मोज़ ज़ाना ढंग से नक़ल किया है—

तर्जुमा—(ऐ पैग़म्बर!) क्या तुझे नहीं मालूम कि तेरे पालनहार ने हाथियों के साथ क्या मामला किया? क्या उनके फ़रेब को नाकाम नहीं बना दिया? और उन पर फ़ौज दर फ़ौज परिंदे नहीं भेज दिए। वे परिंदे उन पर कंकड़िया फेंकते थे, फिर (खुदा ने) इन हाथियों वालों को खाए हुए भुस की तरह कर दिया।
(105 : 1-5)

बहरहाल आमुल फ़ील नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की विलादत बा सआदत का साल है और यह वाक़िया आपके जुहूरे कुद्सी का सबसे बड़ा करीबी निशान है और यह हक़ीक़त उस आदमी पर अच्छी तरह साफ़ है—

तर्जुमा—‘जिसके पास हक़ कुबूल करने वाला दिल है या वह हाज़िर दिमागी के साथ हक़ बात की ओर कान लगाए हुए है।’

विलादत की तारीख़ की तहक़ीक़

तारीख़ व सीरत लिखने वाले तमाम बड़े लोगों का तीन बातों पर इतिफ़ाक़ है— एक यह कि विलादत का साल आमुल फ़ील (हाथियों वाला साल) था, लेकिन सीरत और तारीख़ के माहिर इस बारे में अलग-अलग राय रखते हैं कि रबीउल-अव्वल की कौन सी तारीख़ थी। आम लोगों में तो मशहूर क़ौल है यह कि 12 रबीउल अव्वल थी और कुछ कमज़ोर रिवायतें इसके पीछे हैं और अक्सर उलेमा 8 रबीउल अव्वल कहते हैं लेकिन सही और मुस्तनद क़ौल यह है कि 9 रबीउल अव्वल पैदाइश की तारीख़ है और तारीख़ व हदीस के बड़े उलेमा और दीन के जलीलुल क़द्र इमाम इस तारीख़ को सही और ‘असबत’ मानते हैं, चुनांचे हमीदी, अक़ील, यूनुस बिन यज़ीद, इब्ने अब्दुल्लाह, इब्ने हज़म, मुहम्मद बिन मूसा ख़्वारज़मी, अबुल ख़त्ताब बिन वहय, इब्ने तैमिया, इब्ने क़ैयिम, इब्ने कसीर, इब्ने हजर अस्क़लानी, शैख़ बदरुद्दीन ऐनी जैसे बड़े उलेमा की यही राय है।

महमूद पाशा फ़लकी ने (जो कुस्तुन्तुन्या का मशहूर भूगोल शास्त्री गुजरा है, सितारों के मुताबिक़ जो ज़ायचा इस ग़रज़ से तैयार किया था कि मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के ज़माने से अपने ज़माने तक के सूरज ग्रहन

और चांद ग्रहण न का सही हिसाब मालूम करके पूरी खोज के साथ यह साबित करे कि आपकी खिलाफत में किसी हिसाब से भी दोशंबा का दिन 12 रबीउल अब्बल सन् को नहीं आता है, इसलिए रिवायतों की ताकत और उनके सही वगैरह होने कि हिसाब से और सूरज और तारों के हिसाब से मुस्तनद तारीख 8 रबीउल अब्बल है, असहाबे फ़ील के वाक़िए के कितने अर्से बाद पैदाइश हुई कई क़ौलों में मशहूर क़ौल यह है कि पचास दिन बाद आपकी पैदाइश हुई।

मुबारक नसब

नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अरबी नस्ल के हैं और अरब के इज्जतदार क़बीला कुरैश की सबसे ज़्यादा मुक़्तदिर शाख़ बनी हाशिम से हैं। कुरआन ने अहले अरब को खिताब करते हुए कई जगहों पर आपके अरबी नस्ल होने का ज़िक्र किया है।

तर्जुमा—(खुदा) वह ज़ात है जिसने उम्पीयीन (अनपढ़ लोगों) में से ही एक रसूल भेज दिया जो उन पर उसकी आयतें पढ़ता और उनका तज़किया करता और उनको अल-किताब (कुरआन) और हिक्मत सिखाता है।’

(9 : 128)

तर्जुमा—‘बेशक तुम्हारे पास तुम ही में से एक रसूल (मुहम्मद सल्ल०) आया।’

(9 : 128)

तर्जुमा—‘जबकि भेज दिया अल्लाह ने उनमें से एक रसूल जो नसब के लिहाज़ से उन्हीं में से है।’

(3 : 164)

तर्जुमा—‘इसी तरह हमने आप पर कुरआन को अरबी जुबान में उतारा है, (ऐ मुहम्मद ﷺ!) तुम मक्का वालों और उनके आस-पास के बसने वालों को (बुराइयों से) डराओ।’

(42 : 7)

अरब के नसबों और ख़ानदानों के माहिर इस पर एक राय हैं कि आप सल्ल० हज़रत इस्माईल बिन इब्राहीम عليه السلام की नस्ल में है, इसलिए कि कुरैश किसी राय के इख़िलाफ़ के बग़ैर अदनानी हैं और अदनान के इस्माईली होने में दो राय की गुंजाइश नहीं है।

नसब आदि के उलेमा ने नसबनामे की तफ़सील इस तरह बयान की है—

मुहम्मद ﷺ बिन अब्दुल्लाह बिन अब्दुल मुत्तलिब बिन हाशिम बिन अब्दमनाफ़ बिन कुसइ बिन किलाब बिन मुरा बिन काब बिन लुई बिन ग़ालिब बिन फ़ह बिन मालिक बिन नज़्र बिन कनाना बिन खुज़ैमा बिन मुदरका बिन इलयास बिन मुज़र बिन नज़ार बिन माद बिन अदनान

और वालिदा की जानिब से आपका नसबनामा किलाब पर जाकर बाप के नसब-नामे के साथ मिल जाता है यानी आमना बिनत वहब बिन अब्देमनाफ़ बिन जुहरा बिन किलाब। किलाब को 'हकीम' भी कहते हैं।

अलबत्ता अदनान और हज़रत इस्माईल के दर्मियान सिलसिले के नामों से मुताल्लिक़ सनद के माहिरो की रायें अलग-अलग हैं इसलिए नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उसके बारे में इर्शाद फ़रमा कर 'क-ज़-बन्नस्साबून' (नसब बयान करने वालों ने ग़लत बयानी की है) कहा और किसी राय की तौसीक़ नहीं फ़रमाई और अपने सनद के सिलसिले से मुताल्लिक़ सिर्फ़ इस क़दर इर्शाद फ़रमाया है—

'अल्लाह तआला ने इस्माईल की नस्ल में से कनाना को नुमायां किये और कनाना में से कुरैश को इज़्ज़त व अज़मत बख़्शी और कुरैश में बनी हाशिम को इम्तियाज़ अता फ़रमाया और बनी हाशिम में से मुझको चुन लिया।' (मुस्लिम)

गोया इस तरह सनद के सिलसिले के उन हिस्सों की तस्दीक़ फ़रमाई जो नसब के माहिरो के दर्मियान बिना इख़िलाफ़ माने जाते थे।

इस्लाम ने नसबी तफ़ाख़ुर और उस पर बने हुए समाजी रस्म व रिवाज को बहुत बड़ा गुनाह और जुर्म क़रार दिया है। वह कहता है खुदा के यहां फ़ज़ीलत का मेयार 'ईमान और भले अमल' हैं और वहां हसब-नसब का कोई पूछने वाला नहीं है, साथ ही 'नसबी तफ़ाख़ुर (बड़प्पन, भेद-भाव) इस्लाम के बुनियादी क़ानून 'इस्लामी भाईचारा' के बिल्कुल ख़िलाफ़ है, इसलिए इस्लाम के इज्तिमाई दस्तूर में उसके लिए कोई जगह नहीं है, फिर भी वाक़िए के तौर पर तारीख़ यह पता देती है कि हमेशा नबी और रसूल ﷺ अपनी क़ौम और अपने मुल्क के इज़्ज़तदार खानदानों में से होते रहे हैं। अल्लाह की हिक्मत का

यह फ़ैसला शायद इसलिए हुआ कि क़ौमों और मुल्कों के रस्म व रिवाज और नसबी फ़ख़ व ग़ुरूर, उनके ख़िलाफ़ उनकी दावते हक़ और उनकी सदाक़त का पैग़ाम कहीं निजी स्वार्थ के लिए न समझ लिया जाए और इस तरह उसका अख़्लाक़ी पहलू कहीं कमज़ोर न हो जाए, जैसे किसी समाजी ज़िदंगी में जात-पात की तक्सीम और कास्ट-सिस्टम इस तरह मौजूद है कि उसकी वजह से कुछ इंसान कुछ को हक़ीर व ज़लील समझने लगे हैं, तो अगर उस क़ौम या मुल्क में कोई पैग़म्बर उस ख़ानदान से ताल्लुक़ रखता हो जिसको क़ौमी और मुल्की रिवाज ने नीच और पस्त क़ौमों का लक़ब दे रखा है, ऐसी हालत में उस खुले जुल्म और बातिल के ख़िलाफ़ उस पैग़म्बर की हक़ की आवाज़ इतनी तेज़ी के साथ कामियाब न होती जितनी उस हालत में हो सकती है, जबकि वह खुद उस क़ौम व मुल्क के ऊंचे ख़ानदान से ताल्लुक़ रखता हो और सिर्फ़ इसीलिए ख़ास मसले में नहीं, बल्कि उसके पैग़ामे हक़ की तमाम इस्लाहों में यह फ़र्क़ ज़रूर नज़र आएगा !

बहरहाल यह हिक्मत हर मक़ाम और हर मौक़े पर फ़ायदेमंद हो या न हो, अरब के हालात व वाक़िआत के लिए निहायत मुनासिब और फ़ायदेमन्द साबित हुई। चुनांचे इस्लाम की आवाज़ ने जब अपनी इंक़िलाबी और इस्लाही गरज़ से रूहानियत की छिपी कायनात में तहलका पैदा कर दिया तो एक तरफ़ नबी अकरम ﷺ ने अरबों को यह सुनाया कि जहां तक ख़ानदानी इम्तियाज़ का ताल्लुक़ है, तो मैं कुरैश भी हूं और हाशमी भी और यह फ़र्क़ तुम्हारे हिसाब से बहुत बुलन्द हो, मगर मेरी निगाह में इसकी हैसियत सिर्फ़ यह है। यह फ़ख़ करने की कोई चीज़ नहीं है, और 'दूसरी जानिब नसबी फ़ख़ की बुनियादों के गिर जाने और इंसानी बराबरी की अ़ाम दावत के लिए इस खुदाई फ़रमान का एलान करके इंसानी कायनात की तमाम तारीक़ ज़ेहनियत के ख़िलाफ़ एक बड़ा इंक़िलाब पैदा कर दिया।

तर्जुमा—लोगो! मैंने तुम सबको एक मर्द और औरत से पैदा किया है। (यानी इंसानी पैदाइश की शुरूआत आदम और उसकी बीवी हव्वा ﷺ से हुई है) तुमको ख़ानदानों और क़बीलों में सिर्फ़ इसलिए बांट दिया है कि आपस

में (सिलारहमी यानी रिश्तेदारियों के लिए) पहचान और मारफ़्त का तरीक़ा कायम कर लो।')
—अल-हुजुरात

तर्जुमा—(और असल यह है कि) बेशक अल्लाह के नज़दीक वही इज़्ज़त वाला है, जो तुममें से परहेज़गारी की जिंदगी बसर करने वाला है।' (48 : 13)

और हज्जतुल विदाअ के मौक़े पर जब आप हज़ारों सहाबा की मौजूदगी में विदाई पैग़ाम सुना रहे थे और इस्लाम के बुनियादी उसूल की मज़बूती के लिए अहम वसीयतें पेश फ़रमा रहे थे, उस हुक्मे खुदावन्दी की ताईद में यह इक्बिलाबी पैग़ाम भी इर्शाद फ़रमाया—

‘अल्लाह तआला ने इर्शाद फ़रमाया है, ऐ इंसानी नस्ल के लोगो! हमने तुमको एक औरत और मर्द से पैदा किया है और हमने तुम्हारे दर्मियान ख़ानदान और क़बीले बना दिए हैं, ताकि (रिश्तेदारी के लिए) तआरुफ़ पैदा करो। बिला शुबहा तुममें अल्लाह के नज़दीक वही बरगुज़ीदा है, जो ज़्यादा मुत्तक़ी (नेक किरदार) है। पस (ख़ूब याद रखो कि) न अरबी को अज़मी पर कोई फ़ज़ीलत है और न अज़मी को अरबी पर कोई बरतरी हासिल है, न काले को गोरे पर कोई फ़ज़ीलत है और न गोरे को काले पर कोई बुजुर्गी, बल्कि इन सब के लिए फ़ज़ीलत का मेयार सिर्फ़ तक्वा (नेक अमली) है। ऐ कुरैश के लोगो! ऐसा न हो कि तुम (ख़ानदानी फ़ख्र के) झूठे घमंड की वजह से कियामत में दुनिया को कंधे पर लाद लाओ और दूसरे लोग (नेक अमली की बदौलत) आख़िरत का सामान लेकर आएँ, वाज़ेह रहे कि तुम्हारे सिर्फ़ कुरैशी होने की वजह से मैं तुमको खुदा के फ़ैसले से क़तई तौर पर बेपरवाह नहीं बना सकता। (खुदा के यहां तो सिर्फ़ अमल ही काम आएगा) (मज्मउल फ़वाइद, भाग 1, मोजम तबरानी कबीर से)

और एक बार नसबी फ़ख्र के खिलाफ़ तब्लीगे हक़ करते हुए उसको ‘जाहिली तास्सुब’ फ़रमाया और मुसलमानों को उससे बचने की सख़्त ताकीद फ़रमाई, इर्शाद फ़रमाया—

अल्लाह तआला ने (इस्लाम की दावत के ज़रिए तुम्हारे दर्मियान से जाहिलियत के तास्सुब और नसबी फ़ख्र (गर्व) को मिटा दिया है और अब नेक मोमिन है या बदकार पापी, सब इंसान आदम की औलाद हैं और आदम की

पैदाइश मिट्टी से हुई है, (फिर फ़ख़ करने का क्या मौक़ा है?)

(अबूदाऊद व तिर्मिज़ी)

सरवरे दो आलम ﷺ ने यह फ़रमाया 'इन्नमा हु-व मोमिनुन लक्लि-य औ फ़ाजिरुन शक्लि-य' इस मसले को इस दर्जा साफ़ कर दिया था कि मुसलमान की ज़िंदगी में कभी इसके खिलाफ़ ज़िंदगी का कोई असर पड़ना ही नहीं चाहिए था। ज़ात-पात तो सिर्फ़ इसलिए थी कि छोटे-छोटे हलकों में आपसी तआरुफ़, सिलारहमी (रिश्तेदारियों का ख़्याल) और हुस्ने सुलूक (सदव्यवहार का मामला) एक दूसरे के साथ आसानी से हो सके, वरना कैसी ज़ात? कहां का ख़ानदान? कौन बिरादरी? यहां तो सिर्फ़ दो ही फ़ितरी और नेचुरल तक्सीमें हैं नेक या बद? किसी क़ौम, किसी ख़ानदान और किसी मुल्क का इंसान हो अगर 'सच्ची खुदापरस्ती' और नेकी रखता है तो वे सब एक बिरादरी और एक क़ौम हैं और अगर 'मुशिरक व काफ़िर और बदकार पापी' तो ये सब एक गिरोह और एक टोला है।

यतीमी

खातमुल अंबिया हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के वालिद का नाम अब्दुल्लाह और वालिदा का नाम आमिना था। अभी हिदायत का सूरज इस दुनिया में निकला नहीं था और हज़रत आमना के मुबारक पेट में अमानत के तौर पर मौजूद था कि वालिद का इंतिक़ाल हो गया और सीरत लिखने वाले कहते हैं कि हज़रत अब्दुल्लाह तिजारत के एक क़ाफ़िले के साथ शाम तशरीफ़ ले गए थे वापसी में जब क़ाफ़िला मदीना (यसरिब) पहुंचा तो यह बीमार हो गए और इसीलिए अपने ननिहाल में बनी नज्जार में क्रियाम किए रहे— क़ाफ़िला जब मक्का पहुंचा तो अब्दुल मुत्तलिब ने बेटे के बारे में मालूम किया। क़ाफ़िले ने उनकी बीमारी और मदीना में क्रियाम का वाक़िया कह सुनाया तब अब्दुल मुत्तलिब ने अपने बड़े लड़के हारिस को हालात मालूम करने के लिए मदीना भेजा। हारिस जब मदीना पहुंचे तो मालूम हुआ कि हज़रत अब्दुल्लाह एक महीने कुछ दिन बीमार रहकर इस दुनिया से चल बसे।

वापस आकर जब हारिस ने बाप को इत्तिला दी तो अब्दुल मुत्तलिब और तमाम ख़ानदान को इस बड़े सदमे ने बेहाल कर दिया, क्योंकि अब्दुल्लाह अपने बाप और भाइयों के बड़े चहेते थे।

गरज़ जब आपकी मुबारक पैदाइश हुई तो इससे क़ब्ल ही आपको यतीमी का शरफ़ हासिल हो चुका था। चुनांचे कुरआन में आपकी यतीमी और दुनिया के साधनों से महरूम की बावजूद अल्लाह की रहमत की गोद में परवरिश पाकर दुनिया को हिदायत पर लाने वाला बनने का ज़िक्र थोड़े में सूरः वज़्जुह में हो चुका है—

तर्जुमा—‘(ऐ पैग़म्बर!) क्या तुझको खुदा ने यतीम नहीं पाया, फिर अपनी (रहमत की) गोद में जगह दी और क्या तुझको नावाकिफ़ नहीं पाया फिर तुझको (कायनात की हिदायत के लिए) हिदायत वाला बनाया और क्या तुझको (हर किस्म के वसीलों से महरूम) मुहताज नहीं पाया, फिर तुझको (हर किस्म की सरवरी देकर) ग़नी बना दिया।’ (93 : 6-8)

हज़रत अबू क़तादा रज़ि० के क़ौल के मुताबिक़ इन आयतों में अजीब व ग़रीब एजाज़ और बयान करने का ढंग है। साथ नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की पाक ज़िंदगी के दर्जों का ज़िक्र है। तुम समझते हो कि ‘फ़आवा’ के मानी यह है कि परवरदिगार ने आपको रहने-सहने की शक्ल पैदा कर दी या आपको बेयार व मददगार नहीं रहने दिया। यह भी सही है मगर इस कलामे रब्बानी की असल रूह यह है कि उसने ज़ाते अकदस सल्ल० को हर किस्म के माद्दी (भौतिक) असबाब व वसाइल (साधनों) से बेपरवाह रख कर अपनी रहमत के आगोश में ले लिया और आपकी तरक्की व बढ़ौत्तरी को ख़ालिस अपनी तर्बियत में कामिल व मुक्म्मल किया। (तफ़्सीर इब्न कसीर) और ‘व-व-ज-द-क ज़ाल्लन फ़-हदा०’ की तफ़्सीर को खुद कुरआन ही ने दूसरी जगह रोशन कर दिया। जैसे सूरः शूरा में है—

तर्जुमा—‘और इसी तरह हमने तेरी तरफ़ अपने ‘अग्र’ की रूह की तरक्की की (हालांकि इससे पहले) न तू किताब (कुरआन) को जानता था और न ईमान की हक़ीक़त को, लेकिन हमने उसको ‘नूर’ (रोशनी) बना दिया, हम

अपने बन्दो में से जिसको चाहते हैं (उसकी सलाहियत व इस्तेदाद को सामने रखकर) उसके ज़रिए हिदायत देते हैं।' (42 : 25)

और आयत 'आइलन फ़अग्ना' में दुनिया की ज़रूरत और ग़नी का ज़िक्र कलाम की रूह नहीं है बल्कि इस ओर इशारा है कि अल्लाह तआला ने आपके करीब होने का वह बड़ा रुत्बा अता फ़रमाया है कि मादी और रूहानी हर किस्म की ज़रूरत से ऊपर उठकर अच्छी सिफ़त और बेहतरीन अख़लाक की ऊंची मिसाल 'ग़नी' बना दिया, यही वह ग़नी है जिसका खुद ज़ाते अक़दस ने इस तरह ज़िक्र फ़रमाया है—

'ग़नी मालदारी की बहुतायत का नाम नहीं है, हक़ीक़ी ग़नी नफ़्स का अल्लाह के अलावा हर चीज़ से बेनियाज़ हो जाना है। (तफ़सीर इब्ने कसीर)

मुबारक उम्र अभी छः साल की ही थी कि आपकी वालिदा बीबी आमिना का भी इंतिक़ाल हो गया। बीबी अमिना आपको आपके ननिहाल (मदीना) में लेकर गई थीं, वापसी में मुक़ाम अबवा में बीमार हो गईं और कुछ दिन बीमार रहकर वहीं इंतिक़ाल फ़रमाया और उम्र की अभी आठ मंज़िलें ही तै हो पाई थीं कि दादा अब्दुल मुत्तलिब ने भी मुंह मोड़ लिया और इस तरह बचपन ही में तर्बियत के वसीले और दुनिया की किफ़ालत के सामान से महरूम ने गोया अल्लाह की मशीयत की ओर से यह एलान कर दिया कि ज़ाते कुदसी सिफ़ात को एक खुदा ने ख़ालिस अपनी तर्बियत के लिए चुन लिया है फिर यह कैसे मुम्किन है कि उसको तर्बियत के दुनियावी अस्बाब व वसाइल का मुहताज बनाए।

अल्लाह तआला ने एक यतीम व यसीर और मादी वसीलों से महरूम हस्ती को अपने लिए चुनकर किस तरह अपने कामिल रब का मज़हर बनाया। सूरः इन्शिराह में इस हक़ीक़त को अछूते अन्दाज़ में बयान फ़रमाया है—

तर्जुमा— 'क्या हमने (हक़ और सच्चाई कुबूल करने के लिए) तेरा सीना नहीं खोल दिया और (मारफ़ते इलाही की हक़ीक़ी तलब और क़ौम और इंसानी कायनात की बेराहरवी पर उनकी हिदायत की तड़प का) वह बोझ हमने तुझसे दूर कर दिया जिसने तेरी कमर तोड़ रखी थी और हमने तेरे ज़िक्र को

कायनात में बुलन्द कर दिया।'

(14 : 1-3)

‘शरहे सदर’, (सीना खोल देना) यह कि अब सीखने-सिखाने के साधनों के ज़रिए हासिल होने वाले तमाम उलूम व मआरिफ़ अल्लाह की उस अता और देन के सामने नाचीज़ होकर रह गए हैं, जिसकी समाई के लिए हमने तेरे सीने को खोल दिया है, अब उलूम व मआरिफ़ के अपार समुन्दर भी हों, तो सीने के फैले हुए दामन के लिए काफ़ी है और इसी ‘शरहेसदर’ ने अल्लाह की मारफ़त के तमाम छिपे ख़जाने तुझ पर खोल दिए और सारा बोझ तेरे सीने पर से हट गया, जिसने तेरी कमर को इसलिए तोड़ रखा था कि दिल से तलाश और दिली तड़प के बावजूद तू इससे पहले नहीं जानता था कि अल्लाह की मारफ़त का सीधा रास्ता कौन-सा है और जिनकी राहें गुम हो चुकी हैं, उनकी रहनुमाई का रास्ता क्या है? मगर अब यह सब कुछ रोशन हो जाने के बाद हमने दुनिया में तेरे ज़िक्र को वह बुलन्दी और ऊंचाई अता फ़रमाई कि तेरा मक़ाम—

‘ख़ुदा के बाद, मुख़्तसर यह कि तू ही बुजुर्ग है।’

चुनांचे नाम ‘अहमद’ व ‘मुहम्मद’ है और मक़ाम ‘मुक़ामे महमूद’, सूरः हम्द जिंदगी का वज़ीफ़ा है और क़ियामत में हम्द का झंडा ही नुमायां—

हुस्ने यूसुफ़, दमे ईसा, यदे बैज़ादारी

आंचे ख़ूबां हमा दारंद तू तंहा दारी।

यही नहीं, बल्कि कुरआनी दावत के नए सिरे से बुलंद करने वाली तेरी हक़ की सदा ने एतक़ाद व अमल और ईमान व किरदार की राह से तमाम दुनिया के इज्तिमाई व समाजी निज़ामों में जो शानदार इंक़िलाब पैदा कर दिया और सोसाइटी के हर शोबे की पुरानी और फटी चादर बिछा दी, उसने तेरे ज़िक्र को वह बुलन्दी दी कि कोई क्रौम, कोई मज़हब और कोई जमाअत किसी-न-किसी शक़ल में उससे मुतास्सिर हुए बग़ैर न रह सके।

बुत-परस्ती से नफ़रत, तंहाई पसन्दी और अल्लाह की इबादत का ज़ौक़

बचपन से इज़्दिवानी ज़िंदगी (गर्हस्थ जीवन) के शुरू के मरहलों तक के हालात व वाक़ियात तफ़्सील के साथ सीरत और हदीस की किताबों में नक़ल किए गए हैं, इसलिए वहीं उनसे रुजू किया जा सकता है।

मुख़्तसर यह कि दादा अब्दुल मुत्तलिब के इतिक़ाल के बाद आपके चाचा अबू तालिब आपके साथ बड़ा उन्स और अपनापन रखते थे और ज़िंदगी भर आपका साथ देने का हक़ अदा करते रहे। नबियों और रसूलों की सुन्नत के मुताबिक़ आपने अपनी रोज़ी का भार किसी पर नहीं डाला और दुनिया के कामों में आपने बक़रियां भी चराई और तिजारत भी की। शाम (सीरिया) के मशहूर तिजारती शहर बसरा में भी इस गरज़ से तशरीफ़ ले गए और पचीस साल की उम्र में यही सफ़र हज़रत ख़दीजतुल कुबरा से निकाह की वजह बना। आप ख़दीजा का माल साझे की तिजारत की बुनियाद पर बसरा की मंडी में ले गए। ख़दीजा का गुलाम मैसरा भी सफ़र का साथी था। इस दर्मियान आपकी सदाक़त व अमानत, एक यहूदी राहिब की बशारत और तिजारत के कीमती मुनाफ़ा का जो तजुर्बा किया था और जो कुछ देखा था, मैसरा ने वह सब हज़रत ख़दीजा से कह सुनाया। चुनांचे यह तास्सुर मियां-बीवी के रिश्ते की वजह बना।

अब ज़िंदगी में एक और इंक़िलाब हुआ कि आप तंहाई में रहना पसन्द करने लगे और हिरा नामी गुफ़ा में दिन व रात गुज़ारने लगे। बुतपरस्ती से शुरू ही से नफ़रत थी, इसलिए भी न किसी मूर्ति के आगे सर झुकाया और न किसी ऐसी मज्लिस में शिर्कत फ़रमाई जो बुत-परस्ती के मेले कहलाते थे। अब अकेलेपन में सलीम फ़ितरत जिस तरह रहनुमाई करती, एक अल्लाह की इबादत करते, मगर एक चुभन सीने में ऐसी थी जो इस हालत में भी बेचैन ही रखती। अक्सर यह सोच कर तड़प जाते थे कि मेरी क़ौम ख़ास तौर से और इसांनी दुनिया आम तौर से किस तरह एक अल्लाह को छोड़कर मूर्तिपूजा और प्रकृति-पूजा (मज़ाहिर परस्ती) में पड़ी हुई है और यह कि अख़्लाक़ की

दुनिया किस तरह उलट गई है। आखिर वह कौन-सा कामियाब नुस्खा है जो इस हालत में इंक़िलाब पैदा कर दे और सच्ची खुदापरस्ती और नेक अमली फिर एक बार अपनी शक्ल दिखला दे।

यही जज्बात व तास्सुरात थे जो बेचैन दिल में करवटें ले रहे थे और हिरा की तंहाई में इन्हीं कैफ़ियतों के साथ जाते अक़दस, अल्लाह की याद में लगी रहती और जब कई-कई दिन इस तरह गुज़र जाते तो कभी हज़रत ख़दीजा हाज़िर होकर खाने-पीने का सामान दे जातीं और कभी खुद अपने आप जाकर कुछ दिनों का खाने-पीने का सामान ले आते और हिरा में फिर इबादत में लग जाते। चुनांचे चौदह सदियां गुज़रने के बाद आज भी हिरा, जुबान से ख़ास मंज़र की गवाही दे रही है जिसका लुत्फ़ उसने वर्षों उठाया है और यही इबादत के लिए वह तंहाई की जगह थी जहां जाते अक़दस पर सबसे पहले अल्लाह की व्हय आई और तर्तीब के साथ सूरः इक्रां और सूरः मुद्स्सिर की कुछ आयतें सुनाने के लिए बशीर (बशारत देने वाला) व नज़ीर (डराने वाला) बना दिया।

पैग़म्बर बनाए गए

गरज़ ख़ातमुल अंबिया मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की पाक ज़िंदगी के इंक़िरादी और इज्तिमाई दोनों पहलुओं का यह हाल था कि एक तरफ़ तंहाइयों में अल्लाह की मारफ़त हासिल करने में लगे हुए सीधे रास्ते की तालाश, इंसानों के सुधार के लिए तड़प और तलब थी और दूसरी तरफ़ क़ौम व मुल्क के लोगों के साथ, सच अपनाने, सच बोलने, सच का जामा अमली ज़िंदगी में पहनने, सही मामले और सच्ची सोच जैसे बेहतरीन अख़्लाक़ और पाक-साफ़ खूबियों के साथ समाजी ज़िंदगी को सामने लाना था और इन फ़र्कों की वजह से हर आदमी की निगाह में आपकी वह क़द्र और इज़्ज़त थी कि आप सबकी मुत्तफ़का राय से 'अस-सादिक़ वल अमीन' के लक़ब से याद किए जाते थे और कल जो दुश्मनी उनको मुहम्मद-अल्लाह के रसूल से नुबूवत के दावे पर हुई, वह आज मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह के साथ क़तई तौर पर नहीं थी और सब ही उनकी इज़्ज़त व एहताराम के कायल थे।

यही हालात व वाक़िआत थे, जबकि मुबारक उम्र चालीस मंज़िलें तै कर चुकी थी, रमज़ान का महीना था और आप हिरा ग़ार में इबादत में लगे हुए थे कि अचानक आपके सामने जिब्रील फ़रिश्ता ज़ाहिर हुआ और उसने बशारत दी कि अल्लाह ने आपको लोगों की रुशद व हिदायत के लिए चुन लिया और रिसालत व पैग़म्बरी के ऊंचे मंसब पर बिठाया।

यह वाक़िया चूँकि मानव-जाति की तारीख़ में हैरत और इंक़िलाब की वजह साबित हुआ और उसने ज़ाते अक़्दस को बुलन्दी की इस हद पर पहुँचा दिया, जहाँ मज़हबों और मिल्लतों में सुधार व इंक़िलाब उस हस्ती की रहमत का फ़ैज नज़र आते हैं, इसलिए तारीख़ व हदीस के रोशन सफ़हों ने इस वाक़िए को तमाम तफ़्सील से सही सनद के साथ अपने सीने में हिफ़ाज़त से रखा है, चुनांचे हदीस-फ़न और इस्लामी तारीख़ के इमाम बुख़ारी रह० ने अपनी मशहूर व मक़बूल 'अल-जामेअ-अस्सहीह' में हज़रत आइशा सिदीका रज़ि० की सनद से इस वाक़िए को जिन लफ़्ज़ों में नक़ल किया है, उसका तर्जुमा नीचे दिया जाता है। हज़रत आइशा सिदीका रज़ि० फ़रमाती हैं—

नबी अकरम (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) पर शुरू में सच्चे ख़्वाबों का सिलसिला जारी रहा। कोई ख़्वाब आप नहीं देखते थे, मगर अपनी ताबीर (स्वप्नफल) में इतना रोशन और सही साबित होता था, जैसे कि सुबह की सफ़ेदी नमूदार होती है। फिर आपको अकेले रहना महबूब हो गया और हिरा में इबादत में मशगूल रहने लगे। कभी-कभी आप घर वालों के पास भी तशरीफ़ ले जाते। हज़रत खदीजा रज़ि० आपके खाने का कुछ सामान तैयार करतीं और आप उसको लेकर फिर ग़ार में वापस तशरीफ़ ले जाते, इसी तरह हिरा में इबादत में मशगूल रहते कि अचानक एक दिन आप पर खुदा का फ़रिश्ता नमूदार हुआ और कहने लगा, 'इक़रा' (पढ़िए)। नबी उम्मी ने कहा, 'मैं पढ़ना नहीं जानता'

पैग़म्बर इर्शाद फ़रमाते थे कि जब मैंने फरिश्ते से यह कहा तो उसने मुझको पकड़ में ले लिया, जिसकी शिद्दत से मुझको तक्लीफ़ होने लगी और फिर छोड़कर मुझसे दोबारा कहा, 'पढ़िए' मैंने वही जवाब फिर दिया, 'मैं पढ़ना नहीं जानता।' तब उसने फिर वही अमल किया और गिरफ्त छोड़कर तीसरी

बार फिर जुम्ला दोहरा दिया और मैंने भी वही पिछला जवाब दिया। गरज तीन बार यही बात-चीत और यही अमल होते रहने के बाद चौथी बार फ़रिश्ते ने (सूर: इक्रा) की ये कुछ आयतें तिलावत कीं—

तर्जुमा—‘अपने उस परवदिगार के नाम से पढ़ जिसने पैदा किया, उसने इंसान के जमे खून से पैदा किया, पढ़ और तेरा परवरदिगार बहुत करम करने वाला है, जिसने कलम (लेख) के ज़रिए (इंसान को) इल्म सिखाया, इंसान को वह सब कुछ सिखाया, जिसे वह नहीं जानता था।’

गरज नबी अकरम ﷺ ने इन आयतों को दोहराया और ये आपके ज़ेहन में बैठ गई। इसके बाद जब हिरा में फ़ारिग हुए तो यह हालत थी कि दिल (वह्य की शिद्दत से) कांप रहा था। आपने मकान में दाखिल होते ही फ़रमाया, ‘मुझको कपड़ा ओढ़ाओ।’ हज़रत ख़दीजा ने फ़ौरन कपड़ा ओढ़ा दिया। जब आपको सुकून हुआ तो ख़दीजा को तमाम वाक़िए कह सुनाए और फिर फ़रमाया, ‘मुझे जान का डर है’ (यानी मुझे यह ख़ौफ़ है कि शायद मैं वह्य के बोझ को बरदाश्त न कर सकूँ।) हज़रत ख़दीजा रज़ि० ने सुनकर अर्ज किया, खुदा की क़सम! खुदा आपको हरगिज़ रुसवा नहीं करेगा, क्योंकि आप रिश्तों को जोड़ते हैं, मेहमानों की मेहमानदारी, बेचारों की चारागरी फ़रमाते और ग़रीब के लिए मआश का ज़रिया मुहैया करते हैं और हक़ पहुंचाने की कड़ी-से-कड़ी मुसीबत में मददगार बनते हैं।

इस बात-चीत के बाद हज़रत ख़दीजा रज़ि० नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहिम ब सल्लम को अपने चचेरे भाई वरक़ा बिन नौफल के पास ले गई। वरक़ा बिन नौफल जाहिलियत के ज़माने में उन लोगों में से थे जिन्होंने सच्चे ईसाई धर्म को कुबूल कर लिया था, इबरानी जुबान से वाक़िफ़ और इंजील की किताबत क्रिया करते थे और बहुत बूढ़े और आंख के अंधे भी थे। हज़रत ख़दीजा रज़ि० ने वरक़ा से कहा, ‘मेरे भाई! आप अपने भतीजे का वाक़िया तो सुनिए।’ वरक़ा ने हालात मालूम किए तब नबी अकरम सल्ल० ने गुज़रा हुआ वाक़िया सुनाया। वरक़ा ने सुना तो कहा, ‘यह वह फ़रिश्ता (जिब्रील ﷺ) है जो हज़रत मूसा ﷺ पर अल्लाह की वह्य ले आया करता था, काश! कि मैं उस वक़्त तक ज़िंदा रहूँ। जब तेरी क़ौम तुझको तेरे वतन

(मक्का) से निकालेगी।' आपने मालूम किया, क्या मेरी क़ौम मुझको वतन से बेवतन कर देगी? वरक़ा ने कहा, बेशक ऐसा होगा और जिस पैग़ाम के लिए खुदा ने आपको पैग़म्बर बनाया है, उस ख़िदमत पर जो भी लगाया गया, उसके साथ यही शक़्ल पेश आई है। पस अगर वह वक़्त मेरी ज़िंदगी में आया, तो मैं पूरी ताक़त के साथ तेरी हिमायत करूंगा।' मगर वरक़ा को यह वक़्त नहीं मिला, उससे पहले उनका इतिक़ाल हो गया।

वह्य आने का पहला दौर

नबी अकरम सल्ल० पर सबसे पहले सूरः अलक़ की ये आयतें उतरीं—

तर्जुमा—'पढ़ो, अपने परवरदिगार के नाम से, जिसने पैदा किया इंसान को जमे खून से, पढ़ो, और तेरा परवरदिगार जो सबसे ज़्यादा बरगज़ीदा है, वह हस्ती है जिसने सिखाया लिखना सिखाया इंसान को वह सब कुछ जो वह नहीं जानता था। (86 : 1-5)

इन आयतों में यह बताया गया है कि हज़रत इंसान जो खुदा की सबसे बेहतर और कायनात के सिलसिले की सबसे ज़्यादा तरक्की पाई मख़्लूक़ है और इसी वजह से वह कायनात में 'अल्लाह के ख़लीफ़ा' के मंसब पर बिठाया गया है, उसकी पैदाइशी कमज़ोरियों का यह हाल है कि उसकी पैदाइश गंदे पानी और जमे खून से हुई है। लेकिन अल्लाह ने जब उसको ऊंची जगह बख़्शाने का इरादा किया और 'अस्फ़लुस्साफ़िलीन' (नीचों में नीच) के लायक़ मख़्लूक़ को ऊंचे दर्जों पर बिठाना चाहा तो उसको वह सिफ़ते आला अता फ़रमाई जो अल्लाह की सिफ़तों में बहुत ऊंची है यानी उसके 'सिफ़ते इल्म का मज़हर' बनाया, उसको 'क़लम के ज़रिए' लिखना सिखाया और इल्म व इरफ़ान की धुरी बनाया, फिर इस तरफ़ भी इशारा किया कि इल्म हासिल करने के तीन ही तरीक़े हैं—

1. ज़ेहनी
2. लिसानी (भाषायी)
3. रस्मी

इल्म ज़ेहनी लफ़्ज़ों और रस्मों का मुहताज नहीं होता और लिसानी इल्म ज़ेहनी इल्म का मुहताज है मगर रस्म व नक़्श लिखने से बे-नियाज़ है और रस्मी इल्म रस्मुलख़त (लिपि) और नक़्शों का भी मुहताज है। पस अगर 'रस्मी

इल्म' का किसी जगह जिक्र हो तो लिसानी और जेहनी इल्मों का जिक्र अपने आप हो जाता है क्योंकि यह अपने से बुलन्द हर दो इल्मों के लिए बेहतरीन ताबीर करने वाला है और ज़ाहिर है कि इल्म रस्मी इल्म 'क़लम' का मुहताज है, इसलिए कुरआन ने 'अल्ल-म बिल क़लम' कह कर बड़े अच्छे ढंग से इस पूरी हक़ीक़त को वाज़ेह कर दिया। इसकी और तशरीह 'अल्ल-मल इंसा न मा लम यालम' से कर दी और इस बयान का मक़सद यह है कि एक तरफ़ इल्म और नुबूवत का क्या ताल्लुक है, वह ज़ाहिर हो जाए दूसरी ओर इंसान को अपनी ज़िंदगी के सही मक़सद का इल्म हो जाए।

वह्य उतरने का दूसरा दौर

हिरा ग़ार में नुबूवत के मंसब से सरफ़राज़ किए जाने के वक़्त सूरः अलक़ की ये कुछ आयतें उतर कर अल्लाह की वह्य का सिलसिला कट गया। अल्लाह की हिक्मत का तक्राज़ा यह हुआ कि हिरा में फ़रिश्ते के ज़ाहिर होने और वह्य के नाज़िल होने से फ़ौरी तौर पर नुबूवत व रिसालत की खुसूसियतें और असरात ज़ाते अक़दस पर हुए हैं, वे अच्छी तरह पक जाएं और नुबूवत व रिसालत की सलाहियत व इस्तेदाद की तक्मील हो जाए, ताकि आगे वह्य के सिलसिले के मज़बूत मुहर्रिकात और मुअस्सिरात पैग़म्बर की बशरी ख़ासियतों के लिए अजनबी न रहें, इसलिए कुछ दिनों के लिए वह्य के नाज़िल होने का सिलसिला बन्द रहा। इसी को मज़हब के लफ़्ज़ों में 'फ़तरते वह्य' (वह्य का बन्द होना) कहते हैं।

लेकिन ज़ाते अक़दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को हिरा में पेश आने वाली कैफ़ियत और सूरतेहाल से जो फ़ितरी तश्वीश (स्वाभाविक चिन्ता) पैदा होती थी, जब उसने सुकून और इत्मीनान की शक्ल अख़्तियार कर ली तो वह्य के नाज़िल होने की रूहानी कैफ़ियतों ने इस दर्जा लुफ़ पैदा किया कि आप उस 'फ़तरत' को बर्दाश्त न कर सके और लुफ़ वाले और गहरे जज़्बों ने इस हद तक बेचैनी की शक्ल अख़्तियार कर ली कि कभी-कभी नामूसे अक़बर (जिब्रील अमीन) ज़ाहिर होकर आपको सब्र व तस्कीन की दावत देते और यक़ीन दिलाते थे कि अपनी तमाम नज़ाकतों, खूबियों और हुस्न व कमाल

के साथ नुबूत व रिसालत का यह सिलसिला आपकी ज़ाते अक़दस के साथ जुड़ चुका है और 'फ़तरत' का यह दौर बस थोड़े दिनों का है, इसलिए आप परेशान न हों। तब आप तस्कीन पाते और वायदे वाले वक़्त के इन्तिज़ार में रहते कि कुछ दिनों बाद वह्य के आने का सिलसिला दोबारा शुरू हुआ और सबसे पहले सूर: मुद्स्सिर की ये आयतें उतरिं—

तर्जुमा—'ऐ कमली पोश उठ, (और लोगों को गुमराही के अंजाम से) डरा और अपने पालनहार की अज़मत व जलाल को बयान कर और लिबास को पाक कर और बुतों से जुदा रह और ज्यादा हासिल करने की नीयत से अच्छा व्यवहार न कर और अपने पालनहार के मामले में (अज़ीयत व मुसीबत पर) सब्र अख़्तियार कर।' (74 : 1-7)

इन आयतों ने गोया ज़िदंगी के इंसानी मक़सद की तक्मील कर दी, क्योंकि सूर: अलक्र में कहा गया था कि इंसानियते कुबरा के लिए 'सही इल्म' शर्त है। यह नहीं तो कुछ भी नहीं। अब यह बताया जा रहा है कि सही इल्म की ऊंचाई और बड़ाई के मान लेने के बाद भी इंसानियत की तक्मील उस वक़्त तक नामुम्किन है कि सही इल्म के साथ 'सही अमल' भी मौजूद हो, इसलिए कि अगर इल्म सही है और अमल सही मफ़कूद हो, तो उसका फ़ायदा मुअत्तल और बेकार है और अगर अमल है और सही इल्म नदारद, तो वह अमल नुक्सान की वजह है। रुश्द व हिदायत और सीधे रास्ते के लिए दोनों ही का वुजूद ज़रूरी है और तभी 'इंसान' 'इंसानियते कुबरा' हासिल कर सकता है।

गरज़ जिस तरह सूर: अलक्र की आयतों से 'इल्मे नाफ़ेअ' (लाभप्रद ज्ञान) की ओर इशारे किए, उसी तरह सूर: मुद्स्सिर ने 'अमले नाफ़ेअ' की बुनियादी तफ़्सीलें ज़ाहिर की हैं। खुदा की हस्ती और उसका कामिल रब होना दोनों का अमली एतराफ़, बातिनी तहारत व पाकीज़गी का कमाल, ज़ाहिरी तहारत व पाकीज़गी का लाज़िम होना, बेगरज़ और बेलौस अख़्लाक़े हमीदा की बुनियाद, 'एहसान' पर जमाव और कुबूले हक़ और नेक अमली के नतीजों पर 'सब्र' इन आयतों का हासिल हैं और यही वे बुनियादी बातें हैं, जिनमें इल्मे हक़ और अमले सही की तमाम कायनात समा दी गई है।

साथ ही हज़रत मुहम्मद ﷺ के लिए सूरः अलक़ और सूरः मुदस्सिर का यह खिताब और पैग़ामे हक़ इशारा है इस तरफ़ कि अमल का यह निज़ाम मंसबे रिसालत के लिए 'नफ़्स की तक्मील' और रुश्द व हिदायत की दावत के लिए 'पहले दर्जे' की हैसियत रखता है और यही क़रीबी मुस्तक्बिल में 'आम बेसत' की वजह साबित होगा।

दावत व इशाद के एलान की पहली मंज़ील

कुरआन के इस हुक्म के बाद जो कि तब्लीग़ और हक़ की दावत का पहला पैग़ाम था, दावत व इशाद ने एक क़दम और आगे बढ़ाया और अब ज़ाते हक़ ने सूरः शोअरा की आयतें नाज़िल फ़रमा कर नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को यह फ़ैसला सुनाया कि सबसे पहले रिश्तेदारों और क़रीब के लोगों को हक़ की दावत दीजिए, ताकि दूसरों पर भी उसका असर पड़े और यों भी कुरैश और बनी हाशिम के वह्य कुबूल करने का असर तमाम अरब क़बीलों पर पड़ना लाज़िमी है, इसलिए वे सब क़बीलों के सरख़ेल और सर गिरोह हैं और हरम के रहने वाले होने की वजह से तमाम अरब पर उनका दीनी और दुन्यवी असर है। सूरः शोअरा में है—

तर्जुमा— 'और (ऐ पैग़म्बर!) अपने क़रीबी नातेदारों को (गुमराही से) डरा और जो मुसलमान तेरी पैरवी करने वाले हैं, उनके लिए अपने बाज़ुओं को पस्त रख (यानी नमी और तवाज़ो से पेश आ) अगर वे नाफ़रमानी करें तब तो उनसे कह दे मैं, तुम्हारे इन (बुरे) कामों से बरी हूँ और ग़ालिब रहम करने वाली ज़ात पर भरोसा कर जो तुझको उस वक़्त भी देखती है, जब तू उसके दरबार में खड़ा होता है और उस वक़्त भी, जबकि तू सज्दा करने वालों में मिलकर उसके सामने सज्दा रेज़ होता है। बेशक वह सुनने वाला और जानने वाला है।' (26 : 214-220)

गोया यह इल्म व अमल की तक्मील और रुश्द व हिदायत के 'मंसबे फ़ैज़ान' के बाद दूसरा दर्जा था, जिसमें हक़ का एलान और इस्लाम की दावत की अमली सूरत अख़्तियार करने के लिए तहरीक की गई। चुनांचे सही रिवायतें गवाह हैं कि आपने सफ़ा की चोटी पर खड़े होकर उस ज़माने में राज़

एलान के तरीके के मुताबिक 'या सबाहा' कहकर कुरैश के खानदानों को पुकारा और जब सब जमा हो गए तो एक मिसाल देकर समझाया कि बेशक मैं खुदा को पैगम्बर, रसूल और सीधे रास्ते के लिए सच्चा हिदायत करने वाला हूं। इर्शाद फ़रमाया—

‘लोगो! अगर मैं तुमसे यह कहूं कि इस पहाड़ के पीछे एक भारी फ़ौज जमा है और तुम पर हमले के लिए तैयार, तो क्या तुम मुझको सच्चा समझोगे? ‘ओ मुसद्दिकी! लोगों ने कहा हमने तुझको ‘अस्सादिकुल अमीन’ पाया है तू जो कुछ कहेगा हक़ और सदाक़त पर टिका होगा, तब आपने फ़रमाया, तो लोगो! मैं तुमको एक अल्लाह की ओर बुलाता हूं और मूर्ति-पूजा की गन्दगी से बचाना चाहता हूं। तुम उस दिन से डरो, जब खुदा के सामने हाज़िर होकर अपने आमाल व किरदार का हिसाब देना है।’ (तारीख़े इब्ने कसीर)

यह सच्ची आवाज़ जब कुरैश के कानों में पहुंची, तो वे हैरान रह गए और बाप-दादा के दीन ‘बुतपरस्ती’ के खिलाफ़ आवाज़ सुनकर ख़फ़ा होने लगे गोया मब में एक आग दौड़ गई और सबसे ज़्यादा आपके हक़ीक़ी चचा अबूलहब को तैश आया और ग़ज़बनाक होकर कहने लगा, ‘तू हमेशा हलाक़त और रुसवाई का मुंह देखे, क्या तूने इस ग़रज़ से हमको बुलाया था?’

अजब मंज़र है कि कुछ घड़ियां पहले जिस मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह की सदाक़त व अमानत और अच्छी आदतों से सारी क़ौम मुतास्सिर रहकर उसकी अज़मत न इज़्ज़त करती और उसके साथ वालिहाना मुहब्बत ज़ाहिर करती थी, वही आज इस एलान पर कि ‘मैं मुहम्मद रसूलुल्लाह हूं एक साथ पराएपन और नफ़रत रखने वाली और खून की प्यासी बन गई।

दावत व इर्शाद की दूसरी मंज़िल

सीरत की किताबों में पढ़ आए हो कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने खानदान और बिरादरी के लोगों को राहे हक़ दिखाने और उनकी ईमानी और अख़्लाक़ी हालत ठीक करने की खातिर क्या कुछ नहीं किया, मगर कुरैश के कुछ लोगों के सिवा किसी ने आपकी दावत पर लब्बैक न कहा और अदावत व बुज़्ज को अपना शेवा बनाए रखा। तब दावत व इर्शाद ने तरक्की

के तीसरे जीने पर क़दम रखा और अल्लाह की तरफ़ से हुक्म हुआ, ऐ हक़ की दावत देने वाले! ख़ानदान और बिरादरी के इंकार और सरकशी से बद-दिल और गुमगीन न हो और अपनी ज़िम्मेदारी पर जमकर डटे रहो, क्योंकि सआदत (सौभाग्य) और शक्रावत (दुर्भाग्य) तुम्हारे क़ब्जे में नहीं हैं, तुम्हारा काम तो सिर्फ़ इब्लाग़ (पहुंचाना) है अलबत्ता अब ख़ानदान के दायरे से आगे बढ़कर मक्का और उसके चारों तरफ़ के क़बीलों और क़ौमों को भी हक़ का यह पैग़ाम सुनाओ और दावत व इश्राद का यह तोहफ़ा उनके सामने भी रखो, ताकि जो सईद रूहें 'पैग़ामे हक़' के लिए बेचैन और परेशान हैं, वे इस पर लब्बैक कह कर तस्कीन पाएं और प्यासी रूह को ज़िंदगी के पानी से सींचें।

तर्जुमा—और (देखो) यह किताब (कुरआन) है जिसे हमने (तौरात की तरह) नाज़िल किया, बरकत वाली और जो किताब इससे पहले नाज़िल हो चुकी है, इसकी तस्दीक़ करने वाली और इसलिए नाज़िल की, ताकि तुम उम्मुल कुरा (यानी शहर मक्का) के बाशिंदों को और उसको जो उसके चारों तरफ़ हैं (गुमराहियों के नतीजों से) डराओ। (6 : 92)

तर्जुमा—और इसी तरह हमने तुम पर कुरआन नाज़िल किया अरबी जुबान में, ताकि (गुमराहियों के नतीजों से) डराओ मक्का शहर के बाशिंदों को और उनको जो उसके आस-पास हैं। (42 : 7)

चुनांचे नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हक़ की तब्लीग़ को मक्का की हदबन्दियों से आज़ाद करके मक्का के आस-पास के लोगों के लिए आम कर दिया और ताइफ़, हुनैन और यसरिब (मदीना) तक हक़ की अपनी आवाज़ को पहुंचाया, बल्कि मुहाजिरों के ज़रिए हब्शा के ईसाई बादशाह असहमा तक हक़ के कलिमे को पहुंचाया।

आम बेसत

इसके बाद दावत व इश्राद की वह तीसरी मंज़िल पेश आई जो मुहम्मद सल्ल० के नबी बनाए जाने का नस्बुलऐन और एक ही मक़सद था और तमाम नबियों और रसूलों के मुक़ाबले में ज़ाते अक़दस मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व

सल्लम के नबी बनाए जाने में खास बात थी, यानी अल्लाह ने आपके नबी बनाए जाने को 'आम बे सत' करार दिया और हुक्म हुआ कि आप न सिर्फ कुरैश के लिए, न सिर्फ उम्मुलकुरा (मक्का) और मक्का के पास-पड़ोस के लिए, न सिर्फ अरब के लिए नबी व रसूल बनाकर भेजे गए हैं, बल्कि आपकी बे सत (नबी बनाया जाना) तमाम इंसानी कायनात के लिए हुई है और आप अरब व अजम और काले-गोरे सब के लिए पैग़म्बर और खुदा के एलची हैं। इर्शाद होता है—

तर्जुमा—और हमने तुमको इंसानी कायनात के लिए पैग़ाम देकर भेजा है, (नेक अमल पर) खुशख़बरी सुनाने और (बुरे आमाल पर) लोगों को डराने के लिए, अक्सर (जाहिल) लोग इस हक़ीक़त को नहीं समझते। (34 : 28)

तर्जुमा—पाक और बरतर है वह ज़ात, जिसने हक़ व बातिल के दर्मियान तमीज़ देने वाली किताब नाज़िल फ़रमाई अपने बन्दे (मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) पर ताकि वह तमाम जहान वालों को (बुरे अंजाम से) डराए। (25 : 9)

इस्लाम की दावत का मुज्मल खाका और हज़रत जाफ़र रज़ि० की तक्ररीर

नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अरब की धरती पर नबी बना कर भेजे गए। इस फ़ितरी काम के तरीक़े को सामने रखकर सबसे पहले क़ौम अरब ही उनकी दावत व इर्शाद का मुखातब करार पाई, ताकि जो क़ौम क़ल चौपायों का ग़ल्लाबान थी, नुबूवत के नूर से रोशन होकर इंसानी कायनात की ग़ल्लाबान बन जाए और अल्लाह के सबसे बुज़ुर्ग़ पैग़म्बर व रसूल की रहमत के साए में तर्बियत पाकर पूरी कायनात के लिए 'ख़ैरे उम्मत' का लक़ब पाए, तो अब देखना यह है कि अरब जैसी, सरकश, जाहिल और तहज़ीब से कोरी क़ौम और अख़्लाक़ी व फ़िक़्री ज़ब्बात व एहसासात से बिल्कुल ही हटी हुई क़ौम पर 'इस्लाम की दावत' ने फ़ौरी तौर पर क्या असर किया, ताकि हम आसानी से यह अन्दाज़ा कर सकें कि जिस मज़हब के बुनियादी उसूल और अक़ीदे और सोच-ख़्याल ने ऐसी क़ौम की ज़िंदगी के शोबों में हैरत में डालने

वाला और शानदार इकिलाब पैदा करके उससे रूहानी दुनिया का इंसान बना दिया, उस मजहब के सच्चे होने के लिए अकेले यह एक कारनामा ही रोशन दलील बन सकता है।

मक्का के मुशिरकों की लगातार मुखालफत, ईजा पहुंचाने और अजाब देने के हौलनाक तरीकों ने जब मुसलमानों की एक मुख्तसर जमाअत को अफ्रीका के मशहूर मुल्क हब्शा की जानिब हिजरत करने पर मजबूर कर दिया और वे ईसाई हुकूमत असहमा की हुकूमत में शरणार्थी हो गए तो कुरैश इसको भी सहन न कर सके और असहमा के दरबार में बड़ों का एक वफ़द भेजकर यह मांग की कि वह मुसलमानों को इसलिए उनके हवाले कर दे कि यह बद-दीन होकर और बाप-दादा के दीन को छोड़कर क़ौम में तफ़रका पैदा करने की वजह बने और यहां रहकर भी हुक्मरां के दीन के मुखालिफ़ हैं।

असहमा के वफ़द की मांग सुनकर मुसलमानों को जवाबदेही के लिए दरबार में तलब किया और इस्लाम के बारे में पूरी बात मालूम की, तब हज़रत जाफ़र रज़ि० ने इस्लाम के बारे में तक़रीर फ़रमाई और उसकी मुक़द्दस तालीम का मुख्तसर और जामे नक्शा खींचकर असहमा को सही सुरतेहाल से आगाह किया। यही वह तक़रीर है जो असल में अरब-जाहलियत के दौर और इस्लाम कुबूल करने के दौर की इकिलाबी कैफ़ीयत का मुख्तसर मगर बेहतरीन खाका है।

हज़रत जाफ़र बिन अबी तालिब ने बादशाह और दरबारियों को मुख़ातब करके इश़ाद फ़रमाया।

‘बादशाह! हम पर एक लम्बा अंधा ज़माना गुज़रा है, उस वक़्त हमारी जिहालत का यह हाल था कि एक खुदा को छोड़कर बुतों की परस्तिश करते थे और खुद के गढ़े पत्थरों की पूजा हमारा शेवा था। मुरदार खाना, ज़िनाकारी, लूटमार, रिश्तों का तोड़ना सुबह व शाम का हमारा मशग़ला था, पड़ोसियों के हक़ों से बेगाना, रहम व इंसाफ़ से नावाक़िफ़ और हक़ व बातिल के इम्तियाज़ से नावाक़िफ़, गरज़ हमारी ज़िंदगी पूरी की पूरी दरिंदों की तरह थी। मजबूत कमज़ोर को कुचलने और मजबूत कमज़ोर को हज़्म कर लेने को अपने लिए फ़ख़ और इम्तियाज़ी बात समझता था।

अल्लाह की रहमत का करिश्मा देखिए कि उसने हमारे अन्दर एक बुजुर्ग भेजा, जिसके नसब को हम जानते थे, जिसकी सच्चाई, अमानतदारी पर दोस्त-दुश्मन दोनों गवाह, जिसकी क्रीम ने उसको 'मुहम्मद अल-अमीन' का लक़ब दिया, वह आया और उसने बतलाया कि खुदा का कोई शरीक नहीं, वह शिर्क से पाक है, बुतपरस्ती जिहालत का शेवा है, इसलिए छोड़ देने के क़ाबिल है और सिर्फ़ एक खुदा ही की इबादत बन्दे का हक़ है। उसने हमको हक़ कहने, सच बोलने की हिदायत की और रिश्तों को जोड़ने का हुक्म दिया। पड़ोसियों और कमजोरों के साथ अच्छा व्यवहार करना सिखाया, क़त्ल व ग़ारत की बुरी रस्म को मिटाया। जिनाकारी को हराम और फ़हश कह कर उस गन्दे इंसानी काम से हमको नजात दिलाई, निकाह में महरम-ग़ैर महरम का फ़र्क़ बताया। झूठ बोलने, नाहक़ यतीम के माल खाने को हराम फ़रमाया। नमाज़ और ख़ैरात व सदक़ात की तालीम दी और हर हैसियत में हमको हैवानियत (पशुता) के गहरे गढ़े से निकाल कर इंसानियत के बड़े दर्जे तक पहुंचाया।

बादशाह! हमने उस मुक़द्दस तालीम को कुबूल किया और उस पर सच्चे दिल से ईमान लाए। यह है हमारा वह कुसूर जिसकी वजह से मुशिरकों का वफ़द (प्रतिनिधि-मंडल) तुझसे मांग करता है कि तू हमको उनके हवाले कर दे।' (सीरत इब्ने हिशाम)

हज़रत जाफ़र रज़ि० ने इस्लाम के साफ़ और सादा, मगर रोशन उसूल को जब असहमा के सामने सच्ची हिम्मत के साथ पेश किया तो हब्शा के हुक्मरां ने मुसलमानों को अपनी पनाह से निकाल कर कुफ़र के हवाले करने से इंकार कर दिया और फिर हज़रत जाफ़र रज़ि० ने बड़ी अच्छी आवाज़ में सूर: मरयम की कुछ आयतें तिलावत कीं तो हब्शा का नजाशी बेहद मुतास्सिर हुआ और आंखों में आंसू लाकर इस्लाम की सच्चाई पर ईमान लाया और हज़रत जाफ़र के हाथ पर मुसलमान हो गया।

यह है इस्लाम की दावत का मुख़्तसर ख़ाका जिसने दुनिया के सबसे तारीक़ इंसानी ख़ित्ते को एक बड़ी ही थोड़ी मुद्दत में सूरज की तरह रोशन और ताबनाक बना दिया। इस ख़ाके में एतक़ादात, अख़्लाक़ और भले आमाल का वह तमाम इल्म मौजूद है, जिससे क़ुरआन ने अलग-अलग सूरतों में हस्बे हाल

और मुनासिब मुक्राम पर ज़्यादा-से-ज़्यादा बयान किया है, बल्कि पूरा कुरआन इन्हीं रोशन हक़ीक़तों का रासा दिखाने वाला, और रहनुमाई करने वाला है।

मेराज

‘इसरा’ (मेराज) के मानी रात में ले जाने के है। नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का वह बेमिसाल और हैरत में डालने वाला वाक़िया, जिसमें अल्लाह ने अपने रसूल को मस्जिदे हराम (मक्का) से मस्जिदे अक्सा (बैतुल मक्दिस) और वहां से मला-ए-आला तक जिस्म के साथ (सशरीर) अपनी निशानियां दिखाने के लिए सैर कराई, चूँकि रात के एक हिस्से में पेश आया था, इसलिए ‘इसरा’ कहलाता है।

‘मे राज’ उरूज से निकला है, जिसके मानी चढ़ने और बुलन्द होने के हैं और इसीलिए मे राज ज़ीना को भी कहते हैं। नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने चूँकि इस रात में मला-ए-आला की बढ़ती मज़िलें तै फ़रमाने हुए सातों आसमान, सिदरतुल-मुंतहा और उससे भी बुलन्द होकर अल्लाह की निशानियां अपनी आंखों देखीं और इन वाक़ियों के ज़िक्र में वह्य के तर्जुमान ने ‘अ-र-ज बी’ का जुम्ला इस्तेमाल फ़रमाया, इसलिए इस अज़ीम वाक़िए को मेराज के नाम से याद किया जाता है।

वाक़िया सिर्फ़ एक ही बार हुआ

इसलिए दो अलग-अलग ताबीरों और वाक़ियों की तफ़्सील में थोड़े-थोड़े इख़िलाफ़ को सामने रखते हुए रिवायतों में मेल पैदा करने की ग़रज़ से इस वाक़िए की ज़्यादा तायदाद का क़ायल होना तारीख़ी और तहक़ीक़ी निगाह से हरगिज़ सहीह नहीं है। मशहूर मुहक्किक़, जलीलुल क़द्र मुहदिस, मुफ़सिर और तारीख़दां हाफ़िज़ इमादुद्दीन इब्ने कसीर का यह फ़रमाना कि ‘इन तमाम रिवायतों को जमा करने से यह बात अच्छी तरह साफ़ हो गई कि मेराज का वाक़िया सिर्फ़ एक ही बार पेश आया, हक़ीक़त खोल देती है।

तारीख व सन् की तारीख

यह वाक़िया कब पेश आया, इस बारे में बहुत-से क़ौल हैं, लेकिन इन दो बातों पर सब मुत्तफ़िक़ हैं—

एक यह कि मेराज का वाक़िया हिजरत से पहले पेश आया। दूसरी बात यह कि हज़रत ख़दीजा के इत्तिक़ाल के बाद वाक़े हुआ और जबकि हिजरत के वाक़िए पर सब मुत्तफ़िक़ हैं कि 13 नबवी को पेश आया और जैसा कि बुख़ारी में ज़िक़्र है हज़रत आइशा रज़ि० की रिवायत के मुताबिक़ हज़रत ख़दीजा का इत्तिक़ाल हिजरत से तीन साल पहले और एक दूसरी रिवायत के पेशेनज़र पांच वक़्त की नमाज़ के फ़र्ज़ होने से पहले हो चुका था तो अब मेराज के वाक़िए को हिजरत से पहले के इन तीन वर्षों के अन्दर ही होना चाहिए।

तो अब यह कहना आसान है कि मेराज का वाक़िया हिजरत से एक साल या डेढ़ साल पहले पेश आया। क़ौल यह है कि महीना रजब का था और तारीख़ 29 थी। चुनांचे इब्ने अब्दुल बर्र, इमाम नववी और अब्दुल ग़नी मुक़द्दसी रह० जैसे मशहूर हदीस के माहिरों व रुझान इसी तरफ़ है कि रजब था और बाद के तो फ़रमाते हैं कि 27 थी और दावा करते हैं कि उम्मत में हमेशा से इसी पर इत्तिफ़ाक़ रहा है।

कुरआन और मेराज का वाक़िया

कुरआन में इसरा या मेराज का वाक़िया दो सूरतों—बनी इसराईल और अन-नज्म—में ज़िक़्र किया गया है। सूर: बनी इसराईल में मक्का (मस्जिदे हराम) से बैतुल मक्दिस (मस्जिदे अक्सा) तक सैर का ज़िक़्र है और सूर: नज्म में मला-ए-आला के सैर व उरूज का भी ज़िक़्र मौजूद है। अगरचे आमतौर पर यह समझा जाता है कि बनी इसराईल की सिर्फ़ शुरू ही की आयतों में इस वाक़िए का ज़िक़्र है, मगर हक़ीक़त यह है कि पूरी सूर: इसी शानदार वाक़िए से मुताल्लिक़ है और सूर: की तमाम आयतें इसी को पूरा करती हैं। और इस

दावे के लिए एक साफ़ और खुली दलील खुद इसी सूरः में यह मौजूद है कि बीच सूरः में आयत 'व मा ज-अलनरोंया अल्लती अरै ना-क इल्ला फ़ित-न-तल्लिन्नास' में मेराज के इसी वाक़िए का तज़्किरा हो रहा है। इससे पहले हज़रत मूसा और हज़रत नूह के दावत व तब्लीग़ के वाक़िए इसी सिलसिले में गवाह और नज़ीर के तौर पर पेश किए गए हैं कि इंकार करने वालों ने हमेशा इसी तरह खुदा की सच्चाइयों को झुठलाया है, जिस तरह आज मेराज के वाक़िए को झुठला रहे हैं।

हदीसें और मेराज के वाक़िए का सबूत

मशहूर मुहादिस ज़रक़ानी रह० कहते हैं कि मेराज का वाक़िया 45 सहाबा से नक़ल किया गया है और फिर उनके नाम गिनाए हैं। इन सहाबा में मुहाजिरीन भी हैं और अंसार भी और यह हरगिज़ नहीं समझना चाहिए कि चूँकि अंसार सहाबा मक्का में मौजूद नहीं थे, इसलिए उनकी रिवायतें सिर्फ़ सुनी हुई हैं। इसलिए कि ऐसे अहम वाक़िए को जिसका इस्लाम की तरक्की के साथ बहुत गहरा ताल्लुक़ और हिजरत के वाक़िए के साथ खास ताल्लुक़ है, सहाबा ने सीधे-सीधे नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से मालूम किया होगा और अगर मुहाजिरों से भी सुना होगा तो फिर ज़ाते अक्दस से तस्दीक़ ज़रूर ही की होगी। चुनांचे शदाद बिन औस रज़ि० की रिवायत में ये लफ़ज़ मौजूद हैं—

हमने (सहाबा ने) अर्ज किया, ऐ अल्लाह के रसूल! मेराज किस तरह हुई? (तिर्मिज़ी)

अरबी लफ़ज़ 'कुलना' यह साबित कर रहा है कि बेशक मेराज से मुताल्लिक़ सहाबा रज़ि० के आम मज्मे में नबी अकरम सल्ल० से पूछा जाता था, जिनमें मुहाजिरीन व अंसार सब ही शरीक होते थे और मालिक बिन सअसआ रज़ि० अंसारी सहाबी हैं। उनकी रिवायतें मेराज में है—

नबी अकरम ﷺ ने उनसे (सहाबा से) यह वाक़िया बयान किया।

(बुख़ारी, किताबुल मेराज)

वाक़िए की शक्ल

चूँकि यह वाक़िया अपनी अहमियत के साथ-साथ लम्बा भी था, इसलिए बशर होने की वजह से वाक़िए के असल तफ़्सीली हालात में इत्तिहाद व इत्तिफ़ाक़ और तवातुर की हद तक रिवायतों के नक़ल किए जाने के बावजूद कई रिवायतों में कुछ जगहों पर पाये जाने वाले इख़िलाफ़ से असल वाक़िए की हक़ीक़त पर बिल्कुल कोई असर नहीं पड़ता, खासतौर से जबकि कुरआन ने इन अजीब और हैरत में डालने वाले वाक़ियों को क़तई नस्स से वाज़ेह पर दिया है, जिनके बारे में मुलहिद अपने हलहाद के ज़रिए बातिल तावील गढ़ करके इस वाक़िए की मोज़ाना हैसियत का इंकार करते हैं।

मेराज का वाक़िया और कुरआन

सूर: बनी इसराईल में वाक़िया इसरा बैतुल मक़िदस तक की सैर से मुताल्लिक़ है—

तर्जुमा—पाकी है उस ज़ात के लिए जिसने अपने बन्दे को (यानी पैग़म्बरे इस्लाम) को रातों रात मस्जिदे हराम से मस्जिदे अक्सा तक कि उसके आस-पास को हमने बड़ी ही बरकत दी है, सैर कराई और इसलिए सैर कराई कि अपनी निशानियां उसे दिखाएं। बेशक वही ज़ात है जो सुनने वाली, देखने वाली है’ (17 : 1)

तर्जुमा—‘और वह दिखलावा जो तुझको हमने दिखाया, सो लोगों की आजमाइश के लिए (दिखलाया) (19 : 59)

और सूर: नज्म में मला-ए-आला तक उरूज का ज़िक्र भी मौजूद है—

तर्जुमा—‘गवाह है सितारा जबकि डूबे, तुम्हारा साथी न गुमराह हुआ और न भटका और नहीं बोलता अपने नफ़्स की ख्वाहिश से, यह नहीं है मगर हुक्म जो उसको भेजा गया है उसको बतलाया है सख़्त ताक़तों वाले ज़ोरावर (फ़रिश्ते) ने (कि यह खुदा की वह्य है) जो सीधा बैठा और था वह आसमान के ऊंचे किनारे पर, फिर वह क़रीब हुआ, पस झुक आया, फिर रह गया (दोनों के दरमियान) दो कमान बल्कि, उससे भी नज़दीक का फ़र्क़, पस खुदा ने अपने बन्दे (मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) पर वह्य नाज़िल फ़रमाई, जो भी

वहय भेजी, उस (बन्दे) ने जो देखा उसके दिल ने झूठ नहीं कहा, (यानी आंख की देखी, बात को झुठलाया नहीं, बल्कि तस्दीक की) तो क्या तुम उससे इस पर झगड़ते हो जो उसने खुद देखा है (यानी वाकिए पर झगड़ते हो) और उस (बन्दे) ने खुदा को देखा एक (खास) नुजूल के साथ, जबकि वह बन्दा सिदरतुल मुन्तहा के नजदीक मौजूद था, जिसके पास आराम से रहने की बहिश्त (जन्नतुल मावा) है, उस वक़्त सिदरा (बेरी का पेड़) पर छा रहा था, जो कुछ छा रहा था। उसके देखने के वक़्त निगाह न बहकी और न हद से आगे बढ़ी, बेशक उस (बन्दे) ने (इस हालत में) अपने परवरदिगार के बड़े-बड़े निशान देखे।' (53 : 1-18)

सूर: बनी इसराईल और वाक़िया मेराज

यहां बनी इसराईल और सूर: नज्म की तफ़्सीर का मौक़ा नहीं, सिर्फ़ इशारे ही काफ़ी मालूम होते हैं, क्योंकि अगर एक तरफ़ ये आयतें अपने मुकम्मल तफ़्सीरी हक़ की मांग करती हैं तो दूसरी ओर अपने-अपने आगे-पीछे की बातों को देखते हुए थोड़े ही में सब कुछ चाहती हैं। बहरहाल ज़रूरत के मुताबिक़ दोनों का ख़्याल करते हुए इतनी गुज़ारिश है कि बनी इसराईल की शुरू की आयत में मेराज के वाक़िए से मुताल्लिक़ जो कुछ कहा गया उसे अगर परखा जाए तो आसानी से यह फ़ैसला किया जा सकता है कि जहां तक कुरआन का ताल्लुक़ है, उसका फ़ैसला यही है कि मेराज का वाक़िया, जागते में पूरे जिस्म के साथ पेश आया है और इस मतलब से हट कर जब इसको सोते का ख़्वाब या रूहानी ख़्वाब कहा जाता है तो मज़बूत तावीलों के बग़ैर दावे पर दलील कायम नहीं हो सकती, क्योंकि कुरआन या सहीह हदीसों किसी की वज़ाहत के साथ यह ज़ाहिर करती हैं कि इसरा-मेराज का वाक़िया जिस्म के साथ जागते में पेश आया है और इन दलीलों की फ़ेहरिस्त के तौर पर इस तरह गिनाया जा सकता है—

1. सूर: बनी इसराईल की आयत 'असरा बिअब्दिही' में असरा के मानी वही है जो हज़रत मूसा और हज़रत लूत عليهما السلام से मुताल्लिक़ आयतों में हैं यानी बेदारी की हालत में और जिस्म के साथ रात में ले चलना।

2. 'वमाज-अलना-क रोयल्लती अरैना-क' में रोया आंखों से देखना है न कि ख़्वाब, या रूहानी तौर पर देखना और अरब भाषा में यह यानी मजाज़ नहीं, बल्कि हक़ीक़त है।

3. आयत 'इल्ला फ़ित्त-न-तल्लिन्नास' में कुरआन ने इस वाक़िए को इक़रार व इंकार की शक्ल में ईमान व कुफ़र के लिए मेयार करार दिया है और अगरचे नबियों (अलैहिमुस्सलाम) के रूहानी मुशाहदे या ख़्वाब पर भी मुशिरकों और मुन्किरों का साफ़ इंकार मुम्किन और साबित है, लेकिन इस जगह कलाम यही ज़ाहिर करता है कि वाक़िए की अज़मत को सामने रखकर इंकार करने वालों का इन्कार इसलिए तेज़ से तेज़तर हुआ कि नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इस वाक़िए को आंखों देखे की तरह बयान किया है।

4. सूर: नज्म की आयत 'मा ज़ाग़ल ब-सरु व मा तगा' में जिब्रील का देखना नहीं, बल्कि इसरा के वाक़िए का आंखों देखा होना मुराद है और सूर: की आयत 'माज़ाग़ल बसरु व मा तगा' में यह बतलाना मक्सूद है कि आंख ने जो कुछ देखा, दिल ने हू-ब-हू उसकी तस्दीक़ की और वाक़िए से मुताल्लिक़ आंखों के देखने ने टेढ़ अख़्तियार की और न दिल के देखने ने इस हक़ीक़त का इंकार किया, बल्कि दोनों के मेल ने इसकी सच्चाई पर तस्दीक़ की मुहर लगा दी।

5. सहीह हदीस में है कि जब मुशिरकों ने इस वाक़िए के इंकार पर यह हुज्जत क़ायम की कि अगर यह सही है तो नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम बैतुल मक्दिदस की मौजूदा छोटी-छोटी तफ़सील बताएं, क्योंकि हमको यक़ीन है कि न उन्होंने बैतुल मक्दिदस को कभी देखा है, और न बिन देखे छोटी-छोटी तफ़सीलें बताई जा सकती हैं। तब नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सामने से बैतुल मक्दिदस के बीच के परदे अल्लाह की ओर से उठा दिए गए और आपने एक-एक चीज़ को देखते हुए मुशिरकों के सवालों के सही जवाब दिए, जिनमें मस्जिद की तामीरी तफ़सील भी आ गई। यह दलील है इस बात की कि मुशिरक यह समझ रहे थे कि आप इसरा को बेदारी की हालत में और जिस्म के साथ होना बयान फ़रमा रहे हैं और नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उनके ख़्याल को रद्द नहीं किया है, बल्कि

उसकी ताईद के लिए मोजजों वाली तस्दीक का मुज़ाहरा फ़रमा कर उनको ला जवाब बना दिया।

6. तर्जुमानुल कुरआन हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ि० से सही सनद के साथ नक़ल किया गया है कि कुरआन में ज़िक्र किए गए रोया से मुराद 'ऐन रोया' (आंखों देखा) है न कि ख़्वाब या रूहानी मुशाहदा।

7. आयत 'व मा जअलनल रो यल्लती अरैना-क इल्ला फ़ित-न-तल-लि न्नासि, वश-श-ज-र-तु ल-मल ऊनतुन फ़िल कुरआन' में इसका ज़िक्र है कि इसरा का वाक़िया और जहन्नम के अन्दर सेढ के पेड़ का मौजूद होना और आग में न जलना ये दोनों वाक़िए इक्रार व इंकार की शक़्ल में ईमान व कुफ़्र के लिए आजमाइश हैं। पस जबकि महीनों की ग़िज़ा के लिए एक माद्दी कांटेदार पेड़ का मौजूद होना, हरा-भरा रहना और आग से न जलना मुशिरकों के इंकार की वजह बनी, बेशक इसरा के वाक़िए में भी आजमाइश का पहलू यही है कि नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने जिस ज़मान का मकान की कैदों को तोड़कर जिम्म के साथ और बेदारी की हालत में वह सैर कर ली, जिसका ज़िक्र सूरः बनी इसराईल और वन्नज्म में है और सही हदीसों में है और यक़ीनन मुशिरकों ने उसका इंकार किया, जिसके रद्द में कुरआन ने उसको 'इल्ला फ़ित-न-तल-लिन्नास' कह कर इतनी अहमियत दी, वरना तो नबियों के रूहानी मुशाहदों और ख़्वाब के वाक़िआत का इंकार तो उनके लिए एक आम बात थी।

8. इसरा का जब वाक़िया पेश आया तो सुबह को नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने जिन सहाबा रज़ि० की महफ़िल में इस वाक़िया का ज़िक्र किया, उन सबकी यही राय है कि वह वाक़िया जिस्म के साथ हुआ और बेदारी की हालत में हुआ। जैसे, हज़रत अनस रज़ि० हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ि० वग़ैरह और इसके ख़िलाफ़ नीचे लिखे लोगों में हज़रत अमीर मुआविया रज़ि० और हज़रत आइशा रज़ि० के नाम हैं जिनका इस्लाम या हरमे नबवी से ताल्लुक़ इस वाक़िए से वर्षों बाद मदीने की पाक ज़िदंगी से जुड़ा हुआ है, इसलिए वाक़िए के दिनों में मौजूद सहाबियों के क़ौल को तर्जीह दी जाएगी। मेराज के वाक़िए की तफ़सील अगरचे मुस्तनद और मक्बूल

रिवायतों और हदीसों से साबित है, लेकिन खुद कुरआन में (सूर: नज्म) में उन तफ्सीलों का खोलकर जिक्र हुआ है जिनको सूर: बनी इसराईल के इज्माल की तफ्सीर कहना चाहिए।

मेराज शरीफ से मुताल्लिक तफ्सील

बुखारी व मुस्लिम में नक़ल कि गई मशहूर और मक्बूल रिवायतों का मजमूई बयान

नबी अरकम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने एक सुबह इशार्द फ़रमाया—

‘पिछली रात मेरे खुदा ने मुझको अपने खास मज्द व शरफ़ से नवाज़ा, जिसकी तफ्सील यह है कि पिछली रात जबकि मैं सो रहा था, रात के एक हिस्से में ज़िब्रील आए और मुझको जगाया। अभी पूरी तरह जाग भी न पाया था कि हरमे काबा में उठा लाए और थोड़ी देर लेटा था कि पूरी तरह बेदार करके पहले तो मेरा सीना चाक किया और (मला-ए-आला के साथ) पूरी मुनासबत पैदा करने लिए दुनिया की कदूरतों को) धोया और ईमान व हिक्मत से भर दिया।

इसके बाद हरम के दरवाज़े पर लाया गया और वहां ज़िब्रील ने मेरी सवारी के लिए ख़च्चर से कुछ छोटा जानवर बर्राक़ पेश किया जो सफ़ेद रंग का था। जब मैं उस पर सवार होकर खाना हुआ तो उसकी हल्की चाल का हाल था कि निगाह की हद और रफ़्तार की हद बराबर नज़र आती थी कि अचानक बैतुल-मक्दिदस जा पहुंचे, यहां ज़िब्रील के इशारे पर बर्राक़ को मस्जिद के दरवाज़े के उस हिस्से से बांध दिया जिससे बनी-इसराईल के नबी मस्जिदे अक्सा की हाज़िरी पर अपनी सवारियां बांधा करते थे (और जो उस वक़्त यादगार के तौर पर कायम था) फिर मैं मस्जिदे अक्सा में दाख़िल हुआ और दो रक्अत नमाज़ पढ़ी।

अब यहां से मला-ए-आला की तैयारी शुरू हुई तो पहले तो ज़िब्रील ने

मेरे सामने दो प्याले पेश किए, उनमें एक शराब (ख़म्र) से लबालब भरा हुआ था और दूसरा दूध से। मैंने दूध का प्याला कुबूल किया और शराब का प्याला रद्द कर दिया।

जिब्रील ने यह देखकर कहा, आपने दूध का प्याला कुबूल करके फ़ितरत के दीन को कुबूल किया, यानी अल्लाह की ओर से आपको जो मैंने ये दो प्याले पेश किए, तो दरअसल यह तम्सील (मिसाल की शक़ल में) थी दीने फ़ितरत (प्राकृतिक दीन) और दीने ज़ैग़ (टेढ़ा वाला दीन) की, मगर आपने इस हक़ीक़त को पहचान लिया और दूध के प्याले को कुबूल फ़रमाया, जो दीन फ़ितरत की मिसाल की शक़ल थी, दीने फ़ितरत को कुबूल फ़रमा लिया।

इसके बाद मला-ए-अ़ाला का सफ़र शुरू हुआ और जिब्रील के साथ बुराक़ ने आसमान की ओर उड़ान भरी। जब हम पहले आसमान तक पहुंच गए तो जिब्रील ने निगहबान फ़रिश्तों से दरवाज़ा खोलने को कहा। निगहबान फ़रिश्तों ने मालूम किया, कौन है? जिब्रील ~~अल्लैहि~~ ने कहा, मैं जिब्रील हूँ। फ़रिश्ते ने मालूम किया, तुम्हारे साथ कौन है? जिब्रील ने जवाब दिया, मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम। फ़रिश्ते ने कहा, क्या ये बुलाने पर आए हैं? जिब्रील अलैहि० ने कहा, बेशक, फ़रिश्ते ने दरवाज़ा खोलते हुए कहा, ऐसी हस्ती का आना मुबारक हो।

जब हम अन्दर दाख़िल हुए तो हज़रत आदम से मुलाक़ात हुई। जिब्रील ने मेरी ओर मुखातब होकर कहा, यह आपके वालिद (और इंसानी नस्ल के मूरिसे अ़ाला) आदम ~~अल्लैहि~~ हैं। आप इनको सलाम कीजिए। मैंने उनको सलाम किया और उन्होंने सलाम का जवाब देते हुए फ़रमाया 'मरहबा सालेह बेटे और सालेह नबी को'।

इसके बाद दूसरे आसमान तक पहुंचे और पहले आसमान की तरह सवाल व जवाब होकर दरवाज़े में दाख़िल हुए तो वहां यहूया व ईसा ~~अल्लैहि~~ से मुलाक़ात हुई। जिब्रील ने उनका तआरुफ़ (परिचय) कराया और कहा कि आप सलाम में पहल कीजिए। मैंने सलाम किया और उन दोनों ने जवाब देते हुए फ़रमया, खुशआमदीद ऐ बरग़जीदा भाई और बरग़जीदा नबी।'

फिर तीसरे आसमान पर पहुंच कर यही मरहला पेश आया और जब मैं

तीसरे आसमान में दाखिल हुआ तो हज़रत यूसुफ़ عليه السلام से मुलाक़ात हुई। जिब्रील ने सलाम में पहल करने के लिए कहा और मेरे सलाम करने पर यूसुफ़ عليه السلام ने भी सलाम के जवाब के बाद यही कहा, 'खुशआमदीद ऐ बरगज़ीदा भाई और बरगज़ीदा नबी।'

इसके बाद चौथे आसमान पर इस सवाल के साथ हज़रत इदरीस عليه السلام से मुलाक़ात हुई और पांचवें आसमान पर हज़रत हारून से और छठे आसमान पर हज़रत मूसा عليه السلام से इसी तरह मुलाक़ात हुई, लेकिन जब मैं वहां से रवाना होने लगा तो हज़रत मूसा عليه السلام पर रिक़त तारी हो गई (रुहांसे हो गए) जब मैंने वजह मालूम की तो फ़रमाया, मुझे यह रश्क हुआ कि अल्लाह की ज़ोरदार हिक्मत ने ऐसी हस्ती को जो मेरे बाद भेजी गई यह शरफ़ दे दिया कि उसकी उम्मत मेरी उम्मत के मुक़ाबले में कई गुना जन्नत का फ़ैज़ हासिल करेगी। इसके बाद पिछले सवालों-जवाबों का मरहला तै होकर जब मैं सातवें आसमान पर पहुंचा तो हज़रत इब्राहीम عليه السلام से मुलाक़ात हुई जो बैतुल मामूर से पीठ लगाए बैठे थे और जिसमें हर दिन सत्तर हज़ार नए फ़रिश्ते (इबादत के लिए) दाख़िल होते हैं।

उन्होंने मेरे सलाम का जवाब देते हुए फ़रमाया, मुबारक, ऐ मेरे बरगज़ीदा बेटे और बरगज़ीदा नबी! यहां से फिर मुझे सिदरतुल मुंतहा तक पहुंचाया गया। (तुम्हारी बोल-चाल में यह एक इतिहा की बेरी का पेड़ है), जिसका फल (बेर) हिज़्र की ठेलिया के बराबर है और जिसके पत्ते हाथी के कान की तरह चौड़े हैं। इस पर अल्लाह के फ़रिश्ते जुन्नू की तरह बेतायदाद चमक रहे थे और खुदा की खास तजल्ली ने उसको हैरतनाक तौर पर रोशन और कैफ़ वाला बना दिया था।

इसी सफ़र में मैंने चार नहरों का भी मुआयना किया। इनमें से दो ज़ाहिर नज़र आती थीं और दो बातिन में बह रही थीं, यानी दो नहरें जिनका नाम नील और फ़रात है दुनिया के आसमान पर नज़र पड़ीं और दो नहरें जन्नत के अन्दर मौजूद पाई और इन सब चीज़ों के देखने के बाद मुहम्मद सल्ल० को शराब (ख़म्र), दूध और शहद के प्याले पेश किए गए और मैंने दूध को कुबूत् कर लिया। इस पर जिब्रील ने मुझे बशारत सुनाई कि आपने 'दीने' फ़ितरत को

कबूल कर लिया (यानी जो हर क्रिस्म की कदूरतों से पाक और शफ़फ़ाफ़ है, अमल में मीठा, और खुशगवार और नतीजे में हृद दर्जा मुफ़्फ़ीद और अहसन है।

फिर अल्लाह तआला का ख़िताब हुआ कि तुम पर रात व दिन में पचास नमाज़ें फ़र्ज़ करार दी गईं। जब मैं इन असरारे इलाही (ईश्वरीय मर्म) के देखने से फ़ारिग़ होकर नीचे उतरने लगा तो बीच में (हज़रत) मूसा ~~ऋ~~ से मुलाक़ात हो गई। उन्होंने मालूम किया, मेराज का क्या तोहफ़ा लाए हो? मैंने कहा, पचास नमाज़ें। उन्होंने फ़रमाया, तुम्हारी उम्मत इस भारी बोझ को सह न सकेगी। इसलिए वापस जाइए और कम करने की दरख़्वास्त कीजिए; क्योंकि मैं तुमसे पहले अपनी उम्मत को आजमा चुका हूँ।

चुनांचे अल्लाह के दरबार में हाज़िर हुआ और अल्लाह की ओर से पांच नमाज़ों की कमी हो गई। मूसा तक लौट कर आया और उन्होंने फिर इसरार किया कि अब भी ज़्यादा है और कम कराओ और मैं इसी तरह कई बार आता जाता रहा, यहां तक कि सिर्फ़ पांच नमाज़ें रह गईं, मगर मूसा मुतमइन न हुए और फ़रमाया कि मैं बनी इसराईल का काफ़ी तजुर्बा और उनकी इस्लाह कर चुका हूँ, इसलिए मुझे अन्दाज़ा है कि आपकी उम्मत यह भी न बरदाश्त कर सकेगी, इसलिए कम करने के लिए और कहिए। तब मैंने कहा, अब अर्ज़ करते शर्म आती है। मैं अब राज़ी-ब-रज़ा और फ़ैसले के सामने सरे नियाज़ झुकाता हूँ।

जब मैं यह कह कर चलने लगा तो निदा आई, हमने अपना फ़र्ज़ लागू कर दिया और अपने बन्दों के लिए कमी कर दी, यानी अल्लाह की मशीयत पहले ही यह फ़ैसला कर चुकी है कि मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वससल्लम की उम्मत पर अदा के तौर पर अगरचे पांच नमाज़ें फ़र्ज़ रहेंगी मगर उनका अज़्र व सवाब पचास ही के बराबर होगा और यह कमी हमारा फ़ज़ल व करम है।

इन्हीं रिवायतों में है कि मैंने जन्नत व जहन्नम को भी देखा और फिर देखने की तफ़्सील भी नक़ल की गई है।

मेराज में अल्लाह को देखना

क्या मेराज में नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वससल्लम ने ज़ाते अक़दस

के जमाले जहां आरा को बे-परदा देखा। सही रिवायतों में इस मसले के बारे में जो ताबीरें बयान की गई हैं उनसे यह मालूम होता है कि ज़रूर, फिर भी नबी अकरम ﷺ इस देखने की कैफ़ियत के हक़ीक़ी इज़हार से इसलिए मजबूर हैं कि दुनिया की ताबीरों में कोई ऐसी ताबीर मौजूद नहीं कि बुलन्द से बुलन्द मख़्लूक उसके जमाले जहांआरा की कैफ़ियत व हक़ीक़त को बयान कर सके। इसलिए आप वाक़िए का इक़रार करते हैं जैसा कि हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास की रिवायत में नक़ल हुआ है। 'मैंने उसको नूर देखा' और देखने के बावजूद जमाले जहान आरा की बयान न कर पाने वाली कैफ़ियत का फिर इन लफ़्ज़ों में भी इज़हार फ़रमाते जाते हैं 'नूरन इन्नी अराहु' इस नूरे हिक्मत का हक़ीक़ी तौर पर देखना कहां हो सकता था।

इज़ाफ़ा

मेराजे मुबारक से मुताल्लिक़ शेख़ सादी रह० के नातिया शेरों (पदों) में से जो शेअूर अहले ज़ौक़ के लिए एक सरमाया बना है, वह पेश किया जाता है—

अगर यकसर मूए बर तर परम

फ़रोगे तजल्ली ब सोज़द करम।

इस शेअूर (पद) में उस वक़्त की कैफ़ियत (स्थिति) बयान की गई है जब आपने हज़रत जिब्रील ﷺ से फ़रमाया कि ऐ वह्य लानेवाले! आगे बढ़ो, आगे आओ, तो हज़रत जिब्रील ﷺ ने फ़रमाया—

‘अगर अब मैं यहां से बाल बराबर भी आगे बढ़ूंगा तो तजल्ली-ए-इलाही की शिद्दत से मेरे बाल व पर जल जाएंगे।

हिजरत

हिजरत लफ़्ज़ 'हिज़्र' से लिया गया है, जिसके मानी छोड़ देने के हैं और इस्लाम के नज़दीक, 'अल्लाह के लिए वतन छोड़ देना' ही हिजरत कहलाता है।

हब्शा की हिजरत

अल्लाह के दीन पर जमाव और कलिमा-ए-हक़ की हिफ़ाज़त के लिए इस्लाम के फ़िदाकारों को वतन छोड़ देने की पहली आजमाइश उस वक़्त पेश आई, जबकि मक्का के कुफ़्फ़ार और कुरैशी मुशिरकों ने हर क्रिस्म के जुल्म व सितम का निशाना बना कर मुसलमानों के लिए उनके महबूब वतन (मक्का) में दीने हक़ पर क़ायम रहते हुए ज़िंदगी गुज़ारना नामुम्किन बना दिया और वतन छोड़ देने के अलावा कोई रास्ता बाक़ी न छोड़ा। पस मुट्ठी भर मुसलमानों पर मुशिरकों के बरदाश्त न करने के क़ाबिल जुल्म और मुसलमानों को हैरत में डाल देने वाले जमाव ने, दुनिया की तारीख़ में एक नया बाब बढ़ा दिया, जो हब्शा की हिजरत के नाम से जाना जाता है।

उस वक़्त हब्शा का फ़रमांरवा अस्हमा ईसाई था और ईसाई धर्म का आलिम भी, इसलिए नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मुसलमानों को इजाज़त दे दी कि वे अभी हब्शा को हिजरत कर जाएं, उम्मीद है कि अस्हमा की हुकूमत उनका स्वागत करेगी और वे बिना किसी रुकावट के दीने हक़ पर क़ायम रह सकेंगे और जमे भी रहेंगे।

हिजरत के उस दौर की नुमायां शख़्सियत हज़रत उस्मान रज़ि० और उनकी बीवी, अल्लाह के रसूल सल्ल० की लड़की हज़रत रुक़ैया रज़ि० हैं। नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इस मुक़द्दस जोड़े को विदा करते हुए इश़ाद फ़रमाया कि लूत और इब्राहीम عليهما السلام के बाद यह पहला जोड़ा है जो अल्लाह के रास्ते में हिजरत कर रहा है। फिर धीरे-धीरे यह तायदाद अस्सी तक पहुंच गई। इन मुहाजिरों में नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के चचेरे भाई हज़रत जाफ़र रज़ि० भी थे। यही वह निडर और हक़ बात कहने वाले शख्स हैं, जिन्होंने कुरैश के वफ़द की मुहाजिरों से मुताल्लिक़ वापसी की मांग के सिलसिले में इस्लाम पर बेमिसाल तक्ररीर फ़रमाई और जिसका ज़िक्र पीछे के पन्नों में हो चुका है।

मदीना की हिजरत की वजहें

सन् 11 नबवी हज के मौसम के मौके पर अल-हिरा और मिना के दर्मियान अक़बा नामी जगह में यसरिब (मदीना) के कुछ लोगों ने रात की तंहाई में नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के हक़ का पैग़ाम सुना और इस्लाम कुबूल कर लिया। ये छः या आठ आदमी थे। दूसरे साल कुछ पिछले और कुछ दूसरे लोगों ने जो तायदाद में बारह थे, ख़िदमत में हाज़िर होकर इस्लाम पर बातें कीं और मुसलमान हो गए। उनके नाम मुहम्मद बिन इसहाक़ की रिवायत के मुताबिक़ ये हैं।

अबू उमामा, औफ़ बिन हारिस, राफ़ेअ़ बिन मालिक, कुत्बा बिन आमिर मुअज़ बिन हर्स, ज़क्वान बिन अब्द कैस, ख़ालिद बिन मुख़ल्लद, उबादा बिन सामित, अब्बास बिन उबादा, अबुल हैसम, अदीम बिन साइमा।

हज़रत उबादा बिन सामित फ़रमाते हैं कि हमने पहले उक़बा में नीचे लिखी शर्तों के साथ इस्लाम पर बैअत की थी—

1. एक अल्लाह के सिवा किसी की परस्तिश नहीं करेंगे।
2. चोरी नहीं करेंगे।
3. ज़िना नहीं करेंगे।
4. अपनी औलाद को क़त्ल नहीं करेंगे।
5. किसी पर झूठी तोहमतें नहीं लगाएंगे और न किसी की ग़ीबत करेंगे।
6. और किसी भी अच्छी बात में आपकी (नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की) नाफ़रमानी नहीं करेंगे।

बैअत के बाद नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इशार्द फ़रमाया, अगर तुमने इन शर्तों को पूरा किया तो तुम्हारे लिए जन्नत की बशारत है और अगर तुम इन बुराइयों में से कोई भी कर बैठे, तो फिर तुम्हारा मामला खुदा के हाथ में है, चाहे बख़्श दे, चाहे जुर्म पर सज़ा दे।

इस वाक़िए ने मदीना के हर घर में इस्लाम की चर्चा शुरू कर दी और धीरे-धीरे हर ख़ानदान में इस्लामी सूरज की किरणें पहुंचने लगीं और नतीजा यह निकला कि औस व ख़ज़रज की तमाम शाख़ों में से 13 नबवी को तिहत्तर

मर्द और दो औरतें इसी अक्रबा नामी जगह पर हज के जमाने में, रात की अंधियारी में नुबूवत के सूरज की रोशनी से फ़ैज़ हासिल करने जा पहुंचे। नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम भी अपने चचा अब्बास को साथ लेकर वहां पहुंच गए और उनके सामने इस्लाम पर एक असरदार वाज़ फ़रमाया, जिससे उनके दिल ईमान की रोशनी से जगमग हो उठे। इसके बाद अंसारी और नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के दर्मियान इस मामले पर बातें हुई कि अगर जाते अक्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मदीना में तशरीफ़ ले आएंगे तो इस्लाम की इशाअत को भी फ़ायदा पहुंचे और हमको भी फ़ैज़ पाने का अच्छी तरह मौक़ा हाथ आए और इस सिलसिले में दोनों तरफ़ से मुहब्बत और ताल्लुक के क़ौल व क़रार भी हुए, जिनकी तफ़सील सीरत और तारीख़ की किताबों में ज़िक्र हो चुकी है। इन्हीं लोगों में से नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने बारह लोगों को चुनकर दावत व इस्लाम की तालीम के लिए अपना नक़ीब (प्रतिनिधि) मुकर्रर फ़रमाया।

यसरिब (मदीना) में इस्लाम की इशाअत ने जब इस तरह भारी तरक्की कर ली, तो अब अल्लाह की वहय ने नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के जुबानी इस्लाम के जॉनिसारों को इजाज़त दी कि वे मक्का के मुशिरक की पहुंचाई हौलनाक तकलीफ़ों से बच जाने के लिए मदीना हिजरत कर जाएं और खुदा के लिए वतन तर्क कर लें, चुनांचे धीरे-धीरे मुसलमानों ने मदीने की हिजरत शुरू कर दी। मक्का के मुशिरकों ने यह देखकर मुसलमानों को हिजरत से रोकने के लिए जुल्म व ज़्यादती में और बढ़ौतरी कर दी और हिजरत को रोकने के लिए मुम्किन ज़रियों को अख़्तियार किया, मगर इस्लाम के फ़िदाकारों का हिजरत का जज़्बा थमा नहीं, बल्कि वे कसरत के साथ माल, जान, आबरू और औलाद की ज़िंदगी को ख़तरे में डालकर अल्लाह की राह में अज़ीज वतन को ख़ैरबाद करते रहे। अक्सर ऐसा हुआ कि जब मक्का वालों ने उनके माल और बाल बच्चों के साथ ले जाने से रोक दिया तो इन जवानों ने सब्र आजमा ज़िंदगी के साथ हक़ के लिए हिजरत की खातिर उनको भी वहीं छोड़ा और अकेले अल्लाह के भरोसे पर मदीना खाना हो गए।

नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की हिजरत

अब मक्के के मशहूर मुसलमानों में से सिर्फ अबूबक्र रज़ि० और अली रज़ि० ही बाकी रह गए थे और बहुत थोड़ी सी तायदाद बाकी मुसलमानों की थी, तब कुरैश ने सोचा कि मुहम्मद ﷺ को क़त्ल करके इस्लाम को मिटा देने का इससे बेहतर दूसरा कोई मौका नहीं आएगा।

दारुन्नदवा

चुनांचे कुरैश के तमाम सरदार कुसई बिन किलाब के कायम किए हुए 'गवर्नमेंट हाऊस' (दारुन्नदवा) में जमा हुए और सरवरे आलम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के क़त्ल से मुताल्लिक मशिवरे की साजिशी मज्लिस कायम की। इस मज्लिस में उत्बा, शैबा, अबू सूफ़ियान, तुऐमा बिन अदी, जुबैर बिन मुतअम, हारिस बिन आमिर, नज़्र बिन हारिस, अबुत्तसजज़ी, रफ़आ बिन अस्वद, हकीम बिन हिज़ाम, अबू जहल, मुनब्बह बिन हज्जाज, उमैया बिन खल्फ़ जैसे कुरैश-सरदार मशिवरे में शरीक थे। मशिवरा शुरू होने वाला ही था कि एक शैतान शैख़ नज्दी दारुन्नदवा के दरवाज़े पर आ मौजूद हुआ और मज्लिस में शिक़त की ख़्वाहिश की। मक्का के कुरैश ने अपने ख़्याल का पाकर खुशी से इजाज़त दे दी और अब मशिवरा शुरू हुआ। मुख़ालिफ़ राय देने वालों ने अलग-अलग रायें दीं, लेकिन शैख़ नज्दी ने हर एक राय को ग़लत करार दिया, आख़िर में एक आदमी ने कहा, तमाम क़बीलों में से एक-एक जवान लीजिए और उनसे कहिए कि वे एक ही वक़्त में मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर हमला करके क़त्ल कर दें। इससे काम भी बन जाएगा और बनू अब्द मुनाफ़ किसी से बदला लेने की ज़ुरात भी न कर सकेंगे और सिर्फ़ खूबहा पर मामला तै हो जाएगा। शैख़ नज्दी ने इस राय को बहुत सराहा और यही राय तै पा गई।

इधर जिब्रील ﷺ ने अल्लाह की वह्य के ज़रिए जाते अक़दस के सामने इस पूरी दास्तान को कह सुनाया और अर्ज किया कि ख़ुदा की मर्जी यह है कि आप आज रात अपने बिस्तर पर हज़रत अली रज़ि० को सुलाकर ख़ुद

मदीना को हिजरत कर जाइए। चुनांचे अल्लाह की वह्य के मुताबिक आप कुरैश के नवजवानों के घेरे के बावजूद सूर: यासीन की कुछ आयतें 'फ़ अशैनाहुम फ़हुम ला मुब्सिरून०' पढ़ते हुए और 'शाहतिल वजूह' फ़रमाकर मुट्ठी भर खाक उन के सरों पर डालते हुए साफ़ बचकर निकल गए और हज़रत अबूबक्र रज़ि० के मकान पर जाकर और वह्य इलाही की खुशखबरी सुनाकर उनको साथ लिए मदीना को रवाना हो गए।

हिजरत का यह वाक़िया रबीउल-अव्वल 13 नबवी दो शंबा के दिन पेश आया। यह वाक़िया अपने खुसूसी हालात और मोज़ाना असरात के साथ बहुत मशहूर और सहीह हदीसों और रिवायतों में ज़िक्र किया गया है और सिद्दीके अकबर की सफ़रे हिजरत में साथ देने की अज़मत व जलालत के लिए रहती दुनिया तक कुरआन इस तरह कहता है—

तर्जुमा—'दूसरा था दो का, जबकि वे दोनों ग़ार में थे कि यह अपने रफ़ीक़ (हज़रत अबूबक्र) से कह रहा था, अबूबक्र! ग़म न खा, बेशक खुदा हमारे साथ है।' (9 : 39)

नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इस मौक़े पर अबूबक्र रज़ि० के मुखातब करते हुए 'ला तहज़न' फ़रमाया, 'ला तख़फ़' नहीं फ़रमाया, यह इसलिए कि 'ख़ौफ़' (भय) और हुज़्न (ग़म) के मानी में एक फ़र्क़ यह भी है कि आमतौर पर ख़ौफ़ अपने नुक़सान के सिलसिले में हुआ करता है। इससे यह मालूम हुआ कि अबूबक्र रज़ि० को अपनी जान और अपनी ज़ात का ख़ौफ़ नहीं था, बल्कि ज़ाते अक़दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की गिरफ़्तारी और मुशिरकों के हाथों जुल्म पहुंचने का ग़म उन पर सवार था। पस हुज़ूर कुदसी सिफ़ात ने अबूबक्र रज़ि० की इस हालत का अन्दाज़ा लगाया तो 'ला तख़फ़' की जगह 'ला जहज़न' इश़ाद फ़रमाया और साथ ही 'इन्नल्ला-ह मअना' फ़रमा कर अबूबक्र की रिफ़ाक़त की भक्बूलियत पर भी मुहर तस्दीक़ लगा दी। दुनिया अपने बुज़-दुश्मनी से जो चाहे कहे, लेकिन रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और अबूबक्र रज़ि० का 'सच्चा साथ' के लिए कुरआन के जुम्ला (वाक्य) 'इन्नल्ला-ह म-अ-ना' (बेशक अल्लाह हमारे साथ है) की हक़ीक़त को सारी कायनात भी मिल कर मिटाना चाहे, तो मिटा नहीं

सकती।

‘ज़ालि-क फ़ज़्लुल्लाहि यूतीहि मय-यशाउ वल्लाहु जुल फ़ज़िल अज़ीम०
(यह अल्लाह का फ़ज़ल है, जिसे चाहे दे, अल्लाह बड़े फ़ज़ल वाला है)

कुरआन मजीद और मदीने की हिजरत

मेराज के वाक़िए में गुज़र चुका है कि हक़ीक़तें इसरा तम्हीद थी हिजरत के शानदार वाक़िए की, यानी वाक़िए इसरा की अज़ीब बातें इस बात की तम्हीद थीं कि अब आपकी तब्लीगी ज़िंदगी का दौर एक दूसरा रुख अख़्तियार करने वाला है जो कामरानियों और कामियाबियों से भरपूर है, इसलिए बहुत ज़रूरी है कि पहले आपको क़िबलतैन (दोनों क़िबले—काबा और बैतुलमक्दिस) के रहस्यों को बता दिया जाए, ताकि मक्की ज़िंदगी जब मदनी ज़िंदगी में बदले तो इससे पहले नुबूवत व रिसालत के कमालात अपनी इतिहा को पहुंच चुके हों और आपका हिदायत का मंसब उस बुलन्द मुक्राम तक जा पहुंचा हो, जहां खुदा के सबसे बुलन्द मख़्लूक का भी गुज़र न हुआ हो, ताकि आप ‘अल-यौ-म अक-मलतु लकुम दीनकुम व अत-ममतु अलैकुम नेमती व रज़ीतु लकुमुल इस्ला-म दीना०’ के शरफ़ को हासिल कर सकें।

पस सूर: बनी इसराईल शुरू से लेकर आख़िर तक मदीना की हिजरत के ही राज़ों और भेदों से भरी हुई है। चुनांचे शुरू की आयतों में असरा का बयान है और फिर ज़िक्र आ गया है रुश्द व हिदायत के उसूल का और बीच में पिछली उम्मतों और उनके रहबरों—नबियों और रसूलों के तब्लीगी वाक़ियों का तज़्किरा गवाह और नज़ीर बनकर सामने आ जाता है और इस सिलसिले में ये राज़ के हुक्म और असरा का भी ज़िक्र होता जाता है और उसके बाद ‘रब्बि अद् ख़िलनी मद-ख़-ल सिदक़िन’ से मक्का से निकलने और मदीने की हिजरत का ज़िक्र शुरू हो जाता है और यह ज़िक्र सूर: के आख़िर तक जारी रहता है। चुनांचे हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ि० और हज़रत क़तादा रज़ि० ने लिखी गई हर दो आयत के मज़मूनों के सिलसिले को मदीना की हिजरत से ही जोड़ दिया है।

तर्जुमा—और क़रीब था कि वे (मुशिरक) अलबत्ता तुझको आजिज़ कर

देते (मक्का) की सरज़मीन से, ताकि तुझको उससे निकाल दें और ऐसी हालत में उनकी हलाकत बहुत थोड़े अर्से में सामने आ जाती।' (17 : 76)

यह मुशिरकों के हक़ में सख़्त किस्म का डरावा और धमकी है कि जब भी तुम्हारे जुल्मों की बदौलत नबी अकरम ﷺ को मदीना की हिजरत पेश आएगी, तुम्हारी इज्तिमाई ज़िंदगी की हलाकत करीब से करीबतर हो जाएगी, गोया मदीने की हिजरत, इस्लाम की हर दिन बढ़ती तरक्की और इस्लाम दुश्मनों की मौत व हलाकत के लिए लिखी तक्दीर है।

तर्जुमा—‘और कहिए, ऐ मेरे परवरदिगार! मुझको दाखिल कर (मदीना में) अच्छा दाखिला और निकाल मुझको (मक्का) से इज्जत के साथ और मेरे लिए अपनी तरफ़ से ज़बरदस्त मदद अता कर।' (17 : 80)

इसी तरह सूर: अनफ़ाल में कुछ वाक़ियों में मदीना की हिजरत का ज़िक्र मौजूद है।

तर्जुमा—और (वह वक़्त ज़िक्र के क़ाबिल है) जब इंकार करने वाले लोग तेरे खिलाफ़ साज़िश कर रहे थे, ताकि तुझको कैद कर लें या मार डालें या (मक्का से) निकाल दें वे अपनी साज़िशों में लगे हुए थे, खुदा उसके खिलाफ़ तदबीर कर चुका था, और अल्लाह तदबीर करने वालों में सबसे बेहतर तदबीर करने वाला है। (8 : 30)

और इसी तरह सूर: तौबा में सिद्दीक़े अकबर की अज़मत व जलालतेक़दर के तज़्करे के साथ-साथ मदीने की हिजरत का ज़िक्र इस तरह मौजूद है—

तर्जुमा—‘अगर तुम अल्लाह के रसूल की मदद नहीं करोगे तो (न करो) उसकी अल्लाह तआला ने उस वक़्त मदद फ़रमाई, जब उसको इंकार करने वालों ने (मक्का से) निकाला, जबकि वे दोनों (मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और अबूबक्र रज़ि०) ग़ार में (हिरा में छिपे हुए थे) जब (रसूल अपने साथी अबूबक्र से) कह रहा था, तू ग़म न खा, बेशक अल्लाह हमारे साथ है। पस अल्लाह ने उस पर अपना सकीना (तमानियत) उतारी और उससे ऐसी फ़ौज के ज़रिए क़ूवत पहुँचाई कि तुम उसको नहीं देख रहे थे और (इस तरह) खुदा ने काफ़िरों का कलिमा पस्त कर दिया और अल्लाह का कलिमा ही सबसे बुलन्द है और बेशक अल्लाह ग़ालिब और हिक्मत वाला है। (9 : 40)

हिजरत

इस्लाम में हिजरत एक अहम फ़रीज़ा है। कौन नहीं जानता कि इंसान के लिए वतन, माल (बाल-बच्चे कितने प्यारे होते हैं और इन्हीं कीमती पूंजी पर) अपनी दुनिया का ऐश, राहत, और ज़िंदगी को बाक़ी रखने का मदार (आधार) समझता है, लेकिन उसकी इंसानियत और इंसानियत की तरक्की ज़िंदगी के इन तमाम मक्सदों से भी एक बुलन्द मक्सद चाहती है और वह है कायनात पैदा करने वाले और रब्बुल-आलमीन की मारफ़त जिसकी शफ़क़त और मुहब्बत ने उसको यह रुख़ दिया। इसी मारफ़त का नाम 'दीन' और 'मिल्लत' है। इंसान जब इस हक़ीक़ी मक्सद को पा लेता है तो फिर उसकी निगाह में इस दर्जा फैलाव और बुलन्दी पैदा हो जाती है कि दुनिया की उन तमाम रंगीनियों और नैरंगियों का फैला हुआ दामन भी उसको तंग नज़र आता और वह इस तंगदामनी से अज़िज़ होकर आख़िरकार 'रूहानी ज़िंदगी' की गोद में ही तस्कीन पाता है और जब इस मरहले पर पहुँच जाता है तो फिर दीने हक़ के लिए वह दुनिया की तमाम कीमती पूंजी, तन-मन-धन यहां तक कि बाल-बच्चों को भी तज देता है और उस कीमती मोती को आंच नहीं आने देता, जिसका नाम 'ईमान' है। इसी हक़ीक़ते हाल को इस्लाम के मुक़द्दस 'लफ़्ज़ों' में हिजरत कहा जाता है।

इसी वजह से 'हिजरत' एक सच्चे ईमान वाले और मुख़्लिस मुसलमान और मुनाफ़िक़ और काफ़िर हस्ती के दर्मियान फ़र्क़ पैदा करने के लिए बेहतरीन 'कसौटी' और 'मेयार' है, साथ ही रूहानी फ़िज़ा का टेम्प्रेचर मालूम करने के लिए 'जिहाद' और हिजरत ही दो ऐसे पैमाने हैं जिनसे मोमिनों के ईमान की हारत का सही अन्दाज़ा हो जाता है।

कुरआन ने हिजरत की अहमियत पर जगह-जगह तवज्जोह दिलाई है और उसको ईमान व इस्लाम की कसौटी करार दिया है, जिसके लिए ये जगहें खास तौर से पढ़ने लायक़ हैं—

2 : 218, 3 : 194, 8 : 74, 9 : 20, 16 : 111, 23 : 58, 4 : 100,

16 : 41, 4 : 97

इस्लाम के शुरू में मक्का दारुल कुफ़र और दारुल हर्ब था, इसलिए वहां से मदीने को हिजरत कर जाना इस्लाम के सबसे अहम फ़र्जों में से था, ताकि मुसलमान मदीने में अमन व आफ़ियत के साथ इस्लाम के हुक्मों की पैरवी कर सकें और न सिर्फ़ इसी क्रदर बल्कि इस्लाम के बड़े मक़सद 'अग्र बिल मारुफ़' (भलाई का हुक्म देना) और नष्टि अनिल मुन्कर (बुराइयों से रोकना) की या दूसरे लफ़्जों में 'ऐ लाए कलि मतुल्लाह' (अल्लाह के कलिमा को बुलन्द करने) की सही ख़िदमत अंजाम दे सकें, मगर जब सन् 08 हिजरी में 'फ़त्हे मुबीन' (खुली जीत) ने मक्का की इस हालत को बदल कर 'दारुल इस्लाम' बना दिया तो अब हिजरत का यह ख़ास फ़र्ज ख़त्म हो गया और वह्य की जुबान में 'ला हिज-र-त बादल फ़त्हि' (फ़त्ह के बाद कोई हिजरत नहीं) फ़रमाकर इस हक़ीक़त का ए़लान कर दिया, अलबत्ता अब भी तौहीद के मर्कज़ से बेपनाह इश्क़ व मुहब्बत के जज़्बे में मक्का और मदीना हिजरत करके जाना अज़्र व सवाब का ज़रूरी हक़ पैदा करता है।

और अगर किसी जगह और किसी देश में भी मुसलमानों के लिए ईमानी ज़िंदगी के पेशेनज़र वही सूरते हाल पैदा हो जाए जो इस्लाम के शुरुआती दौर (मक्की दौर) में थी तो उस वक़्त मुसलमानों के लिए वही हुक्म लागू हो जाएंगे जो 'मक्की दौर' के मुताबिक़ कुरआन व हदीस और उससे निकले 'इस्लामी फ़िक्ह' में पाए जाते हैं और उसूली तौर पर उस वक़्त सिर्फ़ दो ही इस्लामी मांगें सामने आएंगी— या 'अल्लाह के रास्ते के जिहाद' के ज़रिए उस हालत में इंक़िलाब या फिर 'हिजरत' और किसी तरह भी यह जायज़ नहीं होगा कि मौजूदा हालत पर क़नाअत करके इत्मीनान की ज़िंदगी गुज़ारी जाए।

मक्का जब दारुल कुफ़र और दारुल हर्ब था तो उस वक़्त मदीना की हिजरत को इस्लाम ने किस दर्जा अहमियत दी और इस ऊंचे मक़सद के लिए मुसलमानों से किस दर्जा कुरबानी और नफ़्स के ईसार की मांग की, नीचे की आयतों से इस हक़ीक़त का अच्छी तरह अन्दाज़ा हो सकता है—

तर्जुमा— 'जिन लोगों ने हिजरत की और जो अपने घरों से निकाले गए और मेरी राह में सताए गए और मेरी राह में लड़े और मारे गए, मैं ज़रूर उनके गुनाह उनसे दूर कर दूंगा और उनको ऐसी जन्नतों में दाख़िल करूंगा जिनके

(पेड़ों के) नीचे नहरे जारी हैं। यह बदला है अल्लाह की तरफ से और अल्लाह के पास अच्छा बदला है।' (3 : 197)

तर्जुमा— 'जो लोग ईमान लाए और उन्होंने हिजरत की और अल्लाह की राह में अपने मालों और अपनी जानों से जिहाद किया, अल्लाह के नज़दीक बहुत बुलन्द रहने वाले हैं और वही कामियाब हैं।' (9 : 20)

तर्जुमा— 'बेशक जिनको फ़रिश्तों ने ऐसी हालत में मौत से दोचार किया कि वे अपनी जानों पर जुल्म कर रहे थे, उनसे (फ़रिश्तों ने) पूछा कि तुम किस हालत में थे। उन्होंने जवाब दिया कि हम ज़मीन में कमज़ोर थे। फ़रिश्तों ने कहा, क्या अल्लाह की ज़मीन फैली नहीं थी कि तुम उसमें हिजरत कर जाते, सो यही हैं जिनका ठिकाना जहन्नम है और वह बहुत बुरी जगह है, मगर वे कमज़ोर मर्द और औरतें और बच्चे जो हिजरत के लिए कोई हीला नहीं कर सकते और न (हिजरत के लिए) राह पाते हैं, तो ये वे हैं कि उम्मीद है अल्लाह तआला उनको माफ़ कर दे और अल्लाह बेशक माफ़ करने वाला बख़्शने वाला है।' (4 : 97-99)

लड़ाइयां

ग़ज़वा व सरीया

अल्लाह के रास्ते में जिहाद करने के सिलसिले में जिस फ़ौज के साथ नबी करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम नहीं थे, उसको सरीया और जिसमें आपने खुद शिर्कत फ़रमाई उसको 'ग़ज़वा' कहा गया है।

बद्र की लड़ाई (ग़ज़वा)

'बद्र' एक कुंए का नाम है जिसके ताल्लुक से यह घाटी भी बद्र कहलाती है। यह घाटी मक्का और मदीने के बीच मदीने से करीब मेन रोड पर वाक़े है। इस जगह वह ग़ज़वा पेश आया जिसको ग़ज़वा बद्र कहा जाता है। कुरआन ने जिन ग़ज़वों का ज़िक्र किया है उनमें इस ग़ज़वे को सबसे ज़्यादा नुमायां हैसियत हासिल है।

वाक़िया

मदीने की हिजरत मुशिरकों के लिए कुछ इस दर्जा भड़काने की वजह बनी और वह पैग़म्बर ﷺ और मुसलमानों को अपनी बरदाश्त न कर पाने लायक़ तक्लीफ़ पहुंचाने से महफूज़ देखकर कुछ इस दर्जा ख़फ़ा हुए कि अब उन्होंने तै कर लिया कि जिस क़ीमत पर भी हो सके मुसलमानों को मित्य देना चाहिए, चुनांचे इसके लिए उन्होंने हिजरत से फ़ौरन बाद ही लड़ाई और झड़पों की शुरूआत कर दी और बवात और अशीरा जैसी छोटी-छोटी लड़ाइयाँ इसी सिलसिले में पेश आई, मगर मक्का के मुशिरकों की नफ़रत की आग के लिए यह काफ़ी न था और वे चाहते थे कि किसी तरह मुसलमानों के साथ एक फ़ैसला कर देने वाली लड़ाई हो जाए।

इस इरादे को पूरा करने के लिए उन्होंने ज़रूरी समझा कि लड़ाई के सामान ज़्यादा से ज़्यादा मिल जाएं और इसके लिए बेहतरीन तरीक़ा यह सोचा कि अबू सुफ़ियान की सरबराही में तिजारत का एक क़ाफ़िला शाम (सीरिया) की मंडियों में जाए और भारी नफ़ा हासिल करके उससे लड़ाई का सामान जमा किया जाए और इस ज़ब्बे ने जोश व ख़रोश की यह कैफ़ियत पैदा कर दी कि जब तिजारत के क़ाफ़िले की तैयारी शुरू हुई तो मक्का के हर आदमी ने अपनी पूंजी का हिस्सा इस तिजारत के लिए पेश किया, यहां तक कि एक बुढ़िया ने भी अपनी मेहनत की मामूली पूंजी इस ख़िदमत के लिए पेश कर दी और लगभग सत्तर कुरैशियों पर मुश्तमिल यह क़ाफ़िला अबू सुफ़ियान की क्रियादत में शाम के लिए रवाना हो गया।

कुरैश का यह तिजारती क़ाफ़िला जब भारी मुनाफ़ा हासिल करके शाम से वापस होकर मक्का जा रहा था और बद्र के क़रीब होकर गुज़रा, तो नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को इल्म हुआ। आपने फ़ौरन सहाबा को जमा करके मश्विरा फ़रमाया, तब कुछ लोगों ने खुशी-खुशी उसके मुक़ाबले के लिए आमादगी ज़ाहिर की और कुछ ने यह समझ कर कि यह किसी अहम लड़ाई का मामला नहीं है, उसका पीछा करने पर तैयार होने का सबूत नहीं दिया।

मुसलमानों का यह लश्कर जो काफ़िले का पीछा करने निकला, लड़ाई के सामान से बेपरवा होकर मदीना से निकला। मशहूर रिवायत के मुताबिक़ उनकी तायदाद सिर्फ़ तीन सौ तेरह थी, जबकि अल्लाह का शुक्र है कि मदीना के अन्दर ही मुसलमानों की आबादी हजारों बालिग़ लोगों पर मुश्तमिल थी और कुछ तलवारें, दो तीन घोड़े, साठ ज़िरह (कवच) और सिर्फ़ साठ ऊंट उनके जंग का सामान था, जबकि मुसलमानों के पास बल्कि खुद निकलने वाले मुजाहिदों के पास मदीने में लड़ाई के ज़्यादा से ज़्यादा सामान और ऊंट-घोड़े मौजूद थे। गरज़ यह फ़ौज लड़ाई की फ़ौज न थी, बल्कि तौहीद के फ़िदाकारों का एक मुख़्तसर-सा काफ़िला था जो कुरैश के लड़ाई के सामान पर क़ब्ज़ा करके दुश्मन को बे-सामान बनाने निकला था।

अबू सुफ़ियान को मुसलमानों के पीछा करने का हाल मालूम हुआ तो घबराया और फ़ौरन ज़मज़म नामी एक आदमी को अजीर बनाकर (मुआवज़ा देकर) मक्का रवाना किया कि वह कुरैश को इस मामले की ख़बर दे और मदद तलब करे। कुरैश ने जब हक़ीक़ते हाल को सुना तो उनमें बहुत ज़्यादा जोश पैदा हो गया और कुरैश के तमाम सरदार लड़ाई पर तैयार होकर अपने-अपने लश्कर को लेकर निकल खड़े हुए और इस शान से निकले कि तायदाद में एक हजार थे नेज़े और तलवारें सजे, ढालें और बक़तर लगाए, गुर्र के नशे में झूमते हुए बद्र की ओर बढ़े।

इधर मुसलमान आगे बढ़ते हुए जब सफ़रा घाटी के करीब पहुंचे तो नबी अकरम ﷺ ने बसवस विन अम्र और अदी विन ज़ग़वा को जासूस बनाकर भेजा कि वे काफ़िले का हाल मालूम करके आएँ। इस मुद्दत में मुसलमान सफ़रा घाटी से गुज़र कर ज़फ़रान घाटी तक पहुंच चुके थे। यहां उतरे तो एक तरफ़ बसवस और अदी से यह मालूम हुआ कि बहुत जल्द अबूसुफ़ियान का काफ़िला बद्र पहुंचने वाला है। दूसरी ओर यह पता लगा कि मक्का से कुरैश एक हजार की फ़ौज लेकर पूरी शान के साथ मुसलमानों से लड़ने की गरज़ से बद्र की जानिब बढ़ रहे हैं।

बहरहाल मुसलमानों को जब ज़फ़रान घाटी में ये दोनों ख़बरें मिलीं, तो नबी अकरम ﷺ ने सहाबा से दोबारा मशिवरा ज़रूरी समझा, क्योंकि अब

मामला कठिन था। मुसलमान बेसर व सामान और थोड़ी तायदाद में थे और दुश्मन हर तरह वक्त के हथियारों से मुसल्लह, लड़ाई के भारी समान के साथ थे और तायदाद में तीन गुने से भी ज़्यादा और सीरते अंसार लिखने वालों के मुताबिक अगरचे अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ सफ़र करने पर हज़ार बार फ़ख़ करते। और साथ रहत थे लेकिन दूसरी अक्बा के वक्त वे नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ यह समझौता कर चके थे कि जब तक कुरैश या ग़ैर-कुरैश अपनी जानिब से मदीना पर हमलावर न हों, अंसार मदीना से बाहर निकल कर लड़ाई के लिए मजबूर नहीं होंगे।

मशिवरे के लिए ये अहम वजहें थीं जिनके पेशे नज़र नबी अकरम सल्ल० ने सहाबा से मशिवरा फ़रमाया, आपने इशार्द फ़रमाया कि दुश्मन सर पर है और काफ़िला करीब। अब बताओ क्या चाहते हो? लड़ाई लड़कर हक़ व बातिल का फ़ैसला या बग़ैर कांटा लगे काफ़िले पर कब्ज़ा?

मुसलमानों ने जब यह सुना तो कुछ ने फ़ितरी तौर पर लड़ने से मना किया और इस बारे में बोझ महसूस किया। उन्होंने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल०! हम लड़ने के इरादे से नहीं निकले थे, इसलिए बेसर व सामान हैं। हम तो अब भी यही चाहते हैं कि कि काफ़िले पर कब्ज़ा करके वापस चले जाएं। नबी अकरम ﷺ ने इस कमज़ोर राय को नापसन्द फ़रमाते हुए इशार्द फ़रमाया, काफ़िले को छोड़ दो, अब इस क़ौम के बारे में राय दो, जो तुम्हारे मुक़ाबले के लिए मक्के से निकल आई। कुछ लोगों ने जब दोबारा उज़्र किया, तो आपने फिर पहली बात लौटा दी। तब बड़े सहाबा रज़ि० अबूबक्र, उमर, अली रज़ि० समझ गए कि मुबारक मर्जी हक़ व बातिल की लड़ाई से जुड़ी हुई है, इसलिए उन्होंने वफ़ादारी के ज़ब्बे को ज़ाहिर करते हुए अर्ज किया कि हम हर तरह लड़ाई के लिए तैयार हैं और इस्लाम के लिए आपके पसीने की जगह खून बहाने को हाज़िर हैं और हज़रत मिक्कदाद रज़ि० ने तो इस तेज़ी से फ़िदाकाराना ज़ब्बे का इज़हार किया कि सहाबा को उनकी तक़रीर पर रश्क होने लगा, मगर आप अब भी अपनी मुबारक निगाह से किसी बात के तालिब नज़र आ रह थे।

यह देखकर अंसार में से हज़रत साद बिन मुआज रज़ि० खड़े हुए और

अर्ज किया, ऐ अल्लाह के रसूल ﷺ! क्या हम अंसार की तरफ़ इशारा है कि वे कुछ अर्ज करें और फिर अंसार की ओर से पूरी वफ़ादारी का यक़ीन दिलाते हुए बड़ी असरदार तक्ररीर फ़रमाई।

मुहाजिरों और अंसार की ये तक्ररीरें सुनकर सरवरे दो आलम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का मुबारक चेहरा खुशी से तमतमा उठा और आपने इर्शाद फ़रमाया—

अब अल्लाह के नाम पर आगे बढ़ो और बशारत हासिल करो, क्योंकि अल्लाह ने मुझसे वायदा फ़रमाया है कि दो गिरोह (क़ाफ़िला और मक्का के मुशिरकों का लश्कर) में से एक को तुम्हारे क़ब्ज़े में दे दूंगा और क़ाफ़िला नहीं, बल्कि मुशिरकों का लश्कर तुम्हारे क़ब्ज़े में दे दिया जाएगा और अल्लाह का वायदा बेशक सच्चा है और खुदा की क़सम! मैं लड़ाई से पहले अभी से क़ौम के सरदारों की क़त्लगाह को देख रहा हूँ और सहीह मुस्लिम में है कि आपने बद्र पहुंच कर ज़मीन पर हाथ रखकर बताया 'कि इस जगह फ़्लां कुरैशी मारा जाएगा और यहां फ़्लां क़त्ल होगा।'

पहले और आज के तमाम तफ़्सीर लिखने वाले, हदीस के माहिर और सीरत व तारीख़ के जानकार इस पर एक राय हैं कि यही वह मश्विरा है जिसके बारे में सूर: अन्फ़ाल की ये आयतें उतरी हैं—

तर्जुमा—('अन्फ़ाल' अल्लाह और रसूल के लिए हैं) इसलिए कि तेरे परवरदिगार ने तुझको हक़ के लिए तेरे घर में निकाला और हालत यह हो गई कि मुसलमानों का एक फ़रीक़ इस निकलने पर बोझ महसूस कर रहा था और वे तुझसे हक़ के बारे में हक़ के ज़ाहिर हो जाने के बाद झगड़ा कर रहे थे, गोया वे आंखों देखे मौत के मुंह में हंकाए जा रहे हैं और (यह वाक़िया उस वक़्त पेश आया) जबकि अल्लाह तुमको वायदा दे रहा था कि दोनों फ़रीक़ (क़ाफ़िला और मक्का के मुशिरकों की फ़ौज) में से एक फ़रीक़ को तुम्हारे क़ब्ज़े में दे देगा और तुम यह शुबहा करते थे कि तुमको वह गिरोह मिले, जिसके मुक़ाबले में कांटा भी न लगे और अल्लाह का इरादा यह था कि वह अपने वायदों के कलिमों से हक़ को साबित कर दिखाए और काफ़िरों की जड़ काट दे और इस तरह हक़को हक़ कर दे और बातिल को बातिल, अगरचे मुज्रिमों

को यह बात पसन्द न आए।'

(8 : 5-8)

अब मुसलमान आगे बढ़े और बद्र के करीब पहुंच कर मदीना की तरफ वाले रुख 'उदवतुहुनया' पर खेमे गाड़ कर ठहर गए और मक्का के मुशिरक आगे बढ़े तो बद्र पहुंच कर मदीने से दूर मक्का की तरफ वाले रुख 'उदवतुल क्रस्वा' पर उतरे और लड़ाई के मोर्चे का नक्शा इस तरह बना कि मुसलमान और मुशिरक आमने-सामने थे और अबू सुफियान का क़ाफ़िला उस वक़्त साहिल की तरफ नीचे-नीचे मक्का के मुशिरकों के लश्कर की पीठ पर से गुज़र रहा था कि जब वे चाहें तो मक्का के मुशिरकों की नुसरत व मदद के लिए बे-रोक-टोक आ सकते और कुमक का काम दे सकते हैं।

और फिर यह अजीब सूरतेहाल थी कि मुसलमानों का मोर्चा इतना ज्यादा रेतीला था कि इंसानों और चौपायों दोनों के क़दम रेत में धंसे जा रहे थे और चलना मुश्किल हो रहा था, मगर मुशिरकों का मोर्चा हमवार और पक्के फ़र्श की तरह था। गरज़ मुकम्मल दुश्मन तायदाद में तीन गुने से ज्यादा, लड़ाई के सामान में पूरी तरह मुकम्मल, आने जाने के साधनों पर पूरा इत्मीनान, रुकने की जगह बहुत उम्दा और इन तमाम बातों के साथ क़ाफ़िले को कुमक की आशा भी थी और खुद अपनी हालत यह कि तायदाद में बहुत कम, लड़ाई के हथियार नाम भर के लिए, न होने के बराबर, सवारियों की गिनती नाम के लिए, ठहरने की जगह इस दर्जा ख़राब और उन तमाम नासाज़गार हालात के साथ कुमक क़तई तौर पर जिसकी उम्मीद नहीं और हद यह कि दुश्मन पानी पर क़ाबिज़ और मुसलमान उससे महरूम।

ज़ाहिर है कि ऐसी हालत में अगर मुसलमानों को उनकी ज़ाती राय पर छोड़ दिया जाता तो उनकी अक्ल, ज़ाहिर को देखकर इसके अलावा और फ़ैसला कर सकती थी कि वे इस वक़्त को टाल दें और दुश्मन से किसी ऐसे दूसरे वक़्त के लिए जंग का क़ौल व क़रार करें कि वह दुश्मन की तरह हर हैसियत से जंग के लिए तैयार हों, चुनांचे इसी बुनियाद पर मुसलमानों ने ज़फ़रान घाटी में मश्विरा करते वक़्त शुरू में यही कहा था, मगर अल्लाह की व्हय के ज़रिए चूँकि नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को यह मालूम हो चुका था कि खुदा का यह वायदा कि तुमको 'और और नफ़ीर' दोनों में

से एक पर मुसल्लत कर दिया जाएगा, सिर्फ इस शकल में पूरा होने वाला है कि मुसलमान मुशिरकों के लश्कर (नफ़ीर) का मुक़ाबला करें और हक़ व बातिल की इस लड़ाई में मुसलमान कामियाब हों और मुशिरक नाकाम व नामुराद, इसलिए मुसलमानों ने पैग़म्बर ﷺ की मर्जी पाकर हर किस्म की बे-सर व सामानी के बावजूद खुद को पूरे शौक्र के साथ फ़िदाकारी के जज़्बे के साथ पेश कर दिया।

ऐसी सूरतेहाल का कुरआन ने इस असर भरे ढंग के साथ बयान किया है—

तर्जुमा—अगर तुम अल्लाह पर और उस (गैबी मदद) पर यक़ीन रखते हो, जो हमने फ़ैसले कर देने वाले दिन अपने बन्दे पर नाज़िल की थी, जबकि फ़ौजें एक दूसरे के मुक़ाबले में आ खड़ी हुई थीं तो चाहिए कि इस तक्सीम पर (यानी माले ग़नीमत की तै की हुई तक्सीम पर) कारबंद हो और अल्लाह हर चीज़ पर कुदरत रखता है। यह वह (बद्र का) दिन था कि तुम उधर क़रीब के नाके पर थे, इधर दुश्मन दूर के नाके पर और क़ाफ़िला तुमसे निचले हिस्से में था (यानी समुन्दर के किनारे-किनारे गुज़र रहा था) और अगर तुम आपस में लड़ाई की बात ठहराते तो ज़रूर लड़ाई के वक़्त के बारे में तुम इख़िलाफ़ करते, क्योंकि तुम चाहते हो कि किसी हालत में लड़ाई न हो और दुश्मन चाहता है कि ज़रूर लड़ाई हो। (यानी तुम्हें दुश्मनों की भारी तायदाद और अपनी बेसर व सामानी का अन्देशा था और क़ाफ़िले पर क़ब्ज़ा आसान नज़र आ रहा था और दुश्मन अपनी भारी तायदाद और साज़ व सामान के बल पर घमंड किए हुए था, अल्लाह ने दोनों फ़ौजों को भिड़ा दिया ताकि जो बात होने वाली थी, उसे कर दिखाए साथ ही इसलिए कि जिसे हलाक होना है, हुज्जत पूरी होने पर हलाक हो और जो ज़िंदा रहने वाला है, हुज्जत के बाद ज़िंदा रहे और बेशक अल्लाह सबकी सुनता और सब कुछ जानता है।' (8 : 41-42)

तर्जुमा—‘और अल्लाह तुम्हारी मदद कर चुका है बद्र की लड़ाई में और तुम कमज़ोर हालत में थे। पस अल्लाह से डरते रहो ताकि तुम शुक्रगुज़ार हो। (यह जब हुआ) कि तुम मुसलमानों से कह रहे थे कि क्या तुमको काफ़ी नहीं है कि तुम्हारा परवरदिगार तुम्हारी मदद को आसमान से उतरने वाले तीन हज़ार फ़रिश्ते भेजे। हां, बिला शुबहा अगर तुम सब करो और तक्वा का

रास्ता अख्तियार करो और फिर ऐसा हो कि दुश्मन उसी वक्त तुम पर चढ़ आए, तो तुम्हारा परवरदिगार (भी) पांच हजार निशान रखने वाले फरिश्तों से तुम्हारी मदद करेगा। अल्लाह ने यह सिर्फ इसलिए किया कि तुम्हारे लिए खुशखबरी हो, उसकी वजह से तुम्हारे दिल मुतमइन हो जाएं और मदद व नुसरत जो कुछ भी है, अल्लाह ही की तरफ से है, उसकी ताकत सब पर गालिब है और वह अपने तमाम कामों में हिक्मत रखने वाला है और साथ ही इसलिए ताकि हक के इंकार करने वालों की जमईयत व ताकत का एक हिस्सा बेकार कर दे, उन्हें इस दर्जा जलील व ख्वा र कर दे कि वे नामुराद होकर उलटे पांव फिर जाएं।

(3 : 124-127)

मदद की दुआ

गरज इस हालत में दोनों फ़रीकों ने लड़ाई के लिए लाइन बन्दी कर ली। तो पहले आपने मुसलमानों की सफ़ों को दुरुस्त फ़रमाया और फिर उस अरीश (खसपोश टूटी झोंपड़ी) के नीचे जाकर जो आपके लिए लड़ाई के मैदान में बना दी गई थी, अल्लाह के दरबार में गिड़गिड़ा-गिड़गिड़ा कर दुआ शुरू कर दी और अर्ज किया—

ऐ अल्लाह! तूने मुझ से जो वायदा (मदद का) फ़रमाया, उसको पूरा कर, ऐ अल्लाह! अगर ये मुट्ठी भर मुसलमान हलाक हो गए, तो फिर इस धरती पर कोई तेरा इबादतगुज़ार बाक़ी नहीं रहेगा।

सिद्दीक़े अकबर रज़ि० ने देखा तो करीब आए और अर्ज किया, 'खुदा के रसूल! बस कीजिए, अल्लाह तआला अपना वायदा ज़रूर पूरा करेगा।'

गैबी मदद

1. और आखिर यही हुआ भी कि हर क्रिस्म के नासाज़गार हालात और इस दर्जा कमजोरी के बावजूद कि किसी मुसलमान का इस लड़ाई से सही व सालिम बच कर निकल जाना खुद एक मोजज़ा होता, मुसलमानों को गैबी नुसरत व इमदाद ने बामुराद व कामियाब किया, फ़तह व नुसरत ने क़दम चूमे और दुनिया की तारीख़ का एक बेनज़ीर और हैरत में डाल देने वाला इक़िलाब

पेश कर दिया और कुरैश के मुशिरकों के तमाम सरदार और मशहूर योद्धा ही नहीं क़त्ल हुए, बल्कि शिर्क व कुप्र की इज्तिमाई ताक़त ही का खांत्मा हो गया।

यह ग़ैबी मदद क्या थी? कुरआन इसका जवाब कई आयतों में देता है—

तर्जुमा—‘मुसलमानों की निगाह में दुश्मनों की तायदाद असल तायदाद से कम नज़र आई, ताकि मुसलमान मर्ज़ब न हों और मुशिरकों की निगाहों में मुसलमान मुझी भर मालूम हुए, ताकि वे लड़ाई से जी न चुराएं और हक़ व बातिल का मारका टल न जाए और एक वक़्त में दोगुने मालूम हुए, ताकि मुसलमानों से मरऊब होकर रह जाएं।’ (8 : 43-44)

तर्जुमा—अभी हो चुका है तुमको एक नमूना, दो फ़ौज़ों में जो भिड़ी हुई थीं, एक फ़ौज़ है कि लड़ती है अल्लाह की राह में और दूसरी मुंकर है, ये उनको देखते हैं अपने दो बराबर, खुली आंखों से और अल्लाह ज़ोर देता है अपनी मदद का जिसको चाहे, उसी में ख़बरदार हो जावें जिनको आंख है।’ (आले इमरान 3 : 13)

2. मुसलमानों की दुआ पर पहले उनकी मदद एक हज़ार फ़रिश्तों से की गई।

तर्जुमा—जब तुम लगे फ़रियाद करने लगे रब से, तो पहुंचा तुम्हारी पुकार को कि मैं मदद भेजूंगा तुम्हारी हज़ार फ़रिश्ते जंगी पीछे आवें।’ (8 : 9)

और फिर यह तायदाद बढ़ाकर तीन हज़ार कर दी गई—

तर्जुमा—‘जब तू कहने लगा मुसलमानों को क्या तुमको क़िफ़ायत नहीं कि तुम्हारी मदद भेजे रब तुम्हारा तीन हज़ार फ़रिश्ते आसमान से उतरे (हुए) (3 : 124)

और अगर दुश्मन तुम पर एक साथ हमला कर दे तो हम तीन हज़ार के बजाए पांच हज़ार फ़रिश्तों से मदद करेंगे।’

तर्जुमा—‘अलबत्ता अगर तुम ठहरे रहो और परहेज़गारी करो और वे आवें तुम पर उसी दम, तो मदद भेजे तुम्हारा रब पांच हज़ार फ़रिश्ते पले हए घोड़ों पर।’ (3 : 125)

3. मुसलमानों पर ठीक लड़ाई के वक़्त ऊंच तारी कर दी, जिसके कुछ

मिनट बाद उनकी बेदारी ने उनमें एक नई ताजगी और नई रूह पैदा कर दी।

तर्जुमा—‘जिसने डाल दी तुम पर ऊँघ अपनी तरफ़ से तस्कीन को और उतारा तुम पर आसमान से पानी कि उससे तुमको पाक करे और दूर करे तुमसे शैतान की नजासत और मज़बूत गिरह दे तुम्हारे दिल पर और साबित करे तुम्हारे क़दम।’ (8 : 11)

4. आसमान से पानी बरसा कर मुसलमानों के लिए रेतीली ज़मीन को पक्के फ़र्श की तरह बना दिया और नीचे होने की वजह से होज़नुमा गढ़े में पानी इकट्ठा कर दिया और दुश्मनों को ज़मीन की कीचड़ की तरह दलदल बना डाला।

तर्जुमा—‘जब हुक्म भेजा तेरे रब ने फ़रिश्तों को कि मैं साथ हूँ तुम्हारे सो तुम दिल साबित करो मुसलमानों के मैं डाल दूंगा दिल में क़ाफ़िरों के दहशत, सो मारो और ऊपर गरदनों के और मारो उनके पोर-पोर।’ (8 : 12)

जंग का नतीजा

बहरहाल जंग का मारका बरपा हुआ और दोनों और से भिड़ गए तो एक दूसरे के मुक़ाबल में आकर ‘हल मिम बारिज़’ पुकारने और ललकारने लगे और फिर यकायक हुजूमी लड़ाई शुरू हो गई। मुसलमान एक तो जम कर लड़े, मगर दुआ से फ़रागत के बाद जब लड़ाई के मैदान में आकर नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने ‘शाहतिल वुजूह’ (चेहरे रूस्याह हों) पढ़ते हुए मुट्ठी भर खाक और कंकड़ियां दुश्मनों की तरफ़ फेंकी तो अल्लाह की मोज़ज़ाना कुदरत ने हवा के ज़रिए उसके ज़रें तमाम मुशिरकों की आंखों तक पहुंचा दिए और वे इस यकायक पेरशानी से बेचैन होकर आंखें मलने लगे और जंग जीत की शकल में बदल गई।

तर्जुमा—‘(ऐ मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) और तूने जब कंकड़ियां फेंकी, तो हक़ीक़त में तूने नहीं फेंकी, बल्कि अल्लाह ने फेंकीं थीं (क्योंकि इंसानी हाथ एक मुट्ठी से इतने बड़े लश्कर के हर आदमी को कंकड़ियां नहीं फेंक सकता था, पर जो कुछ हुआ, नबी के हाथ खुदा का मोज़ज़ा हुआ)।’ (8 : 17)

और देर नहीं लगी कि मुशिरकों के बड़े-बड़े आदमी मारे गए और दुश्मनों के पैर उखड़ गए। वे भागते थे, मगर भागने का मौक़ा न पाते थे, चुनांचे उनके सत्तर आदमी क़त्ल हुए और सत्तर गिरफ़्तार और बाक़ी ने भागने का रास्ता अख़्तियार किया।

मुसलमान अगरचे खुदा की नुसरत और उसके फ़ज़ल से कामियाब हुए और फ़त्ह व कामरानी के मालिक बने, फिर भी बाईस मुजाहिदों ने भी जामे शहादत नोश किया।

बद्र की लड़ाई ने दुनिया की तारीख़ का रुख़ बदल दिया

बद्र की लड़ाई तारीख़ और सीरत लिखने वालों से भी अगरचे अपनी तारीख़ी अहमियत का एतराफ़ कराती है और वे यह कहने पर मजबूर हो जाते हैं कि बद्र की लड़ाई एक हंगामी लड़ाई नहीं थी, बल्कि उसने मक्का के कुरैश की ताक़त का हमेशा के लिए ख़ात्मा कर दिया और मुसलमानों के लिए अल्लाह के कलिमे को बुलन्द करने की राहें खोल दीं।

उहुद की लड़ाई

उहुद मदीना मुनव्वरा के एक पहाड़ का नाम है। यही वह जगह है जहां शव्वाल 03 हि0 625 ई० में मुसलमानों और मुशिरकों के दर्मियान हक़ व बातिल की लड़ाई हुई। बद्र में जो घाव कुरैश को लग चुका था, उसका इंतिक़ाम लेने के लिए अबू सुफ़ियान की सरबराही में तीन हज़ार सूरमाओं की भारी फ़ौज मक्का से निकली और उहुद के सामने आकर जम गई।

नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को जब अबू सुफ़ियान की तैयारियों का हाल मालूम हुआ तो सहाबा रज़ि० से मशिवरा फ़रमाया, उम्र वाले और तजुर्बेकार सहाबा रज़ि० ने यह राय दी कि हमको बाहर निकल कर लड़ाई की ज़रूरत नहीं है, बल्कि फ़ायदेमंद तरीक़ा यह है कि हम मदीना के अन्दर ही रह कर दुश्मन का इन्तिज़ार करें और जब वह मदीने पर हमलावर हो तो उसका ज़ोरदार मुक़ाबला करें। हमारे इस तरीक़े में एक तो दुश्मन को हिम्मत न होगी कि मदीने पर हमलावर हो और अगर उसने क़दम उठाया तो बिला

शुबहा जबदस्त हार का सामना करके भागने का रास्ता अख्तियार करेगा, मगर उन सहाबा रज़ि० ने जो बद्र में शरीक नहीं हुए थे और जो बद्र की फ़ज़ीलत को इस वक़्त हासिल करना चाहते थे, यह राय पसन्द नहीं आई और नवजवानों ने भी उनका साथ दिया और अक्सरीयत की राय यह करार पाई कि हमको दुश्मनों का मुक़ाबला मैदान ही में करना चाहिए।

नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने जब अक्सरीयत का रुझान यह पाया तो उसका साथ दिया और मुबारक हुजरे में तशरीफ़ ले गए तो तजुर्बेकार और बड़े सहाबा रज़ि० ने अपने छोटों को उनकी राय पर मलामत की, उन्होंने नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के रुझान के खिलाफ़ क्यों अपनी आज़ाद राय से आपको परेशान किया। चुनांचे जब आप बाहर तशरीफ़ लाए तो उन नवजवानों और इस्लामी शमा के परवानों ने अपनी राय पर नदामत ज़ाहिर की और अर्ज किया कि आप मदीना ही के अन्दर दुश्मन का मुक़ाबला करें, यही मुनासिब है।

यह सुनकर हुजूरे अक्दस ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया, 'नबी की शान के यह खिलाफ़ है कि जब खुदा की राह में हथियार सज कर तैयार हो जाए तो फिर हक़ व बातिल के मारके के बग़ैर ही उनको उतार दे। अब खुदा का नाम लेकर मैदान में निकलो।'।

नबी अकरम ﷺ जब मदीने से निकले, तो साथ में एक हज़ार का लश्कर था। इस तश्कर में तीन सौ मुनाफ़िक़ अब्दुल्लाह बिन उबई की रहनुमाई में साथ थे। ये मदीना ही में मक्का के मुशिरकों के साथ साज़िश कर चुके थे कि मुख़्लिस मुसलमानों को बुज़दिल बनाने के लिए यह तरीक़ा अख्तियार करेंगे कि पहले मुसलमानों के लश्कर के साथ निकलेंगे और राह से ही उनसे कट कर मदीना वापस आ जाएंगे। चुनांचे मुनाफ़िक़ों का सरदार बहाना करके इस्लामी फ़ौज से कटकर जुदा हो गया और मदीना वापस आ गया कि जब नबी अकरम ﷺ ने हम जैसे तजुर्बेकारों की बात न मान कर अल्हड़ नवजवानों की राय को तर्जीह दी तो हमको क्या ज़रूरत है कि ख़ामख़ाह अपनी जानों को हलाकत में डालें।

मगर मुनाफ़िक़ों का मक्सद पूरा न हुआ और इस्लाम के इन फ़िदाकारों

पर उन के पलट जाने का क़तई तौर पर कोई असर न हुआ और इस्लाम के ऐसे जांबाज़ और निसार होने वालों पर असर ही क्या पड़ता जिनके बच्चों की जांबाज़ी और इस्लाम पर फ़िदाकारी का जज़्बा और वलवला यह हो कि नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मदीना से बाहर जब इस्लामी फ़ौज का जायज़ा लिया और कमसिन लड़कों को वापसी का हुक्म दिया, तो राफ़ेअ बिन ख़दीज जो, अभी नवउम्र ही थे, यह देखकर पंजों के बल खड़े हो गए कि लम्बे क़द के बनकर जंग के सिपाही रह सकें। चुनांचे उनकी तदबीर कारगर हो गई।

इसी तरह समुरा बिन जुन्दुब छोटी उम्र के समझे गए तो रोने लगे और अर्ज किया, 'ऐ अल्लाह के रसूल ﷺ! अगर राफ़ेअ लड़ाई में शरीक हो सकते हैं, तो मैं क्यों ख़ारिज किया जा रहा हूं, जबकि मैं राफ़ेअ को कुश्ती में पछाड़ दिया करता हूं।' आख़िर दोनों की कुश्ती कराई गई और समुरा ने राफ़ेअ को पछाड़ दिया और वे मुजाहिदीन में शामिल कर लिए गए, अलबत्ता मुसलमानों के दो क़बीले बनू सलमा, बनू हारिसा में कुछ बद-दिली सी पैदा हो चली थी, मगर फ़िदाकार मुसलमानों के जोश और वलवले को देखकर उनकी हिम्मत भी बुलन्द हो गई।

नबी अकरम ﷺ ने इस्लामी फ़ौज की इस तरह सफ़ें बनाई कि उहुद को पीछे ले लिया और पचास तीरंदाज़ों को हज़रत अब्दुल्लाह बिन जुबैर रज़ि० की कमान में पहाड़ की एक घाटी पर मुक़र्रर फ़रमा दिया कि हार-जीत किसी हाल में भी अपनी जगह से हरकत न करें, ताकि पीछे की ओर से दुश्मन हमलावर न हो सके।

अब लड़ाई शुरू हो गई और दोनों सफ़ें आमने-सामने खड़े होकर वीरता के जौहर दिखाने लगीं। अभी लड़ाई को कुछ ज़्यादा देर नहीं लगी थी कि मुसलमानों का पलड़ा भारी हो गया और मक्का के मुशिरकों का लश्कर बिखर कर भागने लगा। लड़नेवाले मुसलमानों ने जब ग़नीमत का माल जमा करने का इरादा किया तो तीरंदाज़ों से सब्र न हो सका और वे घाटी छोड़ने पर तैयार हो गए। कमान अफ़सर हज़रत अब्दुल्लाह बिन जुबैर रज़ि० ने बहुत रोका और फ़रमाया, नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के हुक्म की खिलाफ़वर्ज़ी

न करो, मगर उन्होंने यह कह कर जगह छोड़ दी कि आपका हुक्म लड़ाई तक था, जब लड़ाई खत्म हो गई तो खिलाफ़वर्जी कैसी?

ग़नीमत के हासिल करने के शौक़ ने उधर मुसलमान तीरंदाजों से जगह ख़ाली करा दी, इधर ख़ालिद बिन वलीद (जो अभी मुसलमान नहीं हुए थे) अपने जंगी दस्ते के साथ मैदान ख़ाली देखकर घाटी की जानिब से मुसलमानों पर टूट पड़े। अब मुसलमान घबराए और इस अचानक हमले से उनके पैर उखड़ गए और इस तरह यकायक जीत हार में बदल गई। अगरचे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के गिर्द व पेश अबूबक्र, उमर, अली, तलहा और जुबैर रज़िल्लाहु अन्हुम जैसे फ़िदाकार मौजूद थे, फिर भी मुसलमानों के भागने से दुश्मनों को मौक़ा मिल गया और एक शक्की अज़ली ने नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पत्थर खींचकर मारा जिससे आपका मुबारक दांत शहीद हो गया, आप पत्थर के सदमे से क़रीब की एक घाटी में गिर गए। अभी आप संभले भी न थे कि एक मुशिरक ने पुकारा दिया, 'इन-न मुहम्मदन क़द मा-त' (मुहम्मद सल्ल० का इंतिक़ाल हो गया) इस आवाज़ ने मुसलमानों में और ज़्यादा इतिशार और सख़्त बेचैनी पैदा कर दी, मगर मुसलमान फ़ौरन संभले और साबित क़दम सहाबा ने ललकारा कि अगर यह ख़बर सही है, तो अब हम ज़िंदा रहकर क्या करेंगे, आओ और जंग का फ़ैसला करके दम लो। इस हक़ की सदा ने मुसलमानों के दिल में ग़ैरत का जज़्बा पैदा किया। वे सब पलट पड़े और हमलावर होने की गरज़ से सिमट कर इकट्ठा हो गए, मगर जंग का नक्श़ा बदल चुका था और कुरैश अपनी कामियाबी पर नाज़ां होकर मैदान से अलग हो चुके थे। मुसलमानों ने आंख उठाकर देखा तो आप पर नज़र पड़ते ही उनके दिल में भी सुकून पैदा हो गया और परवानावार आपके गिर्द जमा हो गए। ग़ार में गिर जाने से ख़ूद सर में घुस गया और ज़िरह की कड़ियों की ज़द में चेहरा मुबारक और बाज़ुओं पर भी हल्के घाव आ गए थे। हज़रत अली और हज़रत फ़ातिमा रज़ि० ने ख़ूद को सर से निकाला और घावों को धोया और बोरिया जलाकर राख को घाव के भीतर भर दिया, जिससे खून बंद हो गया।

हज़रत हमज़ा रज़ि० की शहादत

इस ग़ज़वे में सत्तर मुसलमान शहीद और बहुत से ज़ख्मी हुए। नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सगे चचा, दूध शरीक भाई, बे-तक्लुफ़ दोस्त और जानिसार सहाबी हज़रत हमज़ा रज़ि० की शहादत इस वाक़िया का ज़बरदस्त सानहा है, वह्य की जुबान में उन्हें 'सैयदुश-शुहदा' का लक़ब अता फ़रमाया।

मक्का के मुशिरकों ने इस लड़ाई में परिंदों और खूँख़ार हैवानों की तरह मुरदा लाशों तक के नाक-कान काट डाले और पेट चाक करके दिल व जिगर को नेज़ों की अनी में छेद-छेद कर दिल का बुख़ार निकाला। अबू सुफ़ियान की, बीवी हिन्दा ने तो सैयदुश शुहदा का जिगर चाक करके दांतों से चबा डाला। हज़रत हमज़ा रज़ि० को हब्शी गुलाम वहशी ने शहीद किया था, जिसकी खुशी में हिन्दा ने उसको अपना सोने का हार अता किया।

अबू सुफ़ियान अपनी कामियाबी की मसरत में कह रहा था 'आला हुबलुन आला हुबलुन' (हुबल की जय हो, हुबल की जय हो) नबी अकरम ﷺ ने हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु से फ़रमाया, तुम इसके जवाब में यह पुकारो, अल्लाह, आला व अजल्ल, अल्लाहु आला व अजल्लु' (अल्लाह ही सबसे बुलंद व आला बुज़ुर्ग है)

अबू सुफ़ियान ने फिर तैश में आकर कहा, 'लनल उज़्ज़ा, वला उज़्ज़ा लकुम' [हमारी मददगार उज़्ज़ा देवी है और तुम्हारे पास उज़्ज़ा का हमसर (बराबर का) कोई नहीं है।]

हुजूरे अक़्दस ने इर्शाद फ़रमाया, 'ऐ उमर! तुम यह जवाब दो, 'अल्लाहु मौलाना, व ला मौला लकुम' (हमारा वाली व मददगार अल्लाह तआला है और तुम्हारा कोई भी मददगार नहीं है)

बहरहाल अबू सुफ़ियान यह कह कर कि अगले साल फिर बद्र में मारका होगा, अपनी फ़ौज लेकर वापस चला गया।

कुरआन और ग़ज़वा-ए-उहुद

मुसलमानों का ग़ज़वा उहुद (उहुद की लड़ाई) के लिए तैयार होना, मुनाफ़िकों का इस्लामी फ़ौज से जुदा होकर मुसलमानों में बिखराव पैदा करने की कोशिश करना, मुसलमानों की एक बात यह कि अल्लाह की मदद से कामियाब होना और फिर अपनी ग़लतकारी और मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लिम के हुक्म की खिलाफ़वर्जी के बदले में हार खा जाना और जीत का हार में बदल जाना, अल्लाह तआला का मुसलमानों की तसल्ली करना, इन तमाम बातों को कुरआन ने आले इमरान में थोड़ी तफ़सील के साथ बयान किया है, चुनांचे मुहम्मद बिन इसहाक से नक़ल किया गया है—

अल्लाह तआला ने उहुद की लड़ाई की शान में आले इमरान की साठ आयतें नाज़िल फ़रमाई हैं।

और इब्ने अबी हातिम ने मिस्वर बिन मख़रमा के वास्ते से रिवायत किया है कि वे कहते थे, मैंने अब्दुरहमान बिन औफ़ रज़ि० से अर्ज किया, आप उहुद की लड़ाई का अपना किस्सा बयान फ़रमाएं। उन्होंने फ़रमाया, तुम आले इमरान की एक सौ बीस आयतें पढ़ो तो तुमको सारा वाक़िया मालूम हो जाएगा। ये आयतें यहां से शुरू होकर 'इज़ ग़दव-त मिन अह्लिक....' पर ख़त्म होती हैं—

तर्जुमा—'और (ऐ पैग़म्बर! ज़िक्र के क़ाबिल है वह बात) जबकि तुम सुबह सवेरे अपने घर से निकले थे (और उहुद के मैदान में) लड़ाई के लिए मोर्चों पर मुसलमानों को बिठा रहे थे और अल्लाह सब कुछ सुननेवाला, जानने वाला है फिर जब ऐसा हुआ था कि तुममें से दो जमाअतों ने इरादा किया था कि हिम्मत हार दें (और वापस लौट चले) हालांकि अल्लाह मददगार था और जो ईमान रखने वाले हैं उनको चाहिए कि हर हाल में अल्लाह ही पर भरोसा रखें।

(3 : 121-122)

तर्जुमा—'और देखो, न तो हिम्मत हारो, न ग़मगीन हो, तुम ही सबसे बरतर व आला हो, बशर्ते कि तुम सच्चे मोमिन हो। अगर तुमने (उहुद) में ज़ख़्म खाया तो दूसरों को भी वैसे ही ज़ख़्म (बद्र में) लग चुके हैं। असल में ये (हार-जीत) के औकात हैं जिन्हें हम इंसानों में इधर-उधर फिराते रहते हैं।

इसके अलावा यह इसलिए था ताकि इस बात की आजमाइश हो जाए, कौन सच्चा ईमान रखने वाला है, कौन नहीं और इसलिए कि तुममें से एक गिरोह को (इन वाकियों और दिनों के नतीजों का) गवाह बना दे और यह ज़ाहिर है कि अल्लाह जुल्म करने वालों को दोस्त नहीं रखता। ' (3: 139-140)

अहज़ाब की लड़ाई (ख़ंदक़ की लड़ाई)

अहज़ाब की लड़ाई तमाम लड़ाइयों में ख़ास अहमियत रखती है और शक़्ल के एतबार से निराली है। इसलिए कि इस ग़ज़वे में मुसलमानों को तमाम काफ़िर जमाअतों से एक ही वक़्त में वास्ता पड़ा था और अरब क़बीले यहूदी और उनके मित्र सबके सब जमा होकर मुसलमानों को ख़त्म करने निकले थे और मदीने के अन्दर भी मुनाफ़िक़ों का गिरोह ख़ुफ़िया उनकी मदद कर रहा था। 'हिज़्ब' के मानी चूँकि गिरोह हैं और अहज़ाब उसकी जमा (यानी बहुवचन) है, इसलिए यह अहज़ाब की लड़ाई कहलाया और जबकि हज़रत सलमान रज़ि० के मश्वरे से मुसलमानों ने पहली बार ख़ंदक़ खोद कर मदीना को दुश्मन से महफूज़ रखने की तदबीर अपनायी, इसलिए इसको ख़ंदक़ का ग़ज़वा या ख़ंदक़ की लड़ाई भी कहते हैं।

यह ग़ज़वा शव्वाल 05 हि० मुताबिक़ फ़रवरी 629 ई० में पेश आया, जबकि अबू सुफ़ियान दस हज़ार लोगों पर मुश्तमिल भारी फ़ौज के साथ मदीने पर चढ़ाई के लिए मक्का से निकला। मुख़्तसर तौर पर वाकिआत की तफ़सील यह है कि जब नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को दुश्मनों की चलत-फिरत मालूम हुई, तो दस्तूर के मुताबिक़ आपने सहाबा से मश्विरा फ़रमाया। हज़रत सलमान फ़ारसी रज़ि० ने अर्ज किया, हम फ़ारस वालों का यह दस्तूर है कि ऐसे मौक़े पर ख़ंदक़ खोद कर दुश्मन से खुद को महफूज़ कर लेते हैं और उसको मजबूर बना देते हैं।

नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इस मश्वरे को कुबूल फ़रमा कर ख़ंदक़ खोदने का हुक्म दिया और कुदाल लेकर खुद भी शिर्कत फ़रमाई। इंसानी कायनात की तारीख़ में आक्रा और गुलाम, हाकिम और महकूम, अफ़सर और मातहत, मख़दूम और ख़ादिम के दर्मियान यह पहला मंज़र था

जो आंखों ने देखा और कानों ने सुना कि दो जहां के सरदार हाथ में कुदाल लिए तीन दिन के फ्रांके से पेट पर पत्थर बांधे, मुहाजिरीन व अंसार के साथ खंदक खोदने में बराबर का शरीक नज़र आता है, बल्कि एक सख्त पत्थर को रोक बन जाने पर जब सब सहाबा ने जोर लगाया और उसने अपनी जगह से हरकत न की और खिदमते अक्दस में इस वाकिए को पेश किया गया तो आपने 'बिस्मिल्लाह' कहकर कुदाल की एक चोट से उसके टुकड़े-टुकड़े कर दिए।

आपके साथ सहाबा भी तीन रात-दिन भूख से पेट पर पत्थर बांधे दीने हक़ की हिमायत और अल्लाह के कलिमे को बुलन्द करने लिए लगे हुए थे।

एक तरफ़ अगर 'हमने तीन दिन ऐसे गुज़ारे कि कुछ चखा नहीं था' का मुज़ाहरा था, तो दूसरी तरफ़ जुबान पर दुआ के ये 'कलिमे' जारी थे, 'ऐ खुदा! ऐश तो आखिरत का ऐश है। पस तू अंसार और मुहाजिरीन की मग़्फ़िरत फ़रमा', और जब तौहीद पर निसार होने वाले, शमा नुबूवत के परवाने यह सुनते तो वाकई परवानों की तरह पूरे जोश में आकर यह कह-कह कर कुरबान होने लगते—

'हम वह हैं जिन्होंने ज़िंदगी भर के लिए मुहम्मद ﷺ के हाथ पर जिहाद की बैअत कर ली है—

'ऐ अल्लाह! ख़ैर व नेकी तो आखिरत ही की है, पस तू अंसार और मुहाजिरों के दर्मियान अपनी बरकत नाज़िल फ़रमा।'

और बरा बिन आज़िब फ़रमाते हैं, कि ग़ज़वा-ए-खंदक में खुदा के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की हालत यह थी कि खंदक से मिट्टी उठकर इधर-उधर मुंतक़िल कर रहे थे और मुबारक जिस्म गर्द से अट रहा था और यह रजज (वीर-गाथा) पढ़ते जाते थे—

'खुदा की क्रसम, अगर खुदा की हिदायत रहनुमाई न करती तो हमको हिदायत नसीब होती और न सदक्का व नमाज़, पस ऐ खुदा! तू हम पर इत्मीनान उतार और जंग के मैदान में हमको साबित क़दम रख और जिन लोगों ने हम पर सरकशी करते हुए चढ़ाई की है, जब उन्होंने फ़िले का इरादा किया तो हमने इंकार कर दिया (उनको नाकाम कर दिया)। और तंघ जोश

के साथ 'अबैना' को ऊंची आवाज़ से कहते जाते थे।'

खदक्र की खुदाई का काम कुछ दिन जारी रहा और इस तरह दुश्मन से हिफाज़त का पूरी तरह सामान हो गया, लेकिन जब घेराव को बीस दिन हो गए, तो बनू कुरैज़ा के यहूदियों की अहद शिकनी और लगातार घेराव से कुछ उकताने और बेचैनी महसूस करने लगे। हुआ यह कि काफ़िरों की फ़ौज में एक आदमी नुऐम बिन मसऊद नख़ई था, यह गो अभी तक मुसलमान नहीं हुआ था, लेकिन उसके दिल में इस्लाम की सच्चाई घर कर चुकी थी, इसलिए उसने अपनी होशियारी से मक्का के मुशिरकों और मदीना के यहूदियों के दरमियान बे-एतमादी पैदा कर दी और लड़ाई के मामले में दोनों फ़रीक़ में ऐसा इख़्तिलाफ़ पैदा हो गया कि एक ने दूसरे के साथ मिलकर मुसलमानों के साथ लड़ाई करने से इंकार कर दिया और अभी मक्का के मुशिरक वापस भी न हुए थे कि कुदरत की तरफ़ से तेज़ हवाओं का ऐसा तूफ़ान उठा कि जिसने आन की आन में दुश्मन की तमाम फ़ौज को तहस-नहस कर दिया। ख़ेमे उखड़ कर गिग्ने लगे, चौपाए भड़क-भड़क कर भागने लगे और सारी फ़ौज में अबतरी फैल गई और दुश्मन के घेराव छोड़कर भागने का रास्ता अख़्तियार किया और इस तरह अल्लाह ने मुसलमानों को उनके फ़िले से नजात दी।

नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इसी मौक़े पर ईशाद फ़रमाया—

‘अल्लाह तअ़ाला की तरफ़ से मुझको पुरवा हवा के ज़रिए जीत अ़ता की गई और आद पछुवा हवा से हलाक किए गए थे।

नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को जब दुश्मन की ख़बर मालूम करने की ज़रूरत पेश आई थी तो तीन बार आपने मालूम किया कि इस ख़िदमत को कौन अंजाम देगा और तीनों बार हज़रत जुबैर बिन अ़व्वाम ने आगे बढ़ कर अर्ज किया, इस ख़िदमत के लिए मैं हाज़िर हूँ।

तब आपने ईशाद फ़रमाया— हर एक नबी के हवारी होते हैं और मेरे हवारी जुबैर रज़ि० हैं। और इसी मौक़े पर हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने यह दुआ फ़रमाई—

‘ऐ किताब (कुरआन) के नाज़िल करने वाले खुदा! ऐ जल्द हिसाब लेने वाले! तू मुशिरकों की जमाअत को हरा दे, ऐ अल्लाह! उनको भगादे और उन को डगमगा दे।’

‘कोई खुदा नहीं अल्लाह की ज़ात के सिवा, जो यक्ता व बेहमता है, उसने अपने लश्कर (मुसलमानों) को इज़्ज़त बख़्शी और अपने बन्दे की मदद की और यक्ता ज़ात अहज़ाब (सब जमाअतों) पर ग़ालिब है और उसके अलावा सब फ़ानी है।’

यही वह लड़ाई है जिसमें जिहाद की मशगूली की वजह से हुज़ूरे अकरम सल्ल० और सहाबा रज़ि० की अस्त्र की नमाज़ क़ज़ा हो गई और आपने मग़रिब के वक़्त दोनों नमाज़ों को अदा किया। (बुख़ारी, बाबुल जिहाद)

कुरआन और अहज़ाब की लड़ाई

हज़रत आइशा सिदीक्का रज़ि० फ़रमाती हैं—

‘यह आयत (जिस का तर्जुमा—नीचे दिया जा रहा है) ख़ंदक्र की लड़ाई के बारे में ही नाज़िल हुई—

तर्जुमा—‘और जब चढ़ आए (मुशिरक) तुम पर ऊपर की जानिब से और नीचे की जानिब से और जब फिर गई (दहशत की वजह से) आंखें और पहुंच गए दिल गलों तक (यानी कलेजे मुंह को आ गए) (33 : 10)

कुरआन में इसी ग़ज़वे के तअल्लुक से इस सूरः का नाम ही ‘अहज़ाब’ हो गया। इस सूरः के दूसरे और तीसरे रुकूअ में इसी वाक़िए का ज़िक्र है—

तर्जुमा—‘ऐ ईमान वालों, अल्लाह की नेमत को याद करो जो तुम पर उस वक़्त की गई जब तुम पर (मुशिरकों के) लश्कर चढ़े थे। पस हमने उन पर हवा को और ऐसी फ़ौजों को भेज दिया, जिनको तुम नहीं देख रहे थे और जो काम भी तुम करते हो, अल्लाह उन कामों को देखने वाला है—‘व कानल्लाहु अला कुल्लि शैइन क़दीर’ तक।’ (33 : 9-27)

हुदैबिया का वाकिया

हुदैबिया मक्का मुकर्रमा से जिद्दा की तरफ़ एक मजिल पर वाक्रे एक कुएं का नाम है। यही वह जगह है जिसके साथ 'फ़ल्हे मुबीन' (खुली जीत) और बैअते रिज़वान की मुक़द्दस तारीख़ जुड़ी हुई है।

6 हिजरी मुताबिक़ फ़रवरी 628 ई० माह ज़ीक्रादा, दिन सोमवार, वह मुबारक वक़्त था कि सरवरे दो आलम ﷺ चौदह सौ सहाबा के साथ उमरा की अदाएगी के इरादे से मक्का मुअज़्ज़मा रवाना हुए और जब जुल-हुलैफ़ा पहुंचे, तो कुरबानी के जानवरों के क़ालादा डाला और एहराम बांधा और बनी खुगायाके एक आदमी को जासूस बनाकर भेजा कि वह कुरैश के हालात का अन्दाज़ा लगाकर ख़बर दे।

हुज़ूरे अक़्दस सल्ल० जब ग़दीर अशतात पहुंचे तो जासूस ने आकर ख़बर दी कि कुरैश को आपकी आमद की इत्तिला हो चुकी है और वे क़बीलों को जमा करके मुकाबले की तैयारियों में लगे हैं, उनका इरादा है कि आप को मक्का मुकर्रमा में दाख़िल न होने दें।

नबी अकरम ﷺ ने सहाबा रज़ि० से मश्विरा फ़रमाया तो सिद्दीक़े अक़बर रज़ि० ने ज़र्ज किया—

‘ख़ुदा के रसूल ﷺ! हम तो बैतुल्लाह के इरादे से निकले हैं, लड़ाई या क़त्ल व क़िताल हमारा मक्सद नहीं है, इसलिए हम बैतुल्लाह की ज़ियारत को अपना मक्सद समझते हुए ज़रूर आगे बढ़ते रहेंगे और जो जमाअत ख़ामखाही रास्ते की रुकावट बनेगी, उससे मजबूरी में लड़ना पड़ेगा।

मश्विरे के बाद जाते अक़्दस ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया ‘अब ख़ुदा का माम ले कर बढ़े चलो।’ (बुख़ारी)

बैतुल्लाह की ज़ियारत करने वाले ख़ुदा के इश्क़ में चूर और बैतुल्लाह की ज़ियारत में मसरूर मक्का की तरफ़ क़दम बढ़ाए चल रहे थे कि अल्लाह के रसूल सल्ल० ने फ़रमाया, ख़ालिद बिन वलीद फ़ौज का दस्ता लिए अतीम में घात लगाए तुम्हारा इन्तिज़ार कर रहा है, इसलिए मुनासिब यह है कि इस ओर से कावा काट कर दाहिनी तरफ़ चलें और अचानक बेख़बरी में उनके

सामने पहुंच जाएं।

जब मुसलमान अचानक खालिद बिन वलीद की फ़ौजी टुकड़ी के सामने आ गए तो अपनी घात को नाकाम देखकर खालिद घबरा गए। दस्ते को लेकर तेज़ी के साथ मक्का के मुशिरकों के पास जा पहुंचे और उनको मुसलमानों के आने की ख़बर दी।

नबी अकरम ﷺ जब उस टीले पर पहुंचे कि उसके बाद घाटी में उतर कर मक्का पहुंच जाना था तो अचानक आपकी ऊंटनी क़सवा बैठ गई। सहाबा ने यह देखकर उसको चौंके दिए, भड़काया और कोशिश की किसी तरह उठ खड़ी हो, मगर वह न उठी, लोग जब बार-बार हल-हल (ऊंटनी को बिठाने के लिए बोलते हैं) कहकर थक गए तो कहने लगे, 'क़सवा नाफ़रमान हो गई।'।

नबी अकरम ﷺ ने यह सुना तो फ़रमाया, क़सवा हरगिज़ नाफ़रमान नहीं हुई और न यह इसकी आदत है, बल्कि इसको उस ख़ुदा ने रोक दिया था जिसने हाथी वालों को रोक दिया था यानी कुरैशे मक्का की बेहूदगी और जंगी ज़ेहनियत की वजह से चूँकि जंग की हालत पैदा हो गई है, इसलिए ख़ुदा की मर्ज़ी यह है कि हम उस वक़्त तक आगे न बढ़ें, जब तक कि काबे की हुर्मत का अह्द न कर लें।'।

चुनांचे इस इशार्द के बाद जाते अक़दस सल्लल्लाहु अलैहिं व सल्लम ने फ़रमाया, उस ख़ुदा की क़सम जिसके क़ब्जे में मेरी जान है, वे मुझसे जो भी ऐसी बात चाहेंगे कि उसमें अल्लाह की हुर्मतों की अज़मत उनके पेशेनज़र हो तो ज़रूर उसको पूरा करूंगा।

हुजुरे अक़दस ﷺ जब यह एलान फ़रमा चुके तो अब जो क़सवा को खड़ी होने के लिए डपटा, वह फ़ौरन खड़ी हो गई और चल पड़ी और हुदैबिया के मैदान में जा पहुंची।

जब बैतुल्लाह की ज़ियारत करने वालों का मुक़दस क़ाफ़िला हुदैबिया में ठहरा तो मश्वरे में यह तै पाया कि हज़रत उस्मान रज़ि० को मक्का भेजा जाए, ताकि वे मक्का के मुशिरकों पर यह वाज़ेह करें कि हमारा इरादा, बैतुल्लाह की ज़ियारत के अलावा और कुछ नहीं, इसलिए तुमको रोकना

मुनासिब नहीं है।

हज़रत उस्मान रज़ि० जब मक्का में दाखिल हुए और अबू सुफ़ियान वगैरह ने मिलकर बातचीत की तो उन्होंने एक न सुनी और कहने लगे कि तुम अगर चाहते हो कि अकेले बैतुल्लाह का तवाफ़ कर लो तो कर लो, वरना हम मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और उनके दूसरे साथियों को हरगिज़ मक्का में दाखिल नहीं होने देंगे।

हज़रत उस्मान रज़ि० ने फ़रमाया, यह तो मैं हरगिज़ नहीं कर सकता कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के बगैर तवाफ़ और उमरा को अदा कर लूं। कुरैश ने हज़रत उस्मान रज़ि० का यह इसरार देखा तो उनको वापस जाने से रोक लिया।

बैअते रिज़वान

यह ख़बर मुसलमानों तक इस तरह पहुंची कि उस्मान रज़ि० क़त्ल कर दिए गए। मुसलमानों के लिए यह ख़बर एक बहुत बड़ा सानहा था जिससे हर आदमी बेचैन और बेक्राबू हुआ जा रहा था। नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उसी वक़्त एक पेड़ के नीचे बैठकर मुसलमानों से इस बात पर बैअत ली कि मर जाएंगे, मगर हममें से कोई एक भी फ़रार का रास्ता नहीं आख़्तियार करेगा। नबी अकरम (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) जब सब मुसलमानों से बैअत ले चुके, तो उनमें हैरत में डालने वाला ज़बरदस्त जोश व ख़रोश पैदा हो गया, जिसकी ख़बर धीरे-धीरे मक्का भी पहुंच गई। मक्का के मुशिरक बहुत घबराए और ख़ौफ़ खाकर मुसलमानों तक यह ख़बर पहुंचाई कि उस्मान रज़ि० के क़त्ल की ख़बर ग़लत है और हज़रत उस्मान रज़ि० सही व सलामत हुदैबिया वापस तशरीफ़ ले आए।

चूँकि जिहाद की यह बैअत बहुत ही अहम और नाज़ुक मौक़े पर ली गई थी और मुसलमानों ने पूरे वलवले और जोश के साथ यह बैअत की थी, इसलिए अल्लाह तआला ने मुसलमानों की इस फ़िदाकारी की क़द्र फ़रमाई और सूरः फ़त्ह में रिज़ा और खुश्नूदी कर परवाना देकर उनके इस कारनामे को हमेशा के लिए जिंदा बना दिया और इसी हक़ीक़त के पेशेनज़र इस्लामी

तारीख में उसका नाम 'बैअते रिज़वान' करार पाया—

तर्जुमा—बेशक अल्लाह राजी हुआ ईमान वालों से जबकि वह तेरे हाथ पर उस पेड़ के नीचे बैअत करने लगे और जान लिया अल्लाह ने जो उनके जी में था, पस उतारा उन पर इत्मीनान व सुकून और इनाम में दिया उनको एक क़रीबी फ़त्ह।' (18 : 48)

मुसलमानों के फ़िदाकाराना जोश और वालिहाना जज़्बे ने मक्का के मुशिरकों पर ऐसा असर किया कि अब वे खुद सुलह पर तैयार हो गए और आगे बढ़कर सुहैल बिन उमर को सफ़ीर बनाकर भेजा कि वह नबी अकरम (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) से सुलह की शर्तें तै करें, ताकि यह झगड़ा ख़त्म हो जाए, मगर यह शर्त हर हाल में रहेगी कि मुसलमान इस साल नहीं बल्कि अगले साल उमरा करेंगे।

समझौता

सुहैल बिन उम्र जब मुसलमानों के कैम्प में पहुंचा तो हुज़ूरे अक्बदस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने सुलह के ख़्याल से पसंदीदगी की नज़र से देखा और लम्बी बात-चीत के बाद नीचे की धाराओं पर दोनों तरफ़ से समझौते कि तस्दीक़ व तौसीक़ अमल में आई।

1. इस साल मुसलमान मक्का में दाख़िल हुए बग़ैर ही वापस चले जाएं।
2. अगले साल मक्का में उमरे की ग़रज़ से इस तरह दाख़िल होंगे कि मामूली हिफ़ाज़ती हथियारों के अलावा कोई जंगी हथियार नहीं होगा और तलवारें नियाम के अन्दर ही रहेंगी और सिर्फ़ तीन दिन क्रियाम करेंगे और जब तक वे रहेंगे हम मक्का छोड़कर पहाड़ों पर चले जाएंगे।
3. समझौते की मुद्दत के अन्दर दोनों तरफ़ अम्र व आफ़्रियत के साथ आने-जाने का सिलसिला जारी रहेगा।
4. अगर कोई आदमी मक्का से अपने वली की इजाज़त के बग़ैर मुसलमान होकर भी मदीना चला जाएगा तो उसको वापस करना होगा और अगर मदीना से कोई मक्का भाग आएगा तो हम उसे वापस नहीं करेंगे।
5. तमाम क़बीले आज़ाद हैं कि दो फ़रीक़ में से जो जिसका दोस्त बनना

पसन्द करे, उसका दोस्त (हलीफ़) बन जाए।

6. यह समझौता दस साल तक कायम रहेगा और कोई फ़रीक़ इस मुद्दत के अन्दर इसकी ख़िलाफ़वर्ज़ी नहीं करेगा।

समझौता लिखते वक्त मुबारक नाम के साथ 'रसूलुल्लाह' लिखने पर सुहैल ने एतराज़ किया था।

आपने फ़रमाया कि 'है तो यह वाक़िया और ऐसी हक़ीक़त जिससे इन्कार नहीं किया जा सकता, लेकिन हमको चूँकि सुलह चाहिए है, इसलिए तुम अगर यह पसन्द नहीं करते, तो मुझको इसरार नहीं और यह फ़रमा कर आपने समझौता लिखने वाले हज़रत अली रज़ि० को हुक्म दिया कि वह इस जुम्ले को मिटा दें। हज़रत अली से यह कब मुम्किन था कि वह अपने हाथ से इस जुम्ले को मिटाएं, जिससे के ताल्लुक़ ने सारी कायनात में इन्क़िलाब पैदा करके अंधेरे को रोशनी से, शिर्क को ईमान से और जहल को इल्म (अज्ञानता को ज्ञान) से बदल डाला। नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने जब यह महसूस किया तो लिखे की जगह को मालूम करके अपने मुबारक हाथों से जुम्ले को मस्व कर दिया। (मिटा दिया)

समझौता जब मुकम्मल हो गया तो मुसलमानों ने यह महसूस किया कि इसमें हमारा पहलू कमज़ोर रहा और सूरतेहाल यह हो गई कि गोया हमने दब कर सुलह की है, यहां तक कि हज़रत उमर रज़ि० से ज़ब्त न हो सका और अल्लाह के कलिमे को बुलन्द करने और इस्लाम की सरबुलन्दी के ज़ब्बे ने मजबूर किया कि रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमते अक्वदस में अर्ज करें, 'ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल०! क्या यह हुदैबिया का वाक़िया 'फ़तह' है?

हुज़ूरे अक्वदस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया, हां, खुदा की क्रसम! बेशक यह 'फ़तह' है। (फ़तहुलबारी)

यह वाक़िया जो समझौते की धाराओं के एतबार से मुसलमानों के हक़ में देखने में हार और ज़िल्लत की वजह नज़र आता था 'खुली फ़तह' कैसे था, तो इसका जवाब बुजुर्ग हदीस के माहिरों की जुबानी सुनिए। हदीस व सीरत

के इमाम जुहरी रह० फ़रमाते हैं—

‘इस्लाम में जो शानदार फ़त्हें गिनी गई हैं, उनमें सबसे पहली ‘बड़ी फ़त्ह’ हुदैबिया की सुलह है, इसलिए कि इससे पहले बराबर कुफ़्फ़ार और मुशिरकों से जंग व पैकार का सिलसिला जारी था और जब यह ‘सुलह’ अमल में आ गई, तो इसकी वजह से हर दो फ़रीक़ को अन्म व इत्मीनान के साथ एक दूसरे से मिलने और बातें करने का मौक़ा मयस्सर आया और ख़्यालों के तबादले की आज़ादी नसीब हुई। नतीजा यह निकला कि जो आदमी भी इस्लाम को अपनी सही अक्ल से जांचता और उसकी हक़ीक़त पर ग़ौर करता, उसके लिए इसके अलावा कोई चारा बाक़ी न रहता था कि वह तुरन्त इस्लाम कुबूल कर ले। चुनांचे इन दो सालों में (जब तक समझौते पर अमल रहा और मुशिरकों ने अपनी तरफ़ से उसकी ख़िलाफ़वर्ज़ी नहीं की) लोग इतने ज़्यादा मुसलमान हुए कि इससे पहले की पूरी मुदत में उतने ही या उससे कम मुसलमान हुए थे।

(फ़त्हुलबारी)

और हाफ़िज़ इब्ने हजर अस्क़लानी इर्शाद फ़रमाते हैं—

‘इस जगह ‘फ़त्हे मुबीन’ से मुराद हुदैबिया का वाक़िया है। हुदैबिया के समझौते ने हक़ीक़त में ‘फ़त्हे मुबीन’ ‘फत्ह मक्का’ के लिए रास्ता खोल दिया, यह इसलिए कि जब लड़ाई का ख़तरा बीच में जाता रहा और अम्र और इत्मीनान की शक़ल पैदा हुई तो मक्का और मदीना के दर्मियान आने-जाने का सिलसिला बिना किसी ख़ौफ़ और ख़तरे के होने लगा और हज़रत ख़ालिद बिन वलीद और हज़रत अम्र बिन आस रज़ि० जैसे बहादुर और सूझ-बूझ वाले लोगों का इस्लाम कुबूल करना इसी सुलह का कारनामा है और तरक्की की यही वजहें धीरे-धीरे ‘मक्का की जीत’ की वजह बनी।

(फ़त्हुलबारी)

और इब्ने हिशाम और इमाम जुहरी तौजीह की ताईद करते हुए लिखते हैं—

‘जुहरी के क़ौल के मुताबिक़ ताईद इस हक़ीक़ते हाल से अच्छी तरह हो जाती है कि हुदैबिया के वाक़िए में जब नबी अकरम ﷺ निकले हैं तो चौदह सौ मुसलमान साथ थे और दो साल बाद जब मक्का जीतने के लिए निकले हैं, तो दस हज़ार की तायदाद थी।

(फ़त्हुलबारी)

अल-फ़तुल आज़म (महान विजय)

रमज़ानुल मुबारक 08 हिजरी मुताबिक़ जनवरी 630 ई० में 'फ़तहे मक्का' (मक्का विजय) का शानदार वाक़िया पेश आया।

इस वाक़िए की तारीख़ी हैसियत यह है कि हुदैबिया के समझौते में यह तै पा गया था कि अरब के क़बीले इसके लिए आज़ाद होंगे कि नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और कुरैश में से जिसके भी हलीफ़ (मित्र) बनना चाहे, बन जाएं। जब समझौते पर दोनों तरफ़ से दस्तख़त हो गए तो फ़ौरन अरब के क़बीला ख़ुज़ाआ ने एलान किया कि हम मुसलमानों के हलीफ़ होना पसन्द करते हैं और क़बीला बनूबक्र ने कहा कि हम कुरैश के हलीफ़ बनना चाहते हैं और दोनों क़बीले इस तरह अलग-अलग दो जमाअतों के हलीफ़ हो गए।

लगभग डेढ़ साल तो समझौते पर हर दो तरफ़ से पूरी तरह अमल होता रहा, लेकिन डेढ़ साल बाद एक नया वाक़िया पेश आया। वह यह कि बनी ख़ुज़ाआ और बनूबक्र के दर्मियान अर्से से लड़ाई-झगड़े का सिलसिला जारी रह चुका था, जो इस दर्मियानी मुद्दत में अगरचे बन्द रहा, मगर अचानक किसी बात पर फिर लड़ाई छिड़ गई और बनू-बक्र एक रात को ज़नीरा नामी जगह में बनू ख़ुज़ाआ पर जा चढ़े। कुरैश को जब यह मालूम हुआ तो उन्होंने आपस में मश्विरा किया और कहने लगे, रात का वक़्त है और मुसलमान यहां से बहुत दूर हैं, आज मौक़ा है कि बनी ख़ुज़ाआ को पैग़म्बरे इस्लाम ﷺ के हलीफ़ होने का मज़ा चखाया जाए। चुनांचे उन्होंने भी बनी-बक्र का साथ देते हुए बनी ख़ुज़ाआ को तहे तेग़ करना शुरू कर दिया।

अम्र बिन सालिम ने जब यह हाल देखा तो एक वक़द लेकर दरबारे कुदसी में इस्तिगासा किया और बनी ख़ुज़ाआ की दर्दनाक हालत को पेश करते हुए मदद का तालिब हुआ। नबी अकरम सल्लल्लाहु व सल्लम ने इशार्द फ़रमाया— खुदा की क्रसम मैं जिस चीज़ को अपनी ज़ात से रोकूंगा, तुमको भी उससे ज़रूर महफ़ूज़ रखूंगा।'

इधर कुरैश को यह इल्म हुआ तो वे दौड़े, अपनी बेजा हरकत पर शर्मिंदा

हुए और उन्होंने अबू सुफ़ियान को इस बात पर लगाया कि वह मदीना जाए और मुसलमानों के भड़कने को दूर करने की यह तदबीर करे कि कुरैश चाहते हैं कि पिछले समझौते की मुदत में और इज़ाफ़ा हो जाए और नए सिरे से समझौते की तौसीक हो जाए।

अबू सुफ़ियान मदीना पहुंच कर सबसे पहले अपनी बेटी उम्मे हबीबा रज़ि० के घर में दाख़िल हुए, जो नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की जीवन-साथी थीं, अबू सुफ़ियान ने ज्यों ही इरादा किया कि नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के बिछे हुए बिस्तर पर बैठ जाए, उम्मे हबीबा रज़ि० ने फ़ौरन उसको समेट दिया और कहने लगीं, 'बाप! यह अल्लाह के नबी का बिछौना है।'

अबू सुफ़ियान ने कहा कि 'फिर क्या हुआ, मैं तेरा बाप हूं।'

उम्मे हबीबा ने कहा, यह सही है, मगर तू मुश्रिक है और खुदा के पैग़म्बर का पाक बिस्तर।

अब सुफ़ियान अगरचे वहां से उस वक़्त बड़बड़ाता हुआ चला गया, मगर हैरत में डाल देने वाले इस वाक़िए ने उसकी आंखें खोल दीं और वह समझा कि हक़ीक़ते हाल क्या है?

गरज़ वह दरबारे अक़्दस में हाज़िर हुआ और अर्ज़-मारूज़ करने लगा। आपने मालूम किया, यह तज्दीद व तौसीक की क्या ज़रूरत है? क्या कोई नया वाक़िया पेश आ गया है? अबू सुफ़ियान ने अर्ज़ किया, नहीं, कोई नई बात नहीं है।

तब आपने इर्शाद फ़रमाया कि तुम मुतमइन रहो कि हम अपने अह्द पर क़ायम हैं।

अबू सुफ़ियान इस जवाब को सुनकर मुतमइन न हुआ। इसलिए कि वह हक़ीक़ते हाल को छिपाकर झूठ बोल चुका था और चाहता था कि इस तरह नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को धोखा देकर अपना मक़्सद पूरा कर ले। लेकिन इसी साफ़ और सच्चे जवाब ने ओस डाल दी और उसका मक़्सद पूरा न हो सका, तब उसने सिद्दीक़े अक़बर रज़ि०, फ़ारूक़े आज़म

रज़ि० अली हैदर रज़ि० की खिदमत में हाज़िर होकर अलग-अलग बातें कीं और चाहा कि मामला कुरैश की ख्वाहिश के मुताबिक़ तै हो जाए, लेकिन उसकी मुराद पूरी न हो सकी और बिना किसी कामियाबी के नाकाम व नामुराद मक्का वापस गया।

नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने सिदीक़े अकबर रज़ि० को सूरतेहाल की ख़बर दी। हज़रत सिदीक़े अकबर अबूबक्र सिदीक़ रज़ि० ने अर्ज़ किया—

‘ऐ अल्लाह के रसूल ﷺ! हमारे और कुरैश के दर्मियान तो समझौता है?’ आप ने इर्शाद फ़रमाया, ‘मगर कुरैश ने खुद अह्द तोड़ा है।’

अब जिहाद की तैयारी शुरू हुई मगर आमतौर से किसी को मालूम न हो सका कि किस तरफ़ का इरादा है। आपने मदीना के आसपास आम ऐलान कर दिया कि जो आदमी भी अल्लाह और उसके रसूल पर ईमान रखता है, वह रमज़ान तक मदीना पहुंच जाए। आप पूरी कोशिश फ़रमा रहे थे कि किसी तरह हमारी तैयारी का हाल कुरैश को न मालूम हो पाए, क्योंकि आपकी दिली ख्वाहिश यह थी कि मक्के में लड़ाई न छिड़ने पाए और कुरैश रौब खाकर हार मान लें कि इसी बीच एक हादसा पेश आ गया।

हातिब बिन अबी बलतआ का वाक़िया

हातिब बिन अबी बलतआ एक बट्टी सहाबी थे, उनके बाल-बच्चे मक्का ही में थे कि यह सूरतेहाल पेश आ गई। उन्होंने यह ख़्याल करते हुए कि इस वाक़िए का हाल बहरहाल मुशिरकों को मालूम हो ही जाएगा, सो अगर मैं भी मक्का के कुरैश को इसकी इत्तिला कर दूं तो हमारा (मुसलमानों का) कोई नुक़सान भी नहीं होगा और मैं उनकी हमदर्दी हासिल करके अपने घर वालों को उनके ख़तरों से भी महफ़ूज़ रख सकूंगा। मक्का के मुशिरकों के नाम एक ख़त लिख दिया। नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को अल्लाह की व्ह्य के ज़रिए दइ मालूम हो गया और आपने हज़रत अली रज़ि०, मिक्दाद रज़ि० और जुबैर रज़ि० को इस पर लगाया कि रौज़ा खाख़ जाओ, वहां ऊंट पर सवार औरत मिलेगी वह जासूस है। उसके पास एक ख़त है, वह उससे

छीन लो। ये लोग रोज़ा ख़ख़ पहुंचे तो औरत को मौजूद पाया, उन्होंने ख़त की मांग की, औरत ने इन्कार किया कि मेरे पास कोई ख़त नहीं है, मगर जब उन्होंने जामा तलाशी की धमकी दी तो मजबूर होकर उसने सर के बालों में से एक परचा निकाल कर दिया।

यह परचा जब नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में पेश हुआ तो वह हज़रत हातिब का ख़त था। नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उनकी जानिब मुखातब होकर इर्शाद फ़रमाया, हातिब! यह क्या? हातिब ने अर्ज किया, 'ऐ अल्लाह के रसूल! जल्दी न फ़रमाएं, यह ख़त मैंने इसलिए लिखा कि मैं जानता हूं कि मदीने में मुक़्रीम सब मुहाजिरों का मक्का के कुरैशियों के साथ किसी न किसी क्रिस्म का रिश्ता और ताल्लुक है। एक मैं ही ऐसा हूं जिसका उनके साथ कोई रिश्ता नहीं है तो मैंने यह सिर्फ़ इस यक़ीन पर किया है कि मुसलमानों को तो इस बात से कोई नुक़सान नहीं होगा और मैं इस तरह कुरैश की हमदर्दी हासिल करके अपने बाल-बच्चों को महफ़ूज़ कर सकूंगा। ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल०! खुदा की क़सम मैंने हरगिज़ यह काम इर्तिदाद और कुप्प की नीयत से नहीं किया, मैं अब भी इस्लाम का शैदाई और फ़िदाई हूं।'

नबी अकरम ﷺ ने यह सुनकर इर्शाद फ़रमाया, 'हातिब ने तुम्हारे सामने सच-सच बात कह दी।'

हज़रत उमर रज़ि० ने अर्ज किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल०! मुझको इजाज़त दीजिए कि मैं मुनाफ़िक़ की गरदन उड़ा दूं।

नबी अकरम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया, 'हातिब बद्र के मुजाहिद हैं और अल्लाह ने बद्र में शरीक होने वालों के लिए यह इर्शाद फ़रमाया है कि, 'अमिलू माशेतुम फ़क़द ग़फ़रतु लकुम' हातिब के वाक़िए पर ही कुरआन की यह आयत उतरी—

तर्जुमा—ऐ ईमान वालो! न पकड़ो मेरे और अपने दुश्मनों को दोस्त, उनको पैग़ाम भेजते हो दोस्ती से और वे इंकारी हुए हैं उससे जो तुमको आया सच्चा दीन, निकालते हैं रसूल को और तुमको इस पर कि तुम मानो अल्लाह अपने रब को, अगर तुम निकले हो लड़ाई को मेरी राह में और चाह कर मेरी

रज़ामंदी, तुम उनको छिपे पैग़ाम भेजते हो दोस्ती के और मुझको ख़ूब मालूम है जो छुपाया तुमने और जो खोला तुमने और जो कोई तुम में यह काम करे वह भूला सीधी राह।' (60 : 1)

बहरहाल रमज़ान की शुरुआती तारीखें थीं कि जाते अक्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम दस हज़ार जॉनिसारों के साथ मक्का की तरफ़ चले। आप जब क़दीद और अस्फ़ान के दर्मियान क़दीद तक पहुंचे तो देखा कि मुसलमानों पर रोज़े की सख़्ती हद से आगे बढ़ रही है, तब आपने पानी तलब फ़रमाया और मज्मे के सामने पिया (बुख़ारी), ताकि सहाबा देख लें और समझ लें कि सफ़र और फिर जिहाद के मौक़े पर इफ़्तार की इजाज़त है और कुरआन की दी हुई रुख़्सत का यही मतलब है।

इसी सफ़र में जाते अक्दस के चचा हज़रत अब्बास रज़ि० मुसलमान होकर ख़िदमत में हाज़िर हुए। आपने हुक्म दिया कि बाल-बच्चों को मदीना भेज दो और तुम हमारे साथ रहो।

इस्लामी लश्कर जब मक्का के क़रीब पहुंचा तो अबू सुफ़ियान छुपकर लश्कर का सही अन्दाज़ा कर रहे थे कि अचानक मुसलमानों ने गिरफ़्तार करके ख़िदमते अक्दस में पेश किया। आपने अबू सुफ़ियान पर करम की निगाह डालते हुए माफ़ कर दिया और कैद से आज़ाद कर दिया। अबू सुफ़ियान 'दुनियाओं के लिए रहमत' सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का यह बर्ताव देखा तो फ़ौरन इस्लाम कुबूल कर लिया। इसी तरह अब्दुल्लाह बिन अबी उमैया भी इस्लाम के शैदाई बनकर ख़िदमत में हाज़िर हुए और इश़ाद फ़रमाया—

'तुम पर आज कोई इलज़ाम नहीं। अल्लाह तुम्हारा कुसूर माफ़ करे और वह सब मेहरबानों से ज़्यादा मेहरबान है।' (6 : 92)

नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़रत अब्बास रज़ि० से फ़रमाया कि अबू सुफ़ियान को अभी मक्का वापस न जाने दो और सामने की पहाड़ी पर ले जाओ, ताकि वह मुसलमानों की ताक़त व शौक़त का अन्दाज़ा कर सके।

अबू सुफ़ियान और हज़रत अब्बास पहाड़ी पर खड़े हुए इस्लामी लश्कर का नज़ारा कर रहे थे और मुहाजिरीन और अंसार क़बीलों के जुदा-जुदा लश्कर

अपने परचम लहराते हुए सामने से गुज़र रहे थे और अबू सुफ़ियान उनको देख-देख कर मुतास्सिर हो रहे थे कि अंसारी क़बीले का एक लश्कर पास से गुज़रा। उस लश्कर का झंडा हज़रत साद बिन उबादा रज़ि० के हाथ में था। उन्होंने अबू सुफ़ियान को देखा तो जोश में आकर कहने लगे—

आज का दिन जंग का दिन है, आज काबा में जंग हलाल है। अबू सुफ़ियान की नस्ली अस्बियत फड़क उठी और कहने लगा 'ऐ अ़ब्बास! लड़ाई का दिन मुबारक हो।

जब सब लश्कर इसी तरह गुज़र गए तो आख़िर में एक छोटी-सी जमाअत के साथ सरवरे दो आलम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम सामने से गुज़रे। हज़रत जुबैर रज़ि० के हाथ में झंडा था और आगे-आगे चल रहे थे। अबू सुफ़ियान की निगाह जब नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर पड़ी तो उसने ख़िदमते अक़्दस में साद और अपने दर्मियान की बात-चीत का हाल सुनाया, यह सुन कर ज़ाते अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इशार्द फ़रमाया—

'साद ने झूठ कहा (आज का दिन वह दिन है कि अल्लाह तआला उसमें काबा की अज़मत को बुलन्द करेगा और काबे पर ग़िलाफ़ चढ़ाया जाएगा।)' और यह फ़रमा कर हज़रत साद को बरतरफ़ करके झंडे और फ़ौज की सरबराही हज़रत साद के बेटे को अता कर दी।

अब नबी अकरम ﷺ ने हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ि० को हुक्म फ़रमाया कि तुम मक्का के निचले हिस्से की तरफ़ से दाख़िल होना और किसी को क़त्ल न करना, हां अगर कोई खुद आगे बढ़े तो बचाव की इजाज़त है और खुद मक्का के बुलन्द हिस्से से दाख़िल हुए। हज़रत ख़ालिद रज़ि० से कुछ क़बीले के लोग टकराए, इसलिए उनके हाथों कुछ क़त्ल हो गए, लेकिन नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम बिना किसी रुकावट के मक्का में दाख़िल हुए। (बुख़ारी)

जब मुरज़ज़हरान में हज़रत अ़ब्बास रज़ि० ने अबू सुफ़ियान को इस्लाम कुबूल करने के लिए ख़िदमते अक़्दस में पेश किया था, तो यह भी अर्ज किया था, ऐ अल्लाह के रसूल ﷺ! अबू सुफ़ियान में फ़ख़्र का मादा है, इसलिए

इसको अगर कोई इम्तियाजी हैसियत नसीब हो जाए तो बेहतर हो।

आपने इर्शाद फ़रमाया, जो आदमी अबू सुफ़ियान के मकान में दाख़िल हो जाएगा, उसको अमान है।

गरज़ जब आप इज़ज़त व इजलाल के साथ मक्का में दाख़िल हुए तो उस वक़्त यह एलान करा दिया—

1. जो मकान बन्द करके बैठ जाए, उसको अम्र है,
2. जो अबू सुफ़ियान के मकान में पनाह ले, उसको अमान है,
3. जो मस्जिदे हराम में पनाह ले, उसको अमान है।

अलबत्ता इस आम अमान और ज़बरदस्त माफ़ी के रवैए से कुछ ऐसी हस्तियों को अलग कर दिया जिन्होंने इस्लाम के खिलाफ़ बड़ा ज़हर फैलाया था और मुसलमानों को तक्लीफ़ पहुंचाने में बहुत ज़्यादा हिस्सा लिया था, मगर उनमें से अक्सर उस वक़्त छुप गए या फ़रार हो गए और धीरे-धीरे आम माफ़ी का फ़यदा उठा कर मुसलमान हो गए।

नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मक्का में इस शान से दाख़िल हुए कि आपका झंडा सफ़ेद रंग का था और उसमें बना उक्राब काले रंग का था। सर पर मग़फ़र ओढ़े और उस पर स्याह अमामा बांधे हुए थे और सूर: 'इन्ना फ़तहना' पढ़ते हुए आयतों को ऊंची आवाज़ से दोहराते जाते थे और तवाज़ो का यह आलम था कि अल्लाह के दरबार में खुशूअ-खुजूअ के साथ ऊंटनी पर इस दर्जा झुके हुए थे कि मुबारक चेहरा ऊंटनी की पीठ को मस कर रहा था।

बुत-शिकनी

जब नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मस्जिदे हराम में दाख़िल हुए तो सबसे पहले आपने हुक्म फ़रमाया कि काबे से तमाम बुत निकाल कर फेंक दिए जाएं और दीवारों पर जो तस्वीरें नक्श हैं, वे मिटा दी जाएं। चुनाचे जब तीन सौ साठ बुतों के टूटने का वक़्त आया तो दो मूर्तियां हज़रत इब्राहीम और हज़रत इस्माईल  की इस हालत में सामने आईं कि उनके हाथों में बांसो के तीर थे। आपने देखकर फ़रमाया खुदा उन मुशिरकों को मारे, ये ख़ूब

जानते थे कि ये दोनों मुक़द्दस हस्तियां उस नापाक बात से मुक़द्दस और पाक थीं।

नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने काबे का तवाफ़ किया और फिर बुतों के सामने खड़े होकर लकड़ी से उनको चरका देते जाते और पढ़ते जाते थे, 'हक़ आ पहुंचा और बातिल उड़ गया और बातिल न किसी चीज़ को पैदा करे और न फेरकर लाए (यानी बातिल तो खुद फ़ना होने के लिए है)

रहमतुल्लिल आलमीन की शान

काबा जब बुतों की नजासत और नापाकी से पाक कर दिया गया, तो नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने काबे में दाख़िल हुए और उसके कोनों में घूमते हुए ऊंची आवाज़ से तक्बीरें कहते रहे और नमाज़ नफ़ल अदा की, बाहर तशरीफ़ लाए तो इब्राहीमी मुसल्ले पर जाकर नमाज़ अदा की। जब आप और सहाबा वुजू फ़रमा रहे थे तो मुशरिक दांतों तले उंगली दबाए हैरान खड़े थे कि इस कामियाबी और कामरानी के बावजूद न फ़ल्ह की कामरानी का जुनून है, न किब्र व नख़वत का इज़हार, बल्कि दरबारे इलाही में बन्दगी के इज़हार के लिए हर एक मुजाहिद बेताब नज़र आता है। बेशक यह 'बादशाही' नहीं है, बल्कि दूसरी ही कोई दुनिया है। (तारीख़े इब्ने कसीर 3-256)

आप नमाज़ से फ़ारिग़ हुए तो हज़रत अली रज़ि० ने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल०! आप हमारे लिए दो ख़िदमतें 'हिजाबा और सक़ाया' जमा फ़रमा दीजिए और काबा की कुंजी हमारे हवाले कर दीजिए, लेकिन नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़रत अली रज़ि० के कई बार अर्ज़ करने का कोई जवाब न दिया और बार-बार यही फ़रमाया, उस्मान बिन तलहा कहां हैं? जब उस्मान हाज़िर हुए तो आपने काबा की कुंजी उनके हवाले करते हुए इश़ाद फ़रमाया, लो यह अपनी कुंजी आज का दिन भलाई और अह्द के वफ़ा का दिन है।'

नोट : यह वही उस्मान बिन तलहा हैं जिन्होंने, काबा की कुंजी तलब करने पर नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को नहीं दी थी, लेकिन

रहमतुल्लिल आलमीन के दरबार में बदला लेना बे-हक्रीकत चीज़ थी, इसलिए आपने उन्हीं के खानदान में यह सआदत बाक़ी रहने दी। यही खानदान आज तक काबे का मुजाविर और शेबी के लक़ब से मशहूर है, क्योंकि हज़रत उस्मान बिन तलहा रज़ि० बनू शेबा में से थे।

अब लोग इन्तिज़ार में थे कि देखिए जिन मुशिरकों ने वर्षों तक आपको और मुसलमानों को हर क्रिस्म की तक्लीफ़ पहुंचाई, मुसीबतों में डाला, आज उनके साथ क्या मामला होता है?

आपने तमाम कुरैशी क़ैदियों को हाज़िर होने का हुक्म दिया, जब सब ख़िदमते अक्दस में पेश हुए तो आपने मालूम किया, 'ऐ कुरैशी गिरोह! तुम्हारा क्या ख़्याल है कि मैं तुम्हारे साथ किस तरह पेश आऊं? उन्होंने जवाब दिया, हम आपसे ख़ैर की उम्मीद रखते हैं।'

आपने यह सुनकर इशार्द फ़रमाया, 'जाओ तुम सब आज़ाद हो।'

यह सुनना था कि न सिर्फ़ कुरैश बल्कि हर सोचने-समझने वाले के सामने यह हक़ीक़त रोशन हो गई कि बादशाह और पैग़म्बर की ज़िंदगी का इम्तियाज़ी निशान क्या है? पैग़म्बराना ज़िंदगी न ज़ाती अदावत व कदूरत को कोई वक़अत देती है और न उसका ग़ैज़ व ग़ज़ब नफ़्सानी ख़्वाहिश के ताबे होता है। एक नबी को अगर सब्र आज़मा हद तक तक्लीफ़ दी जाए और फिर तक्लीफ़ देने वाला आदमी रहम की तलब करे तो वह बेशक 'माफ़ी और करम' ही पाएगा और अच्छे अख़लाक़ के हर पहलू का मुज़ाहरा देखेगा, चुनांचे इस दर्मियान में जब एक आदमी लरज़ता, कांपता आपकी ख़िदमत में हाज़िर हुआ तो आपने मिठास भरे लेहजे में इशार्द फ़रमाया, घबराओ नहीं, मैं कोई बादशाह नहीं हूं मैं तो सूखा गोश्त खाने वाली एक कुरैशी औरत ही का बेटा हूं। इसी रहम व माफ़ी का यह नतीजा निकला कि कुरैश के सरदार गिरोह दर गिरोह ख़िदमत में हाज़िर होते और इस्लाम की दौलत से मालामाल होकर सआदत हासिल कर लेते थे। चुनांचे हज़रत मुआविया रज़ि० और हज़रत अबूबक्र सिदीक़ के वालिद अबू क़हाफ़ा जैसे लोग उसी दिन मुसलमान हुए।

खुत्बा

नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इस मौक़े पर एक अहम खुत्बा भी दिया जो इस्लाम के बहुत से हुक्मों की बुनियाद है। इस खुत्बे के कुछ अहम एलान ये हैं—

1. मुस्लिम और गैर-मुस्लिम एक दूसरे के वारिस नहीं हो सकते।
2. मामलों और फ़ैसलों में मुद्दई के ज़िम्मे गवाहों का पेश करना और गवाहों के न होने पर मुद्दआ अलैह के ज़िम्मे हलफ़ उठाना है।
3. किसी औरत को तीन दिन का सफ़र बग़ैर महरम के दुरुस्त नहीं है।
4. सुबह और अस्म के बाद कोई नफ़ल नमाज़ नहीं है और ईदुल फ़ित्र और ईदुल अज़हा के दिन रोज़ा जायज़ नहीं है।

5. ऐ कुरैश के गिरोह! बेशक अल्लाह तआला ने तुमसे जाहिलियत पर और बाप-दादा के नाम व नसब पर फ़ख़ करने का ख़ात्मा कर दिया है। होशियार रहो कि तमाम इंसानी दुनिया आदम से है और आदमकी तख़लीक़ मिट्टी से की गई है—

तर्जुमा—‘ऐ आदमियो! हमने तुमको बनाया एक नर और मादा से और रखी तुम्हारी ज़ातें, और गोतें ताकि आपस की पहचान हो, मुकर्रर इज़्ज़त अल्लाह के यहां उसी की बड़ी जिसका अदब बड़ा। अल्लाह सब जानता है ख़बरदार।’

(49 : 13)

फ़त्हे मक्का और कुरआन

सूर: ‘फ़त्ह’, ‘हदीद’ ‘नस्र’ इन तीनों सूरतों में अल्लाह तआला ने मक्का के फ़त्ह/के बारे में इर्शाद फ़रमाए हैं, जैसे सूर: फ़त्ह में है—

तर्जुमा—‘तुममें बराबर नहीं हैं वे कि जिसने ख़र्च किया फ़त्हे मक्का के पहले और जिहाद किया। इन लोगों का दर्जा बड़ा है उनसे जो कि ख़र्च करें फ़त्हे मक्का के बाद और जिहाद करें और सबसे वायदा किया है अल्लाह ने ख़ूबी का।’

(57 : 10)

और सूर: नस्र में है—

तर्जुमा— 'जब आ जाए अल्लाह की मदद और फ़त्हे मक्का और तुम देखो लोगों को कि वे अल्लाह के दीन में फ़ौज-फ़ौज करके दाखिल होने लगें।'

(110 : 1-2)

यहां पूरी उम्मत एक राय है कि 'फ़त्ह' से मुराद फ़त्हे-मक्का है।

हाफ़िज़ इब्ने हजर रह० इमाम शाबी रह० से नक़ल फ़रमाते हैं—

'इन्ना फ़तहना ल-क फ़त्हम मुबीना' में 'फ़त्हे मुबीन' हुदैबिया-समझौता की तरफ़ इशारा है और 'फ़-ज-अ-ल मिन दूनि ज़ालि क-फ़त्हन करीबा' में 'फ़त्हे करीब' में से भी हुदैबिया समझौते के ही फल और नतीजे मुराद हैं और सूर: नस्र की आयत 'इज़ा जा-अ नस-रुल्लाहि वल-फ़त्हु' में नस्र व फ़त्ह से सबके नज़दीक 'फ़त्हे मक्का' मुराद है और इस नक़ल के बाद लिखते हैं—

'इन आयतों के मफ़हूम व मुराद में हुदैबिया-समझौता और मक्का जीत से मुताल्लिक़ जो अलग-अलग क़ौल पाए जाते हैं और मुश्किल पैदा करने की वजह बनते हैं, शाबी की इस तक्रीर से तमाम क़ौलों में मेल भी हो जाता है और इश्काल भी दूर हो जाता है।

सूर: फ़त्ह, नस्र और हदीद की ऊपर की आयतों में मुराद 'मक्का की फ़त्ह', है या हुदैबिया की सुलह इस बारे में अलग-अलग क़ौल और रिवायतें हैं और इमाम शाबी की तौजीह और उस पर हाफ़िज़े हदीस इब्ने हजर की ताईद व तस्दीक़ के पढ़ने के बाद भी हम यह कहने की ज़ुरात कर सकते हैं कि सूर: फ़त्ह में 'फ़त्हे मुबीन', 'नसरुन अज़ीज़' और 'फ़त्हुन करीब' का ज़िक्र और फिर सूर: हदीद में अल्लाह के रास्तों के जिहाद और ख़र्च को अल-फ़त्ह के पहले और बाद के साथ दर्जों और फ़ज़ीलतों की तक्सीम का तज़्किरा और फिर सूर: नस्र की एक आयत 'नसरुल्लाह वल फ़त्हु' में अन्नसरु वल फ़त्हु का इज्तिमाई ज़िक्र साफ़-साफ़ इस हक़ीक़त का एलान है कि इन जगहों पर ऐसे वाक़ियों का ज़िक्र है जिसकी शुरुआत जिहाद व क़िताल से होकर एक ऐसी फ़त्ह व नुसरत का नतीजा दे रही, जिसके बाद हिजाज़ की धरती हमेशा के लिए शिर्क व वुतपरस्ती से पाक हो जाए और ज़ाहिर है कि यह शरफ़ वेशक़ मक्का को ही हासिल है, अलवत्ता इसमें भी शुक़ह नहीं कि सुलह हुदैबिया के वक़््त सूर: अल-फ़त्ह का नाज़िल होना और 'इन्ना फ़तहना-ल-क-फ़त्हम

मुबीना' को बयान करने का अंदाज़ भी यह वाज़ेह करता है कि सुलह हुदैबिया चूँकि अपनी वजहों और नतीजों और असरात (भावों के लिहाज़ से फ़त्हे मक्का का पेश-खेमा और उसके लिए तम्हीद साबित हुई, इसलिए वह भी 'फ़त्ह मुबीन' (खुली जीत) कहलाने की हक़दार है, यानी वह वाक़िया 'फ़त्हे करीब', 'नस्र अज़ीज़' और 'अल-फ़त्ह', 'नस्र' की वजह हो वह यक़ीनन 'फ़त्हे मुबीन' कहलाने का हक़ रखता है।

हुनैन की लड़ाई

'फ़त्हे अज़ीम' (भारी जीत) के बाद अरब के मुशिरकों की शौकत और दबदबा का लगभग ख़ात्मा हो गया और अब अरब क़बीले गिरोह-दर-गिरोह इस्लाम में दाख़िल होने लगे, यह देखकर दो क़बीलों की जाहिलियत-हमीयत भड़क उठी और वे इस्लाम की तरक्क़ी को बरदाश्त न कर सके—हवाज़िन और सक्रीफ़ इन दोनों क़बीलों के सरदारों की मीटिंग हुई और उन्होंने आपस में मश्विरा किया कि मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) अपनी क़ौम (कु़रैश) को मग़लूब करके मुतमइन हो गए हैं, इसलिए अब हमारी बारी है। पस क्यों न हमीं पेशक़दमी करके मुसलमानों पर हमलावार हो जाएं और उनकी जड़ें उखाड़ दें। दोनों ने यह मंसूबा बांधा और मालिक बिन औफ़ नज़री को अपना बादशाह मान कर के हसद की आग को मुसलमानों के खून से बुझाने की कोशिश की। मालिक ने बहुत से क़बीलों को अपने साथ मिला कर जंग की तैयारी शुरू कर दी।

नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को जब यह मालूम हुआ तो सहाबा को जमा फ़रमाया और मश्वरों के बाद, बचाव के लिए तैयार होकर हुनैन को खाना हो गए, उस वक़्त इस्लामी फ़ौज में बारह हज़ार जॉनिसार मौजूद थे। उनमें से दस हज़ार मुहाजिर व अंसार और मदनी जॉनिसार थे और दो हज़ार वे थे जो फ़त्हे मक्का के वक़्त मुसलमान हुए थे और अस्सी वे मुशिरक (तुलका) थे, जो इस्लाम न कुबूल करने के बावजूद रहमतुल-लिल-आलमीन के मुज़ाहरे देखकर खुद अपनी ख़्वाहिश से मुसलमानों के जंग के साथी बन गए थे।

10 शव्वाल, 8 हिजरी मुताबिक फ़रवरी 630 ई० के ज़ाते अक्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ इस्लामी मुजाहिदों की क़ौम हुनैन जा पहुंची, आपने दुश्मन के मुक़ाबले में जब इस्लामी फ़ौज को सफ़ बनाने का हुक्म दिया तो मुहाजिरीन का झंडा हज़रत अली रज़ि० को दिया और अंसार में से बनी ख़ज़रज का झंडा जनाब बिन मुज़िर को बख़्शा और औस का उसैद बिन हुज़ैर को इनायत फ़रमाया और इसी तरह अलग-अलग क़बीलों के सरदारों को उनकी फ़ौज का झंडा थमा दिया।

नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने खुद भी हथियार सजे, दो ज़िरह (कब्ल) पहने, ख़ूद सर पर रखे अपने मशहूर ख़च्चर पर सवार इस्लामी फ़ौज की कमान कर रहे थे।

अभी लड़ाई ने मरने-मारने की सूरत नहीं देखी थी कि मुसलमानों के दिलों में अपनी फ़ौज की भारी तायदाद और उसकी फ़रावानी इस दर्जा असर कर गई कि कुछ मुसलमानों की ज़ुबान से 'इन्शाअल्लाह' कहे बग़ैर ही अपनी ताक़त के घमंड पर यह निकल गया कि आज हमारी ताक़त को कोई नहीं हरा सकता।

मुसलमान, एक अल्लाह का पुजारी, एक ख़ुदा पर भरोसा करने के बजाए अपनी तायदाद की ज़्यादती पर घमंड करे, यह उसकी भूल है इसलिए ख़ुदा को मुसलमानों का यह घमंड पसन्द न आया और इसलिए उन पर यह सबक़ का कोड़ा लगा कि जब लड़ाई शुरू हुई और मुसलमानों की फ़ौज ने पेशक़दमी की तो अचानक दुश्मन की इन टोलियों ने जो गोरिल्ला जंग लड़ने के लिए पहाड़ की अलग-अलग घाटियों में घात लगाए बैठी थीं, हर तरफ़ से इस्लामी फ़ौज पर बारिश की तरह तीर चलाना शुरू कर दिया।

इस्लामी फ़ौज को इस भारी तीर-वर्षा की उम्मीद न थी, इसलिए उनकी सफ़ें डगमगा गई और थोड़ी ही देर में मुसलमानों के क़दम उखड़ गए और नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और मशहूर मुहाजिर व अंसार सहाबा के अलावा तमाम बदवी क़बीलों और मदनी फ़ौज की अक्सरीयत ने भागने का रास्ता आख़्तियार किया।

नबी अकरम ﷺ इस हालत में भी यह रजज़ (जोश दिलाने वाले जुमले)

पढ़ते और बहादुरी का मुजाहरा करते जाते थे—

अनन्नबीयु ला कज़िब अनब्नु अब्दिल मुत्तलिब

(इसमें तनिक भी झूठ नहीं, मैं नबी हूँ। मैं हूँ अब्दुल मुत्तलिब का बेटा)

गरज़ उसी वक़्त नबी अकरम ﷺ के इशारे पर हज़रत अब्बास रज़ि० ने ऊंची आवाज़ से भागते मुसलमानों को ललकारा, 'ऐ अंसार क़बीले के लोगो!' 'ऐ बैअते रिज़वान के लोगो!'

हज़रत अब्बास रज़ि० की हक़ की आवाज़ गूँजी ही थी कि एक-एक मुसलमान अपनी हालत पर अफ़सोस करता हुआ पलट पड़ा और मिनटों में तमाम जानिसार नबी अकरम ﷺ के गिर्द जमा हो गए और बहादुरी से लड़ने लगे, नतीजा यह निकला कि हार जीत में तब्दील हो गई और अल्लाह के फ़ज़्ल व करम ने हार को 'जीत' से बदल दिया।

मुशिरकों की जमाअत में एक मशहूर राय देने वाले दरीद बिन समद नामी शख़्स था। उसने मालिक के इस तरीक़े की ज़बरदस्त मुख़ालफ़त की थी कि मैदान में औरतों, बच्चों और माल व दौलत के ख़ज़ानों को साथ ले जाए, मगर मालिक ने उसकी राय पर अमल न किया और सबको साथ लाया था, चुनांचे यह सब माले ग़नीमत मुसलमानों के हाथ लगा और मुशिरकों की रही-सही ताक़त का भी ख़ात्मा हो गया।

बहुत से मुशिरकों और उनके क़बीलों पर अगरचे इस्लाम की सच्चाई रोशन हो चुकी थी, मगर फिर भी वह अपने ख़्याल में मादी शौकत को सब कुछ समझते थे, चुनांचे मुसलमानों पर अल्लाह तआला के इस फ़ज़्ल व करम को जब उन्होंने इस तरह देख लिया तो अब वे भी अपनी मर्ज़ी और चाव से इस्लाम की गोद में आ गए।

हुनैन की लड़ाई और कुरआन

हुनैन की लड़ाई में मुसलमानों का अपनी भारी तायदाद पर घमंड और उसके नतीजे में शुरू ही में हार और फिर अल्लाह के फ़ज़्ल से फ़तह व नुसरत का हाल कुरआन ने सूर: तौबा में अपने ख़ास अंदाज़ के साथ इस तरह बयान किया है।

तर्जुमा— 'बेशक अल्लाह बहुत मैदानों में तुम्हारी मदद कर चुका है और हुनैन के दिन (भी) जब तुम अपनी बड़ी तायदाद पर इतरा गए थे तो देखो वह बड़ी तायदाद तुम्हारे कुछ काम न आई और ज़मीन अपने पूरे फैलाव के बावजूद तुम पर तंग हो गई और आखिरकार ऐसा हुआ कि तुम मैदान को पीठ दिखाकर भागने लगे, फिर अल्लाह ने अपने रसूल पर और ईमान वालों पर अपनी ओर में दिल से सुकून व करार नाज़िल फ़रमाया और ऐसी फ़ौज उतार दी, जो तुम्हें नज़र नहीं आई थी और उन लोगों को अज़ाब दिया, जिन्होंने कुफ़र की राह अख़्तियार की थी और जो कुफ़र की राह अख़्तियार करते हैं, उनका बदला यही है। इसके बाद अल्लाह जिस पर चाहेगा, अपनी रहमत से लौट आएगा और अल्लाह बड़ा ही बख़्शने वाला रहमत वाला है।'

(9 : 25-26-27)

तबूक की लड़ाई और तौबा के कुबूल होने का अजीब वाक़िया

तबूक शाम का एक मशहूर शहर है। सन् 9 हि० में सरदारों दो आलम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को यह ख़बर मिली कि कैसरे रूम हिरक्ल एक शानदार फ़ौज मुसलमानों पर चढ़ाई के लिए तैयार कर रहा है और कई लाख जोरावर वालंटियर अब तक भर्ती हो चुके थे।

यह कड़ी आजमाइश का वक़्त था। सैकड़ों मील की राह, हवा के गर्म झोंके और तपती हुई रेत से वास्ता, मगर इस्लाम के फ़िदाकार, दुनिया के ऐश और मौसम की मुसीबतों से बेपरवा और बे-ख़ौफ़ होकर परवानावार इस्लाम पर निसार होने के लिए मदीना में जमा हो रहे थे।

नबी अकरम ﷺ का यह दस्तूर था कि जब किसी लड़ाई का इरादा फ़रमाते तो आम तरीक़े से यह ज़ाहिर न होने देते कि कहां का क्रस्द है, ताकि दुश्मन सही हालात न पा सके लेकिन तबूक की लड़ाई में चूँकि सख़्त मौसम था, हिजाज़ में अकाल, हालात की नासाज़गारी और दुश्मन की ज़बरदस्त ताक़त का मुक़ाबला करना था, इसलिए इस कड़ी आजमाइश में ज़ाते अब्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अरब के तमाम क़बीलों में असल हक़ीक़त का एलान करा दिया ताकि जो आदमी भी इस कांटे भरी वादी में क़दम रखे, सोच-समझ कर रखे।

माली मदद

ऊपर लिखे नाज़ुक हालात के पेशेनज़र यह पहली लड़ाई है जिसमें नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मुजाहिदों की माली मदद करने पर उभारा और बड़े-बड़े इस्लाम के जां-निसारों को अपनी माली फ़िदाकारी का सबूत देने के लिए मौक़ा दिया, चुनांचे हज़रत उस्मान रज़ि० ने दस हज़ार दीनार सुर्ख, तीन सौ ऊंट और पचास घोड़े पेश किए और ज़ाते अक्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उनके इस इख़्लास भरे जज़्बे पर यह दुआ फ़रमाई—

‘ऐ अल्लाह! तू उस्मान रज़ि० से राज़ी हो, इसलिए कि मैं उससे राज़ी हूँ।’

हज़रत उमर रज़ि० ने अपना आधा माल पेश कर दिया, हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ ने सौ औक्रिया और हज़रत आसिम बिन अदी ने साठ वसक़ खजूरें पेश कीं और हज़रत अब्बास व हज़रत तलहा ने सारी दौलत पेश की और औरतों ने भी अपने हौसले से ज़्यादा ज़ेवर पेश किए, यहां तक कि हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने अपना कुल माल ही इस्लाम पर कुरबान कर दिया। सिद्दीक़े अकबर रज़ि० जब अपना माल ले कर ख़िदमत में हाज़िर हुए तो नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मालूम किया, अबूबक्र! तुम अपने घर वालों के लिए भी कुछ छोड़कर आए हो? अबूबक्र रज़ि० ने अर्ज़ किया, हां, ऐ अल्लाह के रसूल! मैं अपने घर में अल्लाह और उसके रसूल सल्ल० का नाम छोड़ आया हूँ।’

गरज़ शानदार तैयारियों के बाद जब मुसलमानों का भारी लश्कर अल्लाह के कलिमे को बुलंद करने के लिए फ़िदाकाराना वलवले और जोश के साथ तबूक की तरफ़ बढ़ा, तो हिरक्ल को भी जासूसों ने ख़बर कर दी। हिरक्ल या तो भारी भरकम फ़ौज के साथ लड़ाई की तैयारियों में मशगूल था या यह ख़बर सुनते ही होश व हवास खो बैठा और ‘रूमी’ मुसलमानों के बेनज़ीर ईसार व फ़िदाकारी के जज़्बे से मुतास्सिर होकर और डर कर तबूक में मुसलमानों के पहुंचने से पहले ही बिखर गए और नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम रास्ते के कुछ ईसाई सरदारों को अम्र का परवाना देते और

समझौता करते हुए कामियाबी के साथ वापस आ गए।

बहाने बनाए

जब आप मदीना तशरीफ लाए तो मुनाफ़िकों ने इस शानदार आजमाइश में शरीक न होने के झूठे बहाने खोज कर खिदमते अक्दस में रखा और ज्ञाते अक्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इस्लाम के जमाअती निज़ाम की मस्लहतों के पेशे नज़र उनसे दर-गुज़र फ़रमाया।

मगर उज़्र करने वाले ग्रुपों में तीन इस्लाम के मुख़्लिस लोग भी थे और वे थे काब बिन मालिक, हिलाल बिन उमैया और मुरारा बिन रुबैअ जैसी हस्तियां थीं।

उन्होंने मुनाफ़िकों की तरह हाज़िर होकर झूठ से काम नहीं लिया और साफ़-साफ़ अर्ज़ कर दिया, ऐ दीन व दुनिया के बादशाह! मैं चाहता तो मुनाफ़िकों की तरह कोई झूठा उज़्र पेश करके आपकी पकड़ से बच जाता। लेकिन अगर किसी दुनियादार से ऐसा मामला पेश आता तो कर भी लेता, मगर खुदा के नबी के साथ ऐसा नहीं कर सकता। सच बात यह है कि मैं सिर्फ़ अपनी काहिली की वजह से जिहाद से महरूम रहा। हर दिन यह ख़्याल करता रहा कि आज अपने बाग़ों के लुत्फ़ से और सैर हो लूं, कल ज़रूर रवाना हो जाऊंगा और इस्लाम की फ़ौज को एक दो मंज़िल ही पर जा पकड़ूंगा। आख़िरकार इस काहिली का नतीजा महरूम की शक्ल में ज़ाहिर हुआ, अब जो हुक्म हो उसके लिए हाज़िर हूं। यही हिलाल और मुरारा ने कहा और इस तरह तीनों मुज़िम्ओं की तरह अल्लाह के रसूल ﷺ का हुक्म सुनने के लिए कान लगा लिए।

सोशल बाइकाट (Social Boycott)

ये तीनों इस्लाम के फ़िदाई, खुलूस के पैकर और रसूल सल्ल० के आशिक थे, इसलिए इसका मामला मुनाफ़िकों जैसा नहीं था कि वे जमाअता निज़ाम की खिलाफ़वर्ज़ी कर गुज़रें और जिहाद जैसे मिल्लत के बहुत बड़े रुक्न को सिर्फ़ काहिली और सुस्ती पर क़ुरबान कर दें और फिर उनको मामूली

माज़रत पर माफ़ कर दिया जाए। इसलिए ज़रूरत थी कि इस मामले में ऐसा फैसला दिया जाए कि आगे किसी मुख़्लिस मुसलमान को ऐसी ग़लतफ़हमी और निज़ाम की ख़िलाफ़वर्ज़ी की ज़ुरात न हो सके। चुनांचे नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया 'तुमने सच-सच बात कह दी, अब जाओ और खुदा के फैसले का इंतज़ार करो।'

तीनों इस हुक्म के बाद घर वापस आ गए और नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने तमाम सहाबा को हुक्म फ़रमा दिया कि इन तीनों से कलाम व सलाम सब तर्क कर दिया जाए। चुनांचे तमाम मुसलमानों ने उनका सोशल बाईकाट कर दिया।

नज़्म व ज़ब्त की ज़ोरदार मिसाल

हज़रत काब खुद फ़रमाते हैं कि इस वाक़िए ने हम तीनों पर जो कुछ असर किया, उसका अंदाज़ा दूसरा कोई नहीं कर सकता, मेरे दोनों साथियों पर तो इस दर्जा असर पड़ा कि उन्होंने बाहर निकलना ही छोड़ दिया, मगर मैं सख़्त जान था, बराबर नमाज़ों के वक़्तों में मस्जिदे नबवी में हाज़िर होता रहा।

जब मैं मस्जिद में हाज़िर होता तो नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को सलाम करता और देखता रहता कि मुबारक लब को हरकत हुई या नहीं, मगर बदकिस्मती और महरूमि के सिवा कुछ न पाता। अलबत्ता यह महसूस करता था कि जब मैं नमाज़ में मशगूल होता तो आप मेरी जानिब देखते रहते और जब मैं फ़ारिग होकर आपकी जानिब मुतवज्जह होता तो मेरी तरफ़ से मुबारक रुख़ फेर लेते।

लेकिन इस पूरे वाक़िए में मुसलमानों की इस्लाम दोस्ती और अल्लाह के रसूल सल्ल० के हुक्म पर ज़बरदस्त जमाव का यह हाल था कि जब मैं लोगों की इस सख़्ती से उकता गया तो एक दिन अपने सबसे महबूब अज़ीम और चचेरे भाई अबूक्रतादा के पास गया, उस अबूक्रतादा के पास, जो इससे पहले मुझ पर जान छिड़कता था और मेरा आशिक्र व जानिसार था। मैंने उसको सलाम किया, मगर खुदा की क्रसम, उसने कोई जवाब न दिया। मैं इस हालत

को देखकर तड़प गया और अबूक्रतादा से कहा, अबूक्रतादा! मैं खुदा की कसम देकर तुझ से मालूम करता हूं, क्या तुझे मालूम नहीं कि मैं अल्लाह और उसके रसमूल को दोस्त रखता हूं और मैं अल्लाह और रसूल का आशिक हूं? अबूक्रतादा फिर भी खामोश रहा और कोई जवाब नहीं दिया। मैंने दो बार फिर इस बात को दोहराया, मगर उसने चुप्पी साध ली और कोई जवाब न दिया। आखिर जब तीसरी बार कहा, तो सिर्फ यह कहकर चुप हो गया, 'खुदा और रसूल ही खूब जानता है।'

यह सुनकर मुझसे ज़ब्त न हो सका और मेरी आंखें डबडबा आईं कि अल्लाहु अकबर यह इंकिलाब! और यहीं तक मामला खत्म नहीं हुआ, बल्कि चालीस दिन गुज़रने पर रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हुक्म फ़रमाया कि इन तीनों की बीवियों को भी चाहिए कि शौहरों का बाँझकाट करके अलग हो जाएं। चुनांचे इन अल्लाह की बंदियों ने हमारे साथ दिली ताल्लुक के बावजूद रसूल के हुक्म को मुक़द्दम समझा और अपने मैके चली गईं, अलबत्ता हिलाल बिन उमैया की जीवन-साथी ने दरबारे रिसालत में जाकर अज़्र किया, ऐ अल्लाह के रसूल ﷺ! हिलाल बूढ़े हैं, उनकी ख़िदमतगुज़ार सिर्फ मैं ही हूं, दूसरा कोई नहीं अगर वे मेरी ख़िदमत से महरूम हो गए तो उनकी हलाकत का अंदेशा है, अब क्या हुक्म?

तब आपने फ़रमाया, 'ख़िदमत करती रहो, बाक़ी ताल्लुक्रात को अभी रोक दो।' यह सुनकर उसने सर झुका दिया। बात मान ली और इसके बावजूद कि शौहर और बीवी या अज़ीज़ों और रिश्तेदारों के दर्मियान कोई दूसरा मौजूद नहीं होता था, तब भी क्या मजाल कि एक लम्हे के लिए भी किसी ने रसूल के हुक्म से हटने की जुरात की हो, अल्लाह! अल्लाह! यह है सच्ची शाने इताअत खुदा और रसूल की!

**रसूल के इश्क़ और इस्लाम की सच्चाई
का हैरत में डाल देने वाला मेयार**

काब बिन मालिक रज़ि० का चालीस दिन से लगातार समाजी बाइकाट है। ग़ैरों का ज़िक्र ही क्या, करीबी अज़ीज़ व रिश्तेदार, यहां तक कि

जीवन-साथी भी इस्लाम और अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के हुक्म पर परवानावार निसार होते हुए काब का बाइकाट किए हुए हैं, गोया इस तरह काब पर खुदा की ज़मीन तंग हो गई है। वह इस मायूसी और हैरानी की हालत में मदीना के बाज़ार से गुज़र रहे हैं कि अचानक शाम का एक नबती पुकारता हुआ नज़र आया, मुझको कोई काब बिन मालिक तक पहुंचा दे।'

लोगों ने हाथ के इशारे से बताया कि काब यह जा रहे हैं, नबती आगे बढ़ा और काब की राह रोक कर उनकी खिदमत में एक ख़त पेश किया। काब ने पढ़ा तो शाहे ग़स्सान का ख़त था, उसमें लिखा था—

अम्मा बाद! मुझको मालूम हुआ है कि तुम्हारे साथी मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने तुम पर बड़ा जुल्म कर रखा है। खुदा ने तुम जैसी हस्ती को इस ज़िल्लत और बरबादी के लिए नहीं बनाया, पस तुम फ़ौरन यहां चले आओ, हम तुम्हारी खातिर ख़्वाह इज़्जत करेंगे। (फ़तुलबारी)

हज़रत काब रज़ि० फ़रमाते हैं, ख़त पढ़ते ही मुझको सख़्त रंज व मलाल हुआ और मैंने दिल में कहा कि यह आजमाइश व बला पहली आजमाइश से भी ज़्यादा कठिन है। मैं और शाहे ग़स्सान को मेरे बारे में यह गुमान कि इस इम्तिहान से घबरा कर उसके पास भाग जाऊं और खुदा और खुदा के रसूल से मुंह मोड़ लूं। आह, यह बहुत ही तकलीफ़ देने वाली सूरतेहाल है। बहरहाल शाहे ग़स्सान की इस ज़लील हरकत पर मुझे ऐसा गुस्सा आया कि मैं एक तन्नूर के सामने पहुंचा और उसके ख़त को उसमें झोंक कर नबती से कहा, यह है तेरे वादशाह के ख़त का जवाब और मैं खिदमते अक्दस में हाज़िर हांकर वेचैनी के साथ अर्ज़ करने लगा, शाहे हर दूसरा, आखिर यह एराज़ (मुंह फेरना) क्यों इस दर्जे को पहुंच गया कि अब मुशिरक भी मुझे फुसलाने की जुरात करने लगे।

गरज़ इसी तरह पचास रातें गुज़र गईं और हमारी महरूमी की गिरह न खुली और अल्लाह के इर्शाद के मुताबिक़ खुदा की ज़मीन फैली होने के बावजूद हम पर तंग हो गई और अपनी जान बवाल नज़र आने लगी कि यकायक सुबह की नमाज़ के बाद सलअ की चोटी पर से एक पुकारने वाले

ने पुकारा, 'ऐ काव! बशारत हो।'।

मैं तो हालत में इन्क़िलाब आने के इतिज़ार में ही था, फ़ौरन समझ गया कि अल्लाह के दरबार में तौबा कुबूल हो गई। अब क्या था मारे खुशी के फूला न समाया और वहीं सज्दे में गिर गया।

अब गिरोह-दर-गिरोह लोग आ रहे हैं और तौबा के कुबूल होने की खुशख़बरी सुना रहे हैं और जीवन-साथी की तरफ़ से भी मुबारकबाद पेश की जा रही है। सबसे पहले जिस आदमी ने मुझसे तौबा कुबूल करने की तफ़्सील से खुशख़बरी सुनाई, वह एक सवार था। मैंने इतिहाई खुशी में जो कपड़े पहने हुए था, उतार कर उसको दे दिए। खुदा की शान कि मेरे पास और कपड़े भी नहीं थे, इसलिए उधार मांग कर पहने और रसूल सल्ल० के दरबार में हाज़िर हुआ, राह में भी लोगों का तांता बंधा हुआ था और मुझ पर मुबारकबादियों और खुशख़बरियों के फूल बरसाए जा रहे थे। रसूल ﷺ के दरबार में पहुंचा, तो आहज़रत सल्लम आगे बढ़े और मुझसे मुसाफ़ा किया और मुबारकबाद पेश की। इसी खुशी के साथ मैं ने आपके चेहरे पर नज़र डाली तो देखा कि मुबारक चेहरा मारे खुशी के बिजली की तरह चमक रहा है, मुस्कराते हुए इर्शाद फ़रमाया, इस मुबारक दिन में बशारत हासिल कर, तेरी पैदाइश से आज तक इससे बेहतर कोई दिन नहीं आया।'।

मैंने अज़्र किया, ऐ अल्लाह के रसूल ﷺ! तौबा का यह कुबूल होना आपकी तरफ़ से है या अल्लाह की तरफ़ से?

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, 'मेरी तरफ़ से नहीं, खुदा की तरफ़ से है।'।

आपने यह जवाब दिया और रुखे अनवर चांद की तरह रोशन नज़र आने लगा। मैं ने खुश होकर कहा, 'ऐ अल्लाह के रसूल ﷺ! तौबा के मेरे कुबूल होने का एक हिस्सा यह भी हो जाए कि मैं अपना कुल माल अल्लाह के रास्ते में सदक़ा कर दूं।'।

आपने इर्शाद फ़रमाया, 'बेहतर यह है कि कुछ हिस्सा अपने लिए रख लो।'।

मैंने अज़्र किया, ख़ैबर का जो हिस्सा मेरे पास है उसे रोके लेता हूं।

मैंने यह भी अज़्र किया, ऐ अल्लाह के रसूल! यह सच्चाई का सदक़ा है कि

आज बेपनाह माल से मालामाल हूं, इसलिए अह्द करता हूं कि उम्र भर सच कहने के अलावा मेरा शिआर कुछ न होगा।'

हज़रत काब फ़रमाते हैं, मेरे इस मामले में रंज व ग़म के हर दो साथी का भी खुशी में यही हाल हुआ और हमारी तौबा कुबूल होने पर जो फ़ज़ल की आयतें उतरी थीं, नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हमारे सामने उनकी तिलावत फ़रमाई।

तौबा का कुबूल होना और सूर: तौबा

तर्जुमा— 'बेशक अल्लाह अपनी खुशी से नबी पर मुतवज्जह हो गया और मुहाजिरों और अंसार पर भी, जिन्होंने बड़ी तंगी और बेसर व सामानी की हालत में उसके पीछे क़दम उठाया और उस वक़्त उठाया कि क़रीब था उनमें से एक गिरोह के दिल डगमगा जाएं, फिर वह अपनी रहमत से उन सब पर मुतवज्जह हो गया, बेशक वह मुहब्बत रखने वाला रहमत करने वाला है और उन तीन आदमियों पर भी (अपनी रहमत के साथ रुजू हुआ जो लटकी हालत में छोड़ दिए गए थे, यहां तक कि नौबत यह आई कि) ज़मीन अपने तमाम फैलाव के बावजूद उन पर तंग हो गई थी और वे खुद भी अपनी जान से तंग आ गए थे और उन्होंने जान लिया था कि अल्लाह से भाग कर उन्हें कोई पनाह नहीं मिल सकती, मगर खुद उसी के दामन में, पस अल्लाह उन पर अपनी रहमत के साथ लौट आया, ताकि वह रुजू करें। बेशक अल्लाह ही बड़ा तौबा कुबूल करने वाला है, बड़ा ही रहमत वाला, ऐ ईमान वालो! अल्लाह का लिहाज़ करो, डरते रहो और सच्चों का साथ अख़्तियार करो।'

(9 : 117-119)

कुरआन और तबूक की लड़ाई

कुरआन ने सिर्फ़ इसी वाक़िया का ज़िक्र नहीं किया, बल्कि तबूक की लड़ाई की अहमियत के पेशे नज़र उसकी बहुत-सी तफ़्सील बयान की और इस सिलसिले में पंद और नसीहत के जरिए मुसलमानों की रुशद व हिदायत का सामान जुटाया है। चुनांचे इस सूर: में छठे रुकूअ़ से लेकर आख़िर सूर: तक इसी लड़ाई और लड़ाई से मुताल्लिक़ हालात और नसीहतों का ज़िक्र है।

अहम लड़ाइयां और नतीजे और नसीहतें

ग़ज़वा बदरुल-कुबस

1. जीत-हार की बुनियाद तायदाद की कमी-ज्यादती नहीं है, बल्कि सिर्फ़ उसके फ़ज़ल व करम पर है।

2. जो जमाअत फ़र्ज़ के एहसास के साथ अद्ल व इंसाफ़ के लिए मैदान में निकलती है, वह कभी नाकाम नहीं होती और खुदा की मदद का पैग़ाम उसी को नसीब होता है।

3. बशरी तक्काज़े के पेशेनज़र अपनी जान से ख़ौफ़ व हरास मलामत के क़ाबिल नहीं है और अल्लाह ज़रूर उससे जमाव देता है।

4. सब्र तल्ख़ अस्त वले बर शीरीं दारद—

आज भी हो जो इब्राहीम का ईमां पैदा

आग कर सकती अंदाज़े गुलिस्तां पैदा

उहुद की लड़ाई

1. जिहाद मुख़्लिस व मुनाफ़िक़ की मारफ़त के लिए बेनज़ीर कसौटी है।

2. अमीर, ख़लीफ़ा और उसके नायबों का फ़र्ज़ है कि अहम मामलों में मुसलमानों से मश्विरा कर लें और सब एक राय होकर या अक्सरीयत से जो फ़ैसला हो, उसी को अपना अज़म बनाएं।

3. तमाम मामलों में आमतौर से और जिहाद व मैदान में ख़ासतौर से ज़ब्त व नज़म अहम है। अगर किसी जमाअत में यह न हो तो सच्ची जमाअत का कामियाब होना मुश्किल है।

4. जिहाद के मैदान में मुनाफ़िक़ और कमज़ोर अंगों का जुदा रहना ही फ़ायदे और कामियाबी के लिए बहुत ज़रूरी है।

अहज़ाब की लड़ाई

1. यह भाईचारा और बराबरी का एक शानदार और बेमिसाल इल्मी व अमली नक़शा है।

2. हर ज़माने में वक्त की तरक्की वाले दुनिया के साधनों को हक के मामले की हिमायत के लिए अख्तियार करना और अपना इस्लाम से हटना नहीं, बल्कि बेहतरीन इस्लामी खिदमत है, बशर्ते कि वे सब साधन इस्लामी उसूल व अहकाम से टकराते न हों।

3. जिहाद इस्लाम का इतना शानदार मेम्बर है और उसके बाकी रखने और हिफाज़त के लिए ऐसा अहम फ़रीज़ा है कि फ़र्ज़ के इस अदा करने में लगा रहने में नबी अकरम ﷺ और सहाबा किराम रज़ि० का नमाज़ जैसा फ़रीज़ा क़ज़ा हो गया और आपने और सहाबा ने अस्त्र की नमाज़ मग़िब के वक्त अदा फ़रमाई। अगरचे जिहाद के वक्त भी अल्लाह की इबादत से ग़ाफ़िल नहीं रखा गया और कुरआन ने 'ख़ौफ़ की नमाज़' का रास्ता निकाल कर नमाज़ की अहमियत वाज़ेह कर दी है।

4. लड़ाई में ऐसे तरीक़े अख्तियार करना सही हैं, जिनमें झूठ और वायदा-ख़िलाफ़ी जैसी नापसन्दीदा बातों का दख़ल न होते हुए दुश्मन को बग़ैर लड़ाई ही के नुक़सान व हार का मुंह देखना पड़ जाए।

मक्का की फ़तह

1. जब किसी ग़ैर-मुस्लिम ताक़त से समझौता कर लिया जाए तो समझौते की मुद्दत को अपनी तरफ़ से पूरा करना इस्लामी ज़िम्मेदारी है। अलबत्ता अगर दूसरी तरफ़ से ख़िलाफ़वर्ज़ी हो, तो मुसलमान ज़िम्मेदारी से अलग हैं।

2. फ़तहे मक्का की ख़ास बात यह है कि वह ताक़त के ज़ोर पर फ़तह होने के बावज़ूद ख़ूरेज़ी से बचा रहा।

3. दुनिया के शहंशाह और नबी-ए-रहमत के दर्मियान अगर फ़र्क़ और इम्तियाज़ मालूम करना हो तो फ़तहे मक्का उसके लिए रोशन दलील है।

4. काफ़िर व मुश्रिक ग़िरोह अगर इस्लामी ताक़त का हलीफ़ (मित्र) बनना चाहे, तो मुस्लिम मुफ़ाद को सामने रखकर उसको हलीफ़ बनाया जा सकता है, बल्कि कुछ हालात में उसको हलीफ़ बनाना बहुत ही ज़रूरी है।

हुनैन की लड़ाई

1. जीत और हार का मदार हर हालत में तायदाद की ज्यादाती पर नहीं, बल्कि अल्लाह की मदद के साथ जुड़ा रहना चाहिए।
2. अगर इस्लाम और मुसलमान के फ़ायदे का तक्राज़ा हो तो एक ग़ैर मुस्लिम ताक़त के मुक़ाबले में दूसरी ग़ैर मुस्लिम ताक़त या ग़ैर मुस्लिम जमाअत का मेल और मदद हासिल करना बेशक़ दुरुस्त और सही है।

तबूक

1. इस्लामी मुफ़ाद के पेशेनज़र जब आम जिहाद का एलान हो जाए तो फ़र्ज़ के अदा करने के मुक़ाबले में हर क्रिस्म की मुश्किलें ख़त्म हो जानी चाहिए।
2. आम जिहाद के मौक़े पर माली मदद भी जिहाद ही का अहम शोबा है।
3. मुनाफ़िकों का जिहाद में शिर्कत न करना ही फ़ायदेमंद है। अलबत्ता अगरचे ख़लूस वाले लोग ऐसे मौक़े पर नजरें चुरा जाएं तो माफ़ न करने वाला जुर्म है, जब तक कि वे तौबा न कर लें।
4. इस्लामी हुक्मों की खुली ख़िलाफ़वर्ज़ी पर मुसलमानों के किसी मुस्लिम फ़र्द या मुस्लिम जमाअत के ख़िलाफ़ सोशल या समाजी बाइकाट दुरुस्त है, बल्कि कुछ अहम और नाज़ुक हालात के पेशेनज़र कभी भी वाजिब हो जाता है।

हुदैबिया का वाक़िया

1. इस्लामी इज्तिमाई मस्लहतें अगर तक्राज़ा करें तो ख़लीफ़ा और अमीरुल मोमिनीन को अख़्तियार है कि वह कुफ़्रार व मुशिरकों से ऐसी सुलह करे जो देखने में हारी हुई नज़र आती हो, मगर गहरी नज़र और सूझ-बूझ का यह फ़त्वा हो कि नतीजे के लिहाज़ से यह मुसलमानों के हक़ में बेहतर साबित होगी।
2. मुसलमान का फ़र्ज़ है कि वह अल्लाह और उसके रसूल सल्ल० के

हुक्मों को हर मामले में नमूना बनाए और अपनी सूझ-बूझ पर भरोसा करके उनके खिलाफ करने पर तैयार न हो जाए।

3. 'वायदा तोड़ने' को ग़लत समझे और यक़ीन करे कि वायदे की पाबन्दी न करने वाला, न दुनिया में इज़्ज़त का मालिक हो सकता है और न आख़िरत में उसको फ़लाह नसीब हो सकती है।

4. हुदैबिया के समझौते ने यह साफ़ कर दिया कि मुस्लिम क़ौम अख़्लाक़ व आमाल और क़िरदार व गुफ़्तार, बल्कि ज़िंदगी के हर शोबे में सच्चा, इंसाफ़पसंद, हक़पसंद और हक़-आगाह है और उसकी जमाअती और इफ़िरादी ज़िंदगी के वक़्त का दर्जा तमाम क़ौमों और मिल्लतों से बुलंदतर है।

गोद लेकर बेटा बनाना

जाहिलियत की रस्मों में से एक रस्म 'तबन्ना' भी है। यह रस्म किसी न किसी शक्ल में हर मुल्क में पाई जाती रही है, बल्कि हिंदुओं में आज भी मौजूद है। यह रस्म हसब-नसब से ताल्लुक़ और समाजी निज़ाम, दोनों लिहाज़ से ख़राब और फ़ितरत के खिलाफ़ है। इस रस्म के ख़त्म करने के लिए अल्लाह तआला ने जिस वाक़िए को चुना, वह इस तरह है—

हज़रत ज़ैद रज़ि०

हज़रत ज़ैद बिन हारिस बिन शुरहबील अरब के इज़्ज़तदार क़बीला बनी कलब के एक आदमी थे और एक हादसे की वजह से बचपन ही में गुलाम बना लिए गए और उकाज़ के बाज़ार में हज़रत ख़दीजा रज़ि० के भतीजे हकीम बिन हिज़ाम ने उनको अपनी फूफी के लिए ख़रीद लिया। ख़दीजा रज़ि० ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की जीवन-साथी होने के बाद उनको हुज़ूरे अक्वदस की ख़िदमत में हिबा कर दिया। नबी करीम सल्ल० ने उनको आज़ाद कर के अपना बेटा बना लिया और उसी दिन से लौग़ बाग़ ज़ैद को इब्ने मुहम्मद कहने लगे। इतिफ़ाक़ की बात कि बनी कलब के कुछ लोग हज की नीयत से मक्का आए तो ज़ैद को पहचान लिया। ज़ैद के बाप हारिसा और उनके भाई काब को जब यह मालूम हुआ तो वह मक्का आए और हुज़ूरे

अब्रदस की खिदमत में हाज़िर होकर अज़्र किया, अब ज़ैद को हमारे हवाले कर दीजिए और फ़िदए की रक़म ले लीजिए।

हुज़ूरे अब्रदस ﷺ ने इश़ाद फ़रमाया, 'इससे बेहतर यह बात है कि ज़ैद आ जाएं और उसके सामने ये दोनों शक्लें रख दी जाएं, वह तुम्हारे साथ जाना कुबूल करता है या मेरे साथ रहना चाहता है और जो उसकी मर्ज़ी हो, उस पर हम भी राज़ी हो जाएं।'

हारिसा खुशी-खुशी इस पर राज़ी हो गए, क्योंकि वह यक़ीन रखते थे कि बेटा बहरहाल बाप ही को तर्ज़ीह देगा। चुनांचे ज़ैद बुलाए गए। ज़ाते अब्रदस ﷺ ने मालूम किया, इनको पहचानते हो?

ज़ैद ने कहा, 'क्यों नहीं, यह मेरे वालिद हैं और यह मेरे चचा हैं।'

आपने फ़रमाया, 'ये लेने आए हैं। अब तुम मुख़्तार हो, इनके साथ चले जाओ या मेरे पास रहो।'

ज़ैद ने अज़्र किया, 'मैं आप पर किसी को तर्ज़ीह नहीं दे सकता। मेरे बाप-चचा जो कुछ भी हैं, आप ही हैं।'

हारिसा ने यह सुना तो रंज व तक्लीफ़ के साथ कहा, 'ज़ैद! किस क्रदर अफ़सोस है तुझ पर कि गुलामी को आज़ादी पर और बाप-दादा और ख़ानदान पर अजनबी को तर्ज़ीह दे रहा है।'

ज़ैद ने कहा, 'इस हस्ती के साथ रह कर मेरी आंखों ने जो कुछ देखा है, उसके बाद मैं दुनिया और उसकी हर चीज़ को उसके सामने हेच समझता हूँ।'

तब नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हारिसा और हाज़िरीन को बतलाया कि मैं ने ज़ैद को आज़ाद कर दिया है। अब वह मेरा गुलाम नहीं, बल्कि बेटा है। हारिसा ने यह सुना तो बहुत खुशी जाहिर की और बाप और चचा दोनों मुतमइन वापस हो गए और कभी-कभी आकर देख जाते और आंखें ठंडी कर लिया करते थे।

तिर्मिज़ी की एक मुख़्तसर रिवायत में हारिसा की जगह उसके दूसरे बेटे हबला के आने और नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ ऊपर की बातचीत का ज़िक्र हुआ है।

नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़रत ज़ैद की मज़ीद क़द्रअफ़ज़ाई के लिए उनका निकाह अपनी दूध पिलाई उम्मे ऐमन के साथ कर दिया, जिसके पेट से हज़रत उसामा पैदा हुए और उसके बाद इरादा किया कि उनकी शादी अपनी फुफ़ेरी बहन ज़ैनब बिनत जहश के साथ कर दें। यह हाशमी ख़ानदान की बेटी और आपकी फूफी उमैया बिनत अब्दुल मुत्तलिब की बेटी थीं, इसलिए ज़ैनब और ज़ैनब के भाई इस निकाह पर राज़ी नहीं थे, तब अल्लाह की वह्य ने नाज़िल होकर यह हुक्म दिया कि जिस बात का हुक्म अल्लाह और उसका रसूल दे, फिर उसकी ख़िलाफ़वर्ज़ी किसी के लिए जायज़ नहीं है।

तर्जुमा—‘जब अल्लाह और उसका रसूल ﷺ कोई फ़ैसला कर दे, तो फिर किसी मोमिन मर्द और औरत को उनके मामले में कोई अख़्तियार बाक़ी नहीं रहता और जो आदमी अल्लाह और उसके रसूल की नाफ़रमानी करे, बेशक वह खुली गुमराही में पड़ गया। (33-36)

वह्य के नाज़िल होने पर हज़रत ज़ैनब और उसके भाइयों ने आपके फ़ैसले के सामने सर झुका दिया और इस तरह आपने ख़ानदान से ही अमली तौर पर नसब पर फ़ख़ करने की जड़ काट दी, ताकि आपका अमल नमूना बने।

हज़रत ज़ैद रज़ि० का सबसे बड़ा शरफ़ यह है कि कुरआन में उनका नाम खुलकर आया है। यह शरफ़ रसूल ﷺ के किसी सहाबी को नसीब नहीं हुआ।

बेटा बनाने की रस्म की रोक-थाम

हज़रत ज़ैद रज़ि० और हज़रत ज़ैनब रज़ि० अगरचे निकाह-बंधन में जकड़े हुए थे, लेकिन हज़रत ज़ैनब रज़ि० का यह फ़ितरी रुझान मिट न सका कि वह कुरैशी हाशमी हैं और उनका शौहर आज़ाद किया हुआ गुलाम। इसी तरह हज़रत ज़ैद को यह फ़ख़ हासिल था कि वह बहरहाल अरब के मुअज़्ज़ज़ कबीले के फ़र्द और नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के मुंह बोले बेटे हैं और ज़ैनब रज़ि० पर उनको क़व्वाम (सरदार) होने का शरफ़ हासिल है।

चुनांचे इन आपसी टकराव वाली ज़ेहनियतों ने उनके आपस में मुहब्बत का रिश्ता क़ायम न होने दिया और आखिरकार ज़ैद इस पर तैयार हो गए कि हज़रत ज़ैनब को तलाक़ दे दें। हज़रत ज़ैद ने कई बार इस इरादे का ज़िक्र हुज़ूरे अक़्दस से किया, लेकिन आप ने यह समझ कर कि शायद देर या मुद्दत का ज़्यादा हो जाना मुहब्बत के बढ़ने की वजह बने, ज़ैद को तलाक़ देने से रोका।

हज़रत ज़ैद और हज़रत ज़ैनब रज़ि० की नाचाक़ी ने अब सूरतेहाल बदल दी और अल्लाह की वह्य ने यह फ़ैसला कर दिया कि वक़्त आ गया है कि अब बेटा बनाने की बुरी रस्म ख़त्म कर दी जाए और जिस तरह हसब-नसब के फ़ख़ के पहलू को अपने ख़ानदान ही में सबसे पहले तोड़ा, उसी तरह इसकी शुरूआत भी खुद ज़ाते अक़्दस के ही अमल से हो और यह इस तरह कि ज़ैद रज़ि० जब तलाक़ दे दें तो फिर ज़ैनब रज़ि० का निकाह आप से हो जाए, क्योंकि इससे एक तरफ़ ज़ैनब और उनके ख़ानदान को जो सदमा पहुंचे, उसे दूर किया जा सके और दूसरी ओर गोद लिए बेटे की बुरी रस्म की रोक-थाम हो सके।

नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को जब वह्य इलाही ने यह नक्शा बतलाया, तो एक बशर होने के नाते आपके दिल में यह जज़्बा पैदा हुआ कि ज़ैद अगर ज़ैनब को तलाक़ न दें तो अच्छा है ताकि ज़ैनब के ख़ानदान को भी तौहीन महसूस न हो और मैं भी मुनाफ़िक़ों और मुशिरकों के इस ताने से बचा रहूं कि वे यह कहेंगे, मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपने बेटे की बीवी को अपनी बीवी बना लिया, हालांकि दूसरों के लिए बेटे की बीवी को हराम बताते हैं। चुनांचे आप बराबर ज़ैद को तलाक़ से बाज़ रखते रहे, मगर जब किसी तरह आपस में निभ न सकी तब ज़ैद ने तलाक़ दे ही दी और इदत गुज़रने पर खुदा का हुक्म हुआ कि अब आप ज़ैनब रज़ि० को अपनी बीवी बनाएं ताकि आगे मुंह बोले बेटे की रस्म का ख़ात्मा हो और मुसलमानों के समाज में यह तंगी न पैदा हो सके कि मुंहबोले बेटे की बीवी के निकाह को सुलबी बेटे की बीवी की तरह हराम समझा जाए और साथ ही अल्लाह तआला की वह्य ने यह भी वाज़ेह कर दिया कि खुदा जो फ़ैसला कर चुका

है वह तो ज़ाहिर होकर ही रहेगा और तुम्हारे बशरी खौफ़ से वह टलने वाला नहीं है और सच भी यह है कि अल्लाह के हुक्म के मुक़ाबले में इंसानी समाज का डर बिल्कुल बेकार की बात है।

कुरआन ने मुंह बोले बेटे की रोकथाम के मामले को दो हिस्सों में बांट दिया है कि एक ज़ेहनी व इल्मी इंकिलाब और दूसरा अमली, चुनांचे ज़ेहनी इस्लाह व इंकिलाब के लिए नीचे लिखी आयतें नाज़िल फ़रमाई—

तर्जुमा—‘और अल्लाह ने तुम्हारे मुंह बोले बेटों को तुम्हारा (हक्कीक़ी बेटा) नहीं बना दिया। यह क़ौल तुम्हारे अपने मुंह की बात है और अल्लाह सच बात कहता है और वही सीधी राह दिखाता है। तुम इन मुंह बोले बेटों को उनके (हक्कीक़ी) बापों की निस्वत से पुकारा करो। यही अल्लाह के नज़दीक़ इंसान का तरीक़ा है और अगर तुमको उनके बाप-दादों के नाम मालूम न हों तो वे तुम्हारे दीनी भाई हैं और तुम्हारे दोस्त हैं।’ (33 : 3-4)

चुनांचे सहाबा रज़ि० साफ़ करते हैं कि हमने उसी वक़्त से हज़रत ज़ैद को इब्ने मुहम्मद कहना छोड़ दिया और ज़ैद बिन हारिसा कहने लगे।

और बेटा बनाने के अमली पहलू की रोकथाम को रोशन करने के लिए ये आयतें उतरीं—

तर्जुमा—‘और (वह वक़्त ज़िक्र के क़ाबिल है) जब तुम उस आदमी से कहते थे, जिस पर अल्लाह ने और तुमने इनाम किया कि अपनी बीवी को रोके रख (और तलाक़ न दे) और अल्लाह से डर और सूरते हाल यह थी कि तुम अपने जी में इस बात को छिपाए हुए थे जिसको अल्लाह ज़ाहिर करने वाला था। तुम लोगों के (तान व तंज़) से डरते थे और अल्लाह ज्यादा हक्कदार है कि उससे डरा जाए, सो जब ज़ैद अपनी ज़रूरत पूरी कर चुका (और उसने तलाक़ दे दी) तो हमने उस (ज़ैनब) का निकाह तुझसे कर दिया ताकि (आगे) मुसलमानों पर तंगी न रहे कि वह अपने मुंह बोले बेटों की बीवियों से निकाह कर सकें। जब उनके मुंह बोले बेटे अपनी हाजत पूरी कर लें (यानी तलाक़ दे दें) और अल्लाह का यह हुक्म अटल है।’ (33-37)

कुरआन की इन आयतों का मतलब अपने मुताल्लिक़ मसूअले के साथ इतना साफ़ और खुला हुआ है कि उसमें किसी दूसरे मतलब की गुंजाइश तक

नहीं और न किसी क्रिस्म की कोई पेचेदगी ही है कि जो मामले के रुख को किसी दूसरी ओर फेरने की वजह हो (इसलिए मुनासिब समझते हैं कि इस मामले से मुताल्लिक़ खुराफ़ाती दास्तान से बिल्कुल ही आंखें फेर ली जाएं।)

सबक्र और नसीहत

इस बात के बावजूद कि पैग़म्बर व रसूल इस हक़ीक़त से आशना होते और उस पर यक़ीन रखते हैं कि अल्लाह का फ़ैसला अटल और रद्द करने के क़ाबिल नहीं होता है, फिर भी अगर कोई बात ऐसी हो जिसमें उनकी ज़ात वक़्त के ख़ुद के गढ़े हुए अख़्लाकी पहलू की बुनियाद पर तान व तंज़ की वजह बनती हो, तो बशर के तक्राज़े की बुनियाद पर वे उसकी मार से बचे रहने की कोशिश करते हैं और उम्मीद करते हैं कि अल्लाह तआला जिस भले मक़सद के लिए ऐसी सूरत पैदा करना चाहता है, काश वह किसी ऐसी शक्ल में ज़ाहिर हो कि उनके इस तान व तंज़ से बच जाए, लेकिन जबकि ख़ुदा की मस्लहत इसी ख़ास सूरत में छिपी होती है तो वक़्त आने पर नबी व रसूल अपनी ज़ाती ख़्वाहिश को पीठ पीछे डाल कर ख़ुदा के फ़ैसले पर सर झुका देता है।

बनू नज़ीर

यह वाक़िया 04 हिजरी में पेश आया। जो यहूदी क़बीले यमन से भागकर हिजाज़ (मदीना) में आ बसे थे, उनमें से यह भी मशहूर क़बीला है। नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब मदीना तशरीफ़ फ़रमा हुए तो आपने मदीना और उसके आस-पास के यहूदियों से अह्द व पैमान करके 'सुलह व अह्द' की बुनियाद डाली।

यहूदियों ने अगरचे ज़ाहिरी तौर पर इस सुलह व अह्द पर रज़ामंदी का इज़हार कर दिया था, लेकिन उनके रिवायती हसद व बुज़्र और तारीख़ी मुनाफ़क़त (निफ़ाक़) ने इस अह्द पर उनको देर तक क़ायम नहीं रहने दिया और उन्होंने नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और मुसलमानों के खिलाफ़ अंदरूनी और बैरूनी साज़िशों का जाल बिछाना शुरू कर दिया। इसी

बीच बनू नज़ीर के ज़िम्मेदार लोगों ने एक दिन यह साज़िश की कि नबी अकरम ﷺ की खिदमत में जाकर अर्ज करें कि हमको एक मामले में आप से मशिवरा करना है और जब आप तशरीफ़ ले आएंगे तो दीवार के करीब आपको बिठाया जाए और जब वे बातचीत में लग जाएंगे तो ऊपर से एक भारी पत्थर आप पर गिराकर आपका खात्मा कर दिया जाए।

चुनांचे नबी अकरम ﷺ मदऊ (जिसे बुलाया जाए) होकर तशरीफ़ लाए, अभी आप दीवार के करीब बैठे ही थे कि वह्य इलाही ने हक़ीक़ते हाल की इत्तिला दे दी और आप फ़ौरन ख़ामोशी के साथ वापस तशरीफ़ ले आए और वहां जाकर मुहम्मद बिन मुस्लिमा रज़ि० को भेजा कि वह बनू नज़ीर तक यह पैग़ाम पहुंचा दें कि चूँकि तुमने ग़दारी की और वायदे की ख़िलाफ़वर्ज़ी की है, इसलिए तुमको हुक्म दिया जाता है कि मुक़द्दस हिजाज़ की सरज़मीन से जल्द जिला-वतन हो जाओ। मुनाफ़िक़ीन ने यह सुना तो जमा होकर बनू नज़ीर के पास पहुंचे और कहने लगे, तुम मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का फ़रमान हरगिज़ तस्लीम न करो और यहां से हरगिज़ जिला-वतन न हो, हम हर तरह तुम्हारे शरीकेकार हैं।

बनू नज़ीर ने यह पुश्त-पनाही देखी तो हुक्म मानने से इंकार कर दिया और हालात का इतिज़ार करने लगे, तब नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने जिहाद की तैयारी की और अब्दुल्लाह बिन उम्मे कुलसूम को मदीने का अमीर बनाकर बनू नज़ीर की गढ़ी (छोटा क़िला) पर हमलावरी के लिए निकले। हज़रत अली रज़ि० के हाथ में इस्लामी परचम था और सहाबा घेरे हुए थे।

बनू नज़ीर ने यह देखा तो क़िलाबंद हो गए और यक़ीन कर लिया कि अब मुसलमान हमारा कुछ नहीं बिगाड़ सकते। चुनांचे नबी करीम ﷺ छः दिन (दिन व रात) उनकी घेराबंदी किए रहे और फिर हुक्म दिया कि इनके इन पेड़ों को काट डालो जो इनके लिए फल मुहैया करते हैं और इनका वजूद इनके रसद पहुंचाने की ताक़त पहुंचाने की वजह है।

इन हालात को देखकर बनू नज़ीर के दिलों में रौब और ख़ौफ़ तारी हो गया और उनको मुनाफ़िक़ों की ओर से मायूसी और रुसवाई के सिवा और

कुछ हाथ न आया। आखिर मजबूर होकर उन्होंने दरख्वास्त की कि इसको देश छोड़ देने का मौका दिया जाए, इसलिए उनको इजाज़त दी गई कि लड़ाई के सामान के अलावा जितना सामान भी वे ऊंटों पर लाद कर ले जाना चाहते हैं, ले जाएं।

इजाज़तनामा हासिल हो जाने के बाद यह मंज़र भी देखने का था कि कल के बागी, सरकश और फ़ितना फैलाने वाले ग़दार, आज अपने हाथों से अपने मकानों को बर्बाद करके (ताकि मुसलमान उसमें आबाद न हों सकें) इस वतन को ख़ैरबाद कह रहे थे, जिस जगह हिफ़ाज़त से रहने के लिए नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने खुद अपने आप एक अहद नामा के ज़रिए उनको दावत दी थी।

कुरआन और बनू नज़ीर

इसी वाक़िए के सिलसिले में सूरः हश्म नाज़िल हुई है और उसमें बनू नज़ीर की ग़दारी, मुनाफ़िकों का फ़िला, मुसलमानों पर खुदा का एहसान व करम और लड़ाई के मौक़े पर हरे पेड़ों के काटने का हुक्म और ऐसी शक्ल में, जबकि लड़ाई न हो रही हो, ग़नीमत के माल का मसरफ़ और फ़ै का हुक्म, इन तमाम बातों का तफ़्सील के साथ ज़िक्र किया गया है।

नतीजा और नसीहत

1. मुनाफ़िक़ का निफ़ाक़ एक खुशफ़रेबी होती है जो अंजाम के लिहाज़ से न खुद अपने लिए फ़ायदेमंद साबित होता है और न मुनाफ़िकों पर एतमाद करने वाला ही उससे कोई फ़ायदा उठा सकता है, बल्कि कभी-कभी वह अपनी और अपने साथियों की ज़िल्लत और रुसवाई और हलाकत व बर्बादी का सामान जुटा देता है और हमेशा के घाटे की वजह बन जाता है।

2. जिस क़ौम में शर व फ़साद और मकर व फ़रेब 'अख़्लाक़' का दर्जा ले लेते हैं, उनके क़ौमी, जिस्मानी और रूहानी सलाह व ख़ैर की तमाम इस्तेदाद फ़ना हो जाती है और न वह दुनिया में किसी इज़्ज़त व शौक़त की मालिक रहती है और न आख़िरत में उसके लिए ख़ैर का कोई हिस्सा बाक़ी

रहता है।

3. आम तरीके पर लड़ाई में हरे पेड़ों और हरी खेतियों का काटना और बर्बाद करना लड़ाई की इस्लाहों के मनाफ़ी और मना है, लेकिन जब ये चीज़ें जंग के ज़माने में दुश्मन की ओर से ज़्यादा ताक़त की वजह बन कर फ़साद व शर की बक्रा में मददगार हों तो ऐसी हालत में आम हुक्म से अलग हैं, जैसा कि बनू-नज़ीर के वाक़िए में कुरआन ने बताया है।

इफ़्क का वाक़िया

शाबान 05 हिजरी मुताबिक़ दिसम्बर सन् 626 ई० में बनी-मुस्तलक़ के सरदार हरिस बिन ज़रार के फ़िल्नों की वजह से बनू-मुस्तलक़ की लड़ाई पेश आई। मुनाफ़िक़ों का यह दस्तूर बन गया था कि जिस लड़ाई के ज़ाहिरी अस्बाब से गुमान ग़ालिब फ़त्ह का होता उससे माले ग़नीमत की लालच से ज़रूर साथ हो जाते। चुनांचे इस लड़ाई में भी मुनाफ़िक़ों का गिरोह मय अपने सरदार अब्दुल्लाह बिन उबई के मौजूद था, वापसी पर एक मामूली हादसा पेश आ गया।

बुख़ारी में इस वाक़िए की जिस तफ़सील का ज़िक्र है, उसका हासिल यह है कि जब नबी अकरम ﷺ कामियाबी के साथ ग़ज़वा बनी मुस्तलक़ से वापस हुए तो मदीना के करीब एक मंज़िल पर पड़ाव था कि रात के आखिरी हिस्से में कूच का एलान हुआ।

हज़रत आइशा रज़ि० एलान सुन कर ज़रूरत पूरी करने के लिए तेज़ी के साथ क्रियामगाह से दूर चली गईं। फ़ारिग़ होने के बाद वापस हुईं तो गले में जो हार पहने हुए थीं, वह सीने पर न पाया, वह यह समझ कर कि टूट कर वहीं गिर गया होगा, जहां ज़रूरत पूरी करने के लिए गई थीं, उसको तलाश करने के लिए वापस गईं। इसी बीच जो जमाअत उनके हौदज को ऊंट पर सवार कराती थी, उसने हौदज उठा कर ऊंट पर कस दिया और चूँकि उस ज़माने में कम खाने की वजह से औरतें आमतौर पर मोटी नहीं होती थीं, और इसलिए वह भी बहुत दुबली थीं, इसलिए हौदज पर लगी टीम ने उनके न होने का मुतलक़ एहसास नहीं किया और ऊंट पर हौदज रख कर रवाना हो गए।

हज़रत आइशा रज़ि० जब हार को तलाश करती हुई वापस हुई तो क्राफ़िला जा चुका था और अब हार भी हौदज के करीब ही मिल गया। वह बहुत परेशान हुई फिर सोचा कि ज्योंही मुसलमानों को यह महसूस होगा कि मैं हौदज में नहीं हूँ तो फ़ौरन नबी अकरम ﷺ इसी जगह सवारी भेज देंगे, इसलिए मुनासिब यह है कि क्राफ़िले का पैदल पीछा करने के बजाए उसी जगह इतिज़ार किया जाए। रात का आखिरी हिस्सा था, उजाला होने वाला था कि उनकी आंख लग गई।

उधर सफ़वान बिन मुअत्तल सहमी इस ख़िदमत पर लगे हुए थे कि क्राफ़िले से बहुत पीछे रह कर निगरानी करते हुए और जो चीज़ भी क्राफ़िले की रह जाए उसको लेते हुए आएँ। वह पीछे से चलते हुए जब उस जगह पहुंचे तो उन्होंने महसूस किया कि यहां कोई इंसान मौजूद है। करीब आए तो उनको पहचान लिया, क्योंकि हिजाब की आयत से पहले वह उनको देख चुके थे।

उन्होंने देखते ही फ़ौरन बुलंद आंवाज़ से 'इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन' पढ़ा। हज़रत आइशा रज़ि० आवाज़ सुन कर बेदार हो गई और सिमट कर बैठ गई। सफ़वान ने एक लफ़्ज़ कहे बग़ैर ऊंट को बिठाया और वह ख़ामोशी के साथ ऊंट पर हौदज में सवार हो गई और सफ़वान महार पकड़े हुए ख़ाना हुए और दोपहर के करीब लश्कर में जा पहुंचे।

जब यह ख़बर अब्दुल्लाह बिन उबई को मालूम हुई तो उसने और उसकी जमाअत ने मौक़े को ग़नीमत जाना और तेज़ी के साथ इफ़्तिरा और बोहतान को फ़ौज में फैला दिया, मगर मुसलमानों ने किसी तरह उसको बावर नहीं किया, अलबत्ता सिर्फ़ तीन मुसलमान (दो मर्द और एक औरत) हस्सान बिन साबित, मिस्तह बिन असासा और हमना बिनत जह़श अपनी सादगी से मुनाफ़िक़ों के जाल में फंस गए।

ख़ुदा का करम व फ़ज़ल देखिए कि ज़्यादा दिन न गुज़रे थे कि अल्लाह तआला ने वह्य (कुरआन) के ज़रिए मुनाफ़िक़ों की ख़बासत को आशकारा कर दिया और हज़रत आइशा रज़ि० की पाक दामनी पर मुहर लगा कर बुहतान लगाने वालों पर कोड़ों की सज़ा जारी करने का हुक्म दिया और इस तरह झूठ

बोलने वाले और बुह्तान लगाने वाले अपने नतीजे को पहुंचे।

कुरआन ने इस वाकिए पर मुसलमानों को साफ़ तौर पर बतला दिया कि झूठ और बुह्तान पर गढ़ी यह दास्तान सुन कर तुमने खुद ही क्यों न कह दिया कि यह सिर्फ़ झूठ और बुह्तान है।

तर्जुमा—‘जिन लोगों ने बुह्तान का यह तूफ़ान उठाया है, वह तुममें से ही एक जमाअत (मुनाफ़िकों की जमाअत) है। (ऐ पैग़म्बर!) तुम इसको अपने हक़ में बुरा न समझो, बल्कि यह तुम्हारे हक़ में बेहतर है (यानी अल्लाह की मस्लहत के राज़ ने इसमें तुम्हारी बेहतरी का अंजाम पोशीदा रखा है) इनमें से हर एक आदमी के लिए वह सब कुछ है, जो उसने गुनाह कमाया है और जिसने इस गुनाह का बड़ा बोझ उठाया है, उसके वास्ते बहुत बड़ा अज़ाब है। जब तुमने इस बुह्तान को सुना था, क्यों न ईमान वाले मर्द और ईमान वाली औरतों ने अपने लोगों पर नेक ख़्याल क़ायम कर लिया और क्यों यह न कह दिया कि यह खुले बुह्तान का तूफ़ान है। वे (तूफ़ान उठाने वाले अपने बुह्तान पर) क्यों चार गवाह न लाए, पस जब वे गवाह न पेश कर सके तो यही लोग अल्लाह के यहां बिल्कुल ही झूठे हैं और अल्लाह का फ़ज़ल और उसकी रहमत दुनिया और आख़िरत दोनों में तुम पर न होती तो पड़ जाती इस झूठी चर्चा करने में तुम पर कोई बड़ी आफ़त, जबकि तुम इस (बुह्तान) को अपनी जुबानों पर जारी करने लगे और ऐसी बात मुंह से निकालने लगे, जिसकी तुमको ख़बर तक नहीं और तुम इसको हल्की बात समझते हो, हालांकि (बुह्तान और इफ़्तिरा) अल्लाह के नज़दीक बहुत बड़ी बात है और जब तुमने उसको सुना था, तो क्यों न कहा कि हमारे लिए मुनासिब नहीं कि ऐसी झूठी बात मुंह से निकालें, ‘अल्लाह ही के लिए पाकी है’ यह तो बहुत बड़ा बुह्तान है। अल्लाह तुमको समझाता है कि ऐसा काम फिर कभी न कर बैठना, अगर तुम वाकई सच्चे ईमान वाले हो और अल्लाह तुम्हारे लिए पते की बातें वाज़ेह करता है और अल्लाह ख़ूब जानने वाला, हिक्मत वाला है।

जो लोग चाहते हैं कि बदकारी की चर्चा हो ईमान वालों में, उन चाहने वालों के लिए दर्दनाक अज़ाब है, दुनिया में भी, आख़िरत में भी। बेशक अल्लाह (हक़ीक़ते हाल का) जानने वाला है और तुम जानने वाले नहीं हो और

अगर अल्लाह का फ़ज़ल न होता और उसकी रहमत न होती तुम पर और यह बात न होती कि वह नर्मी करने वाला है और मेहरबान है तो क्या कुछ न हो जाता।”

(24 : 11-20)

सूरः की इन आयतों ने आइशा की तहारत और पाकदामनी का ही सिर्फ़ एलान नहीं किया, बल्कि मुसलमानों को यह तंबीह भी दी कि उनको एक लम्हे का इन्तिज़ार किए बग़ैर इस किस्म के झूठ बोलने वालों के झूठ बोलने पर साफ़-साफ़ कह देना चाहिए था कि यह सिर्फ़ झूठ और बोहतान है।

ये आयतें इस वजह से ‘आयते बरअत’ भी कहलाती हैं कि उनमें हज़रत आइशा रज़ि० की बरअत (छूट जाने) का एलान है और मुनाफ़िकों और दुश्मनों की ज़िल्लत व ख़्वारी का इज़हार।

सबक़ और नसीहत

इस वाक़िए ने कुरआन में जिन सबक़ों और नसीहतों का सामान जुटाया है, उनमें ये ख़ुसूसियत के साथ तवज्जोह के काबिल हैं—

1. फ़ासिक़ व फ़ाजिर या बद बातिन इंसानों की दी हुई ख़बर, खासतौर से जबकि वह इस्मत व इफ़्फ़त और तक्वा और ख़ैर के खिलाफ़ हो, हरगिज़ तवज्जोह के काबिल नहीं और इसके लिए सिर्फ़ इतना कह देना ही काफ़ी है कि सिर्फ़ झूठ है, जब तक कि ख़बर देने वाला उस पर रोशन दलील व हुज्जत कायम न कर दे।

2. बेगुनाह पर इलज़ाम और तोहमत लगाना बहुत बड़ा गुनाह है और चूँकि इस गुनाह का करने वाला बन्दों के हक़ों में एक हक़ को निशाने पर रखता है और उसकी तौहीन करता है, इसलिए न सिर्फ़ अख़्लाक़ की निगाह में, बल्कि इज्तिमाई क़ानून की नज़र में भी हद-दर्जा मुज़िम है। कुरआन की आयतों ने इसके लिए हद्दे क़ज़फ़ (बे-गुनाह पर तोहमत लगाने की सज़ा) के लिए अस्सी कोड़े तज्वीज़ किए हैं, ताकि आगे किसी को भी जुरात न हो सके कि वह एक पाकबाज़ इंसान पर तोहमत लगाए या बग़ैर गवाही के उसका प्रोपगंडा करे।

3. यह वाक़िया जो शुरूआत के एतबार से नबी अकरम सल्लल्लाहु

अलैहि व सल्लम के लिए बहुत सख्त तक्लीफ़ की वजह बना और अह्ले बैत को उसने बेहद परेशान खातिर बनाया, लेकिन अंजाम के पेशेनज़र अह्ले बैत रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के लिए यह पूरी तरह ख़ैर साबित हुआ, क्योंकि इससे एक तरफ़ मुनाफ़िकों का भेद खुल गया और दूसरी तरफ़ हज़रत सिद्दीक़ा आइशा रज़ि० और अह्ले बैते रसूल की शान की अज़मत का बेनज़ीर मुज़ाहरा अमल में आ गया कि कुरआन की दस आयतों ने उनकी बरअत के लिए नाज़िल होकर उनकी इस्मत व अज़मत दोनों पर बेमिसाल मुहरे तस्दीक़ सब्त कर दी।

4. कभी-कभी गन्दे और शरीर (दुष्ट) इंसानों की गन्दी बातें इस दर्जा आब व रंग रखती हैं कि सादा-लौह मुसलमानों और नेक लोगों को भी ग़लतफ़हमियां और धोखे हो जाते हैं। इसके लिए मुसलमान का फ़र्ज़ है कि सुनी सुनाई बात पर उस वक़्त तक हरगिज़-हरगिज़ यक़ीन न करे जब तक कि इस्लामी शहादत के उसूल के मुताबिक़ सुनी सुनाई ख़बर की तस्दीक़ न हो जाए। अल्लाह के रसूल ﷺ ने फ़रमाया है कि बदगुमानी से बचो, क्योंकि कुछ बदगुमानियां गुनाह करने वाला बना देती हैं।

5. बन्दों के हक़ में अल्लाह ने जो हदें और क़सास और ताज़ीरात मुकर्रर फ़रमा दिए हैं, जुर्मों के करने पर उन पर मुस्लिम और ग़ैर-मुस्लिम का कोई फ़र्क़ नहीं है और इस्लामी क़ानून की निगाह में इस हैसियत से तमाम मुज़िम एक जैसे पकड़ के क़ाबिल हैं, इसलिए इफ़्क़ के वाक़िए में मुनाफ़िक़ झूठों के साथ तीन मुसलमान (मर्द व औरत) हज़रत हस्सान, हज़रत मिस्तह और हज़रत हमना बिन्त जह़श को भी झूठी तोहमत लगाने के इलज़ाम में कोड़े खाने पड़े।

फ़ासिक़ की दी हुई ख़बर

5 हिजरी में पेश आने वाले ग़ज़वा बनी मुस्तलिक़ में जब मुसलमान जीत गए और सहाबा के मशिवरे की बुनियाद पर नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने क़बीले के सरदार की बेटी हज़रत जुवैरिया से निकाह कर लिया तो नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के ससुराली रिश्ते की वजह से

तमाम सहाबा ने लड़ाई के कैदियों को रिहा कर दिया और मुसलमानों के इस अच्छे व्यवहार और ऊंचे अख्लाक और इस्लामी खूबियों की वजह से मुतास्सिर होकर तमाम कबीला मुसलमान हो गया, तब नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने वलीद बिन उक्बा को इसलिए उनके पास भेजा कि वे कबीले के दौलतमंदों से 'जकात' वसूल करके उन ही के मुहताजों और गरीबों में बांट दें।

कबीले वालों को जब वलीद के इस आने का इल्म हुआ तो इज्जतदार हस्ती के आने के इस्तिक्रबाल की तरह साज़ व सामान के साथ मैदान में निकले।

जाहिलियत के ज़माने में इस कबीले के और वलीद के दर्मियान पुरानी दुश्मनी चली आ रही थी, इसलिए इस्तिक्रबाल के इस एहतिमाम को वलीद ने दूसरी नज़र से देखा और समझा और अपनी ग़लत राय पर जमे रहे कर कबीले वालों से मामला किए बग़ैर ही मदीना वापस आ गए और दरबारे कुदसी में हाज़िर होकर अर्ज़ किया कि बनी मुस्तलिक़ तो फिर गए और उन्होंने ज़कात देने से भी इंकार कर दिया और वे तो सरकशी पर भी तैयार हैं।

नबी अकरम ﷺ यह सुनकर बनी मुस्तलिक़ के तरीक़े पर बहुत दुखी हुए और मुसलमान तो बिगड़ गए और जिहाद की तैयारियां होने लगीं, ताकि मुर्तद लोगों का मुक्राबला किया जाए, यहां तक कि वे इस्लाम पर वापस आ जाएं या अपने नतीजे को पहुंचें।

इधर जब बनी मुस्तलिक़ को मालूम हुआ कि वलीद ने किसी बेजा ज़रूरत के साथ उनके बारे में नबी ﷺ के दरबार में ग़लतबयानी की है, तो वे बेहद परेशान हुए, क्योंकि उनके तो वस्म व ख़्याल में भी यह नहीं था कि इन जैसे पुख़्ताकार और साबितक़दम मुसलमानों पर इस क्रिस्म की तोहमत भी लगाई जा सकती है। चुनांचे उन्होंने फ़ौरन ख़िदमते अक़्दस में इज्जतदार वफ़्द भेजा, जिसने हाज़िर होकर कुल माजरा कह सुनाया।

एक तरफ़ अपने आमिल (वलीद) का वह बयान और दूसरी तरफ़ 'हदीसुल अहद' मुस्लिम जमाअत का यह बयान। इसलिए नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने ख़ामोशी अपनाई और अल्लाह की वस्य का

इन्तिज़ार किया।

आखिर अल्लाह की वस्य ने रहनुमाई की और न सिर्फ़ मामले की हक़ीक़त ही खोल दी, बल्कि इस सिलसिले में एक मुस्तक़िल क़ानून या 'तहक़ीक़ का मेयार' अता फ़रमा दिया।

तर्जुमा—'ऐ ईमान वालो! अगर तुम्हारे पास कोई (ग़लतकार) ख़बर लेकर आए तो जांच कर लिया करो, ऐसा न हो कि नादानी की वजह से किसी क्रौम पर (जिहाद के नाम से) हमलावर हो जाओ और फिर कल के (असल हाल मालूम होने के बाद) अपने किए पर पछताने लगो और जानो कि तुममें अल्लाह का रसूल मौजूद है। अगर वह तुम्हारी बात अक्सर मामलों में मान लिया करे तो तुम (अपने ग़लत रवैए की वजह से) मुसीबत में पड़ जाओ, लेकिन अल्लाह ने अपने फ़ज़ल से तुम्हारे लिए ईमान को महबूब बना दिया है और तुम्हारे दिलों में उसको जीनत बख़्शी है और तुम्हारे दिलों में कुफ़्र और गुनाह और नाफ़रमानी के लिए नफ़रत पैदा कर दी है और (हक़ीक़त में) यही लोग हैं अल्लाह के फ़ज़ल और एहसान की वजह से रास्ता पाने वाले और अल्लाह जानने वाला है, हिक्मतों वाला है।' (49 : 6-8)

नतीजा

1. ख़बरों के बयान करने में आम तौर पर सजीदा और मुहज़ज़ब जमाअत भी इसको ऐब नहीं समझती कि जो ख़बर भी उनके कानों तक पहुंचे, वे उसको बे-तकल्लुफ़ नक़ल करते रहें और हक़ीक़त हाल की खोज की तक्लीफ़ क़तई तौर पर ग़वारा न करें, चाहे इस ख़बर से किसी न किये गए गुनाह पर झूठ गढ़ा जा रहा हो या किसी शख्स या जमाअत को नुक़सान पहुंच रहा हो, हालांकि नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने ज़ोरदार लफ़्ज़ों में यह तंबीह फ़रमाई है—

'हज़रत अबू हुरैरह رضي الله عنه से रिवायत है कि नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, इंसान के लिए यह गुनाह काफ़ी है कि हर सुनी बात को नक़ल करता रहे, यानी यह भी गुनाह की बात है कि सुनी-सुनाई बात का प्रोपगंडा करे।'

2. जब कोई ऐसी ख़बर सुनी जाए जो फ़ायदे या नुक़सान के एतबार से

खबर देने वाले पर या दूसरों पर असरंदाज़ होती हो, तो पहले उसकी जांच होनी चाहिए और जब पूरी तरह साबित हो जाए तब उससे मुताल्लिक नतीजों की तरफ़ तवज्जोह होनी चाहिए।

मस्जिदे ज़रार (रजब सन् 06 हिजरी)

नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को मालूम हुआ कि तबूक के मैदान में जो कि मदीना से चौदह मंज़िल पर दमिश्क के रास्ते पर वाक़े था, हिरक्ल शाहे रूम ने मुसलमानों के मुक़ाबले के लिए भारी फ़ौज जमा कर ली है और उसके आगे का हिस्सा आगे बढ़कर बलक़ा तक आ पहुंचा है। आपने अरब में अकाल और गर्मी की तेज़ी के बावजूद जिहाद के लिए मुनादी कर दी और मुसलमान गिरोह-दर-गिरोह जिहाद के शौक़ में मदीना में जमा होने लगे।

नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अभी तैयारियों में लगे हुए थे कि मुनाफ़िकों ने वक़्त से फ़ायदा उठाकर सोचा कि मस्जिदे कुबा के मुक़ाबले में जो हिजरत के बाद सबसे पहली मस्जिद थी, इस बहाने से एक मस्जिद तैयार करें कि जो लोग कमज़ोरी या किसी और मजबूरी की वजह से मस्जिदे नबवी में न जा सकें, तो यहां नमाज़ पढ़ लिया करें, क्योंकि इस तरह मुसलमानों को बहकाने का भी मौक़ा हाथ आजाएगा और एक क्रिस्म की फूट भी पैदा हो जाएगी।

यह सोचकर वह नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमते अक़्दस में हाज़िर हुए और कहने लगे कि हमने बूढ़े-कमज़ोर और मजबूरों के लिए क़रीब ही एक मस्जिद बनाई है। अब हमारी ख़्वाहिश है कि हुज़ूर वहां चलकर एक बार उसमें नमाज़ पढ़ लें, तो वह अल्लाह के नज़दीक मक्बूल हो जाए। आपने फ़रमाया कि इस वक़्त तो मैं एक अहम ग़ज़वा के लिए जा रहा हूं, वापसी पर देखा जाएगा।

मगर आप जब कामियाब होकर ख़ैरियत से वापस आए तो अल्लाह की वस्य के ज़रिए उस मस्जिद की तामीर की हक़ीक़ी वज्हों को जान चुके थे, चुनांचे वापस तशरीफ़ लाकर सबसे पहले सहाबा रज़ि० को हुक्म दिया कि वे

जाएं और उस मस्जिद को आग लगाकर खाक स्याह कर दें।

चूंकि हक़ीक़त में उस मस्जिद की बुनियाद 'तक्वा' और 'अल्लाह की रिज़ा' की जगह 'मुसलमानों में फूट' पर रखी गई थी, इसलिए बेशक वह इसी की हक़दार की और उसको 'मस्जिद' कहना हक़ीक़त के खिलाफ़ था, इसलिए कुरआन ने इस देखने में 'मस्जिद' और अन्दर से 'बैतुश-शर' (शरारतों का अड्डा) की तामीर के बारे में हक़ीक़ते हाल को रोशन करते हुए बतला दिया कि यह मस्जिदे तक्वा नहीं, बल्कि 'मस्जिदे ज़रार' कहलाने की हक़दार है।

तर्जुमा—(और मुनाफ़िक़ों में से) वे लोग भी हैं जिन्होंने इस गरज़ से एक मस्जिद बना खड़ी की कि नुक्सान पहुंचाएं, कुफ़र करें, मोमिनों में फूट डालें और उनके लिए एक पनाहगाह पैदा करें जो अब से पहले अल्लाह और उसके रसूल से लड़ चुके हैं, वे ज़रूर क़स्में खाकर कहेंगे कि हमारा मतलब इसके सिवा कुछ न था कि भलाई हो, लेकिन अल्लाह की गवाही यह है कि वे अपनी क़स्मों में बिल्कुल झूठे हैं। (ऐ पैग़म्बर!) तुम इस मस्जिद में खड़े न होना, इस बात की कि तुम उसमें खड़े हो (और अल्लाह के बन्दे तुम्हारे पीछे नमाज़ पढ़ें) वही मस्जिद हक़दार है जिसकी बुनियाद पहले दिन से तक्वा पर रखी गई है (यानी मस्जिदे कुबा और मस्जिदे नबवी) इसमें ऐसे लोग आते हैं जो पसन्द करते हैं कि पाक व साफ़ रहें और अल्लाह भी पाक व साफ़ रहने वालों को ही पसन्द करता है।

(9 : 107-108)

सबक़

1. निफ़ाक़ एक ऐसा मरज़ है जो इंसानों की तमाम अच्छी फ़ज़ीलतें और अच्छे अख़्लाक़ को तबाह व बर्बाद करके उसकी इंसानियत को हैवानियत से बदल देता है और उसके फ़िक़र व अमल में आपस में मेल न रहने से उसकी ज़िंदगी से असफ़लुस्साफ़िलीन' (सबसे गहरे गढ़े) में गिरा देता है।

2. एक ही 'अमल' अमल करने वाले की नीयत के फ़र्क़ से 'पाक' भी हो सकता है और नापाक भी, तैयब भी बन सकता है और 'ख़बीस' भी। मस्जिद की तामीर एक भला काम है और अज़्र व सवाब की वजह, मगर जबकि अल्लाह की रिज़ा के लिए हो और इबादते इलाही का हक़ीक़ी मक़सद

पेशेनज़र रहे।

तर्जुमा—‘अल्लाह की मस्जिदों को तो बस वही आबाद करता है जो अल्लाह पर और आखिरत के दिन पर ईमान लाया और नमाज़ अदा की और ज़कात दी और अल्लाह के सिवा किसी से न डरा।’ (9 : 18)

और यही ‘भला काम’ ‘बुरा काम’ और नफ़रत भरा काम बन जाता है, जबकि उसका मक्सद शैतानी काम हो या मुसलमानों के दर्मियान फूट डालना या नमाज़ की आड़ में इस्लाम के खिलाफ़ पनाहगाह और जासूसी का मक़ज़ बनाना हो, इसीलिए यह भला काम जब काफ़िरों के हाथों अंजाम पाए तो ग़ैर-मक़बूल और मर्दूद है।

तर्जुमा—‘मुशिरकों का हक़ नहीं है कि वे अल्लाह की मस्जिद को आबाद करें, हालांकि वे अपनी जानों पर कुफ़र की गवाही देते हैं।’ (9 : 17)

वफ़ात या वस्ल बिरफ़ीक़िल आला

तर्जुमा—यानी ‘मौत’ इस हक़ीक़त का नाम है जो नबी मुसल बल्कि खातमुल मुसलीन को भी पेश आकर रहेगी और हक़ीक़ी बक्रा तो ज़ाते अहदियत की ही बिला शिक़ते ग़ैरे ख़ास शान के साथ हासिल है। (3 : 144)

अल्लाह! अल्लाह! वह कैसा अजीब मंज़र था कि जब नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ‘अल्लाहुम-मर्-फ़ीकुल आला’ फ़रमाते हुए इस दुनिया से रुख़्सत हो गए, तो तमाम सहाबा रंज, ग़म-सदमे में इतने डूब गए थे कि उनके होश व हवास तक बजा न थे। इसी हाल में हज़रत उमर रज़ि० ने ग़म के भारी बोझ से दबकर तलवार सौंते कर यह नारा लगाया कि जो कहेगा, मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इतिक़ाल हो गया, तो इसी तलवार से उसकी गरदन उड़ा दूंगा।

ऐसी बेचैनी और परेशानी की हालत में खुदा का एक बन्दा सिद्दीक़े अक्बर आता हुआ नज़र आता है। सबसे पहले वह आइशा रज़ि० के हुजरे में पहुंचता और टूटे दिल और भीगी आंखों के साथ सरवरे दो आलम के चमकते माथे को बोसा देता और रसूल के फ़िराक़ से सदमे और बेचैनी का इज़हार करता है और इश्क़ के इस फ़र्ज़ से फ़ारिग़ होकर जब बाहर आता है तो सहाबा की इस हालत का जायज़ा लेकर कि जिसमें जाहिलियत और इस्लाम

दोनों दौरों की बे-मिसाल शख़्सियत उमर बिन ख़त्ताब रज़ि० भी शामिल हैं, तो आगे बढ़कर कहता है, ऐ ख़त्ताब के बेटे! बैठ जा। हज़रत उमर वहीं बैठ जाते हैं और बड़े दुख और ग़म के साथ हज़रत अबूबक्र रज़ि० का मुंह तकने लगते हैं।

सिद्दीक़े अक़बर रज़ि० अब नबी सल्ल० के मिंवर पर खड़े होकर हक़ की आवाज़ बुलन्द करते हुए सहाबा के मज्मे को यों ख़िताब करते हैं—

‘लोगो! जो आदमी मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की परस्तिश करता था, उसको मालूम होना चाहिए ‘इन-न मुहम्मदन क़द ‘मा त’ (बेशक मुहम्मद इतिक़ाल फ़रमा गए) कि मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मौत का मज़ा चख लिया है और जो एक अल्लाह का परस्तार है, तो बेशक ‘इन्नल्ला-ह हय्युन ला यमूतु’ (अल्लाह ज़िन्दा जावेद है और मौत से पाक और बरी, उसको मौत नहीं है)

अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ि० की यह हक़ की सदा जब फ़िज़ा में गूंजी तो सबसे पहले हज़रत उमर रज़ि० और उनके बाद तमाम सहाबा पर सुकून का इत्मीनान छा गया और वे समझ गए कि बेशक सरदारों दो आलम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अपना फ़र्ज़ रिसालत पूरा करके ‘रफ़ीक़े आला’ से जा मिले और अब इस्लाम मुकम्मल हो चुका, इसलिए अब हमारा फ़र्ज़ है कि रसूले पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के मुबारक नमूने और ज़िन्दा जावेद मोजज़े कलामुल्लाह ‘कुरआन’ को पेशवा बनाकर इस्लाम की ख़िदमत का फ़र्ज़ अंजाम दें।

हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ि० की कैफ़ियत तो यह हुई कि फ़रमाने लगे, क़सम खुदा की सिद्दीक़े अक़बर ने हक़ की यह सदा बुलन्द करते हुए जब यह आयत तिलावत की—‘व मा मुहम्मदुन इल्ला रसूल क़द ख़-लत मिन क़ब्लिहिरूसुल’ (मुहम्मद तो रसूल थे, इससे पहले भी रसूल हुए जो गुज़र गए) तो मुझे ऐसा मालूम हुआ गोया अभी यह आयत उतर रही है और रसूल की मुहब्बत ने रसूल की जुदाई से मबहूत (सन्न) कर दिया था। कुरआन और तालीमे रसूल की रोशनी में जो कुछ मोहतरम साथी ने कहा, वह यकायक सूरज की तरह मेरे सामने आ गया। हदीस और सीरत की तमाम रिवायतें मुत्तफ़िक़ हैं कि नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की वफ़ात माह

रबीउल-अव्वल दिन दो शंबा (Monday) को हुई, अलबत्ता किस तारीख को हुई? इस बारे में बहुत से कौल हैं। मशहूर व मारुफ़ कौल यही है कि 12 रबीउल-अव्वल को हुई।

सबक़ और नसीहत

1. कुरआन की सूरः फ़ातिहा में है, 'चला हमको राह सीधी, राह उन लोगों की जिन पर तूने फ़ज़ल किया, और दूसरी जगह सूरः निसा में 'तो ऐसे लोग भी इन हज़रात के साथ होंगे जिन पर अल्लाह ने इनाम फ़रमाया है यानी नबी, सिद्दीक़, शहीद और सालेह क्रिस्म के लोग, ये लोग बड़े अच्छे साथी हैं, यही वे साथी हैं जिनके बारे में नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम 'अल्लाहुम-म अर्रफ़ीकुल आला' कहकर आखिरी वक़्त में इशारा फ़रमाया।

2. 'मौत' अल्लाह का वह अटल फ़ैसला है जिससे नबी व रसूल और खातमुल अंबिया वरुसुल भी अलग नहीं है और हमेशा की ज़िंदगी सिर्फ़ ज़ाते हक़ ही के लिए खास है।

3. सिद्दीक़े अक्बर की अज़मत व जलालते मर्तबा के इस वाक़िए से भी खुला एलान हो जाता है कि नबी सल्ल० की वफ़ात के करीबी वक़्त में हालात की नज़ाकत ने सहाबा रज़ि० की अक्ल व ख़िरद पर जो असर डाला, अगर खुदा न ख़्वास्ता वह देरपा हो जाता तो इस्लाम अपनी हकीक़त से ख़ाली होकर रह जाता। (अयाज़न बिल्लाह) मगर यह सआदत अबूबक्र रज़ि० ही के हिस्से में थी कि मुसलमानों की उस डगमगाती कश्ती को कुरआन की रोशनी में पार लगा दिया और 'इस्लाम' को एक शानदार फ़िल्मे से बचा लिया।

तर्जुमा—'बड़ाई अल्लाह की है, देता है जिसको चाहे और अल्लाह का फ़ज़ल बड़ा है।' (62 : 4)

नुबूवत व रिसालत का खात्मा

नुबूवत व रिसालत का यह सिलसिला जो हज़रत आदम से शुरू होकर हज़रत ईसा عليه السلام तक पहुंचा था, रुश्द व हिदायत के उस्तूब व नेहज के लिहाज़ से इस मानी में एक जैसा है कि इस तमाम सिलसिले में नुबूवत व रिसालत जुग़राफ़ियाई हुदूद में महदूद रही है, इसलिए अलग-अलग जुबानों में

एक ही वक्त में कई नबियों की बेसत रिसालत की ज़िम्मेदारियां अदा करती रही है—यहां तक कि हज़रत ईसा के हक़ के पैग़ाम ने अगरचे कुछ फैलाव अख़्तियार किया और बनी इसराईल की रास्ते में गुम हुई भेड़ों के अलावा भी कुछ इंसानी हलक़े इस दावत के मुख़ातब बने, फिर भी उन्होंने आलमी दावत व पैग़ाम का दावा नहीं किया और इंजील गवाह है कि खुद ज़ाते कुदसी ने खुलकर कह दिया कि उनकी बेसत के जो लोग मुख़ातब हैं, वे महदूद हैं।

लेकिन यह सिलसिला आख़िर कब तक हदों के अन्दर महदूद रह सकता था। दावत व इश़ाद तो धीरे-धीरे तरक्की कर रहा था और उसमें फैलाव आ रहा था, वह कुदरत के क़ानून के आम उसूल के ख़िलाफ़ किस तरह हमेशा के लिए रह सकता था।

अलबत्ता इन्तिज़ार था तो इसका कि वह वक्त करीब आ जाए जबकि इस फैली और लम्बी-चौड़ी दुनिया में ऐसा तालमेल पैदा हो जाए कि न एक के फ़ायदे और नुक़सान दूसरे हिस्सों से ओझल हो सकें और न बेगाना व बेताल्लुक़ रह सकें, बल्कि खुदा की यह फैली हुई कायनात मादी (भौतिक) असबाब (साधनों) के बहुत होने के बावजूद एक 'कुंबा' बन जाए और इंसानी दुनिया के तमाम देश एक दूसरे के साथ इस तरह जुड़ जाएं कि एक का नफ़ा व नुक़सान दूसरे के नफ़ा व नुक़सान पर असर अंदाज़ होने लगे, बल्कि फ़ितरत का क़ानून अपना मुज़ाहरा करे और मादी दुनिया की हमागीर हम आहंगी के ज़ाहिर होने से पहले रूहानी पैग़ामे सआदत को आलमगीर वुसअत और हमागीर अज़मत अता फ़रमाए। चुनांचे इस दुनिया में फ़ितरत के आम क़ानून की तरह रुशद व हिदायत की जो शुरूआत पहले इंसान के ज़रिए हुई थी, उसका अंजाम उस मुक़दस हस्ती तक पहुंच कर कामिल व मुकम्मल हो गया जिसका नाम 'मुहम्मद' और 'अहमद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम)' है।

तर्जुमा—'आज के दिन तुम्हारे लिए तुम्हारे दीन को मैंने कामिल कर दिया और मैंने तुम पर अपना इनाम पूरा कर दिया और मैंने इस्लाम को तुम्हारा दीन बनने के लिए पसन्द कर लिया।' (5 : 3)